अघोरी

(**चेतावनी** -- कृपया इस कथा को रात में ना पढ़े, दिल के मरीज, कमजोर दिल के लोग और बच्चे भी इसे ना पढ़े । भूत-प्रेत, जादू-टोने और तामसिक विद्याओं पर विश्वास करने वालों के लिये इसमें कोई संदेश नही हैं । इस कथा का उद्देश्य भारतीय सस्कृति और उसके अध्यात्म को समझना मात्र हैं । कृपया इसे केवल शुध्द मनोरंजन के लिये पढ़े । लेखक-- सुरेश भारद्वाज ।

हजारों मीलों तक फैला हिमालय का साम्राज्य । छोटे-बड़े पर्वत और उनके बीच फैली उनकी घाटियां । इन्ही पर्वतों और घाटियों में हर तरफ बिछी पेड़ पौधों की हरियाली और कंहि कंहि प्रकृति की ठंड से बिछी बर्फ । किसी उँचे स्थान से इन्हे देखा जाये और सोचा जाये कि कभी इनमें कोई खो जाये तो कैसा हो ? तो सोच कर ही आदमी काँप जाये । दूर दूर तक जंहा तक दृष्टि जाती थी केवल पहाड़, घाटियां और घने जंगल दिखाई देते थे । प्रकृति की रुपरेखा का वो नजारा दिल को दहला देने वाला जान पड़ता था । इंसान कितना छोटा था और प्रकृति कितनी अंनत थी । उस नजारे पर दृष्टिपात करने से बस यही ख्याल किसी को भी आ सकता था ।

शाम का समय था और धुधंलका निरंतर बढ़ रहा था परन्तु सूर्य अभी अस्त नही हुआ था, चारों ओर शाँती छायी हुई थी । वो हिमालय के साम्राज्य का वीरान पहाड़ी इलाका था और अलकनंदा नदी के करीब का था । इसी नदी से बहुत दूर एक और नदी बहती थी जिसका नाम था भागीरथी नदी । ये दोनो नदियां जंहा मिलती थी उस स्थान का नाम था देवप्रयाग । इन दोनो नदियों के मिलेजुले स्वरुप का नाम था गंगा और देवप्रयाग से ही गंगा प्रकट होती थी । परन्तु नातो वो गंगा नदी का किनारा था और नाही वो इलाका देवप्रयाग का था । वो इलाका तो अलकनंदा और भागीरथी के बीच में कंहि का था । जंहा वीरानी छायी हुई थी हालाकि नदी की धाराओं का शोर और कभी कभी किन्ही पक्षियों के फड़फड़ाते पखों की आवाजें याँ फिर उल्लूओं की तीखी आवाजे उस वीराने को चीर जाती थी । अलकनंदा और भागीरथी नदियों की छोटी मोटी कई धाराएं इस इलाके में यंहा वंहा बहती नजर आती थी । जंहा कंहि ये नही बहती थी वंहा उबड़-खाबड़ पथरीली भूमि तो कंहि हरी हरी घाँस वाली भूमि थी और चारो ओर उँचें-उँचे पहाड़ दिखाई देते थे । कोई पहाड़ बर्फ से ढका नजर आता तो कोई पहाड़ हरियाली की चादर ओढ़े नजर आता था ।

उस स्थान पर शाम हो जाने से रात घिर आयी जैसे जान पड़ती थी । आसपास परन्तु दूर-दूर तक फैले गाँवों के लोग शाम होते ही घरों में दुबक जाते थे । उस इलाके में शाम भी जल्दी हो जाती थी तो सुबह भी जल्दी ही हो जाती थी । लोग सुबह सवेरे ही अपने कामों में लग जाते थे और शाम होते ही घरों में दुबक जाये करते थे । एसी ही एक शाम के समय उस सुनसान इलाके में एक साया सरपट कंहि चला जा रहा था । एक कच्ची सी पगडंडी जिसे वो जानता मालूम होता, उस पर वो सरपट चला जा रहा था । उसके हाथ में कोई गठरी सी थी और एसा लगता था कि जैसे कोई सामान वगैरह इक्टठा करके ले जाया जा रहा था । उसके दूसरे हाथ में एक जिवित मुर्गा भी था जो कभीकभार कुड़कुड़ कर लिया करता था । शरीर से हट्टा-कट्टा वो साया अघोरी मंगलनाथ था और बहुत जल्दी में दिखाई देता था । वो मशीन जैसी फुर्ति से कदम बढ़ाये जा रहा था । उसकी मंजिल वो शमशान था जंहा वो जल्दी से पहुचना चाहता था । जिस शमशान में मंगलनाथ पहुचना चाहता था वो बहुत कम ही उपयोग में लाया जाता था ।

दूर-दूर तक हालाकि कोई आबादी नजर नही आती थी परन्तु कंहि पहाड़ो की आड़ में तो कंहि इनकी तराइयों में और कंहि पहाड़ो पर फैले जंगलों में इक्का-दुक्का गाँव बसे हुए थे । ये गाँव वाले पहाड़ों को काट छाँट कर उन्हे खेती करने लायक बना लेते थे और फिर पहाड़ी आलू की खेती करते थे । इस तरह की कटाई-छटाई के बाद ये पहाड़ सिढ़ीनुमा नजर आते थे । बहरहाल ये गाँव वाले इनसे अपना काम चला लेते थे । कोई और सहुलियत ना होने से कभी कभार जब कभी एसे ही किसी गाँव में मौत हो जाती तो गाँव वालें अपने किसी स्वजन की लाश को वंहा जला दिया करते थे । अन्यथा वंहा कोई शमशान नही था । बरगद के पेड़ के पास की सीधी सपाट जगह को गाँव वालों ने लाशें जलाने के काम में लाना शुरु किया था और वंहा शमशान स्थापित हो गया था। वो स्थान केवल गाँव वालों के ईस्तेमाल करने के कारण एक शमशान में बदल गया था ।

बहरहाल बाद में इसी शमशान को दहशत का पर्याय बन गये 'कालीका शमशान' के नाम से जाना जाने लगा था । वही शमशान इस अघोरी मंगलनाथ की मंजिल थी । आज अमावस्या थी और आज मंगलनाथ को अपना अनुष्ठान पुर्ण करना था । वो पिछले एक मास से अपना ये अनुष्ठान जारी रखें हुऐ था । वो पिछली अमावस्या से रोज ही रात्रि के समय उस शमशान में जाया करता था । अमावस्या के दिन उसने संकल्प लेकर अनुष्ठान आरंभ किया था और दूसरे दिन से चन्द्र के उदय होने के साथ उसका मन्त्रजाप आरंभ हो गया था । जब तक चन्द्र उदय होकर और उसके सिर से संचार करता हुआ उसके सिर के पीछे नही चला जाता था तक तब वो निरंतर मन्त्र जाप करता रहता था । एक टांग पर खड़ा रहकर शमशान के बीचोंबीच वो पिछले एक मास से प्रतिदिन मन्त्रजाप कर रहा था । दरअसल वो 'अगिया बैताल' को जाग्रत करने का अनुष्ठान कर रहा था । अगिया बैताल को भूतों का राजा माना जाता था । कुछ लोग इसे 'भैरव' के नाम से भी जानते हैं । पिछली अमावस्या से आरंभ उसका मन्त्रजाप एक महिने तक चला था । आज फिर अमावस्या थी और मंगलनाथ का अगिया बेताल को जाग्रत करने का अनुष्ठान पुर्ण होने वाला था । और आज अगिया बैताल को जाग्रत करने का दिन आ पहुंचा था । उसे अगिया बैताल से अपने जीवन का एक महत्वपुर्ण कार्य करवाना था । इसके लिये उसने अपने जीवन के बहुत से वर्ष इस विद्या को सीखने में लगाये थे ।

वो सूर्य के अस्त होने से पहले शमशान में पहुंच जाना चाहता था इससे अनुष्ठान पुर्ण करने के लिये उसे आवश्यक समय मिल जाने वाला था इसलिये वो सरपट चला जा रहा था । उसने डुबते सूर्य की ओर निगाह डाली और सरपट चलते हुऐ जोर चिल्लाया 'जय महाकाल' । मानो सूर्य को आदेश दे रहा हो कि अभी वो कुछ देर और ठहर जाये । बहरहाल उसकी चाल में और तेजी आ गई थी । उसे देखकर उसकी उम्र का अंदाजा नही लगाया जा सकता था । परन्तु वो था बहुत ही डरावना उसकी लाल सुर्ख आँखे उसके नशे में होने को दर्शाती थी । पता नही वो नशे में था याँ अघोरपंथ के क्रियाकलापों ने उसे एसा बना दिया था । उसके बढ़े हुऐ मैले बाल उसे बहुत ही घृणित बना रहे थे । वो कमर पर केवल एक लाल रंग का कपड़ा लपेटे हुए था बाकि सारा शरीर उसका नग्न ही था । अघोरपंथ के नियमों के तहत नहाना-धोना और साफ सुथरा रहना मना होता हैं । ये प्रकृति के रहस्यों को जानने की एक तामसिक पध्दती मानी जाती हैं । इसी पध्दती के अंतर्गत मगंलनाथ अपना अनुष्ठान करने वाला था ।

बहरहल सूर्य के डुबते-डुबते वो अपनी मंजिल उस शमशान में पहुंच गया था । वो अपने साथ कुछ सामान भी लाया था ये सामान उसके अनुष्ठान में काम आने वाला था । उसने सामान की गठरी को वंहा रखा तो गठरी में से ताजे रक्त की कुछ बुँदें धरती पर चू पड़ी । एसा लगता था कि किसी प्राणी के कटे हुऐ अंग भी उसके सामान में थे । उसके सामान में ऐक जिवित मुर्गा भी था जो सारे रास्ते सहमी सी आवाज में कुड़कुड़ करता हुआ आया था मानो अघोरी मंगलनाथ से वो भी डरा हुआ था । शमशान में पहुंचकर मंगलनाथ ने सारा सामान एक स्थान पर रखा और अनुष्ठान के लिये वेदि बनाने लगा । जब अनुष्ठान के लिये वेदि बनकर तैयार हो गई तो उसने थोड़ी लाल रगं की ज्वारी के दाने हाथ में उठाये और मन्त्र पढ़ते हुऐ उन्हे आसपास छिड़क दिया । फिर उसने वेदि के आसपास मन्त्र पढ़ते हुऐ एक गोल घेरा बनाया ताकि उसकी वेदि के आसपास एक सुरक्षाकवच बन जाये । फिर वो शमशान से दूर चल दिया । वो दूर बहती एक छोटी सी नदी के किनारे पहुंचा । वंहा किनारे पर एक लाश पड़ी हुई थी पता नही वो किसकी लाश थी ? परन्तु मंगलनाश ने उसे बेखौफ होकर कंधे पर उठाया और उसे शमशान ले आया । ये लाश भी उसके अनुष्ठान का एक हिस्सा थी । वो लाश वंहा क्यों पड़ी थी ? उसे मारा गया था याँ वो वंहा नदी में बहकर आयी थी अथवा तो किसी ने मंगलनाथ के अनुष्ठान के लिये उसे वंहा रख छोड़ा ? ये सब रहस्य के अंधेरे में गुम था ।

वेदि के पास ही उसने लाश को रख दिया और उसे भी मन्त्र, गुलाल आदि क्रियाकलापों से सज्जित करने लगा । उसने लाश को पुर्ण नग्न कर दिया था और उसे सिन्दुर जैसे लाल तत्व से मल दिया था । वो लाश अब लाल सुर्ख दिखाई देती थी और उसकी खुली आँखें बहुत डरावनी दिखती थी । मगर मंगलनाथ को इससे जरा भी भय नही लगता था । अब तक रात घिर आयी थी अथवा एसा कहें कि रात गहरी होने लगी थी । दूर दूर तक उस इलाके में कोई भी नही था परन्तु अघोरी मंगलनाथ अपने अनुष्ठान में व्यस्त था और उसे कोई डर भी नही लग रहा था । हालाकि साधारण व्यक्ति उस इलाके में रात के समय आना भी पंसद ना करें । आज अमावस्या थी और चन्द्र भी आकाश में नही था इसलिये वातावरण घुप्प अधेंरे से ग्रसित जान पड़ता था । शमशान में दो लालटेनें जल रही थी जिससे वातावरण में मरियल सी पीली रौशनी फैली हुई थी और इससे मंगलनाथ के क्रियाकलापों पर कोई फर्क नही पड़ रहा था वो विधिपुर्वक अपना कार्य करने में व्यस्त था । एसा लगता था मानो उसे अपने क्रियाकलापों के लिये रौशनी की भी जरुरत नही पड़नी थी । वो अपने सधे हुऐ हाथों से अपना काम किये जा रहा था । फिर उसने एसा बहुत कुछ किया जोकि उसकी विद्या के अनुसार आवश्यक था । उसके अपने कार्य में हल्की-फुल्की आवाजें होने के बावजूद भी वंहा वातावरण में भयानक चुप्पी छायी हुई थी । एसे में जब किसी निशाचर जंगली पशु की दहाड़ अथवा किसी निशाचर पक्षी की चीख गुँजती थी तब शरीर के रोंगटें खड़े हो जाते थे । उस शमशान में तीव्र हवा की साँय-साँय भी किन्ही अदृष्य आत्माओं के बोलने का अहसास करा जाती थी । उसी समय जब कोई चमकता जुगनू हवा में डोलता हुआ वंहा से गुजरता था तो लगता था कि वो कोई आत्मा ही हैं जो कुछ बोलती हुई सी गुजरती जा रही हैं ।

फिर लगभग आधी रात होने को आयी और मंगलनाथ ने अपना सारा क्रियाकलाप पुर्ण कर लिया था अब बस उसे अगिया बेताल को जाग्रत करने का कार्य पुर्ण करना था । वो उठा और आसपास निगाह घुमाने लगा । मानो निरिक्षण कर रहा हो कि कुछ बाकि तो नही रह गया था । फिर जैसे ही उसकी दृष्टि शमशान के पास एक विशाल बरगद के पेड़ पर पड़ी तो उसने एक गहरी सांस ली और होठों में बुदबुदाया-"ओह, तुम्हे तो मैं भुल ही गया था" । उसने झट अपने लाये सामान में में लाल ज्वारी के एक मुटठी भर दाने उठाये और बरगद के पेड़ की तरफ मुँह करके जोर से दहाड़ा -"अये, मृत्युलोक में भटकने वाली आत्माओं, मेरे अनुष्ठान में तुम्हारा विघ्न डालना उचित नही होगा इसलिये याँ तो यंहा से चली जाओ याँ मेरी निश्चित की गई सीमा को पार करने का साहस मत करना" । इसके जवाब में बरगद के पेड़ से रुदन का स्वर गुँजने लगा, एसा लग रहा था मानो किसी के मर जाने पर कोई मातम मना रहा था । वातावरण भयानक हो उठा था । ये साधारण व्यक्ति के सहन करने से बाहर की बात थी । परन्तु मंगलनाथ कोई साधारण व्यक्ति नही था उसने बरगद के पेड़ से उठने वाले रुदन की पर्वाह नही की और मुटठी में पकड़े लाल ज्वारी के दानो को अभिमन्त्रित किया और उन्हे बरगद के पेड़ की तरफ उछाल दिया । तुरन्त ही सैकड़ो पक्षियों के पंख फड़फड़ाने जैसी आवाज वातावरण में फैल गई और फिर धीरे धीरे सब कुछ शाँत हो गया । एसा लगता था जैसे बरगद के पेड़ पर कोई था जो अब वंहा से चला गया था । अब रुदन की मातम मानाने जैसी आवाज भी नही आ रही थी । मंगलनाथ भी अब कुछ सन्तुष्ट सा दिख रहा था । वो अपनी बनायी वेदि की तरफ बढ़ा परन्तु फिर तुरन्त ही उसके कानों में एक स्स्स्सूं की आवाज गुँजी । इस आवाज से उसके अंदर तुरन्त ही प्रतिक्रिया हुई और वो क्रोध से भर गया । उसने झट अपने लाये सामान से कुछ और लाल ज्वार के दाने निकाले और कुछ सुराबीज भी निकाले । ये सुराबीज जादूटोने के काम आने वाले बीज थे । लाल ज्वारी और सुराबीजों को मिलाकर उसने उन्हे फिरसे अभितन्त्रित किया और बरगद के पेड़ की ओर मुँह करके फिर दहाड़ा -"अये मृत्युलोक में भटकने वाली बुरी आत्माओं, तुमसे मेरा कोई बैर नही हैं, इसलिये मेरे अनुष्ठान में विघ्न डालने का प्रयास ना करो" । और फिर जैसे पहले उसने किया था वैसे उसने उन सुराबीजो और लाल ज्वारी के दानों को बरगद के पेड़ की तरफ उछाल दिया । इसके जवाब में तुरन्त ही बरगद के पेड़ से सैकड़ो चिन्गारियां वातावरण में फैल गई और भुटटे भुनने जैसी तड़तड़ की आवाज से वातावरण गुँजने लगा । फिर बरगद के पेड़ से एक चित्कार सा गुँजा जैसे किसी का गला काटा जा रहा हो । ये चित्कार सुनकर मंगलनाथ ने जोर से अट्टहास किया और बोला-"मुझसे उलझने की कोशीश ना करना" और उसके बाद सबकुछ शाँत हो गया । इसके बाद फिर कोई विघ्न उत्पन्न नही हुआ और मंगलनाथ अपने अनुष्ठान में व्यस्त हो गया ।

अब अगिया बेताल के जाग्रत होने का समय होने लगा था । मंगलनाथ पुरी तन्मयता से अपने अनुष्ठान में लग गया था । अपने सामान में लाई और पास ही पड़ी महुएं की शराब की बोतल उसने उठाई और लायी हुई लाश के मुँह में कुछ मात्रा डाल दी और फिर स्वंय बोतल मुँह से लगा ली वो ढेर सारी शराब गटागट पी गया उसने करीब आधी बोतल शराब पी ली । शराब के नशे से उसका चेतन मस्तिष्क शिथिल होने लगा और निरंतर मन्त्र जाप से उसका अचेतन मस्तिष्क जाग्रत होने लगा । अपनी सीखी हुई साधना से उसने ये जाना था कि प्रेतजगत की सूक्ष्म आत्माओं से सम्पर्क करने के लिये शक्तिशाली अचेतन मस्तिष्क का जाग्रत होना आवश्यक होता था । इसलिये कि अपने जीवन में मनुष्य सम्पुर्ण मस्तिष्क का केवल आँठ प्रतिशत ही ईस्तेमाल करता था बाकि का सारा मस्तिष्क अचेतन अवस्था में पड़ा रहता हैं। आज इसी आँठ प्रतिशत मस्तिष्क की बदौलत मनुष्य इतना शक्तिशाली बन पाया हैं । सोचें, अगर सारा मस्तिष्क ही मनुष्य ईस्तेमाल करना सीख जायें तो उसकी उन्नति की सीमा ही ना रहे । अघोरी इसी अचेतन मस्तिष्क को जाग्रत कर प्रेतजगत की सूक्ष्म आत्माओं से सम्पर्क साध लेते हैं । इस अचेतन मस्तिष्क को जब जाग्रत किया जाता हैं तो चेतन मस्तिष्क की सोच और विचारधारा इसमें बाधक बनती हैं इसलिये उसे शिथिल करना आवश्यक हो जाता हैं जिससे कई अघोरी शराब के प्रभाव से शिथिल कर देते हैं और मन्त्र जाप से अचेतन मस्तिष्क को जाग्रत करते हैं । यही इस समय अघोरी मंगलनाथ कर रहा था । अब कई प्रकार से उसने अपने मन्त्र पुर्ण किये और जब कुछ बाकि नही बचा था तो वो जोर जोर से चिल्लाने लगा -"जाग्रत हो अगिया बेताल, जाग्रत हो भैरवनाथ, जाग्रत हो महाकाल" ।

फिर अचानक वक्त रुक सा गया, एक डरावनी शाँती चारो ओर छा गई । वातावरण चुभने सा लगा । इसके बाद फिर अचानक शाँती भंग भी हो गई और कोलाहल सा मचने लगा । मंगलनाथ की सजाई हुई वेदि पर रखी चीजें उड़ने लगी । आसपास रखी हर चीज अपने आप उछलने लगी । मंगलनाथ का लाया जिवित मुर्गा दुबक कर अपने आप में सिमट गया और डर के मारे चुप सा हो गया था । फिर आसपास रुदन की आवाज गुँजने लगी । परन्तु इस बार एसा लग रहा था कि जैसे कोई असहनीय दर्द से रुदन कर रहा था । इधर मंगलनाथ जोर जोर से चिल्ला रहा था-"जाग्रत हो अगिया बेताल, जाग्रत हो भैरवनाथ, जाग्रत हो महाकाल" । और फिर सचमुच ही अगिया बेताल के जाग्रत होने की प्रक्रिया आरंभ हो गई थी । वातावरण में विचित्र प्रकार की दुर्गन्ध व्याप्त हो गई, तेज हवा चलने लगी, हवा में भँवर और अनेक प्रकार की लहरें बनने लगी । कई रगों की रौशनी प्रकट होने लगी । कभी लाल, कभी नीली और कभी हरी रौशनी आसपास फैलने लगी । वो लाश जिसे मंगलनाथ नदी से उठाकर लाया था अचानक अंगड़ाई लेकर उठ बैठी, उसे देखकर। मंगलनाथ जोर जोर से बोला-"जय हो अगिया बेताल, जय हो भैरवनाथ, जय हो महाकाल"। अगिया बेताल उस लाश के माध्यम से जाग्रत हो चुका था ।

उस जिंदा हो उठी लाश के मुँह से खून को जमा देने वाली ठंडी आवाज गुँजी-"क्यों बुलाया हैं मुझे ?

मंगलनाथ उस अवाज को सुनकर जल्दी जल्दी बोलने लगा-"आप प्रसन्न हो अगिया बेताल, आप प्रसन्न हो भैरवनाथ, आप प्रसन्न हो महाकाल" ।

उस लाश के मुँह से फिर खून को जमा देने वाली वैसी ही ठंडी आवाज गुँजी-"क्यों बुलाया हैं मुझे ?

मंगलनाथ फिर जल्दी से बोला-"ठाकुर नीलकंठ की बली लेकर आप प्रसन्न हो अगिया बेताल, आप प्रसन्न हो भैरवनाथ, आप प्रसन्न हो महाकाल" ।

मंगलनाथ फिर बोला-"ठाकुर नीलकंठ नही तो इस मुर्गे की बली लेकर आप प्रसन्न हो अगिया बेताल, आप प्रसन्न हो भैरवनाथ, आप प्रसन्न हो महाकाल" ।

इसके जवाब में एक बिजली सी कौंधी और एक अग्नि की लपट उत्पन्न हुई और आसपास की चीजों को जलाने लगी, अपने सामान में लायी एक गुड़ीया जिसे मंगलनाथ

ने अपने अनुष्ठान के दौरान सजाकर रखा था अचानक उछली और छिन्न भिन्न होकर बिखर गयी । उस गुड़िया के परखच्चे से उड़ गये थे ।
ये देखकर मंगलनाथ जल्दी जल्दी बोलने लगा - "जय हो अगिया बेताल, जय हो भैरवनाथ, जय हो महाकाल"।
इसके बाद अचानक उस जिंदा हो गई लाश के मुँह से एक छोटे सूर्य जितना चमकदार गोला सा निकला और मंगलनाथ के आसपास मंडराने लगा और कुछ मिनिटों के बाद सर्र की आवाज करता हुआ अंधकार में विलिन हो गया । वो लाश जो अगिया बेताल के जाग्रत होने से जिंदा हो गई थी फिर अचानक बेजान होकर गिर पड़ी । और फिर सब कुछ शाँत हो गया ।
एसे ही समय में अचानक एक बड़ा सा बाज उस बरगद के पेड़ पर आ बैठा जिससे मंगल नाथ ने आत्माओं को भगा दिया था और वो बाज अपनी लाल लाल आँखों से मंगलनाथ को घूरने लगा हालाकि मंगलनाथ को उसका पता नही चला । वो तो कोई मन्त्र बुदबुदाने में व्यस्त जान पड़ता था । बाज की अंगारों जैसी आँखें निरंतर उसे घूरने लगी ।

दरअसल ये कहानी आरंभ हुई थी मंगलनाथ और ठाकुर नीलंकठ की दुश्मनी से जब उत्तर प्रदेश के एक छोटे से गाँव में ठाकुर नीलकंठ ने मंगलनाथ के परिवार पर जुल्म किये थे और फलस्वरुप मगंलनाथ का सारा परिवार मृत्यु के मुख में समा गया था । अकेला मंगलनाथ बच गया था और उसने ठाकुर नीलकंठ से बदला लेने की कसम खायी थी । ठाकुर नीलंकठ बहुत साधन सपन्न था इसलिये जब कोई रास्ता नही दिखा था तो मंगलनाथ ने अघोरी विद्या से उसके अंत की योजना बनायी थी । इसके लिये वो वर्षो तक हिमालय की पहाड़ियों में भटकता रहा था । वो कई तान्त्रिकों और कपालिको से मिला परन्तु अपने उद्देश्य की पुर्ती का मार्ग उसे नही मिला । वो अलकनंदा के किनारों पर बहुत घूमा उसे ये पता चला था कि अलकनंदा के किनारे फैले शमशानों में अघोरी और तान्त्रिक उपलब्ध हो सकते थे । इससे लाभ ये हुआ कि वो उस क्षेत्र से भलीभाँत परिचित हो गया था । हालाकि कई वर्षो तक उस क्षेत्र में भटकते रहने के बावजूद भी उसे योग्य गुरु नही मिल पाया था । इस दौरान जो तान्त्रिक और कपालिक उसे मिले उनसे उसने कई दूसरी सिध्दियां सीख ली थी । परन्तु जो 'मारणमन्त्र' वो सीखना चाहता था उसके लिये उसे अभी और भटकना था । वो भटकता रहा और एक दिन उसे एक शमशान में साधना करते हुए अघोरी कमलनाथ मिल गया था । कमलनाथ तामसिक पध्दितियों की साधना बहुत समय से कर रहा था और वो कई विद्यायें जानता था और मारण-मन्त्र भी जानता था । उसने जब मंगलनाथ का मंतव्य जाना तो उसे समझाया कि ये सब इतना आसान नही था और ये कि प्रकृति का नियम हैं 'लेनदेन' । अगर तुम प्रकृति से कुछ चाहते हो तो उसे कुछ अपना देना भी पड़ेगा । परन्तु मंगलनाथ अपनी जिद पर अड़ा रहा और 'जैसी अंनत की ईच्छा' बोलकर कमलनाथ ने उसे अपनी सिध्द की हुई विद्यायें सीखाना आरंभ किया । बहरहाल एक दिन ये विद्यायें सिखाते सिखाते कमलनाथ ही मृत पाया गया था तामसिक विद्याओं के लेनदेन में उसे शायद अपनी जान देनी पड़ी थी । उसके मुँह से खून बह रहा था और वो बहुत पीड़ादायक स्थिति में मरा जान पड़ता था । हालाकि वो कैसे मरा था इसका कारण अज्ञात ही रहा परन्तु मंगलनाथ जानता था कि तामसिक विद्याओं में आत्माओं, प्रेतात्माओं, पिशाचों और असंख्य ब्रह्माण्डिय उर्जाओं से व्यवहार होता था और उसमें चूक हो जाने का मतलब था मृत्यु । उसको चूक ना करने की शिक्षा देते देते उसका गुरु कमलनाथ शायद स्वयं ही चूक कर बैठा था । बहरहाल तब तक मगंलनाथ उससे मारण-मन्त्र सीख चुका था । हालाकि अभी वो और भी बहुत कुछ सीखना चाहता था परन्तु गुरु की मृत्यु ने उसके आगे सीखने के द्वार को बंद कर दिया था ।

पिछले पाँच साल से वो अघोरी विद्या सीख रहा था । अपने पाँच साला अघोरीपंथ की सीख में वो सामाजिक इंसान से असामाजिक इंसान बन गया था । वो अब खाना याँ मुर्दे की खोपड़ी में खाता था याँ फिर मलमूत्र खाने को विवश था । उसे सिखाया गया था कि अगिया बेताल को जाग्रत करके कैसे 'मूठ मारण' मन्त्र का ईस्तेमाल किया जाता था । आज उसने यही किया था । उसने आज अगिया बेताल को जाग्रत करके ठाकुर नीलंकठ पर मूठ मारण मन्त्र का ईस्तेमाल कर दिया था । अगिया बेताल आज उसकी जान लेने गया था । उसने एक गुड़िया बनाकर पिछले कई दिनो से उसपर ठाकुर नीलंकठ के नाम से कई मारण मन्त्रों का ईस्तेमाल किया था और उसने अगिया बेताल को उसकी जान लेने भेज दिया था । जब उसने अगिया बेताल को ठाकुर नीलंकठ का नाम लेकर उसकी बली लेने की बात कही थी तो उसके नाम की बनाई उसकी गुड़िया छिन्न भिन्न हो गई थी । ये संकेत था कि अगिया बेताल उसका मन्तव्य समझ गया था और अब वो उसकी जान लेने जा रहा था ।

उस समय के भारत में ये सब बड़ी आम बातें थी । ये सब ठाकुर नीलंकठ भी जानता था । वो भी कई एसे प्रयोग कर चुका था । इसलिये जब अगिया बेताल उसकी जान लेने उसकी तरफ आ रहा था । तो अचानक उसके कानों में जूंउउउउ की आवाज गुँजने लगी थी । वो जानता था कि जब किसी पर मूठ मारण मन्त्र का ईस्तेमाल होता था तो चेतावनी के तौर पर उसे जूंउउउउ की आवाज सुनाई देने लगती थी । वो तुरन्त ही दौड़ता हुआ अपनी हवेली के एक कमरे में गया और उसकी छत में लगे एक शहतीर से लटक गया । ये शहतीर हवेली की छत को सहारा देने के लिये वंहा लगाया गया था । उसपर लटकने का ठाकुर नीलकंठ का एक उद्देश्य था कि मूठ मारण मन्त्र उसपर प्रभावी ना हो सके । अपने अनुभव से और जानकार लोगों के सानिंध्य से वो जानता था कि मूठ मारण मन्त्र के दौरान अगर धरती से संबंध ना रखा जाये और शून्य में कंहि लटका जाये तो मूठ मारण मन्त्र प्रभावी नही होता था । वो उस शहतीर से लटक गया और लटके लटके ही जोर जोर से गायत्री मन्त्र का जाप करने लगा । जोर जोर से गायत्री के जाप के बावजूद भी वो जूंउउउउ की आवाज उसके कानों में गुँजती रही । उसके पसीने छूट गये और भय से उसका चेहरा पीला पड़ गया परन्तु वो छत के उस शहतीर से लटका रहा । फिर उसकी आत्मा काँप गई जब उसे ये अहसास हुआ कि कोई अदृश्य सा व्यक्तित्व उसके बहुत ही करीब था । उसे एसा लगा कि जैसे कोई बहुत ही करीब से उसके आसपास गोल गोल चक्कर लगा रहा था । उसने सोचा चाहे वो वंही लटके लटके मर जाये परन्तु वंहा से उतरेगा नही । फिर अचानक वो जूंउउउउ की आवाज उससे दूर जाने लगी और फिर धीरे धीरे वो आवाज बंद हो गई । उसने सोचा जरुर मूठ मारण मन्त्र अप्रभावी हो गया था । वो नही जानता था कि उसने मौत को धोखा दे दिया था । ये बात सच थी कि मूठ मारण मन्त्र के दौरान अगर पृथ्वी से संबंध ना रखा जाये तो मूठ मारण मन्त्र अप्रभावी हो जाता था । अगिया बेताल वापस लौट गया था ।

उधर शमशान में मंगलनाथ किसी मन्त्र को निरंतर बुदबुदा रहा था । बरगद के पेड़ पर बैठा बाज निंरतर उसे घूर रहा था । अधेरें में उसकी आँखें लाल लाल अंगारो की तरह चमक रही थी । अचानक उसने जोर से अपने पंख फड़फड़ाये और उड़ान भरी, वो सीधे मंगलनाथ की तरफ उड़ा । एसा लगा जैसे वो मंगलनाथ पर हमला करने वाला था परन्तु वो उस जिवित मुर्गे की तरफ बढ़ा जिसे मंगलनाथ अपने साथ लाया था । बाज तीर की तरह उस मुर्गे पर झपटा और पलक झपकते ही उसने मुर्गे की गर्दन को पकड़ लिया । वो उसे गर्दन से पकड़कर उठा ले जाना चाहता था । परन्तु मंगलनाथ ने उसे एक रस्सी से बाँध रखा था । वो उसे उठाकर नही ले जा सका परन्तु उसने उसकी गर्दन भी नही छोड़ी और प्रयास करता रहा कि रस्सी टूट जाये और वो मुर्गे को उठा ले जाने में सफल हो जाये परन्तु रस्सी नही टूटी । इस छीना झपटी में मंगलनाथ का मन्त्र बुदबुदाना रुक गया और उसने चौंक कर उस तरफ देखा और तुरन्त माजरा समझकर वो बाज की तरफ झपटा । उसने मुर्गे को बाज से छुड़ना चाहा परन्तु जिद्दी बाज छोड़ नही रहा था । बहरहाल जैसे तैसे आखिर बाज ने हार मान ली और वो तुरन्त ही दूर उड़ गया । मंगलनाथ ने तुरन्त मुर्गे का मुआयना किया और पाया कि मुर्गे की गर्दन टूट गई थी और वो मर चुका था । मंगलनाथ ने जब पाया कि मुर्गा मर गया था तो उसका चेहरा पीला पड़ गया वो थर थर काँपने लगा । वो होठो ही होठों में बुदबुदाया-"हे ईश्वर, ये कैसा अपशकुन हैं" ।

दरअसल जब अगिया बेताल को जाग्रत किया जाता हैं तो उसे कोई ना कोई जिवित बली अवश्य ही देनी होती थी । हालाकि मंगलनाथ ने इसके लिये ठाकुर नीलंकठ को चुन रखा था परन्तु अगर किसी कारण वश वो बली नही हो पाती तो दूसरी बली के विकल्प के तौर पर उसने वो मुर्गा लाया था । किसी भी हालात में अगिया बेताल

को बली अवश्य ही दी जानी थी । अब जब मुर्गा मर गया था तो वो डर गया कि कंहि अगर अगिया बेताल ठाकुर नीलंकठ की बली नही ले पाया तो दूसरी बली के तौर पर उसके पास विकल्प नही था । वो मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना करने लगा कि अगिया बेताल ठाकुर नीलंकठ की बली लेने में सफल रहे ।

बहरहाल उसे नही पता था कि अगिया बेताल, ठाकुर नीलकंठ की बली लेने में असफल रहा था । वो शमशान में बैठे बैठे काँपता रहा । वो जानता था कि अगर अगिया बेताल असफल रहा तो आज उसकी मौत हो जानी थी । अगिया बेताल को विकल्प के तौर पर मुर्गे की बली ना मिलने से वो बली के तौर पर उसकी जान ले लेने वाला था । मंगलनाथ को ज्यादा प्रतिक्षा भी नही करनी पड़ी और तुरन्त ही उसके कानों में जूंउउउउ की आवाज गुँजने लगी । वो इस आवाज को खूब जानता था । ये मौत की आवाज थी । ये आवाज उसी को सुनाई देती थी जिसे अगिया बेताल ने मौत के लिये चुना होता था । वो घबराकर जोर जोर से चिल्लाने लगा- "नही अगिया बेताल नही, नही भैरवनाथ नही, नही महाकाल नही" । वो घबराते हुऐ कई प्रकार के मन्त्र बुदबुदाने लगा । कानों में जूंउउउउ की आवाज से वो समझ गया कि अगिया बेताल ठाकुर नीलकंठ की बली लेने में असफल हो गया था और अब बली के तौर अगिया बेताल को उसकी जान ले लेनी थी । इसलिये कि अगिया बेताल का जागना निरर्थक नही हो सकता था । उसने कई मन्त्रों का उच्चारण किया और अगिया बेताल को अपनी जान लेने से रोकने का प्रयास किया परन्तु नियम तो नियम था । तुरन्त ही उसके शरीर में एक करंट सा दौड़ गया उसका सारा शरीर झनझना गया । फिर उसकी छाती में दर्द होने लगा और दर्द के मारे वो तड़पने लगा । वो जमीन पर गिर पड़ा और छाती पकड़कर लाचार सा चिल्लाता रहा- "नही अगिया बेताल नही, नही भैरवनाथ नही, नही महाकाल नही" । परन्तु उसके चिल्लाते चिल्लाते ही उसके मुँह से ढेर सारा खून निकल आया । उसका चेहरा दर्द से काला पड़ गया और फिर अत्याधिक पीड़ादायक स्थिति में उसकी जान निकल गई । वो मर चुका था ।

हालाकि वो मर चुका था परन्तु उसके शरीर से आत्मा के निकलने की प्रक्रिया अभी बाकि थी । उसके दिल की धड़कन के रुक जाने से उसकी सांस लेने की प्रक्रिया ठहर गई थी, ये शरीर के पाँच प्राणों में से पहला प्राण था । मनुष्य के शरीर में पाँच प्रकार के प्राण होते हैं । शरीर का अंतिम प्राण और पाँचवा प्राण कपाल में स्थित धनंजय नामक प्राण होता हैं जिसके निकल जाने के बाद आत्मा शरीर से पुर्णयता जुदा हो जाती हैं । जब करीब दो घंटे गुजरने को आये तो उसके शरीर से धनजंय नामक प्राण भी निकल गया तब उसकी आत्मा उसके शरीर के पास प्रकट हुई । उसकी सूक्ष्म शरीरी आत्मा विचारपुर्वक अंदाज में अपने मुर्दा शरीर को निहार रही थी । उसकी आत्मा किसी जूगनु की तरह चमकते बिन्दु की तरह दिखाई दे रही थी । फिर थोड़ी ही देर में उसके आसपास कई और चमकते बिन्दु प्रकट होने लगे । ये प्रेतजगत की कई और भटकती आत्माएं थी और मंगलनाथ की आत्मा को अपने साथ ले चलने को आयी थी । मंगलनाथ के कर्म और ईच्छायें अपुर्ण थी जिससे उसकी आत्मा को अब प्रेतयोनि में भटकना था । मंगलनाथ की आत्मा को तुरन्त ही इसका अहसास हुआ और वो नाग की तरह फुंफकारने लगी । देखते ही देखते उसकी आत्मा का सूक्ष्म शरीर एक सूक्ष्म नाग में बदलने लगा । जिससे निरंतर फुंफकारें निकल रही थी । अपने जीवनकाल में मंगलनाथ की प्रवृति बदला लेने की रही थी जिससे मरने के उपंरात उसकी आत्मा भी किसी नाग की तरह ही व्यवहार कर रही थी । नाग में सबसे ज्यादा बदला लेने की प्रवृति होती हैं । इस तरह अपने जीवनकाल में जिसकी जैसी प्रवृति रहती हैं मरने के बाद वो वैसे ही व्यवहार करने लगता हैं । मंगलनाथ की आत्मा के इस व्यवहार से प्रेतजगत से आयी आत्मायें भी हिसंक हो उठी और उनमें से कई आत्मायें विभिन्न पशुओं के सूक्ष्म शरीरों में बदल गई और मंगलनाथ की आत्मा को डराने लगी । उनमें से अपने जीवनकाल में जिसकी हिंसक प्रवृति रही थी वो शेर के सूक्ष्म शरीर में बदल गयी, कोई आत्मा भालू के सूक्ष्म शरीर में बदल गई और कोई भयानक बिल्ली के सूक्ष्म शरीर में बदल गई । अब सभी आत्मायें विभिन्न स्वरों में आवाजें निकालने लगी और मंगलनाथ की आत्मा को साथ चलने के लिये मजबूर करने लगी । उन्ही आत्माओं में से कई आत्मायें जिन्हौने अपने जीवनकाल में जुल्म और नाइंसाफी को होने दिया था अथवा उसमें सहयोग किया था । एसी डरपोक आत्मायें एक तरफ होकर सामूहिक रुप में रोने लगी । ये सामूहिक रुदन, विभिन्न पशुओं की गर्जनाएं, गुर्राहटें, चीत्कारें और मंगलनाथ की आत्मा की फुंफकारें वंहा के वातावरण को भयानक बना रही थी । तभी रात का अंधेरा छंटने लगा और सूर्य के उगने की प्रक्रिया आरंभ हो गई । ये ब्रह्म मुर्हुत का समय था । आत्माओं का शोर कम होने लगा, सूर्य के ताप को सहन करने की शक्ति उन भटकती आत्माओं में नही थी इसलिये एक अंतिम प्रयास के तौर पर उन सभी आत्माओं ने मंगलनाथ की आत्मा को घेर लिया और उसे एक तरफ ले जाने लगे । मंगलनाथ की आत्मा को भी सूर्य से भय होने लगा था इसलिये अब उसे इन्ही के साथ जाना था । बहरहाल आत्माओं का वो जमावड़ा कम होने लगा और सूर्य की रौशनी होते होते वे सब गायब हो गई । इधर शमशान में मगंलनाथ का शरीर पड़ा था ।

आजका मेडिकल साइंस अगर उस मरे हुऐ मंगलनाथ का मुआयना करता तो पाता कि अत्याधिक रक्त के दबाव के कारण उसका दिल बर्स्ट हो गया था । 'दिल' शरीर की सबसे मजबूत मासपेशी से बना होता हैं । रक्तचाप बढ़ने से हार्टअटैक की संभावना बनती हैं और उसमें भी आदमी अत्याधिक दर्द की शिकायत करता हैं । परन्तु यंहा अत्याधिक रक्तचाप से दिल बर्स्ट हो गया था जिससे अंदाजा लगाया जा सकता हैं कि मरने वाले को कितनी पीड़ा का सामना करना पड़ा होगा ।

नब्बे साल बाद, सन् २००० । नई दिल्ली । क्नॉट प्लेस का इलाका । इम्पिरियल हाईटस नामक बहुमंजिला इमारत । इसकी सोलहंवी मंजिल पर टी वी चैनल 'एक्स-टू' का स्टुडियो और दफ्तर । इसी मंजिल पर कुछ हटकर एक पैंथहाउस जैसे ऑफिस में एक्स-टू चैनल का 'चीफ एक्जीक्युटिव ऑफिसर' राजन वालिया बेचैनी से चहलकदमी कर रहा था । उसके चेहरे पर चिंता की लकीरें दिखाई दे रही थी । स्टुडियो बंद होने की कगार पर था और वो अपने चैनल की टी आर पी बढ़ाने में अब तक नाकाम सिध्द हुआ था । उसने भरसक कोशीश की थी कि उसका चैनल चल निकले और इसके लिये उसने विभिन्न उपाय भी किये थे और अपने रिर्पोटरों को नयी नयी न्युज और कहानियाँ ढूढने पर लगाया हुआ था । लेकिन बात थी कि बन ही नही रही थी और उसपर अब उसके चैनल के एक रिर्पोटर मौत हो गई थी । वो लोग न्युज दिखाने का काम करते थे और अब इस रिर्पोटर की मौत से वो खुद ही न्युज बन जाने वाले थे । वो अपने चैनल के ना चल पाने से तो चिंतित था ही परन्तु अब उसके रिर्पोटर की रहस्यमय मौत से उसकी चिंता और बढ़ गई थी । हालाकि कुछ करने के लिहाज से उसने आज परेश और बिल्लौरी को बुलवाया था । मगर इससे उसकी चिंता कम नही हो रही थी । स्टुडियो में काम करते करते उसके रिर्पोटर अनिल मुजुमदार की मौत हो गई थी । इसके लिये उसका चिंतित होना एक वाजिब कारण हो सकता हैं । परन्तु बात इससे ज्यादा गम्भीर थी । पोस्ट मार्टम के दौरान पता चला कि अनिल की मौत का कारण दिल की धड़कन रुक जाना था । पुलिस भी इससे सन्तुष्ट थी और अपनी खानापुर्ती कर चुकी थी । स्टुडियो में सबसे पुछताछ हो चुकी थी और पुलिस अपनी तरफ से केस बंद करने वाली थी । मगर राजन वालिया की चिंता कम ही नही होती थी । वो सोच रहा था कि सत्ताईस साल का नौजवान दिल की धड़कन रुक जाने से कैसे मर सकता था ।

उसने जो जाँच पड़ताल की थी और पोस्ट मार्टम करने वाले डॉक्टर्स से जो बातें की थी उससे उसकी चिंता और बढ़ गई थी । डॉक्टर्स का कहना था कि पोस्ट मार्टम के दौरान कुछ एसी बातें सामने आयी थी कि मेडिकल साइंस के पास जिसके जवाब ही नही थे । जैसे मरने वाले के कई अंग बहुत पहले ही बेजान हो चुके थे । भले ही उसके दिल की धड़कन आज रुक गई थी परन्तु एसा लगता था कि जैसे मरने वाला बहुत पहले ही मर चुका था । फिर उसका दिल कैसे धड़क रहा था और वो कैसे ऑफिस में काम कर रहा था ? ये बात समझ में नही आ रही थी । कोई इंसान कैसे बेजान शरीर परन्तु धड़कते दिल से काम करते रह सकता था । डॉक्टर्स के पास कोई जवाब नही था और पुलिस को कोई दिलचस्पी नही थी सो केस खानापुर्ति करके आनन फानन बंद कर दिया गया था ।

बहरहाल इससे अलग राजन वालिया दूसरी सोच में डूबा था । वो सोच रहा था कि कंहि इसका संबंध उस केस से तो नही था जिसपर उसने करीब तीन महिने पहले अनील को लगाया था । उसने तीन महिने पहले अनील को अघोरियों पर रिर्पोट बनाने को कहा था । फलस्वरुप अनील पिछले तीन महिने से उस केस पर काम कर रहा था । हालाकि पिछले तीन महिने में उसने उस केस पर क्या काम किया था । ये बात कभी भी अनील ने उसे नही बतायी थी और राजन वालिया उसकी रिर्पोट की प्रतिक्षा

ही करता रहा था । रिर्पोट तो नही मिली परन्तु अनील स्वंय ही मृत्यु के मुख में समा गया था । राजन वालिया को पता नही क्यों आसार अच्छे नही लग रहे थे । उसका अंतर्मन कह रहा था कि हो ना हो ये केस पेचिदा हो गया था और अनील की मृत्यु का संबंध उस अघोरियों वाले केस से ही था । परन्तु ये सब क्या गोरखधंधा था उसकी समझ में नही आ रहा था । राजन वालिया बहुत जीवट स्वभाव का व्यक्ति था । किसी भी चीज से जल्दी हार मान जाने वालो में से वो नही था । वो नही चाहता था कि उसके चैनल के किसी रिर्पोटर की युँ ही मौत हो जाये और वो केवल खानापुर्ति करके चुप बैठ जाये । वो सोच रहा था कि अगर अनील की मृत्यु का संबंध अघोरियों वाले केस से था तो वो इसे समझकर रहेगा और दोषी व्यक्ति को सजा दिलाकर रहेगा । यही सब सोचकर उसने परेश और बिल्लौरी को इस केस पर लगाने की सोची थी । आज वो उन दोनो को इस केस पर लगाने वाला था और वो दोनो ही उससे मिलने आने वाले थे । उसने उन दोनो की सुरक्षा के पक्के अंतजाम करने की सोच रखी थी क्योंकि वो नही चाहता था कि उसके चैनल में काम करने वाला कोई रिर्पोटर फिर युँ ही मौत का शिकार हो जाये । इसके लिये उसने टी वी चैनल के मालिक अमरीश ओबेरॉय से भी सहमति ले ली थी ।

परेश और बिल्लौरी दोनो ही एक्स-टू के रिर्पोटर थे । तीस वर्षिय परेश का पुरा नाम परेश श्रीवास्तव था और वो मुरादाबाद का रहने वाला था । वो बुध्दीमान, निरंतर योग और कसरत करते रहने से एथलिटों जैसे शरीर वाला और पाँच फुट दस इंच लबांई वाला आकर्षक युवक था । बिल्लौरी भी बहुत खुबसुरत और आकर्षक युवती थी । पच्चीस वर्षिय बिल्लौरी का असली नाम निशा भटनागर था । उसकी चमकिली फिरोजी आँखों के कारण बचपन से ही लोग और घरवाले उसे बिल्लौरी कहते थे । कालांतर में यही उसका प्रचलित नाम हो गया । बहरहाल एक्स-टू चैनल में दोनो ही जोड़ी बनाकर काम करते थे । परेश खबरों की खेजबीन करके कैमरा मैन का काम भी करता था और बिल्लौरी भी खबरों की खेजबीन के बाद चैनल की मेजबान बनकर कैमरे के सामने खबरें सुनाया करती थी । कभी-कभी ये दोनो आपस में अदला-बदली भी कर लिया करते थे । अर्थात कभी कभी कैमरा बिल्लौरी संभल लिया करती थी और परेश चैनल का मेजबान बन जाया करता था । इसके बाद भी दोनो में बुनियादी फर्क ये था कि बिल्लौरी कैमरे के सामने रहना पसंद करती थी और मशहूर बनना चाहती थी । जबकि परेश रचनात्मकता में अधिक विश्वास रखता था और खबरों की गहराई में उतरकर दर्शको तक सच्चाई पहुचाना चाहता था । जो भी हो दोनो अपने अपने काम से वफादार थे और एक दूसरे को पसंद भी करते थे । एक्स-टू स्टूडियों में अफवाह थी कि दोनो का अफेयर था ।

आज दोनो को राजन वालिया का बुलावा आया था । दोनो ने ही आपस में कॉन्टेक्ट कर लिया था । तय समय पर दोनो राजन वालिया के पास पहुचने वाले थे । बिल्लौरी गुड़गाँव से वंहा आने वाली थी और परेश, मिन्टो ब्रीज से वंहा पहुचने वाला था । तय समय पर दोनो ही राजन वालिया के सामने बैठे थे । राजन वालिया को गंम्भीर देखकर दोनो ही चिंतित हो गये । आजकल एक्स-टू चैनल की हालत खस्ता चल रही थी । उसके प्रोग्राम ज्यादा नही चल रहे थे । उसकी टी आर पी नही बढ़ पायी थी । अफवाह थी कि एक्स-टू कभी भी बंद हो सकता था । धीरे धीरे कर्मचारियों की छंटनी की जा रही थी । परेश और बिल्लौरी सोच में पड़ गये कि कंहि आज उन्हे काम से ही ना निकाल दिया जाये । राजन वालिया की सुरत पर बाराह बज रहे थे । जिसे देखकर बिल्लौरी सोच रही थी- "साला, उसके साथ ही एसा क्यों होता हैं" । जबकि परेश आराम से बैठा था । उसने योग के माध्यम से स्वंय पर नियंत्रण करना सीख लिया था । इसलिये उसे कोई पर्वाह नही थी कि राजन वालिया के चेहरे पर बाराह बज रहे थे याँ तेरह बज रहे थे ।

बहरहाल राजन वालिया ने औपचारिकतावश उनसे हालचाल पुछा और जल्दी ही मूल विषय पर आता हुआ बोला-"मैं आप दोनो को एक काम देना चाहता हुं" ।

बिल्लौरी ने गहरी सांस ली और मन ही मन सोचा-"साली, तकदीर अभी इतनी खराब नही हुई हैं" । जबकि परेश ने गंभीरता से कहा- "जी जरुर, कहिये हम तैयार हैं" । हालाकि परेश भी मन ही मन थोड़ा आश्वस्त अवश्य हुआ था । आजकल के इस दौर में काम छुट जाना भला किसे मंजूर होगा ।

राजन वालिया ने आगे कहा-"आजकल टी वी चैनलों पर जादू-टोने, ज्योतिष, सच्चे झूठे बाबाओं और तन्त्र-मन्त्र को खूब दिखाया जाता हैं । पब्लिक भी इसे खूब पंसद करती हैं, जिससे उनकी टी आर पी खूब बढ़ी हुई हैं । हमारे चैनल में एसे प्रोग्राम नही हैं जिससे हमारे चैनल की टी आर पी नही बढ़ रही हैं । मैं चाहता हुं आप दोनो एसी ही कोई रिर्पोट बनाये और कोई खबर लायें" ।

बिल्लौरी झट से बोली-"ये कौनसी बड़ी बात हैं, हम कलसे ही इस काम पर लग जाते हैं । हमारे देश में एसी खबरे तो बहुत मिलेगी" । फिर समर्थन के लिये उसने परेश की तरफ देखा परन्तु परेश गंभीरता से राजन वालिया को देख रहा था । उसने नोट किया था कि राजन वालिया अभी कुछ और भी बोलने वाला था । ये देखकर बिल्लौरी चुप हो गई ।

राजन वालिया ने भी गंभीरता से परेश को देखा और फिर बिल्लौरी की तरफ मुखातिब होकर बोला-"जो सब कर रहे हैं, वही हमने किया, तो क्या किया" ।

बिल्लौरी ने उलझन भरी दृष्टि से राजन वालिया की तरफ देखा और सोचा,"साला कहता हैं, जो दूसरे दिखा रहे हैं वैसी रिर्पोट बनाओं और फिर वंही कह रहा हैं, जो सबने किया, वही हमने किया तो क्या किया" । फिर उसने परेश की तरफ देखा, वो उसी अंदाज में राजन वालिया को देखे जा रहा था । उसने मन ही मन राजन वालिया को कोसा-"साले अक्लमंद लोग दूसरे को बेअक्ल ही साबित करने में लगे रहते हैं" ।

राजन वालिया ने परेश को गौर देखते हुऐ कहा-" मैं चाहता हुं, आप दोनो अघोरियों पर कोई रिर्पोट बनाये अथवा कोई खबर लायें । ये सब्जेक्ट बिल्कुल अछूता हैं और अभी तक किसी चैनल ने इसे दिखाया भी नही हैं" ।

बिल्लौरी फिर उलझन में पड़ गई और सोचने लगी-"अघोरियों पर रिर्पोट, ये कौन हैं ?

उधर राजन वालिया और परेश एक दूसरे को देख रहे थे । दोनो एक दूसरे को समझने का प्रयत्न करते दिखाई देते थे । परेश चाहता था कि राजन वालिया और भी कुछ कहे जबकि राजन वालिया चाहता था कि परेश कोई प्रतिक्रिया करे ।

जब राजन वालिया ने देखा कि परेश कोई प्रतिक्रिया नही करेगा तो उसने ही उससे पुछ लिया-"क्या कहते हो परेश ?

परेश ने जवाब में उसे गौर से देखा और बोला- "आप कोई हिन्ट देगें इस सब्जेक्ट पर ?

"कैसी हिन्ट चाहते हो ? राजन वालिया ने भी उसे गौर से देखा ।

अब परेश ने अपने पत्ते खोल देना उचित समझा और बोला- "मसलन, अनील मुजुमदार वाला किस्सा" ।

"हुं" राजन वालिया ने एक गहरी सांस ली और बोला- "तो तुम जानते हो उस बारे में ?

"ज्यादा नही" परेश बोला ।

"कितना जानते हो ? राजन वालिया, परेश की बुध्दीमानी से प्रभावित दिख रहा था ।

"यहीकि, करीब तीन महिने पहले अनील मुजुमदार को अघोरियों वाले केस पर लगाया गया था" । परेश बोल रहा था । "उसके बाद आजतक अघोरियो पर कोई रिर्पोट भी नही बनी और कोई खबर भी नही आयी । जबकि अब अनील मुजुमदार की मौत ही हो गई हैं" ।

" ओके" राजनवालिया ने जैसे हथियार डालते हुऐ कहा- "मैं तुम्हे सारी बात बताता हुं" । फिर राजन वालिया ने कहना शुरु किया - "तुम तो जानते हों कि चैनल की हालत खराब हैं और तीन महिने पहले भी एसी ही थी । ओबेरॉय साहब ने कबसे पैकअप के लिये कह दिया हैं मगर मैं उन्हे रुकवाता रहा हुं । मैं एसी कोशीश में हुं कि चैनल बंद ना हो और इसे चलाते रहने का कोई रास्ता मुझे सूझ जाये । तीन महिने पहले भी दूसरे चैनल्स को देखकर मैंने एसे ही अनील मुजुमदार को बुलाया था और उसे अघोरियों पर कोई रिर्पोट बनाने को कहा था । चैनल की हालत से वो भी वाकिफ था इसलिये मेरी बात समझकर वो जोर शोर से अघोरियो पर रिर्पोट बनाने के लिये खोजबीन में लग गया । अपनी खोजबीन के चलते वो हरिद्वार पहुंच गया और मुझे डेली रिर्पोट करता रहा । मगर कोई दमदार रिर्पोट वो नही बना पा रहा था । मैंने उसे और जोश दिलाया और कहा कि कुछ हटके कर दिखाये । फिर वो और भी आगे देहरादून जा पहुंचा और फिर मसूरी जा पहुंचा । यंहा तक वो मुझे डेली रिर्पोट करता रहा था । मगर इसके बाद उसकी रिर्पोट आना बंद हो गई और मैं प्रतिक्षा करता रहा कि आज नही तो कल वो जरुर कोई खबर भेजेगा अथवा वो खुद आयेंगा परन्तु दो महिने गुजर गये । ना तो उसकी कोई खबर आयी और ना ही उसने कोई कॉन्टेक्ट किया ।

लगभग दो महिने बाद एक दिन मैंने सुना कि वो अब स्टूडियो आने लगा था । मैंने सोचा वो मुझसे जरुर मिलेगा परन्तु उसने मुझसे मिलने की कोई कोशीश नही की, मैं प्रतिक्षा करता रहा कि आज नही तो कल वो पिछले दो महिनो की कोई रिर्पोट मुझे देगा, परन्तु एसा नही हुआ, मैं हैरान था । फिर जो अचरज में डाल देने वाली बात मैंने सुनी उसने मुझे और हैरान कर दिया । स्टूडियों के लोग कहते थे कि वो कोई काम नही करता था । बस स्टूडियों में सभी जगह एसे ही घूमता रहता था । एसा लगता था कि वो स्टूडियों के सारे काम सीख लेना चाहता था । वो हर काम करने वाले से उसके बारे में सवाल पुछता रहता था । मसलन, वो टी वी के रिले सिस्टम को सीखना चाहता था । वो टी वी के अडर्वटाईजमेन्ट को बड़े गौर से देखा करता था । स्टूडियो में काम करने वाली लड़कियों से अक्सर वो भद्दे मजाक करने लगा था । उसका अजीब व्यवहार सुनसुनकर मैं पागल हुआ जा रहा था और सोच रहा था कि आखिर वो मुझसे कॉन्टेक्ट क्यों नही कर रहा था । इसी तरह पन्द्रह दिन गुजर गये आखिर थककर मैंने उसे बुलवाया । वो आया और बदतमीजी से आकर मेरे सामने रखी चेयर पर बैठ गया । मैंने क्रोध में आकर उसे भला-बुरा कहा और पिछले दो महिनों की रिर्पोट मांगी परन्तु वो मुझे देखकर मुस्कराया और चुप बैठा रहा । उस समय मैंने देखा और मेहसूस किया कि वो, वो अनील नही था जिसे मैं जानता था । उसकी आँखों के अजनबीपन से मैं हैरान था । उसकी बॉडी लैंग्वेज, उसकी बदतमीजी, उसका मेरे साथ आँख मिलाकर बात करना और सबसे बड़ी बात कि वो मेरे ऑफिस को बड़े गौर से देख रहा था मानो पहली बार देख रहा हो । मैं उसके रवैये से क्रोध में था और काम के बारे में बात करना चाहता था । इसलिये मैं बार बार उससे काम के बाबत सवाल कर रहा था मगर वो था कि काम की बाबत कोई जवाब देने को तैयार ही नही था । जब कई बार काम की बाबत सवाल करने के बावजूद उसने कोई जवाब नही दिया तो मैं अपनी चेयर से उठकर उसकी तरफ आया और मैंने उसका हाथ पकड़कर उसे डांटा और फिर काम की बाबत सवाल किया तो उसने घूरकर मुझे देखा और एकदम अजीब आवाज में बोला-"आपका काम नही होगा" । फिर उसने एक झटके से अपना हाथ मुझसे छुड़ाया और मुस्कराकर मुझे देखा और आफिस से बाहर चला गया ।

मैं कितनी ही देर सोच में पड़ गया था । मुझे एसा लग रहा था कि कुछ एसा था जिसे मैं समझ नही पा रहा था । मैंने स्टूडियों के हर काम करने वाले को बुलाकर उसकी बाबत जानकारी चाही और सभी ने उसके अजीब व्यवहार की बात कही । मैंने सोचा कि शायद उसपर कोई दौरा पड़ गया था अथवा तो उसे डॉक्टर को दिखाया जाना चाहिये । याँ फिर उसे नौकरी से निकाल देना चाहिये । चार दिन और गुजर गये मैं अभी इसी उधेड़बुन में था कि उसे डॉक्टर को दिखाया जाये याँ उसे नौकरी से निकाल दिया जाय कि पता चला उसकी मौत हो गई थी" ।

राजन वालिया ने अचानक अपनी बात समाप्त की और हैरान सा परेश को निहारने लगा । जैसे वो परेश से किसी जवाब की आशा कर रहा हो । बिल्लौरी अपने फक्क पड़े चेहरे से राजन वालिया को देख रही थी । उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थी । वो साफ साफ डरी हुई लग रही थी ।

परेश के चेहरे पर डर का कोई नामोनिशान नही था और वो शाँती से राजन वालिया से मुखातिब होकर बोला- "आप हमसे क्या चाहते हैं, कि हम अपनी तरफ से अघोरियों की खोजबीन करें याँ फिर अनील वाले केस पर ही काम करें ?

राजन वालिया के चेहरे पर दृढ़ता के चिन्ह उभर आये और वो दार्शनिकों जैसे अंदाज में बोला- "हम टी वी वाले हैं, खोजबीन करना हमारा काम हैं । अगर अनील की मौत का इन अघोरियो से कोई संबंध हैं तब तो ये बहुत जरुरी हैं कि हम गहराई से खोजबीन करें और सच्चाई को पब्लिक के सामने लायें और अगर उसका संबंध इन अघोरियो से नही हैं तब भी अघोरियों पर रिर्पोट बनाना तुम्हारा काम हैं । अगर 'एक पंथ और दो काज' हो सकते हैं तो मैं कहुंगा कि तुम दोनो अनील वाले केस पर ही काम करो" ।

बिल्लौरी ने घबराकर जल्दी से कहा- "नही नही, मैं इस केस पर काम नही कर सकती चाहे कुछ भी हो" । उसका संकेत था कि भले ही उसे नौकरी से हाथ धोना पड़े परन्तु वो इस केस पर काम नही करेगी । वो बहुत डर गई थी ।

परन्तु परेश ने दृढ़ता से कहा कि वो इस केस पर काम करने को तैयार था । चाहे बिल्लौरी साथ रहे याँ ना रहे ।

अब राजन वालिया ने बिल्लौरी से कहा कि वो चाहे तो जा सकती हैं और नौकरी छुटने शंका ना रखें, उसकी नौकरी नही जाने वाली थी और वो अपना रुटीन काम करती रहे । बिल्लौरी जल्दी से उठकर बाहर को चल दी ।

परेश ने बाहर जाती डरी हुई बिल्लौरी को देखा और मुस्कराकर राजन वालिया से पुछा- "कुछ और जो आप मुझे इस विषय पर बताना चाहें" । कहकर परेश ने अपना नोट पैड निकाल लिया और पैन लेकर राजन वालिया की बातें नोट करने को तैयार हो गया ।

"हाँ" राजन वालिया ने कहना शुरु किया- "अनील ने जो इस केस पर काम किया था उस बाबत तुम्हे कुछ बताना चाहुंगा ताकि तुम्हे कुछ मदद मिल सके । अनील ने हरिद्वार में खोजबीन की थी मगर वंहा उसे एसे ही अघोरी मिले जिन्हे इस विद्या का ज्यादा ज्ञान नही था मगर अपनी रोजी रोटी कमाने के लिये वो स्वय को बड़ा अघोरी सिध्द करने का प्रयास करते थे और लोगों को बेवकूफ बनाकर धन कमाते थे । इसके लिये वे लोग गंगा किनारे फैले शमशानों में रात्रि में मन्त्रों उच्चारण करने का ढोंग भी करते थे और मुर्दो का मास खाकर भी दिखाते थे । मगर उनसे जब अघोरपंथ और उसके ज्ञान की बाबत सवाल किये जाते थे तो वे किताबों में लिखि बातें ही बताते थे । इस विषय पर अनील ने बहुत गहराई से खोजबीन कर रखी थी । इसलिये अनील जंहा मुझे रिर्पोट देता था वंही वो अपना विश्लेषण भी बताता था जिससे साबित हो जाता था कि वो लोग वैसे अघोरी नही थे जिनकी हमे तलाश थी । जब हरिद्वार में कुछ नही हो सका तो अनील आगे देहरादून की ओर गया था । उसने बताया था कि पहाड़ी इलाके में अघोरियों के होने का संकेत हो सकता था । वंहा भी कोई बात ना बनने से अनील और आगे मसूरी तक चला गया और वंहा आसपास के पहाड़ों में खोजबीन करता रहा । इसी के चलते एक दिन उसका खुशी से भरा कॉल आया कि उसने कुछ गहरा और खास पता लगा लिया था । एक महिने तक खोजबीन करने के बाद और इधर उधर भटकने के बाद आखिर उसने मुझे वो खबर दी जिसके लिये मैंने उसे इस काम पर लगाया था । बहरहाल वो उसका मेरे साथ बात करने का और कॉल करने का आखिरी मौका था । उसके बाद उसने फिर कभी मुझे कॉल नही किया और नाही फिर कभी उससे नार्मल बात हो सकी । फिर उस आखिरी कॉल और बात करने के एक महिने बाद

और केस पर काम करने के दो महिने बाद वो यंही आ गया था और वो नार्मल नही था । यंहा तक कि आखिर उसकी मौत ही हो गई थी" ।

परेश ने कई बातें नोट कर ली थी और वो राजन वालिया को देखते हुऐ बोला- "कुछ और छोटी छोटी बातें जिसे आप जिक्र के काबिल ना समझते हो और उनका अभी तक आपने जिक्र ना किया हो तो प्लीज बता दें" ।

राजन वालिया सोच में पड़ गया और याद करने वाले अंदाज में बोला- "अनील जब अचानक यंहा लौट आया था और कई दिन तक जब मुझसे नही मिला था तो इस दौरान उसने कई दिनो अपने कपड़े भी नही बदले थे । वो अपने मरने के दिन तक उन्ही कपड़ो में था जिस पहले दिन वो वापस स्टूडियो में लौट आया था । इसके अलावा जब वो मेरे ऑफिस में आया था तो मुझे एक अजीब सी बदबू का अहसास हुआ था । आज मैं सोचता हुं कि वो बदबू शायद इसलिये थी कि उसने कई दिनो तक मैले कपड़े पहन रखे थे । वो जब मेरे ऑफिस में आया था और क्रोध में आकर मैंने उसका हाथ पकड़ा था तो तब भी मुझे एसा लगा था कि जैसे उस हाथ में जान नही थी । जैसे वो किसी मुर्दे का हाथ था और अपने आखिरी कॉल में अनील ने किसी नीशानगढ़ नामक गाँव का नाम लिया था । उसके बारे में उसने ज्यादा नही बताया मगर उसके कहने का ढंग एसा था कि मानो वो नीशानगढ़ जा रहा हैं । एक और बात जो मेरी समझ में नही आती और ये कि इसका इस केस से कोई संबंध हैं याँ नही, मगर मैं तुम्हे बताना चाहता हुँ, वो ये कि परसों रात मुझे एक सपना आया था जिसमें मैंने देखा कि अनील मुझसे प्रार्थना कर रहा था और कह रहा था कि मेरा अंतिम संस्कार कर दो, मेरा अंतिम संस्कार कर दो" ।

इसके बाद राजन वालिया सोच में पड़ गया । अपने आप से बड़बड़ाता हुआ वो बोला, "इस सपने का क्या मतलब हैं, मेरी समझ में नही आया" । फिर वो परेश की ओर देखता हुआ बोला, "क्या ये उसके मरने का संकेत था ? मैंने सुना हैं अक्सर लोगों को अपने मरने के याँ फिर अपने किसी सगे संबंधी अथवा मित्रों के मरने के सपने दिख जाया करते हैं" ।

परेश के पास इसका कोई जवाब नही था और वो उलझन भरी दृष्टि से राजन को देखने लगा ।

"ओके" परेश उठता हुआ बोला- "मैं अब चलता हुं मिस्टर वालिया, मुझे कुछ तैयारियां करनी हैं । मैं कल सुबह ही मसूरी के लिये निकलना चाहता हुं" ।

"एक मिनिट" राजन वालिया ने जाते हुऐ परेश को रोका और अपनी मेज के ड्राअर से कुछ निकालने में व्यस्त हो गया । फिर उसने एक मोबाईल फोन नया कोरा बॉक्स निकाला और परेश की तरफ बढ़ाता हुआ बोला- "ये सेटेलाईट फोन हैं परेश, अपने काम के दौरान तुम कंहि भी रहोगे तो मुझसे सम्पर्क बनाये रख सकोगे । मुझे लगता हैं अनील, संपर्क ना होने से कई बातें मुझे नही बता पाया होगा । तुम्हे जब भी लगे कि तुम्हे मदद की जरुरत हैं मुझे तुरन्त ही इन्फॉर्म करना मैंने तुम्हे तुरन्त मदद पहुचाने के मद्देनजर ओबेरॉय साहब से हेलीकॉप्टर की भी मांग कर रखी हैं और दो एक दिन में यंहा हमारे पास हेलीकॉप्टर भी अवायलेबल होगा । कोई रिस्क मत लेना और सदा ही मेरे टच में रहना और हाँ सेटेलाइट फोन के साथ एक अतिरिक्त बैटरी भी हैं ताकि बैटरी चार्जिंग की समस्या भी ना रहे । अनील की मौत के बाद मैं इन अघोरियों के विषय में जानने को बहुत उत्सुक होने लगा हुं । जब अनील वापस यंहा आया था तो मैंने उससे कई बार पुछा था कि अघोरियों वाले केस का क्या हुआ तो वो हर बार मुस्करा देता था । इससे मेरी जिज्ञासा और बढ़ जाती थी परन्तु वो इस सवाल पर हर बार मुस्करा देता था । पता नही क्या बात थी" ।

परेश जाते जाते कुछ पलों के लिये रुका और पलटकर राजन वालिया को देखा फिर वो राजन वालिया के करीब आया और गौर से उसकी आँखों में झांककर बोला- "मिस्टर वालिया वो अनील नही, कोई अघोरी था"। फिर राजन वालिया की प्रतिक्रिया देखे बिगैर वो ऑफिस से बाहर निकल गया ।

पीछे राजन वालिया का चेहरा पीला पड़ गया था । वो थर थर काँप रहा था । भय से उसकी आँखें चौड़ी हो गई थी और उसके रोंगटे खड़े हो गये थे । निंरतर निकल रहे पसीने से उसका शरीर भीग रहा था । तुरन्त ही उसे अनील से हुई मुलाकातें याद आने लगी और याद आने लगा उसका अजीब व्यवहार । उसे अनील का सपना भी याद आने लगा और वो सोचने लगा कि क्या वो अनील की भटकती आत्मा थी जो उसके शरीर का अंतिम संस्कार ना होने से भटक रही थी । क्योंकि अगर उसके शरीर में कोई अघोरी था तो अवश्य ही वो बहुत पहले मर चुका होगा और तभी सपने में वो अपने अंतिम संस्कार की प्रार्थना कर रहा था । लेकिन क्या वो सपना था याँ फिर सच में ही अनील की आत्मा उससे रुबरु हुई थी और वो उसे सपना समझ रहा था । क्योंकि वो रात का ही समय था जब अपने बिस्तर पर वो बैठे बैठे सो गया था और वो सपना उसे आया था परन्तु आज याद करने से उसे समझ आने लगा कि वो सोया नही था बल्कि वो जाग ही रहा था जब अचानक उसके सामने रौशनी का गुबार सा प्रकट हुआ और वो धीरे धीरे अनील में तब्दिल हो गया था । क्योंकि एसा कभी कुछ उसके साथ हुआ नही था इसलिये वो उसे सपना समझ रहा था । लेकिन वो अवश्य ही अनील की आत्मा रही होगी । अचानक एक खौफ उसपर तारी हो गया और वो भयभीत नजर आने लगा ।

दूसरे दिन सवेरे परेश, दिल्ली के अतर्देशीय बस स्थानक पर खड़ा था । उसने हरिद्वार तक बस से यात्रा करना मुनासिब समझा था । उसने सोचा बस से यात्रा करने वाले लोग अक्सर आसपास के गाँवों के लोग होते हैं जो आसपास की चर्चाओं के विषय में बतियाते रहते हैं । शायद इस तरह उसे अघोरियों के विषय में कुछ सुनने को मिल जाये और कोई सुराग हाथ लग जाये । इसी सोच के चलते उसने बस से यात्रा करना मुनासिब समझा । बहरहाल सुबह नौ बजे गढ़वाल ट्रान्सपोर्ट की वो लक्जरी यात्री-बस हरिद्वार के लिये चली जिसमें परेश भी बैठ गया । इस बस का बीच में कोई स्टॉप नही था, ये सीधे हरिद्वार ही जाकर रुकने वाली थी । हालाकि यात्रियों के नाश्ते इत्यादि के लिये उसे रास्ते में कहि एक बार रूकना था ।

अघोरियों तक पहुचने का उसके पास कोई सीधा सीधा उपाय नही था और नाही उसके पास कोई नक्शा वगैरह था । उसे तो बस अनील मुजुमदर के बताये कुछेक सुरागों से आगे बढ़ना था । वो सुराग भी कोई एसे नही थे कि वो सीधा रास्ता पुछ लेता और अनील की बतायी हुई जगह पर जाकर अघोरियों को तलाश लेता । नीशानगढ़ नामक जिस गाँव का उसने नाम लिया था उसका भी कोई खास डिटेल उसने नही बताया था । परेश ने सोचा उसने हरिद्वार से अपनी खोजबीन शुरु की थी इसलिये वो भी वंही से शुरु करेगा ।

अघोरियों के विषय में वो स्वंय भी ज्यादा कुछ नही जानता था । बचपन से सुनी सुनाई बातों के अलावा उसे ज्यादा कुछ मालूम नही था । उसकी मालूमात के लिहाज से अघोरी जनसाधारण में एक भय का विषय थे और लोग उनके करीब जाने से भी कतराते थे । इसलिये कि उनके विषय अक्सर ये कहा जाता था कि वे लोग जादू टोना जानते थे । वे लोग शमशान में रहते थे । वे इंसान का मांस खाते थे और भूत प्रेतों के संग रहते थे । परेश ने स्वामी शिवांनद से योग की शिक्षा ली थी और आजकल वो उनसे मन की चौबीस अवस्थाओं पर नियंत्रण करने की शिक्षा ले रहा था । जिससे उसे मन पर नियंत्रण करने की कला सीखने का मौका मिल रहा था । इसलिये अघोरियों से डर उसके मन में बिल्कुल भी नही था परन्तु वो उनके विषय में जानने को उत्सुक था ।

करीब दोपहर के दो बजे के आसपास बस हरिद्वार पहुंची । उसने एक स्थानीय होटल में डेरा जमाया और शाम होते होते गंगा घाट पर टहलने निकल पड़ा । उसका इरादा वंहा घूमते साधु संतो से बातचीत करके कुछ सुराग तलशने का था । सफर के दौरान बस में उसे कुछ खास मालूमात नही हो सकी थी । वो लक्जरी बस में आया था और लक्जरी बस में अधिक पैसे लगते थे जिसके चलते उसमें कोई एसा गाँव वाला था ही नही जो इस विषय पर कोई बात कर सके अथवा वो ही किसी से उस बाबत कुछ पुछ सके । गाँव वाले अथवा गरीब लोग सस्ती बसों में यात्रा करते थे । परेश को अपनी भूल का अहसास हुआ और सोचने लगा उसे किसी सस्ती बस में यात्रा करनी चाहिये थी ।

सूर्यास्त होने को था और गंगा घाट पर बैठे पंडे अपने अपने यजमानों को पुजा-अर्चना और तर्पण करने को कह रहे थे । परेश को भी कुछ पंडों ने घेर लिया मगर परेश ने इस ओर कोई खास तवज्जो नही दी तो पंडों ने उसका पीछा छोड़ दिया था । वो किसी खास और एसे साधु अथवा फकीर की तलाश में था जो उसे अघोरियों के विषय में जानकारी दे सके । एसे अलग थलग बैठे एक दो साधुओं और फकीरों से उसने बात की और अघोरियों के विषय में उनसे जानना चाहा । जिसके लिये उसे एक फकीर को गाजें की चिलम के पैसे भी देने पड़े । मगर वे लोग कोई खास जानकारी नही दे पाये । अघोरियो का नाम सुनते ही उनकी आँखें चौड़ी हो जाती थी और वे लोग उनकी रहस्यमयी शक्तियों और उनके खतरनाक होने का बखान करने लगते थे । एक साधु ने तो उसे यंहा तक कह डाला-- "बाबूजी, उनके चक्कर में मत पड़िये, बेकार ही किसी उलझन में पड़ जायेगें" । परेश ने उसकी बात पर ध्यान नही दिया और उससे उनके पते ठिकाने के विषय में जानना चाहा परन्तु वो कुछ खास नही बता पाया । बहरहाल इस तरह रात घिर आयी और वो होटल की और लौटने लगा । तभी एक आदमी उसकी तरफ बढ़ा ।

वो छह फीट लंबा और खूब हट्टा-कट्टा आदमी था, वो था गोरा मगर पैरों तक लंबा काला कुर्ते जैसा लबादा पहने हुए था । उसके गले में मणियों की माला थी और उसके बाल और दाढ़ी बढ़ी हुई थी । देखने में वो कोई साधु-संत अथवा फकीर लगता था परन्तु अपने लापरवाही वाले अंदाज से उसमें उनके जैसी कोई बात नही थी । एसे वंहा और भी लोग होगें जो अपनी अपनी दुनियाँदारी में उलझें होगें परन्तु वो जब परेश की तरफ बढ़ा तो परेश उसे देखकर ठिठककर गया और खड़ा हो गया । वो जैसे जैसे परेश के करीब आ रहा था परेश उसे गौर से देखने लगा । उसकी आँखों में बसी रहस्यमयता और होठों में बसी मुस्कान उसे कोई रहस्यमय आदमी प्रकट कर रही थी । उसे आसपास के माहौल की जरा भी पर्वाह नही दिख रही थी । उसकी चमकीली आँखें परेश को अपनेआप में घुसती सी लगी । परेश को लगा जैसे उसकी आँखें उसे अंदर से लेकर बाहर तक टटोल रही थी । करीब आते आते वो आदमी सन्तुष्ट सा नजर आने लगा जैसे उसने परेश को चैक कर लिया हो और उसमें खतरे जैसी कोई बात उसे नजर नही आयी हो । परेश ने मेहसूस किया कि उसके चलने की आवाज नही हो रही थी । बिल्ली जैसी उसकी चाल से परेश ने अदांजा लगाया कि वो कोई साधारण आदमी नही था । अपने टी वी रिर्पोटर के अब तक के कैरिअर में उसने इतना तो सीख ही लिया था । बहरहाल परेश ने जो देखा वो टी वी रिर्पोटर की दृष्टि से देखा अगर वो कुछ और योगाभ्यास कर चुका होता और उसे सूक्ष्म शरीरी आत्माओं को देखने का अभ्यास होता तो वो देखता कि उस आदमी के आसपास एक नीले रंग का घेरा सा बना हुआ था जो उसकी सुरक्षा के लिये था और उसके आसपास कई चमकते बिंदु भी थे जो सूक्ष्म आत्मायें थी और ये सब भी उसकी सुरक्षा के लिये थी ।

वो परेश के करीब आकर बोला-- "किसी विशेष कार्य से आयें हैं श्रीमान ?

परेश ने उसे उलझनपुर्ण दृष्टि से देखा और उससे पुछा, "आप कौन हैं ?

वो मुस्कराया और बोला-- "मैं तो सेवक हुँ श्रीमान, आपके किसी काम आ सकुं तो मेरे अहोभाग्य ।"

परेश ने अंदाजा लगाया कि वो आदमी शायद बहुत देर से उसपर नजर रखें हुए था और उसके मतंव्य को भी जानता मालूम होता था । परेश को लगा वो कोई दलाल टाइप को आदमी हो सकता था जो धन की एवज में उसके जैसे लोगों के कार्य किया करते थे । उसके पहनावे के विषय में परेश ने सोचा, किसी धर्म स्थान अथवा तीर्थ स्थान पर लोगों के पहनावे बदल ही जाते हैं । बहरहाल परेश को उससे कोई एतराज नही था अगर धन की एवज में भी वो आदमी उसका काम कर सकता था तो उसे लाभ ही होना था । प्रत्यक्ष परेश ने उसे इशारा देने की सोची और बोला-- "अगर आप मेरे काम आ सकते हैं तो मैं भी आपके काम आ सकता हुँ ।

परेश का इशारा समझकर वो तुरन्त हाथ जोड़कर नम्रता से बोला-- "श्रीमान, काम आना अथवा सेवा करना मेरा काम हैं, आप बस अपना प्रयोजन मुझे बतायें" ।

अब परेश कुछ चौंका । वो आदमी उसे बिगैर किसी लाभ के मदद देने की बात कर रहा था । तुरन्त ही उसके दिमाग में प्रश्न कौंधा, कौन था वो आदमी ?

उसने तुरन्त उससे प्रश्न किया-- "आप मेरे विषय में जानते हैं ?

उस आदमी ने गर्दन झुका ली और हाथ जोड़े जोड़े ही बोला, "जी श्रीमान" ।

परेश ने तुरन्त उससे दूसरा प्रश्न किया, "क्या जानते हैं ?

"यही कि आपका नाम परेश हैं और आप किसी विशेष प्रयोजन से दिल्ली से आये हैं" ।

"कौन सा प्रयोजन ? परेश ने अधीरता से पुछा । वो अचानक इस आदमी के विषय में जानने का उत्सुक हो उठा ।

"ये मैं नही जानता श्रीमान" । वो नम्रता से बोला-- "ये तो आप मुझे बतायेगें" ।

"किसने भेजा हैं तुम्हे ? परेश अचानक जोर से बोला । उसका टी वी रिर्पोटर वाला दिमाग सावधान हो उठा ।

परन्तु वो आदमी कुछ नही बोला और विवशता भरी दृष्टि से परेश को निहारने लगा ।

परेश ने फिर जोर देकर उससे पुछा-- "किसने भेजा हैं तुम्हे ? और तीव्र दृष्टि से उसको देखने लगा ।

तभी उस आदमी के शरीर में एक झुरझुरी सी प्रकट हुई, उसकी आँखों की पुतलियाँ उपर चढ़ गई और उसकी आँखें मुँद गई । एसा लगा जैसे वो कंहि खो सा गया ।

परेश हैरानी से उसे देखने लगा । कुछ पलों तक परिस्थिति एसी ही बनी रही फिर उस आदमी ने आँखें खोली और परेश से बोला-- "आप ऋषिकेश चले जाइये और साध्वी शतावरी से मिलें" ।

"कौन साध्वी शतावरी ? परेश ने हैरानी से उसे देखते हुए पुछा । अचानक उसे अपने रोंगटें खेड़े होते मेहसूस होने लगे । उसका अंर्तज्ञान उसे किसी अज्ञात के विषय में संकेत देने लगा । उसने अपने योग गुरु स्वामी शिवानंद से योग की शिक्षा ली थी । इससे उसका अंर्तज्ञान बहुत बढ़ गया था और उसकी छठी इन्द्री भी जाग्रत हो गई थी । उसने अपने गुरु स्वामी शिवादंन का स्मरण किया और आँखें मुँद कर कुछ समझने का प्रयत्न किया परन्तु तभी उसे उस आदमी की आवाज सुनाई दी-- "श्रीमान, साध्वी शतावरी भागीरथ शिखर के सांची मठ की साधिका हैं और आपके प्रयोजन को जानती हैं । उससे मिलकर आपके प्रयोजन के सिध्द होने में आपकी बहुत सहायता होगी" ।

उसकी बात सुनकर परेश ने आँखें खोलकर उसे देखा और गौर से उसे देखता हुआ बोला-- "आप कौन हैं ? परेश का एसा लगा मानों उस आदमी ने जानबूझकर उसे ध्यान में जाने से रोका था ।

वो हाथ जोड़े जोड़े ही बोला-- "श्रीमान, मैं कौन हुँ, ये तो मैं भी नही जानता परन्तु आपके अनुसार जैसा आपका परिचय हैं उसी हिसाब से मेरा परिचय ये हैं कि मैं बिहार का रहने वाला हुँ और मेरा नाम मंगलनाथ हैं"।

"क्या आप साध्वी शतावरी के लिये कार्य करते हैं ? परेश ने उसे देखते हुए पुछा ।

वो बोला-- "श्रीमान, मैं उनके लिये क्या कार्य कर सकता हुँ, इस दुनियाँ में एसा कुछ भी नही हैं जो वो स्वंय ना कर सके । हाँ, गुरु भल्लूक के आदेश से मैं उनकी छत्रछाया में रहता हुँ" ।

"तो फिर, तुम्हे क्यों भेजा हैं ? परेश ने उससे फिर पुछा । "वो स्वंय क्यों नही आयी ?

"श्रीमान" वो आदर से बोला, "वो चाहती थी कि आप पृष्ठभूमि का समझ लें और अपनी मर्जी से आप उनसे मिलें" ।

"ओके" परेश ने गहरी सांस लेकर उससे देखा और पुछा, "और ये गुरु भल्लूक कौन हैं" ?

वो तुरन्त ही आदरयुक्त स्वर में बोला, "वो तो सर्वज्ञ हैं, वो साधना हैं, वो गुरुत्व हैं, वो पुजा हैं, वो अर्चना हैं, वो ईश्वर के बाद सबकुछ हैं ।
परेश ने उसे उलझन भरी दृष्टि से देखा और पुछा, "तुम्हे उनका आदेश कब मिला ?
वो धीरे से मुस्काराया और बोला, "आपकी जिज्ञासा उचित हैं श्रीमान, परन्तु मेरी एक सीमा हैं । अब अगर इसके बाद मैं कुछ और बोलुंगा तो अपनी सीमा का उंल्लघन करुंगा । आप साध्वीजी से मिल लिजिये आपके सभी प्रश्नों के उत्तर आपको उनसे मिल जायेगें" ।
परेश ने उसे देखा और गहरी सांस लेकर एक हुंकार भरी, "हुँ, मैं साध्वी शतावरी से कैसे मिल सकता हुँ और कब मिल सकता हुं ?
उसने तुरन्त बताना शुरु कर दिया, "वो ऋषिकेश में गिरी महाराज के आश्रम में ठहरी हैं, आप जब भी चाहें उनसे मिल सकते हैं" ।
"क्या रात में भी ? परेश ने उसे चुनौतीपुर्ण नजरों से देखते हुए पुछा, "याँ अभी ही ?
वो रहस्यपुर्ण अंदाज में मुस्कराया और बोला, "आप उनका ध्यान करके तो देखें" ।
फिर कुछ देर तक दोनो ही एक दूसरे का देखते रहे । उस आदमी के मुख पर कोई भाव नही था परन्तु परेश सोच में पड़ा था । वो सोच रहा था कि क्या अनील को भी एसी ही परिस्थितियों का सामना करना पड़ा होगा ? क्या उसे शतावरी से मिलना चाहिये ? उसने सोचा शतावरी से मिलने के अलावा कोई चारा भी नही था इसलिये कि अपने जिस काम के लिये वो निकला था उसके लिये आगे बढ़ने की यही राह हो सकती थी । अब आगे उसका अंजाम अनील के जैसा हो याँ ना हो, परन्तु उसे अपने काम के लिये मिली हुई सूचना पर आगे तो बढ़ना ही था । फिर उसने चेहरे पर निर्णायक भाव लिये उस आदमी को देखा ।
वो आदमी मुस्कराया उसने परेश के चेहरे से जान लिया कि वो शतावरी से मिलने का निर्णय कर चुका था । परेश को भी समझ आ गया कि उस आदमी को उसके निर्णय का पता चल चुका था । उसने भी मुस्कराकर उस आदमी को देखा ।
"अच्छा श्रीमान, फिर मुलाकात होगी" कहकर वो आदमी मुड़ा और गंगाघाट की तरफ चल दिया जंहा लोग जलते हुए दिये नदी के पानी में बहा रहे थे । परेश ने देखा वो आदमी इतनी जल्दी जल्दी चल रहा था कि लगता था जैसे उड़ रहा था ।
फिर परेश ने अपने आसपास देखा जंहा लोगों की भीड़ जमा हो गई थी । भीड़ में जमा लोग हैरानी से उसे देख रहे थे । परेश ने भी उन्हे हैरानी से देखा और मांजरा समझने का प्रयत्न करने लगा । वो लोग उसे एसे देख रहे थे मानो वो कोई अजूबा था । परेश भी उन्हे एसे ही देख रहा था मानों वो उनके वंहा जमा होने से हैरान हो रहा था । अब हालात एसे थे कि परेश, जमा हुई भीड़ को देख रहा था और जमा हुई भीड़, परेश को देख रही थी । कुछ देर देखने का ये सिलसिला युँ ही बना रहा फिर झल्लाकर परेश चिल्लाया-- "क्या बात हैं भाई, क्या देख रहे हैं ?
तुरन्त ही भीड़ में खुसुर-पुसुर शुरु हो गई । फिर उनमें से एक जटंलमैन सा लगने वाला आदमी आगे आया और उसने परेश से पुछा, "मिस्टर, आप किससे बातें कर रहे थे ?
"मैं"। परेश ने लापरवाही से हाथ उठाकर अपनी तर्जनी उंगली से उस तरफ इशारा किया जिस तरफ वो काले लबादे वाला आदमी गया था । "उस काले लबादे वाले आदमी से बात कर रहा था" । फिर परेश ने भी उस तरफ देखा जिस तरफ स्वंय उसने इशारा किया था । सामने का दृष्य देखकर तुरन्त ही परेश की रीढ़ की हड्डी में ठंडी लहर दौड़ गई । वो काले लबादे वाला आदमी गंगा नदी की बहती धारा पर चल रहा था और एसे आराम से चल रहा मानों कठोर भूमि पर चल रहा हो । देखते ही देखते उसने नदी पार कर ली और किनारे के उस तरफ लगभग उड़ता हुआ सा उसकी दृष्टि से ओझल हो गया ।
परेश आवाक सा वंही खड़ा रह गया । उसका हाथ वैसे ही उठा हुआ था और उसकी उगंली वैसे ही तनी हुई थी जैसे उसने काले लबादे वाले को देखने के लिये इशारे में उठायी थी । वो उस काले लबादे वाले के पानी पर चलने वाले दृष्य को हजम नही कर पा रहा था । वो कोई जादूगरी याँ कोई बाजीगरी कर दिखाने जैसा दृष्य नही था । वो आदमी बड़े ही सहज ढंग से पानी पर चलता हुआ उसकी दृष्टि से ओझल हो गया था । जैसे ये उसके लिये कोई बड़ा काम नही था । वो अभी सारा मामला समझने का प्रयत्न ही कर रहा था कि पीछे से उसी जंटलमैन से लगने वाले आदमी की आवाज उसे सुनाई दी । "कौनसा काले लबादे वाला आदमी, मिस्टर ?
परेश वैसे ही आवाक और हैरान सा अपने आसपास जुटी भीड़ को देखने लगा और फिर तुरन्त उसने अपने आपको संभाला और उस जंटलमैन से लगने वाले आदमी ओर मुखातिब होकर बोला-- "क्या आपने उस काले लबादे वाले आदमी को नही देखा ?
वो आदमी थोड़ा क्रोधित होता हुआ बोला-- "हमने किसी काले लबादे वाले आदमी को नही देखा । आप यंहा रास्ते पर खड़े होकर अपने आप से बड़बड़ा रहे थे जिससे यंहा भीड़ जमा हो गई हैं । आप दिखते तो पढ़े लिखे हैं फिर एसी हरकतें क्यों करते हैं ? अपना इलाज करवायें और लोगों को परेशान ना करें" । फिर वो भीड़ से मुखातिब होकर बोला-- "चलो भई चलो, बड़बड़ाने की भी बीमारी होती हैं और ये ज्यादा पढ़े लिखें लोगों को ही होती हैं । इनसे अच्छे तो हम हैं, भले ही कम पढ़े लिखें हैं परन्तु इनके जैसे रास्ते में खड़े होकर एसे बड़बड़ाते तो नही हैं" । इसके बाद भीड़ में कई लोग हँस पड़े और फिर धीरे धीरे भीड़ छंट गई । परन्तु परेश के रोंगटें खड़े हो गये ।
उसकी समझ में अब आया कि वो अब तक जिस काले लबादे वाले आदमी से बात कर रहा था । वो असल में अदृष्य था और उसके सिवाय ना तो किसी को नजर आ रहा था और नाही कोई उसकी बात सुन पा रहा था । जब वो उस अदृष्य काले लबादे वाले से बात कर रहा था तब साधारण लोगों को यही लग रहा होगा कि वो अपने आप से बातें कर रहा था । जिससे धीरे धीरे वंहा भीड़ जमा हो गई थी । सारा माजरा समझकर परेश के शरीर में सिरहन सी दौड़ने लगी । उसने अपने गुरु स्वामी शिवानंद का स्मरण किया और कुछ देर युं ही आँखें मुँदे खड़ा रहा । जब कुछ पलों बाद उसने आँखें खोली तो उसे अपने आप में स्फूर्ति का अहसास हुआ और उसके शरीर से सिरहन गायब हो गई थी उल्टा अब वो सबकुछ जानने और समझने को दृढ़ निश्चयी जान पड़ता था ।
परेश तुरन्त ही वंहा से होटल के लिये चल दिया । उसे डर था कि कंहि अपने आपसे बातें करने वाले आदमी को देखने के लिये वंहा फिर भीड़ जमा ना हो जाये ।

रात के करीब दस बजे परेश ने होटल के रेस्टॉरन्ट से ही खाना मंगा लिया और खाने से निवृत होकर उसने अपने लैपटॉप में आजकी घटनाओं के विषय में लिख लिया । ये उसके लिये आवश्यक था बाद में इसी से अघोरियों पर बनने वाली टी वी रिपोर्ट में सहायता मिलने वाली थी । अभी तक उसने कैमरे का ईस्तेमाल नही किया था हालाकि वो दो प्रकार के कैमरे साथ लाया था । एक उसका छोटा सा हैण्डी कैम था जोकि साधारणयता एक अकेला टी वी रिपोर्टर तीव्रता और सहुलियत से ईस्तेमाल कर सकता था । दूसरा उसका खुफिया कैमरा था जोकि एक पेन के ढक्कन जैसे खोल में फिट किया गया था । इसे अगर उपरी जेब में लगा लिया जाये तो वो साध ाारण पेन जैसा आभास देता था जबकि वो पेन होता ही नही था । वो एक पेनड्राइव-कम-कैमरा था । इसमें दो जी बी की एक एसी ड्राइव फिट थी जो चालू कर दी जाये तो करीब ढाई घन्टे की एक पुरी फिल्म शूट कर सकती थी । एसा उसके विडियो मोड पर रखने से होता था और अगर उसे इमेज मोड पर रखा जाये तो सही फोकस मिलने पर वो तुरन्त ही अपनेआप फोटो ले लेता था । इस तरह वो ऑटोमेटीक कैमरा अपना काम बखूबी करता था । परेश ने दोनो कैमरों को ईस्तेमाल के निकाल लिया था । एसा वो इसलिये कर रहा था क्योंकि आज उस अदृष्य आदमी के होने का कोई सबूत उसके पास नही था अगर ये खुफिया कैमरा उसके पास होता तो शायद कोई सबूत मिल जाता । बहरहाल परेश अब किसी भी घटना से दो चार होने के लिये तैयार रहना चाहता था ।

उसने दोनो कैमरों की बैटरी वगैरह चैक की और उन्हे एक बार चलाकर भी देख लिया । दोनो कैमरे अच्छी हालत में थे और अपना काम करने को तैयार थे

। फिर वो अपने बिस्तर पर घुटनों के बल बैठ गया और अपने आपको पैर की एड़ियों पर टिका लिया फिर उसनें गहरी गहरी सांसे लेना आरभ किया । रात को सोने से पहले वो स्वामी शिवानंद के सिखाये एक आसन को कर लिया करता था । आँखें मुँदे-मुँदें ही कुछ देर अपने फेफड़ों से गहरी गहरी सांसे लेने के बाद उसने पेट से जल्दी जल्दी सांस लेना आरंभ कर दिया जोकि निरंतर तीव्र से तीव्रतर होने लगा । अब उसकी नाभि तेजी से अंदर बाहर होने लगी । धौकनी की तरह तेजी से चलती उसकी सांसे नाक से गुर्राहट जैसी आवाज निकालने लगी । ये क्रिया 'कपाल-भाति' से मिलती जुलती क्रिया थी । नित्यप्रतिदिन ही एसा करने से उसका हाजमा अच्छा रहता था और सुबह वो अपने आपको एकदम तरोताजा मेहसूस करता । करीब दस मिनिट के बाद उसने एसा करना बंद किया और अपने आपको शाँत होने देने के लिये एसी ही स्थिति में आँखें मुँदे बैठे रहा ।

आँखें मुँदें मुँदें ही उसने उस काले लबादे वाले आदमी के विषय में सोचा कि कैस वो अदृष्य होने की कला सीखा होगा । फिर उसने साध्वी शतावरी के विषय में सोचा कि कल वो उससे अवश्य ही मिलेगा । तभी उसे उस आदमी के शब्द याद आये कि उसने कहा था कि अगर वो साध्वी शतावरी से मिलना चाहता हैं तो केवल उसका ध्यान करके देख लें । उसने फैसला किया कि वो साध्वी शतावरी का ध्यान करेगा ।

उसने बंद आँखों से ही स्वंय को सुझाव दिया कि उसका मन शाँत हो जाये फिर उसने अपने आपको सुझाव दिया कि उसका मस्तिष्क भी शाँत हो जाये । उसका मन कोई ईच्छा ना करें, उसका मस्तिष्क कोई विचार ना करें । इस तरह कई बार उसने स्वंय को ये सुझाव दिये और फिर धीरे धीरे शाँती, शाँती, शाँती का पाठ करने लगा । कुछ ही देर में उसका मन और मस्तिष्क शाँत हो गये । अब उसके शरीर में चिंटियां सी रेंगने लगी, उसके मस्तिष्क से विभिन्न प्रकार की लहरें निकलकर सारे शरीर में फैलने लगी । इससे उसे बहुत आनंद मेहसूस होने लगा । उसे अपना शरीर हल्का फुल्का मेहसूस होने लगा । उसे एसा लगने लगा जैसे कोई उसका शरीर हौले हौले से थपथपा रहा था । ये उसकी चेतना थी जो उसके मन, मस्तिष्क से आजाद होकर अपने होने का अहसास उसे करा रही थी । साधारणयता हमारी चेतना हमारे मन की ईच्छाओं और मस्तिष्क के विचारों में उलझी रहती हैं । ईच्छायें वो जो भौतिक सुखों की लालसा से भरी रहती हैं और विचार वो जिनपर हमारा नियंत्रण नही होता हैं । इस तरह जो हम ईच्छा करते हैं अथवा जो विचार हमे आते हैं चेतना उनके विश्लेषण में ही उलझी रहती हैं । अगर हमें उसे ईच्छाओं और विचारों से आजाद कराने का अभ्यास हो जाये तो चेतना, चैतन्य में बदल जाती हैं और हम कुछ एसा मेहसूस करते हैं जो इस भौतिक जगत में उलझे रहने से मेहसूस नही किया जा सकता हैं । शरीर का आनंदमय हो जाना तो इसका प्रथम फल हैं । बहरहाल ये सब 'योग' से ही संभव हैं ।

परेश ने धीरे-धीरे दोनो आँखों के मध्य में आज्ञाचक्र पर ध्यान केन्द्रित करना आरंभ किया । उसकी बंद आँखों के सामने एक विशाल अंतरिक्ष सा प्रकट हुआ और उसके सामने लाल पीले सितारे झिलमिलाने लगे फिर धीरे धीरे यही लाल पीले सितारे एक हरे रंग के चक्र में बदल गये । ये हरे रंग का चक्र किसी बड़े सूर्य की तरह था । इसके बाद इस बड़े से हरे रंग के सूर्य का रंग बदलने लगा और वो छोटा होकर सुनहरे सूर्य में बदल गया और आहिस्ता आहिस्ता वो सुनहरा सूर्य एक सफेद रंग के छोटे चन्द्रमाँ में बदल गया । अब परेश का ध्यान केन्द्रित हो गया था ।

एसी ही स्थिति में परेश ने एक विचार किया-- "क्या साध्वी शतावरी मुझे सुन रही हैं ?

तुरन्त ही उसे मंदिर में घंटियां बजने जैसी आवाज का अहसास हुआ । कोई नारी उससे कह रही थी-- "हाँ, परेश मैं तुम्हे सुन रही हुँ" ।

परेश ने फिर विचार किया--"आप कौन हैं ?

उत्तर मिला-- "मैं तुम्हारी शुभचिंतक हुँ, परेश" ।

"मैं आपको जानता नही, कभी आपसे मिला नही । फिर आप मेरी शुभचिंतक कैसे हो सकती हैं ?

उत्तर मिला--"मिलना और जानना औपचारिकतायें हैं, दुनियादारी हैं परन्तु जब बड़े लक्ष्य निश्चित हो जायें और 'ईश्वर' की मर्जी उसमें शामिल हो जाये तो इन औपचारिकताओं की और दुनियांदारी की आवश्यकता नही होती" ।

"कौन से बड़े लक्ष्य और 'ईश्वर' की कौन सी मर्जी ?

उत्तर मिला-- "तुम्हारा लक्ष्य बड़ा हैं और हमें इसका पता चला हैं, ये 'ईश्वर' की मर्जी' हैं" ।

"मेरा लक्ष्य बड़ा हैं याँ नही, ये मैं नही जानता परन्तु अपने ऑफिस से मिले काम को करना मेरी जिम्मेदारी हैं और मैं यही सोचकर अपना कार्य कर रहा हुँ । आपको ये कैसे पता चला और इसमें 'ईश्वर' की मर्जी कैसे शामिल हुई ये मैं नही समझ पा रहा हुँ" ।

उत्तर मिला-- "काम और जिम्मदारियां तो इसी प्रकार से तय होतें हैं परेश, परन्तु वो बड़े लक्ष्यों में तब्दिल होते हैं 'ईश्वर' की मर्जी से ।

"आप ये कह रही हैं, कि मेरा काम एक बड़ा लक्ष्य हैं और शुभचिंतक होने के नाते आप इसे सिध्द करने में मेरी मदद करने वाली हैं ?

उत्तर मिला -- "हाँ" ।

"परन्तु इससे पहले मेरा एक सहयोगी ये काम करने निकला था । जिसकी अब मौत हो चुकी हैं क्या उसका लक्ष्य बड़ा नही था, हालाकि उसका भी वही काम था जो आज मेरा हैं और क्या उसके विषय में आपको पता नही चला था ?

उत्तर मिला-- "हमें उसका तब भी पता था और हमे उसका आज भी पता हैं । परन्तु वो उतना योग्य नही था जितने तुम हो, लक्ष्य जितना बड़ा होगा सिध्द करने वाला भी उसी के अनुरुप विचार और व्यक्तित्व से उतना बड़ा होना चाहिये । तुम्हारा वो सहयोगी ब्रह्मचर्य का पालन न करने वाला, विचारों से मलिन और आत्मा से निर्बल था" ।

"क्या मैं एसा नही हुँ ?

उत्तर मिला-- "नही, तुम एसे नही हो, तुम ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले, अपने मन पर नियंत्रण रखने वाले, ईश्वर को मानने वाले और अपने कार्य के प्रति वफादार व्यक्ति हो । जो काम तुम्हे मिला हैं वो ईश्वर की मर्जी से एक बड़े लक्ष्य में बदल जाने वाला हैं और उसके लिये तुम एक उचित व्यक्ति हो । इसमें तुम्हारी मदद करना हमारा धर्म हैं" ।

"यही तो मैं समझना चाहता हुँ कि आप मेरी मदद क्यों करना चाहती हैं ? मैं अपने ऑफिस की तरफ से मिले काम के अनुसार अघोरियों पर रिपोर्ट बनाने निकला हुँ । अब आप कहती हैं कि ये एक बड़ा लक्ष्य बन जाने वाला हैं और इसमें मुझे आपकी मदद की आवश्यकता पड़ेगी । ये सब क्या हैं ?

उत्तर मिला-- "देखो, लक्ष्य के विषय में तुम्हे धीरे धीरे समझ आयेगी, कल जब तुम मुझसे मिलने आओगे तो मैं इस विषय में तुम्हे बताने का प्रयास करुंगी । रही बात अघोरियो पर रिपोर्ट बनाने की तो वो काम आसान नही हैं । पहले तो तुम्हे ये ही नही पता हैं कि वे लोग मिलेगें कंहा उसपर तुम अगर उनतक पहुँच भी गये तो वे लोग तुम्हे वापस आने ही नही देगें । इसलिये कि वे लोग आजकल एक विशेष अनुष्ठान में व्यस्त हैं और वे लोग नही चाहते हैं कि किसी बाहरी व्यक्ति को इस विषय में पता चलें और उनके विषय में जनसाधारण जान जाये । उनकी तामसिक शक्तियों का तो तुम्हे पता ही नही हैं, इसमें तुम्हारी जान भी जा सकती हैं" ।

"शक्तियां तो आपके पास भी कम नही हैं । आपका वो अदृष्य संदेशवाहक और स्वंय आप केवल ध्यान मात्र से बातें कर सकती हैं । क्या आप लोग मायावी नही हैं ?

उत्तर मिला-- "हम लोग मायावी नही साधक हैं और सात्विक शक्तियों की साधना करते हैं । वे लोग अघोरी हैं और तामसिक शक्तियों की अराधना करते हैं । रही बात

उस अदृष्य सदेंश वाहक की तो उसके विषय में मैं तुम्हे मिलने पर बताउंगी जिससे तुम्हे अपना बड़ा लक्ष्य भी समझ आने लगेगा" ।

"ठीक हैं, मैं कल आपसे मिलने आउंगा । क्योंकि इसके अलावा मेरे पास कोई और रास्ता भी नही हैं । मुझे अपना काम तो हर हाल में करना ही हैं । बहरहाल मैं अपने सहयोगी के विषय में जानना चाहता हुँ । उसके साथ क्या हुआ था ?

उत्तर मिला-- "वो कपिल घाटी के विषय में जान गया था और नीशानगढ़ तक जा पहुँचा था । बहुत समय पहले की बात हैं हिमालय की पर्वत श्रंखला में जंहा गंगोत्री हैं और जंहा बद्रीनाथ और केदारनाथ हैं । इन तीनो तीर्थ स्थानों के केन्द्र में एक स्थान था जो एक बड़े पहाड़ी दर्रे की तरह था । हालाकि यंही से दो पहाड़ जुड़वा भाईयों की तरह उँचे उठते चले जाते थे और इनके इस अंदाज से वंहा एक गहरी घाटी बन जाती थी । वो पहाड़ी दर्रा जंहा से ये घाटी आरंभ होती थी उसे 'दूधिया दर्रा' कहा जाता था क्योंकि सर्दियों में ये बर्फ से ढक जाता था और दूधिया रंगत से चमकने लगता था । इस दर्रे के बाद जो घाटी आरंभ होती थी उसे 'कपिल घाटी' के नाम से जाना जाता था । साधारणयता यंहा किसी का आना जाना नही था । वो स्थान था भी इतना दुर्गम कि किसी को वंहा कोई काम हो नही सकता था । परन्तु एसा कहा जाता हैं कि इस घाटी में कभी शिव के महाकाल रुप के पुजारी 'कपालिकों' का जमावड़ा हुआ करता था और वे लोग यंहा अपने अनुष्ठान किया करते थे । चण्डी-मठ के नाम से उनका एक मठ भी वंहा स्थापित था । जंहा वे अपनी साधना, अनुष्ठान और यज्ञ किया करते थे । कपालिकों के यंहा आते जाते रहने से ये घाटी कपालिकों की घाटी के नाम से जानी जाने लगी और कालांतर में इस घाटी का नाम कपिल घाटी पड़ गया था । ये कपालिक ही इस क्षेत्र में अघोरपंथ के जनक माने जाते हैं । हालाकि अब वंहा कपालिक नही आते हैं और उन्हौने हिमालय के और भीतरी हिस्से को अपने अनुष्ठान का स्थान बना लिया हैं । अब हिमालय के किसी आंतरिक भाग में उन्हौने चण्डिका-मठ के नाम से दूसरा मठ स्थापित कर लिया हैं परन्तु कभी की कपालिक घाटी से उनके कुछ एसे संबंध जुड़ गये हैं कि अक्सर वे सूक्ष्म शरीर के जरिये प्राचीन चण्डी मठ के आसपास भी मंडराते रहते हैं । अमावस्या की रात को विशेष तौर पर यंहा उन कपालिकों की आत्माओं को देखा जा सकता हैं । इस घाटी के आंरभ होने से पहले उसके मुँहाने पर एक गाँव बसा हुआ हैं जिसका नाम नीशानगढ़ हैं । तुम्हारा सहयोगी खोजबीन करते करते इस गाँव तक पहुँच गया था । इस गाँव के लोगों ने उसे कपालिकों और उनके अनुष्ठानों के विषय में बताया था । गाँव के लोग कपालिकों से बहुत डरते थे और उन्हौने तुम्हारे सहयोगी को भी उनसे दूर रहने को कहा था परन्तु तुम्हारा सहयोगी तो अमावस्या की प्रतिक्षा कर रहा था । ताकि उस रात वो कपालिकों अथवा अघोरियों के विषय में जान सके परन्तु उसके साथ एक हादसा हो गया । अमावस्या को आने में अभी दो दिन बाकि थे और वक्त गुजारने के लिये तुम्हारा सहयोगी अक्सर आसपास के पहाड़ी इलाके में खोजबीन करता रहता था । एसी ही खोजबीन के चलते एक दिन उसका पैर फिसला और वो गहरी खाई में जा गिरा और तुरन्त ही मर गया । किसी कपालिक की सूक्ष्म शरीरी आत्मा को उसके विषय में पता चला और परकाया प्रवेश के जरिये उसने उसके मृत शरीर पर कब्जा कर लिया और तुम्हारे ऑफिस तक आ पहुचा था ।

बाद में उस कपालिक की आत्मा का उस शरीर में रहना असहनीय हो गया था जिसके कारण वो अचानक ही तुम्हारे सहयोगी का शरीर छोड़कर चला गया था और तुम लोगों ने अपने सहयोगी को उस दिन मृत समझा था । जबकि मर तो वो बहुत पहले ही गया था । बहरहाल तुम्हारे उस सहयोगी के शरीर का अंतिम संस्कार ना होने की वजह से उसकी आत्मा भटक रही हैं । वो बार बार तुम्हारे मुख्य अधिकारी से प्रार्थना कर रही हैं कि वो उसका अंतिम संस्कार कर दे और अभी थोड़ी ही देर में तुम्हारे उस मुख्य अधिकारी का फोन तुम्हे आयेगा कि वो उस भटकती आत्मा से कैसे अपना पीछा छुड़ाये तो तुम उससे कह देना कि उसके शरीर के अंतिम संस्कार का इंतजाम कर दे उसके बाद वो आत्मा उसे परेशान नही करेगी" ।

इसके बाद बहुत सी और भी बातें उन दोनों में हुई जिनका संबंध अध्यात्म से जुड़ा हुआ था । परेश की जिज्ञासा समाप्त ही नही होती थी, उसने परकाया प्रवेश के विषय में बहुत कुछ पुछा था । साध्वी शतावरी भी बहुत ही धैर्य से उसके प्रश्नों के उत्तर देती रही । बहरहाल साध्वी ने उसे समझाया कि अध्यात्म अनुभव का विषय था इसे केवल बातों से नही समझाया जा सकता था । इस तरह की कई बातें हुई और अंत में जब परेश के सैटेलाइट फोन की कॉलिंग ट्युन बजने लगी तो साध्वी ने उससे विदा ली और उसे फोन उठाने को कहा ।

जैसा की अपेक्षित था । फोन राजन वालिया का ही था । जिसके विषय में साध्वी ने उसे पहले ही बताया था । उस समय रात के दो बज रहे थे जब फोन पर राजन वालिया का घबराया सा स्वर गुँजा । वो डरी हुई आवाज में कह रहा था -- "परेश, परेश वो अनील की आत्मा मुझसे बात करती हैं । मैंने तुम्हे बताया था कि वो सपने में आती थी लेकिन नही, यार वो रियल में आकर मुझसे बात करती हैं" ।

परेश शाँत स्वर में बोला, -- "मिस्टर वालिया शाँत हो जाइये और मेरी बात सुनिये" ।

मगर राजन वालिया वैसे ही घबरायी आवाज में बोलता रहा, -- "परेश, मुझे लगता हैं हमने गलत काम हाथ में ले लिया हैं, जबसे ये अघोरियों वाला काम हमने हाथ में लिया हैं तबसे ये सब शुरु हो गया हैं । अब मुझे तुम्हारी भी फिक्र होने लगी हैं । अनील तो मर गया मगर मैं तुम्हे नही खोना चाहता हुँ, भले ही मिस्टर ऑबेराय कुछ भी कहते रहें और चाहें तो चैनल बंद कर दें मगर चैनल की वजह से हम अपनी जान नही गवांने वाले हैं । तुम वापस आ जाओं परेश" ।

परेश फिर धैर्य से बोला, -- "मिस्टर वालिया आप मेरी बात सुने" ।

फिर तुरन्त ही फोन पर बिल्लौरी की आवाज गुँजी, --"परेश तुम कंहा हो ? ये सब क्या गोरखधंधा हैं ? मिस्टर वालिया बहुत घबराये जान पड़ते हैं और कहते हैं कि अनील की आत्मा उनसे बात करती हैं । यंहा के हालात तुम समझ सकते हो कि इतनी रात गये हम उनके साथ उनके बंगले पर हैं । एक्स टू की पुरी टीम यंहा हैं" । एसा लगता था कि वालिया के डरे हुए अंदाज के कारण बिल्लौरी ने उनसे फोन ले लिया था ।

परेश ने बिल्लौरी को बताया, -- "बिल्लौरी मैं इस समय हरिद्वार में हुँ और डरने की कोई बात नही हैं । तुम मिस्टर वालिया को समझाओं कि मुझे कुछ नही होने वाला हैं और मुझे अघोरियों तक पहुँचने के सुराग मिल रहे हैं । मैं बहुत जल्दी रिपोर्ट भेजना शुरु कर देने वाला हुँ" ।

बिल्लौरी बोली, --"ये अनील की आत्मा का क्या चक्कर हैं ? मिस्टर वालिया एसे डर जाने वाले लोगों में से तो नही हैं ।

परेश ने उसे ज्यादा नही बताने का फैसला किया और प्रत्यक्ष बोला, -- "कोई बात नही हैं, बस अनील के शरीर का अंतिम संस्कार किया जाना हैं । मिस्टर वालिया ज्यादा सोचते रहे हैं इस विषय पर इसलिये उनपर ये सब हावी हो गया हैं । उन्हे लगता हैं कि उन्हौने अनील के लिये कुछ नही किया था इसलिये उन्हे अपने आप पर अनील का कर्ज मेहसूस हो रहा हैं । अगर वो अनील की बॉडी का अंतिम संस्कार कर देगें तो सब ठीक हो जायेगा" ।

बिल्लौरी उलझनपुर्ण स्वर में बाली, --"बात इतनी सी नही हो सकती हैं, परेश । तुम जरुर कुछ छुपा रहे हो । मुझे बताओं परेश । मैं तुम्हे जानती हुँ, जब तुम बात जल्दी खत्म करना चाहते हो तो बात में कुछ और भी होता हैं और ये संकेत होता हैं कि तुम कुछ छुपा रहे हो । प्लीज परेश, मुझे बताओं कि क्या बात हैं" ।

बिल्लौरी बहुत समय तक परेश के साथ रही थी और उसके कार्य करने के ढंग को जानती थी और उसे भी समझने लगी थी । उसे राजन वालिया का भी पता था कि वो बहुत जीवट किस्म का आदमी था । एसे जल्दी डर जाना उसकी फितरत से मेल नही खाता था । आखिर बिल्लौरी भी टी वी चैनल के लिये कार्य करती थी और बात की तह तक जाने का उसका भी स्वभाव था । परेश जानता था कि जब तक कोई सन्तुष्टिपुर्ण जवाब वो नही हासिल कर लेगी तब तक वो उसका पीछा नही छोड़ने वाली थी । उसने कुछ सोचकर उसे इशारा देने की सोची, --"बिल्लौरी, मिस्टर वालिया को कुछ नही बताना । ये अनील की आत्मा वाली बात सच हैं और वो रियल में मिस्टर वालिया

से बात करती हैं । तुम कल मुझसे बात करना, मैं तुम्हे हालात बताने की कोशीश करुंगा" ।

तुरन्त ही फोन पर उसे बिल्लौरी की डर से भरी हुई सिसकारी सुनाई दी, वो बोली, --"हाय राम, अब हम लोगों की रिपोर्टिंग करते करते भूत प्रेतों की रिपोर्टिंग करने लगे हैं, क्या? एसे ही डरे हुए अंदाज में उसके मुँह से दिल की बात निकल गई वो परेश से बोली, --"परेश, तुम वापस आ जाओं, एसा खतरनाक काम करने की कोई जरुरत नही हैं । हम दोनो मिलकर कोई और काम ढूंढ लेगें और कोई दूसरी नयी दुनियाँ बसा लेगें" ।

परेश जानता था कि वो उससे प्यार करती थी । आज से पहले उसने कभी इस बात का इकरार नही किया था और नाही परेश ने कभी उसे इस प्रकार का कोई इशारा दिया था । हालाकि परेश कभी ये तय नही कर पाया था कि वो भी उससे प्यार करता था याँ नही मगर इस बात को उसने सदा मेहसूस किया था कि उसे बिल्लौरी का साथ अच्छा लगता था । बिल्लौरी उसे सदा ही अपेक्षित दृष्टि से देखती रहती थी कि वो कभी उसे प्यार की बात कहे मगर परेश साथ साथ काम करने के अलावा ज्यादा कुछ सोच नही पाया था और आज इस डरे हुए माहौल में बिल्लौरी अपने आपको को रोक नही पायी थी ।

बहरहाल वो बिल्लौरी से बोला, -- "बिल्लौरी प्लीज, आजका दिन जाने दो, कल अनील का अंतिम संस्कार करने में मिस्टर वालिया की मदद करो बाद में मुझसे बात करो मैं तुम्हे सब बताने का प्रयास करुंगा और तुमसे कुछ नही छुपांउगा" ।

फिर उसे बिल्लौरी रुंआसी आवाज सुनाई दी, -- "देखो परेश, जोश में होश मत खो देना । जीदंगी हैं तो काम सौ मिल जायेगें, लेकिन अगर जींदगी ही गंवा दी तो क्या काम और क्या नाम" ।

परेश ने उसे समझाने वाले भाव से कहा, --"कमऑन बिल्लौरी, एसा भी क्या डरना ?

फिर इसी तरह के समझाने बुझाने में और बतियाने में काफि समय गुजर गया और अंत में यही फैसला हुआ कि कल पहले अनील की लाश मोर्ग से क्लेम की जायेगी और उसका विधिपुर्वक अंतिम संस्कार किया जायेगा उसके बाद बाकि बातों पर विचार विर्मश किया जायेगा । तब तक राजन वालिया भी बहुत हद तक संभल चुका था और थोड़ी हिम्मत दिखाने लायक हो गया था । उसे परेश की बातों से और उसके आत्म विश्वास से बहुत सपोर्ट मिला था । उसने फिर परेश से बात की और उससे केस की बाबत जानना चाहा तो परेश ने उसे बताया कि उसे अघोरियों के विषय में बहुत कुछ पता चला हैं और वो भी नीशानगढ़ के विषय में जान गया था और आने वाले एक दो दिन में नीशानगढ़ जाने की तैयारी कर सकता था । परेश ने सीधे सीधे उनसे उस काले लबादे वाले अदृष्य आदमी और शतावरी की बातें उनसे छुपा ली थी । इससे उलझन और बढ़ जानी थी । वे लोग मॉर्डन जगत के लोग थे और यंहा अध्यात्म से संबधित लोग थे जिनका आपस में कोई मेल नही होना था । अथार्त, विचारधारा और कार्य प्रणाली मेल नही खानी थी ।

फिर जब उसने फोन रखा और राहत की सांस लेने के लिये अपने आपको आरामदेह स्थिति में लाना चाहा कि तभी उसके कमरे की बिजली चली गई । उसे नही पता था कि केवल उसके कमरे की बिजली गई थी याँ वंहा बिजली चली जाना आम बात थी । अभी वो ये सोच ही रहा था कि उसके कमरे में नीला प्रकाश फैल गया । उसने हैरानी से उस नीले प्रकाश के स्त्रोत का पता लगाना चाहा कि वो कंहा से फैल रहा था । मगर उसे पता नही चला और फिर वो नीला प्रकाश एक स्थान पर संगठित होने लगा । वो जिस बैड पर बैठा था ठीक उसके सामने वो नीला प्रकाश जमा होने लगा । अब वो बैठे बैठे ही उस प्रकाश को देख सकता था । वो प्रकाश संगठित होते होते एक मानवाकृति में बदलने लगा । पहले तो वो केवल मनावकृति ही लगा परन्तु फिर धीरे धीरे वो अनील की तस्वीर जैसा दिखने लगा और अंतत वो अनील की छवी में बदल गया । परेश तुरन्त ही समझ गया कि वो अनील की आत्मा थी । परेश का पुरा शरीर पसीने में नहा गया । राजन वालिया को समझाना आसान काम था परन्तु अब स्वंय अनील की आत्मा से रुबरु होना उसे डराने लगा । उसके रोंगटें खड़े हो गये । उसकी जुबान तालू से चिपक गई और वो डरा हुआ उसे निहारने लगा । अपने जीवन में ये उसके लिये पहला मौका था जब वो किसी आत्मा से रुबरु हो रहा था । अपने आप ही उसके मुँह से 'जय गुरुदेव, जय गुरुदेव' का पाठ आरंभ हो गया ।

उसी समय उसके कानों में साध्वी शतावरी की आवाज गुँजी, --"डरो नही परेश, उससे बात करो, वो तुमसे कुछ कहना चाहती हैं" ।

परेश के शरीर मे हिम्मत का संचार हुआ । उसे लगा साध्वी शतावरी यंही कंहि उसके आसपास थी । उसने स्वंय भी हिम्मत जुटायी और हाथ जोड़कर उस आत्मा से मुखातिब होकर बोला, --"आप मुझसे कुछ चाहते हैं" ।

अनील की आत्मा के होंठ हिले और परेश को उसकी आवाज कंहि दूर से आती मेहसूस हो रही थी, वो बोली, --"तुमने मेरे अंतिम संस्कार के लिये जो कार्य किया हैं उसके लिये मैं सदा ही तुम्हारा आभारी रहुंगा । अगर मेरा अंतिम संस्कार नही होता तो आत्मा के तौर पर उस शरीर से मेरा मोह कभी खत्म नही होता और मैं सदा भटकता रहता । आज मैं जिस सूक्ष्म शरीर में हुँ उससे मैं ये जान सकता हुँ कि तुम कितने महान हो और क्यों प्रकृति ने तुम्हे मेरी जगह कार्य पर लगाया । तुमने कभी किसी का बुरा नही सोचा और सदा अपने कार्य के प्रति वफादार रहे । मैं जब जिवित था तो सदा ही अपने मतलब की बात सोचता था । शायद इसिलिये प्रकृति ने मेरे अंत की बात तय कर दी और मेरा भौतिक शरीर नष्ट हो गया । आज अपने सूक्ष्म शरीर के जरिये मैं जानता हुँ कि तुम कितना महान कार्य कर रहे हो परन्तु जब मैं जिवित था और तुम्हारे विचार सुनता था तो मैं तुम पर हंसता था ।

परेश ने हिम्मत से कार्य लेते हुए कहा,--"मैं नही जानता कि मैं कौन सा महान कार्य कर रहा हुँ परन्तु अपना फर्ज पुरा करने का प्रयास अवश्य कर रहा हुँ" ।

आत्मा की आवाज आयी, -- "तुमने सदा ही अपनी आत्मा की आवाज सुनी हैं । तुमने कभी अच्छा-बुरा नही सोचा, तुमने प्रकृति के रहस्य जानने का प्रयास किया जो अपनेआप में ज्ञान हैं और यही आत्मा का भोजन हैं । इसी से आत्मा मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर होती हैं । आत्मा एसे शरीर को पंसद करती हैं जिसमें ज्ञान को हासिल करने की बुध्दी हो, जिसमें एसी बुध्दी हो जो अपने चंचल मन को नियंत्रित कर सके और सदा ज्ञान के मार्ग पर अग्रसर रहे, इससे आत्मा तृप्त होती हैं और एसे मनुष्य की आयु आत्मिक बल से बढ़ती हैं । मुझमें एसा बल नही था जिससे मेरा शरीर और बुध्दी आत्मा को पंसद नही थे और जिससे मेरी आयु जल्दी समाप्त हो गई । अब मेरी आत्मा एसे शरीर को धारण करेगी जिसमें ये सब गुण हो तभी मेरा ज्ञान और आयु बढ़ेगें और मेरी आत्मा मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर होगी" ।

परेश का डर अब दूर हो गया था और उसमें ज्ञान की जिज्ञासा जागने लगी । वो बोला, --"क्या अब आप दूसरा शरीर धारण करने वाले हैं ?

आत्मा की आवाज आयी, --"मुझे नही पता, क्योंकि मेरी आत्मा इतनी बलशाली नही हैं अथवा एसा कंहे कि अपने भौतिक शरीर के रहते मैंने इतना ज्ञान अर्जित नही किया कि मेरी आत्मा को पता चल सके कि अब आगे उसकी नियति क्या है" ।

"फिर अब आपका क्या होगा ? परेश ने पुछा ।

"मेरी आत्मा के संस्कार और बल के अनुरुप प्रकृति मेरे लिये कोई गर्भ निधारित करेगी और फिर मेरा जन्म होगा । जिससे मैं आगे और ज्ञान अर्जित कर सकुं और अपनी आत्मा को तृप्त कर उसे मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर कर संकु ।

"मोक्ष क्या हैं ?

"मुझे नही पता, क्योंकि अपने जीवनकाल में उस ओर मेरा कभी ध्यान ही नही गया था इसलिये वैसे संस्कार मेरी आत्मा में नही हैं । मगर आने वाले कुछ दिनो में तुम्हे पता लग जाने वाला हैं ।

"कैसे ? परेश ने पुछा ।
"आने वाली घटनाओं से दो चार होते हुए तुम उससे परिचित होने वाले हो" ।
परेश ने उसे गौर से देखा और पुछा, --"क्या आप ईश्वर के दर्शन कर सकते हैं ?
"नही, अभी तो मैं कर्म बंधन से बंधा हुँ और बार बार जन्म लेना मेरी नियंति हैं परन्तु मोक्ष होने पर शायद ये संभव हो सके ।
"आप फिर जन्म कब लेगें ?
"मुझे नही पता, ये प्रकृति तय करेगी" ।
"तब तक आप क्या करेगें" ।
"बस एसे ही भटकता रहुंगा और भौतिक जगत के क्रियाकलाप देखता रहुंगा । हाँ, तुम्हारे आसपास रहुंगा और जो हो सका तुम्हारे लिये करुंगा । अपने जिवित रहते जो मैं तुम्हारे लिये नही कर सका शायद अब वो संभव हो सके । वो काम जो मैं पुर्ण नही कर सका वो अब तुम करने का प्रयास कर रहे हो इसमें तुम्हारी मदद करके भी मैं अपना ही काम पुर्ण करुंगा । इस तरह मैं तुम्हारे आसपास ही रहुंगा और समय समय पर तुम्हारी मदद करुंगा" ।
"क्या आप पर किसी का नियंत्रण नही हैं ?
"जैसा तुम सोचते हो वैसा कोई नियंत्रण नही । जैसे कोई मालिक याँ उच्च स्तरिय नियंत्रक नही हैं । परन्तु अपने कर्म और सस्कारों की सीमा रेखा हैं । कर्म और ज्ञान जितना प्रबल होता हैं । मोक्ष का मार्ग उतना ही प्रकाशवान रहता हैं और आत्मा उसपर बढ़ती चली जाती हैं । परन्तु मेरे कर्म और ज्ञान इतने प्रबल नही हैं कि मैं अधिक गति कर सकुँ इसलिये मैं प्रकृति के वश में हुँ । जैसे बच्चा जब तक बड़ा नही हो जाता तब तक अपने माँ-बाप के भरोसे रहता वैसे ही आत्मा अगर अधिक ज्ञान से परिचित नही हैं तो प्रकृति के भरोसे रहती हैं । इस तरह प्रकृति मेरे अधिक ज्ञान को उपलब्ध होने अथवा मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर होने तक मुझे गर्भ उपलब्ध करवाती रहेगी और मैं जन्म दर जन्म ज्ञान को अर्जित करता हुआ मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर रहुंगा" ।
इसके बाद परेश में कुछ पुछने के लिये मुँह खोला ही था कि अचानक अनील की छवि धुंधली पड़ने लगी और फिर वो लुप्त हो गई । परेश की समझ में कुछ नही आया और कुछ पलों तक वो युँही उस ओर देखता रहा जंहा से अभी अभी अनील की छवि गायब हो गई थी । फिर उसने साध्वी शतावरी को आवाज लगायी परन्तु उसका भी कोई उत्तर नही मिला । कुछ देर युँही वो विचार करता बैठा रहा फिर उठकर खिड़की के पास आ गया । बाहर की हवा के ठंडे झोकों ने उसे कुछ राहत दी और वो पिछले घटनाक्रम को भूल पाने में समर्थ हो सका तभी उसका ध्यान कमरे में आ गई बिजली की तरफ गया । उसे पता ही नही चला था कि बिजली कब आ गई थी । उसने वॉल क्लाक की तरफ देखा रात के तीन बजने का आ गये थे । कुछ देर एसे ही वो खिड़की पर खड़ा रहा और बाद में आकर बिस्तर पर लेट गया, तुरन्त ही उसे नींद आ गई ।

सुबह दस बजे के आसपास उसकी नींद खुली और अगले आधें घन्टे में वो नित्यकर्म से निवृत हो गया । उसने इंटरकॉम पर नाश्ते का ऑर्डर दिया और लैपटॉप लेकर बैठ गया जब तक नाश्ता आता उसने कल रात की सारी घटनाएं 'पेजमेकर' की फाइल बनाकर उसमें नोट कर ली । तब तक नाश्ता भी आ गया । आलू के पराठें और दही के नाश्ते के बाद उसने इंटरकॉम पर अपना बिल बनाने को रिसेप्शनिस्ट से कह दिया । उसका इरादा अब ऋषिकेश जाने का था और उसे अब साध्वी शतावरी से मिलना था । वो समझ गया था कि अब वापस हरिद्वार आने की जरुरत नही पड़नी थी इसलिये कमरे को बुक रखने की कोई तुक नही थी । उसका अंर्तमन कह रहा था कि अब कपिल घाटी की यात्रा के लिये उसे आगे बढ़ना था ।

बहरहाल करीब बारह बजे वो ऋषिकेश जाने वाले टैक्सी स्टैंड की तरफ बढ़ा । उसने अपना थोड़ा सा सामान समेट लिया था और उसे एक छोटे से एयर बैग में डालकर उसे कन्धे लटका लिया । उसने एक प्रायवेट टैक्सी हायर की और चल दिया ऋषिकेश की ओर । रास्ते में ही उसे एक्सटू के ऑफिस से बताया गया कि अनील की लाश मोर्ग से क्लेम कर ली गई थी और अब उसके अंतिम संस्कार की तैयारी चल रही थी । सुनकर उसे थोड़ी राहत मेहसूस हुई । वो सोचने लगा-- क्या अब अनील की आत्मा उससे सम्पर्क करेगी ? इस समय अनील की आत्मा कंहा होगी ? शायद वो अपने अंतिम संस्कार को देख रही होगी । जो भी हो, एक अच्छा काम हो रहा था ।

करीब एक घन्टे की यात्रा के बाद वो ऋषिकेश पहुँच गया । टैक्सी ने उसे स्टैन्ड पर छोड़ दिया था । अब उसे गिरी महाराज का आश्रम ढूढना था । उसने पुछताछ की तो पता चला कि उसे रिक्षा से 'पांडव गुफा' तक जाना पड़ेगा । जंहा उसे गिरी महाराज के आश्रम का पता चलेगा । उसने अंदाजा लगाया कि पांडवगुफा से भी कंहि आगे गिरी महाराज का आश्रम होना चाहिये । उसने रिक्षा पकड़ा और पांडवगुफा की ओर चल दिया । करीब बीस मिनिट में रिक्षा ने उसे पांडव गुफा पहुँचा दिया । वंहा टूरिस्ट आसपास घूम रहे थे । उसने पुछताछ की तो पता चला कि नदी के किनारे किनारे आगे बढ़ते रहने से उसे गिरी महाराज का आश्रम दिखाई दे जायेगा । उसका अंदाजा सही साबित हुआ था ।

पांडवगुफाएं एक टूरिस्ट स्थान था और गंगा नदी के किनारे था । वो धीरे धीरे नदी के किनारे किनारे चलने लगा । हल्की सी धूप छायी हुई थी मगर गर्मी नही हो रही थी । वो शायद गंगा नदी के शीतल जल का कमाल था कि धूप के बावजूद भी गर्मी नही लग रही थी । वैसे भी मई का महिना था इसलिये ग्रीष्म ऋतु अभी अपने जलाल पर नही थी । आधे घन्टे तक वो कन्धे पर एयर बैग लटकाये चलता रहा । अब उसे थकावट मेहसूस होने लगी थी । तभी किसी ने उसे नाम लेकर पुकारा ।

वो करीब ही एक घने छायादार पेड़ के नीचे खड़ी थी । वो कोई जवान सुन्दर स्त्री थी । धूप में उसकी काया सोने की तरह चमक रही थी । वो परेश की ओर ही देख रही थी । जब पुकारने पर परेश ने उसे देखा तो उसने हाथ उठाकर करीब आने का इशारा किया और फिर से कहा--"परेश यंहा चले आओ" । परेश मन्त्रमुग्ध सा उसकी ओर बढ़ा । जैसे जैसे परेश उसके करीब पहुँचने लगा उसकी रुपराशि और निखरने लगी । उसने गेरुए रंग का एक ही लंबा सा कपड़ा पहन रखा था । जो था तो लंबे लबादे जैसा परन्तु वो लबादा नही था । उसने उपरी शरीर को ढकने के लिये उस लंबे कपड़े के दोनो कोनो को गर्दन के पीछे गाँठ के रुप में बाँध रखा था । फिर कमर के पास भी उस कपड़े के दो कोने निकले हुऐ थे और उन्हे भी कमर के पीछे कंहि गाँठ के रुप में बाँधा गया था । कमर के नीचे साड़ी की दो-तीन तहों की तरह वो कपड़ा उससे लिपटा हुआ था और नीचे पैरों तक लटक रहा था । कमर पर उसने काली रस्सी जैसा भी कुछ लपेट रखा था । गले में सफेद स्फटिक की माला पहन रखी थी । वो सफेद स्फटिक की माला उसके सोने जैसे शरीर पर किसी सफेद नग की तरह उस पर जड़ी मालूम होती थी ।

वो करीब पाँच फुट पाँच इंच जितनी लंबी जान पड़ती थी । उसका शरीर किसी एथलीट की तरह कसा हुआ दिखता था । किसी साधारण स्त्री का इस तरह शरीर को कसा हुआ बनाने के लिये वर्षो तक कसरत करते रहना आवश्यक था । फिर भी कोई स्त्री उसके जैसा शरीर नही बना सकती थी क्योंकि कसरत करते रहने से शरीर गठा हुआ और सख्त दिखता हैं परन्तु यंहा वैसी कोई बात नही थी । उसके शरीर में कोमलता और स्निग्धता स्पष्ट दृष्टिगोचर होती थी । उसका शरीर कोमलता और कसावट का एसा तालमेल था कि उसकी मिसाल ढूढना परेश को मुश्किल सा लगा ।

परेश जब उसके करीब पहुँचा तो उसके नथुनों में चंदन जैसी कोई सुगंध घुसती सी लगी । वो साफ साफ किसी सुगंध को मेहसूस कर रहा था मगर उस सुगंध को पहचान नही पा रहा था । उसे इस बात का स्पष्ट आभास हुआ कि वो सुगंध उसके शरीर से ही फुट रही थी । दूर से परेश को उसके शरीर की रंगत सोने जैसी पीली लग रही थी परन्तु अब जब वो उसके बिल्कुल करीब आ गया था तो देख पाया कि वो केसर के रंग जैसी दिखती थी । उसका चेहरा फिल्मी अभीनेत्रियों जैसा था मगर उन्हे

भी उसके साथ खड़ा कर दिया जाये तो वे भी उसके सामने फीकी लगने लगे । उसका चेहरा किसी चट्टान अथवा पत्थर पर उकेरा गया नपा-तुला चेहरा जान पड़ता था । मगर उसके चेहरे में और चट्टान पर उकेरे गये चेहरे में फर्क ये था कि वो उकेरे गये बेजान चेहरे के मुकाबले पुर्णयंता जीवंत चेहरा दिखता था । उसकी आँखें दो बड़ी बड़ी सिप्पियों जैसी दिखती थी । उसके होंठ दो गुलाब की पंखुड़ियों की तरह आपस में लिपटे जैसे दिखाई देते थे ।

उसके बालों को देखकर लगता था कि वर्षो से उसमें कंघी नही की गयी थी जिसके फलस्वरुप उसके बाल घुंघराले हो गये थे । घुंघराले बाल भी एसे कि उनमें एक रुपये के सिक्के के बराबर बड़े बड़े घुंघर पड़ गये थे । हालाकि वो बाल एकदम साफ-सुथरे और सुनहरी रंगत लिये काले चमकीले थे और बड़े बड़े घुंघरों में बंटे हुए थे तथा हल्के-फुल्के रेशम की तरह इधर-उधर बिखरे दिखाई देते थे परन्तु चेहरे पर नही झूलते थे । मगर जब हवा चलती थी तो उसके बाल आवारा लटों की तरह उसके चेहरे पर इधर-उधर बिखर जाते थे और जब हवा थमती थी तो फिर वो कायदे से उसके चेहरे से हट जाते थे । मानो उन्हे पता था कि जब हवा नही चल रही हो तो कायदा तोड़ना उचित नही था ।

परेश उसके करीब पहुँचकर मन्त्रमुग्ध सा उसे देखता रह गया । उसके एक हाथ में कमडंल था और दूसरे हाथ में त्रिशूल था । वो उसे कोई देवी सी जान पड़ती थी । उसके माथे के ठीक बीचों बीच जंहा आज्ञाचक्र होता हैं वंहा बार बार एक नीली आभा सी प्रकट होती थी । उसे देखकर परेश को एक बार भी मन में कोई बुरा विचार नही आया था । परेश अपनेआप ही उसे आदरपुर्ण दृष्टि से देखने लगा । फिर जब उसे सुध आयी तो उसने हाथ जोड़कर उससे धीमि आवाज में परन्तु प्रश्नसूचक दृष्टि से देखते हुए पुछा-- आप----?

वो परेश को देखकर बहुत अपनेपन से मुस्करायी और मंदिर की घंटियों जैसी आवाज में बोली--"शतावरी" ।

परेश के मुँह से बोल ना फुटा । वो अभी तक उस साध्वी के व्यक्तित्व के प्रभाव से स्वंय को मुक्त नही कर पाया था । उसकी समझ में नही आ रहा था कि उसे क्या बोलना चाहिये । वो बस एसे ही बेवजह उसे निहारता रहा । उसने आजसे पहले एसी किसी स्त्री को नही देखा था । वो तय नही कर पा रहा था कि वो साक्षात देवी का अवतार थी याँ कोई बहुत साधनायुक्त साध्वी । हालाकि उस साध्वी के सान्निध्य से उसे बहुत सुकून मिल रहा था और वो चाहता था कि वो बस एसे ही उस साध्वी के साथ रहे और कोई विघ्न ना प्रकट हो । पता नही वो अपनेआप में कैसी शाँती मेहसूस कर रहा था कि वो चाहता था कि ये समय यंही ठहर जाये और वो शाँती उसे सदा के लिये हासिल हो जाये ।

फिर उसे किसी भी कार्य का अथवा समय का भान नही रहा । वो स्वंय को दुनियाँ से अलग-थलग और बहुत भाग्यशाली मेहसूस कर रहा था । वो चाहता था कि वो उस साध्वी के पैरों में गिर पड़े और सदा अपने साथ रखने के लिये उससे प्रार्थना करने लगे । आजसे पहले कभी उसने स्वंय को इतना सन्तुष्ट और सुखी मेहसूस नही किया था । वो पता नही किन ख्यालों में खो सा गया और दूर कंहि आकाश में स्वंय को उड़ता हुआ सा मेहसूस करने लगा । उसे अब इस बात की जरा भी पर्वाह नही थी कि उसका अब क्या होगा अथवा उसे अब क्या करना था । वो अपने आपको उस साध्वी के हवाले कर देना चाहता था । फिर वो जो चाहे उसके साथ करे । उसे अपने सामने एक नयी दुनियाँ सी दिखाई देने लगी थी । जिसमें सुकून था, सुख था और आनंद था । ना जाने उसे कौनसा आनंद सा मेहसूस हो रहा था । वो पता नही कितनी ही देर तक एसे ही खोया रहा । फिर अचानक उसे अपने माथे पर किसी के हाथ का स्पर्श मेहसूस हुआ । तुरन्त ही उसकी तन्द्रा भंग हुई । उसने सामने देखा तो उसे साध्वी शतावरी खड़ी दिखाई दी । वो कह रही थी --"कर्मयोगी को सदा जाग्रत रहना चाहिये, परेश" ।

परेश ने स्वंय को सभांला और स्वंय को नियंत्रित करता हुआ याद करने लगा कि वो किसी तन्द्रा में खो गया था और साध्वी शतावरी ने अपने हाथ के स्पर्श से पता नही क्या जादू किया कि उसकी तन्द्रा भंग हुई थी । उसने फिर साध्वी को हाथ जोड़े और आदरयुक्त स्वर में बोला--"आप चमत्कार हैं देवी, आजसे पहले मैंने कभी एसा मेहसूस नही किया था" ।

उस साध्वी ने फिर उसे अपनेपन से देखा और बोली--"योग करो, ध्यान करो, साधना करो, शिवा से कहना पड़ेगा कि तुम पर ध्यान दे" ।

परेश को आश्चर्य हुआ, वो बोला--"शिवा ?

वो हंसते हुए बोली--"तुम्हारा गुरु, शिवानंद" ।

परेश को और आश्चर्य हुआ उसने उससे पुछा--"आप उन्हे जानती हैं ?

वो ममत्व से भरकर बोली--"मेरा बच्चा हैं, बहुत मेहनत करता हैं" ।

परेश हैरानी से भरकर बोला--"मगर वो तो आपसे बहुत बड़े हैं, पचास वर्ष से भी ज्यादा उनकी उम्र हैं" ।

उसने मुस्कराकर परेश को देखा और किसी बच्चे को समझा रही हो इस अंदाज में उससे बोली--"पगले, मेरी उम्र एक सौ दस वर्ष हैं और मैं उसे चार सौ वर्षो से जानती हुँ" ।

"क्या" । परेश की हैरानी का ठिकाना नही रहा । वो सोच में पड़ गया । अध्यात्म, योग, साधना और ध्यान में क्या इतनी शक्ति थी कि भौतिकी के सारे नियम पलट कर रख दे । और ये साध्वी कह रही हैं कि उसकी उम्र एक सौ दस वर्ष हैं जबकि वो पिछले चार सौ वर्षो से उसके गुरु को जानती थी । ये क्या रहस्य हैं ? ये क्या चमत्कार हैं ? उम्र एक सौ दस वर्ष और जानकारी चार सौ वर्षो की ? एसा कैसे हो सकता हैं ?

"साधना से सब हो सकता हैं" । साध्वी बोली । जैसे उसने परेश के विचार पढ़ लिये हो ।

फिर वो एक तरफ को चल दी और परेश से बाली--"आओ, उधर बैठ जाते हैं । तुम थक गये हो, थोड़ा आराम हो जायेगा और बातें भी हो जायेगी" ।

परेश ने अपना एयरबैग संभाला और उसके पीछे पीछे चलते हुए उससे पुछा--"क्या आप भी थक जाती हैं ?

साध्वी ने बिगैर पीछे मुड़े उसे छोटा सा उत्तर दिया--"नही, तुम्हारे लिये कह रही हुँ" ।

फिर वे दोनो किनारे की एक चट्टान पर जा बैठे । जो गंगा की बहती धारा में आधी डुबी हुई थी । उसपर आराम से बैठ जाने के लिये बहुत जगह थी । उसके ठीक पीछे देवदार का एक घना वृक्ष था जिसकी छाया उसपर पड़ रही थी । जिससे उसपर बैठे व्यक्ति के उपर धूप नही पड़ती थी । वैसे अब धूप भी इतनी प्रबल नही थी कि उन्हे उसका ताप मेहसूस हो । परेश बड़े मजे से उस चट्टान पर बैठ गया और साथ ही बैठ गई साध्वी शतावरी । परेश ने अपना एयरबैग भी पास में रख लिया । साध्वी ने अपना त्रिशूल और कमंडल भी रख लिया ।

फिर साध्वी ने अपने कंमडल में से दो बड़े बड़े आलू निकाले और एक परेश की ओर बढ़ाती हुई बोली--"भूने पहाड़ी आलू हैं, खाओगे ? तुम्हारे दही और पराठें तो कब के हजम हो चुकें होगें" ।

परेश ने अब आश्चर्य करना छोड़ दिया था । वो समझ गया था कि प्रबल साधिका इस साध्वी के सामने भौतिकी के नियम नही चलते थे । इसलिये जब उसने उसके सुबह किये नाश्ते दही और पराठों के विषय में कहा तो उसने आश्चर्य नही किया परन्तु उससे पुछा --"आप ये भी जानती हैं ?

वो गंभीर स्वर में बाली--"जबसे तुम हरिद्वार आये हो तब से मैं तुम्हारी हर बात जानती हुँ" ।

परेश ने उससे आलू ले लिया और खाने लगा । साध्वी ने भी वो आलू खाया । फिर दोनो ने गंगा की बहती धारा से पानी पिया और हाथ पोछतें हुए वापस अपनी अपनी जगह पर बैठ गये । तब साध्वी बोली--"अब शायद तुम्हे चाय पीने की ईच्छा हो रही होगी" ।

"जी" । परेश को मानना पड़ा, क्योंकि सचमुच ही उसे चाय पीने की ईच्छा हो रही थी ।

साध्वी ने उसे आश्वस्त करने वाली दृष्टि से देखते हुऐ कहा--"आ रही हैं" ।

तभी दूर से एक सन्यासी सा लगने वाला व्यक्ति हाथ में चाय की प्याली लाता दिखा और तुरन्त ही पास भी पहुँच गया और परेश को उसके नाम से पुकारता हुआ बोला--"परेशजी, आपकी चाय" । अब परेश को फिर आश्चर्य करना पड़ा । वो हैरानी से सोचने लगा कि उस आदमी को उसका नाम कैसे पता चला और चाय की ईच्छा के लिये उसने अभी बस सोचा ही था कि चाय आन पहुँची थी ।

साध्वी ने फिर उसके विचार पढ़ लिये और उससे बोली--"साधक दूसरे के विचार आसानी से पढ़ लेते हैं और अपने विचार दूसरों तक पहुँचा भी देते हैं । तुमने जब चाय की ईच्छा की तो मैंने उसे तुरन्त ही जान लिया था और फिर उसे विचारों के जरिये केशवानंद तक पहुँचा भी दिया और तुम्हारी चाय आ गई" । कहकर साध्वी ने उस सन्यासी जैसे लगने वाले व्यक्ति की ओर इशारा किया जो परेश के लिये चाय लेकर आया था ।

परेश ने केशवानंद से चाय की प्याली लेकर उसका अभिवादन किया । परेश ने सोचा केशवानंद चाय की एक ही प्याली लाया था इसका मतलब था कि साध्वी चाय नही पीती थी । साध्वी ने तुरन्त उसके विचार पढ़ लिये और वो बोली--"हॉ, मैं चाय नही पीती" ।

परेश ने चाय समाप्त की और खाली प्याली लेकर केशवानंद चला गया और उन दोनो में बातचीत आरंभ हुई ।

बात बहुत पुरानी हैं चार सौ वर्षो से भी पुरानी परन्तु मैंने इसे चार सौ वर्षो के आसपास ही सुनी थी । ये तब की बात हैं जब तान्त्रिकों और योग के साधकों के बीच मतभेद चल रहे थे । तान्त्रिक, तन्त्र का अस्तित्व बचाने के प्रयास में लगे थे और योग के साधक निरंतर लोकप्रिय होते जा रहे थे । ये तब हुआ जब प्रतिद्वंद के चलते तन्त्र की बहुत सी शाखाएं कुकुरमुत्तों की तरह उभर आयी थी ।

तब एसे बहुत से मठ हुआ करते थे और सिध्द पीठ भी जोकि साधकों के साधना स्थल थे । ये मठ और सिध्द पीठ हिमालय के अंर्तगत दूर दूर तक फैले हुऐ थे । साधक योग और साधना से सिध्दियां प्राप्त करते थे और तान्त्रिक वाम मार्ग से सिध्दियां प्राप्त करने में लगे थे । साधक स्वंय पर और काम पर नियंत्रण करके सिध्दियां प्राप्त करते थे और तान्त्रिक काम की पराकाष्ठा पर पहुँच कर सिध्दियां प्राप्त करते थे । दोनो में से कोई भी कम नही था परन्तु दोनो के मार्ग अलग अलग थे । साधक स्वच्छ स्थानों पर तपस्या करते थे और तान्त्रिक शमशानों में साधना करते थे । दोनो ही ब्रह्माण्ड की मूल शक्ति से अपने आपको मिला लेना चाहते थे ।

साधक निरंतर योगाभ्यास से और ध्यान से 'कुण्डलिनी' जाग्रत कर षटचक्र भेदन करते थे और आज्ञाचक्र के भेदन से अपने 'तीसरे नेत्र' को खोलते थे । जिससे वे प्रकृति के रहस्य समझने में समर्थ हो जाते थे । फिर आगे वे निरंतर साधनारत रहकर विभिन्न सिध्दियां प्राप्त करने में अपना समय लगाते थे । इसके बाद वे आत्मा और शरीर में भेद करने में सफल हो जाते थे और अपनी सूक्ष्म आत्मा को शरीर से अलग कर प्रकृति को गहराई से समझने का प्रयास करते थे और विभिन्न लोकों की यात्राएं करते थे ।

जबकि तान्त्रिक 'शव साधना' से अपनी सिध्दियां हासिल करते थे । पहले पहले वे शमशान में विभिन्न शवों पर साधना करते थे । फिर जब वो इसमें पारंगत हो जाते तो अपने ही शरीर को शव बनाकर उसपर साधना करते थे । काम, क्रोध और मोह को रुपांतरित करके वे आत्मसाक्षात्कार, करुणा और त्याग में बदल देते थे और उन्ही को साधना का मार्ग बनाकर वे सिध्दियां प्राप्त करते थे । उनके लिये 'शीव' और 'जीव' में कोई फर्क न था । उनकी मान्यता अनुसार ईश्वर की बनाई कोई भी वस्तु अपवित्र नही हैं । जिस 'काम' से 'जीव' की उत्पती होती हैं वो त्यागने की वस्तु नही हैं ।

दरअसल तन्त्र की धारणा ही ये हैं कि तंत्र शुध्दी-अशुध्दी में फर्क नही करता हैं, उसके लिये शुभाशुभ का विभाजन ही अशुध्दी हैं । जब प्रत्येक चीज और पदार्थ अथवा हर वस्तु और मनुष्य, ईश्वर की रचना हैं तो शुध्दी और अशुध्दी कंहा से आ गई । तंत्र में समरसता हैं, स्त्रीत्व हैं, समर्पण हैं और जो कुछ भी हैं उसी के साथ जीवन हैं परन्तु उसे समझते हुए उससे पार हो जाना हैं । जबकि योग में, साधना में शुध्दता अति आवश्यक हैं । मन की शुध्दता, परिभाषा, नियम और अनुशासन ही योग हैं । योग में लड़ाई हैं अपने मन से, पुरुषार्थ हैं । जिसे सिध्द करना हैं ।

हालाकि दोनो ही शारीरिक बंधनों से पार हो जाने की बात करते हैं और लक्ष्य भी समान हैं परन्तु मार्ग अलग अलग होने से वैचारिक मतभेद हो गये । दर्शन कहता हैं कि दोनो ही 'शीव' के अर्धनारीश्वर के प्रतिक हैं । तन्त्र उसका नारी स्वरुप हैं और योग उसका पुरुष स्वरुप हैं । नारी उसका शक्ति रुप हैं और पुरुष उसका शीव रुप हैं । अगर दोनो ही मिल जाये तो स्वंय शीव ही प्रकट हो जाये । परन्तु पहले इन दोनो को ही शीव और शक्ति के अपने अपने शीर्ष को छू लेना हैं तभी आगे की कल्पना की जा सकती हैं ।

बहरहाल एसे ही मतभेदों के साथ उस युग में अपनी अपनी लक्ष्य साधना चल रही थी । योग, अन्नमय शरीर और मनोमय शरीर पर नियंत्रण करके आत्म साक्षात्कार का प्रयत्न करता था । उसके अनुसार अन्नमय शरीर भौतिक सुखों की लालसा बढ़ाता हैं जिससे प्रतिदिन ही मनुष्य शारीरिक सुखों के साधन इक्टठा करने में जुटा रहता हैं और अंतत अत्याधिक शारीरिक सुख शरीर को गतिहीन बना देते हैं । शरीर के गतिहीन हो जाने के बाद अपने आप ही 'मन' गति करने लगता हैं और विचार उभरने लगते हैं । फिर जो सुख शरीर नही ले पाता हैं मन के विचार उसे मस्तिष्क में आकृति देने लगते हैं और मनुष्य ख्यालों में विचारों में वो सुख पाने का प्रयत्न करता हैं जो शारीरिक रुप से वो नही ले पाता हैं । इससे शारीरिक और मानसिक विकृतियां उत्पन्न होने लगती हैं । जिससे मृत्युभय प्रकट होता हैं और मनुष्य दुखी होता हुआ मृत्यु के मुख में समा जाता हैं । जबकि मृत्यु जैसा कोई दूसरा सुख नही हैं । इसलिये कि अपने जीवनकाल में मनुष्य जिस भौतिक जगत के मायाजाल में उलझा रहता हैं मृत्यु उसे उससे निकलने का फिर मौका देती हैं ताकि फिर उसका जन्म हो और वो इस भौतिक जगत के मायाजाल से निकलने के मार्ग तलाश कर सके ।

योगी इस अन्नमय शरीर पर नियंत्रण करते हैं और स्वंय ही इसे गतिहीन अथवा स्थिर बनाने का प्रयास करते हैं ताकि मन गति करने लगे और फिर वे मन को गतिहीन बनाने का प्रयास करते हैं । मन में कोई विचार ना हो तो ये मन के स्थिर हो जाने की स्थिति हैं । यंही से ध्यान आरंभ हो जाता हैं । ध्यान उसे शरीर और मन के बाद के विज्ञानमय शरीर में ले जाता हैं । यंहा उसका अपनी चेतना से साक्षात्कार होता हैं जो शरीर और मन से स्वतंत्र हुई होती हैं । यही चेतना उसे प्रकृति के रहस्य दिखाने का कार्य करती हैं । प्रकृति के रहस्यों को समझने के बाद योगी आनंदित होता हैं और आनंदमय शरीर में निवास करने लगता हैं । यह शरीर विज्ञानमय शरीर के बाद योगी को उपलब्ध होता हैं । इससे योगी सदा ही आनंद में रहता हैं । इसी के बाद 'आत्मा' से साक्षात्कार होता हैं और 'ईश्वरीय सत्ता' के दर्शन होने लगते हैं । ये भौतिक बंधनो से पार हो जाने की स्थिति हैं ।

तन्त्र कहता हैं शरीर को स्थिर करने की आवश्यकता नही हैं इसलिये कि शरीर ही तो आतंरिक उर्जाओं के प्रकट होने का माध्यम हैं । क्योंकि अगर तुम क्रोधित होते हो तो शरीर की आंतरिक उर्जा को प्रकट करने का प्रयास करते हो इसलिये क्रोध को रोकने का प्रयास ना करो परन्तु उसके प्रति पुर्णरुपेण सजग रहो इसलिये कि कभी भी क्रोध, करुणा में बदल सकता हैं । शरीर स्थिर रहा और क्रोध दब गया तो करुणा भी कभी प्रकट नही होगी । क्रोध, करुणा का बीज हैं । क्रोध और करुणा एक ही सिक्के

दो पहलू हैं । क्रोध नही तो करुणा भी नही और शरीर नही तो दोनो नही । 'काम' के प्रति भी तन्त्र की एसी ही धारणा हैं । काम अथवा संभोग एसी उर्जा हैं जिससे 'जीव' की उत्पत्ती होती हैं । इसे दबाने से अथवा रोक देने से जीव उत्पत्ती की एक प्रबल उर्जा को रोक देने जैसा हैं । और फिर काम के साथ ही प्रेम भी जुड़ा हुआ हैं । काम और प्रेम एक ही सिक्के के दो पहलू हैं । काम हैं तो प्रेम हैं, प्रेम हैं तो काम हैं । दोनो को अलग अलग करके नही देखा जा सकता हैं । परन्तु काम दब गया तो प्रेम भी कभी प्रकट नही होगा और बिगैर प्रेम के ईश्वरीय सत्ता कैसी ? काम अथवा संभोग के दौरान ही तो एक स्थिति आती हैं जब व्यक्ति सबकुछ भूल जाता हैं और अंनत आनंद में खो जाता हैं । बस उसी क्षण को पकड़ लेना हैं और भौतिक जगत से पार हो जाना हैं ।

तन्त्र शरीर के स्थिर होने को नही मानता बल्कि शरीर को आंतरिक उर्जाओ के प्रकट होने का माध्यम मानता हैं । जब भी काम, क्रोध और मोह नामक उर्जाएं प्रकट हो तो उनके प्रति पुर्णरुपेण सजग रहो और जैसे ही वे प्रकट हो उन्हे और प्रकट होने दो और एक समय एसा आयेगा जब वे पुरी तरह प्रकट हो जायेगी तो उनके रंगरुप बदल जायेगें । काम, जीवरुपी उत्पत्ती के उस मार्ग में बदल जायेगा जंहा से आत्मा का आगमन और निर्गमन होता हैं । यंही तो आत्मसाक्षात्कार होगा । क्रोध, करुणा की परिभाषा सिखायेगा और मोह, त्याग का मतलब बतायेगा । तन्त्र, भौतिक जगत में रहकर इससे पार होने की एसी घोर तपस्या हैं जिससे पार हो जाने के बाद 'अघोर' का जन्म होता हैं ।

उस समय के तान्त्रिक जगत के वाम मार्गी रात्रिकालीन साधना शिवीरों का आयोजन करते थे । जिसमें स्त्री-पुरुष दोनो ही सम्मिलित होते थे और 'शिव-शक्ति' की पुजा अर्चना करते थे । यंहा 'काम' के माध्यम से साधना सिखायी जाती थी । किसी सिध्द साधक को शिव रुप में मंच पर बैठाया जाता था और उसके साथ किसी अर्स्पश्य, अविवाहित स्त्री को उसके साथ शक्ति रुप में बैठाया जाता था । फिर इन्हे शिव-शक्ति के रुप में पुजा जाता था और हवन सामग्री के तौर पर सुगंधित जड़ी-बूटिया जलाई जाती थी । फिर नृत्य का आयोजन होता था । साधना शिवीर में आये और दूसरे नर-नारी इसमें पुर्ण सहयोग करते थे अथवा अपनी साधना के प्रति पुर्ण रुप से समर्पित होते थे । प्रसाद के रुप में शराब जैसी नशीली चीजें भी परोसी जाती थी । सारे वातावरण को कामुक बना दिया जाता था । किसी को किसी प्रकार कोई बंधन नही था । कोई भी पुरुष किसी भी स्त्री से रमण कर सकता था । केवल शिव के साथ बैठी शक्ति से स्वंय शिव रुप बैठा साधक ही रमण कर सकता था ।

जब रात अपने पुर्ण घनत्व से घिर जाती थी तब ये साधक भी पुर्णरुप से साधना में रम जाते थे अब ये साधक निर्वस्त्र हो जातें थे । अब कभी भी यौन समागम का दौर चल सकता था । बिल्कुल उसी समय सारा नृत्यगान रोक दिया जाता था और साधना के विषय में बताया जाता था । तब ये बताया जाता था कि 'काम' से जिस साधना को सिध्द करने के लिये वे लोग यंहा जमा हुए हैं । उस काम को जानने का यही एक समय हैं । अगर आपके मन-मस्तिष्क पर काम की कामुकता का प्रभाव हैं तो ये जान लें कि ये वो 'काम' नही हैं जिससे साधना की सिध्दी होगी । तन्त्र की साधना में सजग रहना पहली शर्त हैं और अगर 'काम' के दौरान मन-मस्तिष्क कामुकता से भरा हुआ हैं तो सजगता कंहा से होगी । तब फिर काम का जागरण कैसे होगा ? इसलिये कि भावनाएं और विचार कामुकतापुर्ण नही हैं तो 'काम' प्रकट कैसे होगा ? यंही से तन्त्र की घोर साधना का संकेत मिलता हैं । तन्त्र कहता हैं, 'काम' का मुख्य केन्द्र 'नाभि' हैं, मन-मस्तिष्क नही हैं । अगर मन-मस्तिष्क से सजग रहकर 'काम' का जागरण हो सके तो ये साधना में काम आने वाला 'काम' हैं । साधना आयोजन के दौरान बीच में इस प्रकार के साधना निर्देश देने के बाद उन साधकों को तलाशा जाता था जो इस प्रकार से 'काम' का जागरण कर सकते थे । एसे स्त्री-पुरुष उस साधना में समागम कर सकते थे । उसी समागम से वे आत्मसाक्षात्कार का अनुभव करते थे । मंच पर बैठे 'शिव-शक्ति' स्वरुप स्त्री-पुरुष को एसी साधना के लिये दक्ष किया जाता था । उदाहरण स्वरुप वे इसे कर दिखाते थे और दूसरे आये स्त्री-पुरुष इससे सीखते थे ।

इस तरह सुबह की पहली किरण के साथ ये आयोजन समाप्त हो जाता था । उस समय योग और तन्त्र के बीच अदृष्य प्रतियोगिता सी चल रही थी । इसलिये तन्त्र के अधिक से अधिक प्रचार के लिये अधिकाधिक आयोजन होने लगे । इसमें विभिन्न तान्त्रिक समुदायों के विभिन्न साधक लगे हुए थे । फिर इसमें एक बदलाव आया और इसमें कुछ भ्रष्ट लोगों का समावेश हो गया ।

तब के साधन संपन्न परन्तु एय्याश लोगों ने इसे अपनाना आरंभ कर दिया । अब इसमें व्याभिचार का बोलबाला होने लगा । कुकुरमुत्तो की तरह विभिन्न तान्त्रिक और आयोजक उभर आये । ये तान्त्रिक और साधक नही थे परन्तु ईन्हे अपने आकाओं के लिये अय्याशी और व्याभिचार के अडडे स्थापित करने थे । फलस्वरुप विभिन्न स्थानों पर विभिन्न आयोजन होने लगे और इनमें अय्याशी और व्यभिचार पनपने लगा । इधर उधर के गाँवों, कस्बों और शहरों से स्त्रीयाँ, युवतियाँ और महिलाओं को बहला-फुसला कर आयोजन में सम्मिलित करने के लिये लाया जाने लगा । साधना और आयोजन के नाम पर इनसे साधन संपन्न परन्तु अय्याश लोग यौन शोषण करने लगे । अब बड़े बड़े घरों की नौजवान लड़कियाँ साधना शिविरों में आने लगी और यौन शोषण और काम वासना का बाजार गर्म हो गया ।

हाहाकार मच गया । इज्जतदार लोग बदनाम होने लगे, घर-परिवार बिखरने लगे, समाज टूटने लगे । सब तान्त्रिकों पर उंगलियाँ उठाने लगे । तन्त्र बदनाम होने लगा । एसे में तान्त्रिक जगत को विरोध के लिये उठना पड़ा । अब विभिन्न तान्त्रिक समुदाय एसे आयोजनों का विरोध करने लगे जिनमें साधना के नाम पर काम वासना का बोलबाला था । एसे इज्जतदार, साधन संपन्न लोगों के नाम सामने आने लगे जिन्हौने इसे चला रखा था । ये सब तान्त्रिकों के किये हो रहा था इसलिये अब वे बड़े बड़े धन्ना सेठ जो इन सबके लिये जिम्मेदार थे । तान्त्रिकों के खिलाफ हो गये ।

योग और तन्त्र की अदृष्य प्रतियोगिता समाप्त हो गई और अय्याश धन्ना सेठों और तान्त्रिकों के बीच ठन गई । सच्चे तन्त्र साधक और झूठें तन्त्र साधकों में लड़ाइयाँ होने लगी । इससे झूठे साधक और आयोजक घबरा गये और अपने अपने शिविर छोड़कर भागने लगे । सच्चे तान्त्रिकों ने अपनी विद्या का भी ईस्तेमाल किया जिससे झूठे साधक और आयोजक बीमार पड़ने लगे और मृत्यु के मुख में समाने लगे । इससे अय्याश धन्ना सेठों को चिंता हुई और उन्हौने अपने झूठे साधकों और आयोजकों को हथियारबंध अगंरक्षक मुहैया करवा दिये । इसके बाद ये लडाई खूनी संर्घष में बदल गई ।

पहले सच्चे तान्त्रिक इन काम वासना के अड्डों पर जाकर उनके साधकों और आयोजकों को विद्या संबंधी चुनौती देते थे और लोगों को उनकी असलियत बताते थे । लेकिन अब एसा होना मुश्किल था । क्योंकि जैसे ही कोई तन्त्र का सच्चा साधक इन अड्डों पर जाता था । अय्याश धन्ना सेठों के नियुक्त अंगरक्षक उन पर हमला बोल देते थे । फिर इसमें कई सच्चे तान्त्रिक मारे गये और तान्त्रिक जगत में मायुसी छा गई । जब अय्याशधन्ना सेठों ने अपनी योजना को कामयाब होते देखा तो उन्हौने सच्चे तान्त्रिकों को ढूंढ ढूंढकर मारना शुरु कर दिया । उनके हथियारबंध हत्यारे एसे तान्त्रिकों की तलाश में रहने लगे जो कभी भी उनका विरोध कर सकते थे । तब एसे तान्त्रिकों को भी बेवजह मार डाला गया जो याँ तो उस समय साधना में व्यस्त थे अथवा जिनका इस लड़ाई से कुछ लेना देना भी नही था । शमशान में बैठे साधना रत तान्त्रिकों की गर्दनें काट डाली गई, राह से गुजरते तान्त्रिकों को गंडासों और तलवारों से गोद डाला गया । इस तरह कुछ ही समय में उस क्षेत्र से तान्त्रिकों का सफाया हो गया ।

तन्त्र की एसी दुर्गती की गुँज सारे देश में गुँजी । बचे खुचे तान्त्रिकों का त्राहीमाम सुनाई देने लगा । लगा जैसे तन्त्र अब इस देश से समाप्त हो जायेगा । और अंत में ये गुँज कंचनजंगा की पहाड़ियों में भी गुँजी । कंचनजंगा की पहाड़ियों में साधना करते उस समय के सर्वोच्च तान्त्रिक चण्डीश्वरनाथ को अपनी साधना से उठना पड़ा और वो क्रोध में आग बबूला होता हुआ हिमालय की तराईयों में पहुँचा ।

कहा जाता था कि चण्डीश्वरनाथ ने तन्त्र की साधना में पराकाष्ठा को छू लिया था । उसने 'टहा' विद्या से षोड़शी देवी को प्रसन्न कर लिया था । वो परलोकों

की यात्रा किया करता था । डाकिनियाँ, शाकिनियाँ और प्रेत उसके दास हुआ करते थे और वो जंहा भी जाता था ये सब उसके साथ चलते थे । उसने अपने शिष्य सोहम अंगरुप को भी हिमालय की तराईयों में बुला लिया था । सोहम अंगरुप उस समय देश के विभिन्न शमशानों में सिध्दियाँ प्राप्त करने में व्यस्त था और सदा किसी सिध्द पीठ की तलाश में रहता था ताकि वो भी अपने गुरु की तरह 'टहा' विद्या को संपन्न कर सके । वो एक मानव कपाल साथ में लेकर चलता था और उसी में अपना खाना पीना खाता था । उसे सोहम अंगरुप से ज्यादा लोग कपालिक अंगरुप के नाम से जानते थे ।

वो एक महाशमाशान था जंहा लोग मृतकों को जलाते थे मगर उससे ज्यादा वंहा तान्त्रिकों के जमघट लगे रहते थे । मृतकों को जलाने वालों से ज्यादा वंहा तन्त्र की साधना करने वालों की भीड़ रहती थी । हरिपुर रियासत के करीब बहती अलकनंदा की एक छोटी सी धारा के किनारे ये महाशमशान स्थित था । करीब एक किलोमीटर के क्षेत्रफल में वो शमशान फैला हुआ था । उसके ठीक बीचोंबीच 'काली माँ' की विकराल खड़ी हुई स्हाय महामुर्ती स्थापित थी । काली माँ की इस मुर्ति के एक हाथ में रक्त रंजित नरमुण्ड था और उसकी रक्त से सनी लाल लाल लपलपाती जुबान बाहर को निकली हुई थी । उसकी बड़ी बड़ी आखें क्रोध से भरी जान पड़ती थी । एसा लगता था कि किसी भी समय वो काली माँ की मुर्ति जीवंत हो उठेगी और मृत्यु का ताँडव आरंभ कर देगी । रात के समय किसी भी साधारण आदमी वो मुर्ति दिखा दी जाये तो उसे कई रातों तक नींद ना आये । परन्तु अघोरी, कपालिक और तान्त्रिक उसी की पुजा-अर्चना करते थे । एसा कहा जाता था कि प्रत्येक शनीवार को आने वाली विशेष अमावस्या को वंहा नरबली दी जाती थी । वंहा कई महिलायें भी थी जो भैरवीयों और तान्त्रिको के जैसे वस्त्र पहने हुए थी । ये सब अपने अपने ढंग से वंहा अपनी साधना में लीन थे । कई तान्त्रिको के सामने पके हुए मांस के भरे हुए बर्तन रखें हुए थे और साथ में रखी हुई थी शराब की बोतलें । ये लोग साधना में लीन रहते रहते अचानक जाग्रत होते थे और सामने रखे मांस के बर्तन से एक मांस का टुकड़ा उठाते और मुँह में डाल लेते और उपर से शराब का घूँट भर लेते फिर जोर से 'जय माँ भवानी' का जयघोष करते थे । हालाकि वंहा उस समय के कुछ ढोंगी और दिखावा करने वाले तन्त्र साधक भी थे जो उस समय वंहा इसलिये उपस्थित थे और साधना का ढोंग कर रहे थे ताकि अपने आकाओं को दूसरे साधना करने वाले सच्चे साधकों के विषय में बता सकें । उनके आका वे लोग थे जो उस समय तन्त्र साधना के नाम पर वासना और व्याभिचार के अड्डे चला रहे थे और सच्चे तान्त्रिकों को ढूंढ ढूंढकर मारने में लगे थे ।

एसी ही एक रात जब पुर्णमासी को गुजरे कुछ दिन गुजर चुके थे और कृष्ण पक्ष निरंतर बढ़ता जा रहा था और अमावस्या करीब आने को थी । उस महाशमशान में अचानक भयानक शाँती छा गई । हवा रुक गई और नीशाचरों और रात में जाग्रत होन वालों उल्लूओं और चमगादड़ों जैसे पक्षियों की भी आवाजे आना बंद हो गई । एसा लगा जैसे समय अचानक रुक गया हो और कोई अनहोनी होने वाली थी । साधना में लीन तान्त्रिकों और साधकों की साधना भंग हो गई और वे चौंककर आसपास देखने लगे । ढोंगी और दिखावा करने वाले तान्त्रिक अपने भय को कम करने के लिये जोर जोर से 'जय माँ भवानी, जय माँ भवानी' कह कर चिल्लाने लगे । फिर उस शमशान के आकाश पर विभिन्न छायाएं मडंराने लगी । वो एक दो नही ढेरों की तादाद में थी । वंहा जानकार और सच्चे तान्त्रिक उन्हे पहचान गये । वे प्रेतात्मायें थी ।वे जानते थे कि अंतरिक्ष में भटकने वाली ये वो प्रेतात्मायें होती हैं जिन्हे मनुष्य योनि में जन्म नही मिलता था और सैकड़ो वर्षो तक भटकते भटकते वे केवल पृथ्वी पर ही आने को लालायित रहती हैं । मनुष्य शरीर ना मिलने पर केवल मनुष्य के संसर्ग में रहने से भी वे तृप्त होने वाली प्रेतात्मायें थी परन्तु वे अधिक शक्तिशाली नही होती थी । वे अंतरिक्ष में भटकने वाली प्रेतात्मायें इतनी भी शक्तिशाली नही होती थी कि पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण को भेद सकें । अगर पृथ्वी से कोई उनका आवाहन करे तो वे पृथ्वी पर आ सकती थी और ये कार्य कोई सिध्द और जानकार तान्त्रिक ही कर सकता था । उस समय वंहा उपस्थिति किसी भी तान्त्रिक अथवा साधक में इतनी शक्ति अथवा सिध्दी नही थी कि इन प्रेतात्माओं को पृथ्वी पर ला सके । इसलिये वे सब लोग एक दूसरे की ओर देखने लगे और जानने का प्रयत्न करने लगे कि उन प्रेतात्माओं का आवाहन किसने किया था परन्तु सबके ही मुखमंडल पर अज्ञानता के चिन्ह देखकर वे सब भयभीत हो गये । उधर वे प्रेतात्माये निरंतर शमशान के आकाश पर मंडराती रही । फिर उसी वातावरण में नारी हँसी का स्वर गुँजनें लगा । एसे लगा जैसे बहुत सी स्त्रीयाँ हँस रही हों । ये हँसी कुछ विचित्र प्रकार की थी । फुसफसाहट और सिरहन सी पैदा करने वाली वो हँसी भय को और गाढ़ा कर रही थी । जानकार तान्त्रिक जानते थे कि ये हँसी डाकिनियों की हँसी थी । डाकिनियों को कुछ लोग चुड़ैल और डायन भी कहते हैं ।

ये डाकिनियां भी अंतरिक्ष में भटकने वाली प्रेतात्मायें ही होती हैं परन्तु साधारण प्रेतात्माओं से अधिक बलशाली होती हैं । दरअसल ये अंतरिक्ष के सर्वाधिक तामसिक तत्वों से बनी होती हैं । अथवा एसा कहें कि जो आत्मायें मृत्यु के बाद मनुष्ययोनि में जन्म नही ले पाती हैं अथवा जो अवगति से मरने वाले लोग होते हैं और उनके मरने के बाद उनके वंशज और स्वजन उनके लिये पिण्डदान और श्राध्द नही करते हैं । तो फलस्वरुप एसी आत्मायें सदा के लिये अंतरिक्ष की प्रेतात्मायें बन जाती हैं और अंतरिक्ष के सर्वाधिक तामसिक पदार्थो में आश्रय लेती हैं । ये तामसिक पदार्थ उनमें एसी शक्ति भर देते हैं कि ये किसी भी प्रकार के अणुओं में अपना आश्रय बना सकती हैं और किसी भी पदार्थ अथवा स्त्री-पुरुष का रुप धारण कर सकती हैं । इन्हे भी मनुष्य के संसर्ग की लालसा रहती हैं । परन्तु ये भी पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण को भेद नही पाती हैं और कोई विशेष सिध्दी प्राप्त तान्त्रिक ही इन्हे अंतरिक्ष से बुला सकता हैं और अपने मनमाफिक कार्य करवा सकता हैं । इन डाकिनियों की उपस्थिति का आभास भी वंहा साधना कर रहे जानकार तान्त्रिकों और साधकों को हो गया था । उनका भय और बढ़ गया उन्हे लगा कि जैसे प्रेतात्मओं और डाकिनियों का आगमन किसी विशेंष तान्त्रिक अथवा साधक के प्रकट होने का संकेत था । उनका संदेह गलत भी नही था आने वाले कुछ ही क्षणों में वंहा अघोरी चण्डीश्वरनाथ प्रकट होने वाला था । ये प्रेतात्मायें और डाकिनियां उसकी सुरक्षा करती थी और उनकी दासता में थी ।

फिर कुछ ही देर में जैसे आकाश से धरती पर उतर आयी हों इस तरह कई सुंदर युवतियां वंहा प्रकट हो गई । ये सुन्दर युवतियां डाकिनियां ही थी और काली माँ की मुर्ति के सामने आने से बच रही थी । माँ की मुर्ति से एक निर्धारित फांसला बनाकर वे इधर उधर घूमनें लगी । वे अधिकतर माँ की मुर्ति के पीछे वाले हिस्सें में घूम रही थी । माँ की मुर्ति के सामने जाने से वे बच रही थी । वे डाकिनियां ज्ञान और शुभ सस्कारों से रहित थी इसलिये माँ के सामने जाने की उनकी हिम्मत नही थी । वे सब तामसिक तत्वों से बनी राक्षसियां थी और राक्षसों और दैत्यों का संहार करने में माँ का जवाब नही था । माँ उनके लिये साक्षात कालस्वरुप थी इसलिये जब भी कोई प्रेत अथवा डाकिनी, माँ की मुर्ति के सामने पड़ जाती तो भय से चित्कार कर उठती थी । एसे में उस शमशान में रुदन का स्वर गुँजने लगता था ।

डाकिनियों की फुसफुसाहट भरी और सिरहन पैदा करने वाली हँसी और वातावरण में गुँजता रुदन का स्वर फिर उस शमशान में फैली उदास और भयानक शाँती किसी को भी डरा देने के लिये काफी थी । एसे ही वातावरण में एक पारदर्शी हाथी शमशान के मुख्य द्वार से आता दिखाई दिया । ये हाथी पारदर्शी इसलिये था कि उसका केवल रेखाचित्र ही उस अंधेरे में दिखाई दे रहा था । एसा लगता था कि मानों वो हाथी वंहा के अंधेरे का ही एक हिस्सा था । हाँ, उसके नुकिले और लंबे लबें चमकिले सफेद दाँत बराबर दिख रहे थे । उसकी लाल लाल आँखें भी अंधेरे में चमक रही थी । फिर भी उसका पुर्ण ठोस शरीर नही दिखाई दे रहा था । वो चिघाड़ता हुआ आगे बढ़ा चला आ रहा था । उस पर सवार था चण्डीश्वरनाथ । चण्डीश्वरनाथ, एक भयप्रद अघोरी । सात फुट लंबा और तवे से भी ज्यादा उसका काला भुंजग शरीर । उसके लाल लाल होंठ एसे लगते थे जैसे अभी अभी वो किसी का रक्तपान करके आया हो । उसके दाढ़ी और सिर के बाल बढ़ते बढ़तें जट्टाओं में तब्दिल हो चुके थे और वो जट्टाएं उसके सिर से एसे लटक रही थी मानो रस्सियां हों । कमाल से था कि ये अंदाजा लगाना मुश्किल था कि उसका शरीर अधिक काला था याँ उसके सिर और दाढ़ी के बाल अधिक काले थे । उसने कानों में अग्नि की तरह चमकती किसी लाल धातु की बालियां पहन रखी थी । वो शायद युरेनियम धातु से बनी मालूम होती थी । पता नही उस काल में उसने वो धातु कंहा से प्राप्त की थी । एसे ही दो कड़े उसने अपनी कलाईयों में भी डाल रखें थे । उसके गले में इंसानी हड्डियों की एक माला पड़ी हुई थी । लाल

मूगें के पत्थरों की भी उसने एक माला गले में डाल रखी थी । उसने अपने निचले शरीर को ढकने के लिये बस एक लाल कपड़ा पहन रखा था जो किसी लंगोटी की तरह उसपर लिपटा हुआ था । हाथी पर बैठे बैठे अपनी अधखुली आँखों से वो सारे शमशान का नजारा करने लगा । हाथी, काली माँ की मुर्ति के सामने आकर रुक गया । उसने जोर जोर से अपनी सूंढ और गर्दन को इंकार की सुरत में हिलाना आरंभ कर दिया । एसा लगता था मानों वो कह रहा था कि वो काली माँ की मुर्ति से आगे नही जा सकता था । फिर तुरन्त ही चण्डीश्वरनाथ हाथी की बगल में खड़ा नजर आया । पता नही वो कब और कैसे हाथी से नीचे उतर आया था । वो साक्षात दंडवत के अंदाज में काली माँ के चरणों में पेट के बल लेट गया और जोर से चिल्लाया--"जय माँ भवानी, जय माँ शक्ति" । वंहा उपस्थित सभी तान्त्रिक, भैरवींया और साधक सहमें हुए से उसे देख रहे थे । उसके बाद चण्डीश्वरनाथ माँ के चरणों से उठा और वंहा उपस्थित लोगों की ओर उन्मुख होकर खरखराती आवाज में चिल्लाया--"जय कालभैरव" । उसके जयघोष से जैसे सभी को होश आया और वो सब चण्डीश्वरनाथ के जयघोष के प्रतिउत्तर में चिल्लाये--"जय काल भैरव" । इसके बाद सब दौड़कर चण्डीश्वरनाथ के करीब आये और उसकी चरण वंदना करने लगे ।

वे सब उसे जानते थे और उसके नाम से काँपते भी थे । साधारण लोग क्या उससे तो भूत-प्रेत और पिशाच भी काँपते थे । इसलिये कि चण्डीश्वरनाथ उस समय का सबसे भीषण अघोरी था जिसने कई नरबलियां देकर अपनी साधना को पुर्ण किया था । लोक-परलोक की यात्रा करना उसके लिये साधारण बात थी । उसने तन्त्र जगत की कई मान्यताओं को तोड़ दिया था और अपनी तरफ से कई नई मान्यतायें स्थापित की थी । एसा कहा जाता था कि वो राजा समुन्द्रगुप्त के जमाने से साधना में लीन रहा था और जब अब उसे 'टहा' विद्या हासिल हो गई थी तब वो प्रकट हुआ था । उसकी आयु का किसी को पता नही था परन्तु एक हजार वर्ष से उसकी चर्चा सुनी जाती रही थी । परकाया प्रवेश का भी वो विशेषज्ञ माना जाता था । भारत में उसे और उसकी विद्या को कोई विशेष सम्मान ना मिलने से वो शुब्ध था और क्रोधित भी था । सुना जाता था कि वो विदेश में अपनी विद्या का ईस्तेमाल करता था । वंहा के जाने माने वैज्ञानिक जब कभी कोई नया प्रयोग करते थे तो चण्डीश्वरनाथ उनकी काया में प्रवेश कर उन्हे प्रकृति के रहस्य बताया करता था और इससे उनके प्रयोग सफल हो जाते थे । हालाकि इससे वो वैज्ञानिक समझते थे कि प्रयोग उनकी वजह से सफल हुआ हैं जबकि उनके विचारों और उनकी सोच को चण्डीश्वरनाथ प्रभावित करता था । एसे कई बार चण्डीश्वरनाथ ने वंहा उनकी मदद की थी और इस तरह पश्चिमी जगत आनन-फानन विकसित बन गया और भारत विकासशील बना रहा । इससे चण्डीश्वरनाथ के अहम को शाँती मिलती थी । वो ये सिध्द करने का प्रयास करता था कि भारत ने उसकी अनदेशी कर अच्छा नही किया था । अन्यथा आज भारत उन पश्चिमी विकसित राष्ट्रों में से एक होता । हिटलर के समय कई वैज्ञानिकों के मर जाने के बाद चण्डीश्वरनाथ के शिष्य उनके शरीर में प्रवेश कर कई वर्षो तक उनके रुप में कार्य करते रहे थे और अंतत उन्हौने उन्हे अणुबम और मिसाइल बनाना सिखा दिया था । बाद में वो उन्ही वैज्ञानिकों के रुप में वे सब अमरीका जा पहुँचें और उसके लिये कार्य करते रहे थे । अपने शिष्यों में एक गलत धारणा को स्थापित करने में चण्डीश्वरनाथ सफल रहा था । कि भारत में तन्त्र का सम्मान नही था और तान्त्रिकों की पुछ नही थी । इस तरह तन्त्र क्या हैं -- ये बताने के लिये उसने पश्चिमी जगत को सहायता देना आरंभ कर दिया था और आने वाले समय में उसके शिष्य ये कार्य भलीभाँति करते रहे थे । अपने समय की सोने की चिड़िया रहा भारत धीरे धीरे पश्चिम जगत से पिछड़ने लगा और चण्डीश्वरनाथ की योजना सफल रही । हालाकि ये कितना सच था ये वो ही बेहतर जानता था । बहरहाल उसकी सोच इसी तरह की थी ।

दरअसल तन्त्र और योग में ये भलीभाँति जाना जा सकता हैं कि सूक्ष्म शरीर और सूक्ष्म जगत क्या हैं ? स्थूल शरीर अथवा स्थूल जगत के अलावा चार और शरीर और जगत होते हैं । परमाणु जगत, त्रसराणु जगत, सूक्ष्मातिसूक्ष्म जगत और अंत में फिर परमाणु जगत । जंहा इन अणुओं से सूक्ष्म जगत का निर्माण होता हैं वंही इन अणुओं से हमारे पाँच शरीरों का भी निर्माण होता हैं । ये अन्नमय शरीर, मनमय शरीर, विज्ञानमय शरीर और आनंदमय शरीर के रुप में हमारे अंदर ही बसे हुए हैं । इस तरह जो कुछ ब्रह्माण्ड में हैं वही कुछ हमारे शरीर में हैं । इससे शास्त्रों में कही गयी ये उक्ति भी सच सिध्द हो जाती हैं । जिसमें कहा गया हैं--'यथा ब्रह्मण्डें, तत् पिण्डें' अर्थात जो कुछ ब्रह्माण्ड में हैं, वही सबकुछ पिण्ड में भी हैं । पिण्ड अर्थात--'हम' अथवा, सूर्य, चन्द्र और तारे । अंतिम परमाणु जगत उस अंतिम परमाणु से बनता हैं जो ब्रह्माण्ड की एकमेव विद्युत शक्ति से बनता हैं जो सब जगह विद्यमान हैं । हमारे शरीर में ये आत्मा रुप में हैं ।

ये बात सदा ध्यान में रखना कि प्रत्येक समाप्त हुई चीज का रुप बदल जाता हैं । जैसे वृक्ष समाप्त होने के बाद लकड़ी में बदल जाता हैं । लकड़ी समाप्त होने के बाद कोयले में बदल जाती हैं, कोयला समाप्त होने के बाद राख में बदल जाता हैं और अंत में राख समाप्त होने के बाद सूक्ष्म अणुओं में बदल जाती हैं और वातावरण में घुलमिल जाती हैं । इसी के अनुसार मनुष्यमात्र के साथ भी यही प्रक्रियाऐं हो सकती हैं । यही परमाणु जगत, त्रसराणु जगत, सूक्ष्मातिसूक्ष्म जगत और अंत में फिर परमाणु जगत हैं । योग और तन्त्र में इन्ही को समझा जाता हैं और इन्ही के लिये साधना की जाती हैं । बहरहाल परमाणु जगत को छोड़कर हम अपने स्थूल शरीर के साथ अन्य जगत में नही जा सकते हैं । इसके लिये फिर मन को साधा जाता हैं जो कि अगले त्रसराणु जगत में ले जाता हैं । फिर विज्ञानमय शरीर को साधा जाता हैं जोकि हमे सूक्ष्मातिसूक्ष्म जगत में ले जाता हैं । फिर आनदंमय शरीर को साधा जाता हैं जो हमे अतिंम परमाणु जगत में ले जाता हैं । इसके बाद फिर एक ही शक्ति बच जाती हैं जोकि सम्पुर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त हैं । उसे 'ईश्वर' की सत्ता कह लो याँ फिर वो शक्ति कह लो जोकि सबकुछ चला रही हैं । उस जगत में भ्रमण करने के लिये केवल 'आत्मा' को ही प्रवेश की आज्ञा हैं । आत्मा की इस स्थिति को कहते हैं--'निर्वाण अथवा मोक्ष' ।

प्रत्येक जगत के अपने कायदे कानून हैं और जो जगत जितना सूक्ष्म हैं वो उतना ही अधिक शक्तिशाली हैं । इस तरह परमाणु जगत से त्रसराणु जगत अधिक शक्तिशाली हैं । त्रसराणु जगत से सूक्ष्मातिसूक्ष्म जगत अधिक शक्तिशाली हैं और सूक्ष्मातिसूक्ष्म जगत से अंतिम परमाणु जगत अधिक शक्तिशाली हैं । सबसे सर्वश्रेष्ठ और शक्तिशाली हैं--'आत्मा' । आत्मा इन सभी जगतों में भ्रमण कर सकती हैं । योगी और तान्त्रिक आत्मा के जरिये ही इन जगतों में भ्रमण करते हैं । आत्मा के सहयोग से ही ये लोग उन जगतों के नियम और शक्तियों को पहचानते हैं और जनसाधारण को इनसे अवगत कराते हैं । इसके लिये योगी और तान्त्रिक जन्मों-जन्मों तक तपस्या करते हैं अथवा साधना करते हैं ।

चण्डीश्वरनाथ ने यही सब पश्चिमी सभ्यता को उपलब्ध करवाया । ये सब वो इसलिये कर रहा था क्योंकि भारत में तन्त्र को विशेष मान्यता नही मिली और इसे वो अपना अपमान समझ रहा था । भारत को नीचा दिखाने के लिये ही उसने अपनी शक्ति को पश्चिम को उपलब्ध करवाया और उसे उन्नत बनाया । परन्तु जिस बात का डर था वो ही हुआ भी । भारत में तन्त्र को बहुत ही गूढ़ और घोर साधना समझा जाता हैं । जिसे आम आदमी नही कर सकता हैं । तन्त्र का 'पंच-मकार' सिंध दात बहुत ही गूढ़ सिध्दांत हैं । इस साधना में--'मांस, मुद्रा, मीन, मैथुन और मदिरा' को प्रयोग में लाया जाता हैं । इसे ही पंच-मकार कहा जाता हैं । ये पंच-मकार इतने आकर्षक हैं कि साधना के दौरान किसी का भी मन डोल सकता हैं और साधक पथभ्रष्ट हो सकता हैं । इसके लिये कठोर साधना की नही बल्कि घोर साधना की आवश्यकता पड़ती हैं । इस घोर साधना को कर लेने के बाद ही व्यक्ति अघोर बनता हैं और 'अघोरी' कहलाता हैं ।

चण्डीश्वरनाथ के पश्चिम प्रेम के कारण वंहा ये साधना अलग अलग रुपों में विकसित हुई और पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ी परन्तु जिसका डर था वही हुआ । अर्थात तन्त्र को पुर्ण रुप से समझे बिगैर वंहा इसे अपनाया गया । पंचमकार का वंहा भरपुर उपयोग किया गया । जिससे अपराध, बेरहमी, क्रूरता, गलाकाट प्रतिस्पर्धा और महायुध्दों की बाढ़ आ गई । कई विकृतियां भी उत्पन्न हुई-- ड्राक्युला, वैम्पायर और म्युटेन्ट जैसे खूनी पिशाच और अर्धप्रेत भी पैदा हो गये । इन सबमे तन्त्र की शक्तियां तो थी परन्तु इन्हे उसके उपयोग का पता नही था । इसी कारण से 'आदि शंकराचार्य' ने इसका विरोध किया था और जनसाधारण को तन्त्र से दूर रहने का निर्देश दिया

था । दुनियां को बर्बादी की आग में झोंक कर चण्डीश्वरनाथ अब तन्त्र को बचाने फिर हिमालय की तराईयों में आया था । साधक जगत में अथवा तन्त्र जगत में चण्डीश्वरनाथ का भरपुर विरोध किया जाता था । परन्तु उसे किसी बात की चिंता नही थी । उसने सिध्दियां प्राप्त कर रखी थी और उससे वो तन्त्र का रखवाला बनकर दिखाने में लगा था ।

उस रात उस महाशमशान में कत्ल-ए-आम हुआ । वंहा जो ढोंगी और झूठे साधक अथवा तान्त्रिक थे । उन्हे वो डाकिनियां ढूंढढूंढकर मारने लगी । अचानक वे हवा मे उठ जाते और हवा में ही तड़पने लगते और कुछ देर बाद बेजान होकर काली माँ की मुर्ति के सामने फेंक दिये जाते थे । चण्डीश्वरनाथ ये बात अच्छी तरह जानता था कि कुछ झूठे और दगाबाज लोगों की कारस्तानी से तन्त्र की हानि हो रही थी । अपनी सिध्दियों के बल पर उसने तुरन्त ही वंहा उपस्थित एसे झूठे और ढोगी साधकों अथवा तान्त्रिकों पहचान लिया था । फिर उसने कुछ मन्त्र पढ़कर डाकिनियों को आदेश दिया कि वे उन झूठे और ढोंगी साधकों को समाप्त कर दे । बस फिर क्या था-- डाकिनियां तुरन्त ही अदृष्य हो गई और उन साधकों के सामने जा खड़ी हुई । डाकिनियों के लिये वो कोई बड़ी बात नही थी । और देखते ही देखते वे ढोगी साधक हवा में उछले और तड़पने लगे । डाकिनियों ने अपनी शक्ति से उन्हे हवा में उठा लिया था । फिर हवा में ही उनका गला दबा दिया और जब तक उनके प्राण नही निकल गये तब तक उन्हे नही छोड़ा । फिर उन्हे काली माँ की मुर्ति के सामने उछाल दिया । हर गिरते बेजान शरीर के साथ चण्डीश्वरनाथ काली माँ का जयघोष करता था । इस तरह चार पुरुषों और दो महिलाओं के प्राण डाकिनियों ने ले लिये । फिर अचानक वंहा भगदड़ जैसा महौल बन गया ।

वंहा बहुत से तान्त्रिक और साधक थे परन्तु सभी हिम्मत वाले अथवा दृढ़ निश्चयी नही थे । उनमें से कई अभी तन्त्र की गहराई को भी नही समझ पाये थे । इस तरह जो दृढ़ निश्चयी, हिम्मती नही थे और नये थे । वे सारा नजारा देखकर घबरा गये । उन्हे समझ नही आया कि उन चार पुरुषों और दो महिलाओं को क्यों मारा गया । हालाकि वे ये समझ गये कि इसमें चण्डीश्वरनाथ की मर्जी शामिल थी । परन्तु वे उसके प्रयोजन को नही समझ पाये और घबराकर वंहा से भागने लगे । उन्हे लगा कि चण्डीश्वरनाथ सभी को मारने वाला था । इससे चण्डीश्वरनाथ क्रोधित हो उठा । उसने सोचा एसे कच्चे और निश्चय के निर्बल तान्त्रिको का तन्त्र में क्या काम-- उसने तुरन्त ही फिर डाकिनियों को आदेश दिया । अबकि बार डाकिनियों ने उन्हे मारा नही बल्कि जिवित ही उन्हे काली माँ की मुर्ति की ओर उछाल दिया । काली माँ की मुर्ति के सामने खड़े चण्डीश्वरनाथ के हाथ में तुरन्त ही एक फरसा प्रकट हुआ और बिना कुछ विचार किये उसने इन गिरते हुए शरीरों की बली माँ को देनी आरंभ कर दी । जो भी शरीर काली माँ के समक्ष गिरता चण्डीश्वरनाथ 'जय माँ भवानी' का जयघोष करता और फिर 'खच्च' की आवाज होती और उस गिरे हुए शरीर की गर्दन धड़ से अलग हो जाती । एसा दसियों लोगों के साथ हो गया और फिर वंहा उपस्थित सभी साधक जड़वत हो गये । अब नातो कोई भाग रहा था और नाही कोई कुछ प्रतिक्रिया कर रहा था । उध ार काली माँ की मुर्ति के सामने कटे हुए सिरों और बेजान धड़ों का ढेर लग गया । फिर चण्डीश्वरनाथ ने उन जड़वत् लोगों की ओर देखा और दहाड़ता हुआ बोला--"तन्त्र की शान को उन लोगों ने नही---उसने हवा में अपनी उगंली उठाई, उसका इशारा उन लोगों की ओर था जो लोग तन्त्र के नाम पर वासना और व्याभिचार के अड्डे चला रहे थे ।---इन जैसे नपुंसको ने बट्टा लगाया हैं" । कहते हुए उसने हिकारत भरी दृष्टि से उन बेजान पड़े सिरों और धड़ों को देखा ।

इसके बाद वंहा बाकि बचें साधकों ने फिर उसके चरण छुए और जोर से 'जय काल भैरव' का जयघोष किया । चण्डीश्वरनाथ का क्रोध कुछ कम हो गया और वो प्रसन्न नजर आने लगा और बोला--"सजा उन चांडालों को भी मिलेगी । जो तन्त्र के साथ खेलेगा वो चण्डीश्वरनाथ का जानी दुश्मन होगा और मौत के सिवा उसका कंहि ठौर नही होगा" । अब सबकी समझ में आ गया कि चण्डीश्वरनाथ क्या चाहता था । इससे उन सबकी जान में जान आयी और उन लोगों ने चण्डीश्वरनाथ को प्रसन्न करने के लिये फिर जय काल भैरव का जयघोष किया ।

इसके बाद चण्डीश्वरनाथ ने उस महाशमशान में अपना डेरा जमा लिया । उस समय के वंहा उपस्थित साधक उसकी सेवा में लग गये । काली माँ की मुर्ति के आगे लग गये सिरों और धड़ों को सबने अदृष्य होते देखा और वातावरण में खचर-खचर का स्वर गुँजने लगा । ये चण्डीश्वरनाथ के बुलावे पर आये प्रेत और पिशाच थे जो उन लाशों को खा रहे थे परन्तु कोई देख नही पा रहा था । उनके लाशों को खाने से वो खचर-खचर की आवाजे वंहा गुँज रही थी । फिर वंहा सामुहिक रुदन की आवाजें गुँजने लगी । ये रोने की आवाजें उन आत्माओं की थी जो अभी अभी चण्डीश्वरनाथ के हाथो दुर्गती को प्राप्त हुई थी । उनके शरीरों की दुर्गती हुई थी इसलिये अब उन आत्माओं का प्रेत योनि में भटकना निश्चित हो गया था । अपनी इस दुर्गती पर वे आत्माएं केवल रुदन ही कर सकती थी । इस रुदन को चण्डीश्वरनाथ ने भी सुना और सुनकर उसने एक भयंकर अट्टहास किया और शून्य में देखता हुआ बोला--"तुम लोग इसी लायक हो" । इसके बाद उसने फिर कोई मन्त्र पढ़ा । फलस्वरुप शून्य अथवा वातावरण में उठापटक की आवाजें गुँजने लगी । अपने मन्त्र से चण्डीश्वरनाथ ने अपनी डाकिनियों को निर्देश दिया था कि वे उन आत्माओं को दूर भगा दे । वे डाकिनियां उन आत्माओं को वंहा से खदेड़ने लगी जिससे वंहा वो उठापटक की आवाजे हो रही थी । फिर कुछ देर बाद वंहा शाँती छा गई । जिससे पता चलता था कि चण्डीश्वरनाथ की डाकिनियों ने उन आत्माओं को दूर खदेड़ दिया था । कुछ पलों बाद वंहा फिर डाकिनियों की फुसफुसाहट और सिरहन पैदा करने वाली हंसी गुँज रही थी । सुबह भी होने वाली थी और सारी रात्रि में हुए नरसंहार के बाद अब वंहा शाँती स्थापित होने जा रही थी । तमस अर्थात अंधेरे का राज अब समाप्त होने का भी समय आन पहुँचा था । सूर्यदेव के आगमन का संकेत होने लगा था । राजा सूर्यदेव अपनी राजसिकता के साथ प्रकट होने वाले थे । सारी रात तामसिकता के खौफनाक खेल के बाद अब तामसिकता का विलिन हो जाना सहज ही था ।

उस काल में तन्त्र के नाम पर वासना और व्याभिचार के सोलह अड्डे चल रहे थे । जिन्हे वंहा के जाने माने आँठ लोग चला रहे थे । इन लोगों ने आपस में ये दो-दो का बंटवारा कर रखा था । ये आँठ लोग उस समय के साधन सपन्न लोग थे । वे वंहा की विभिन्न रियासतों के छोटे छोटे राजा, गढ़ीयों के ठाकुर और धनी व्यापारी थे । उन्हौने अपने सेवको को इस काम पर लगा रखा था । जो रात्रि के समय तन्त्र अथवा वाममार्ग के नाम पर सामुहिक संभोग का आयोजन करते थे । इसके लिये इन साध ान सपन्न लोगों के दूसरे सेवक विभिन्न गाँवों, कस्बों और शहरो से भैरवी बनाने के नाम पर नौजवान लड़किया, महिलायें और किशोरियों को वंहा लाते थे । फिर उन्ही के और सेवक विभिन्न क्षेत्रों से विभिन्न लोगो को धन के एवज में संभोग के लिये उस आयोजन में आमंत्रित करते थे । इस तरह धन देकर उस संभोग आयोजन में शामिल होना आसान हो जाता था । तब के पुरुषो को विभिन महिलाओं और युवतियों से संभोग का लालच इन आयोजनों में शामिल होने को ललचाता था और इन अड्डों को निरंतर बढ़ावा दे रहा था । इसमें मांस, मदिरा का भी खुलकर उपयोग होता था । बहरहाल इस तरह तन्त्र के नाम पर वो वैश्यालय धड़ल्ले से चल रहे थे ।

लेकिन फिर तन्त्र का असली जादू प्रकट हुआ । अब इन अड्डों में तोड़फोड़ का सिलसिला आरंभ हुआ । अचानक इन अड्डो पर पत्थर बरसने लगे । बर्तन टूटने लगे । वंहा उपस्थित लोग बेवजह आपस में झगड़ने लगे । वंहा लायी गई युवतियां और किशोरियां भूत चढ़ गया हो इस तरह झूलने लगी । संभोग के समय उतारे गये कपड़े अचानक गुम होने लगे । आसपास के पेड़ों से चिंगारियां प्रकट होने लगी और पेड़ अचानक टूटकर गिरने लगे । कई बार इन अड्डो की छतें टूटकर गिर गई, छत पर लटक रहे फानुस और सजावटी सामान गिरने लगे । शराब के मर्तबान अपनेआप उछल उछलकर नाचने लगे । नतिजतन घबराहट फैलने लगी और उनके संचालक अपने आकाओं के पास दौड़े । उनके आकाओं ने कुछ विशेष तन्त्र के जानने वालों को बुलाया और वो सब दिखाया । उन तन्त्र के जानने वालों ने सब देखा और उन्हौने बताया कि ये सब प्रेतलीला थी । उन्हौने इसका उपाय भी किया और सारे अड्डो को अभिमन्त्रित कर दिया जिससे कोई प्रेत वंहा प्रवेश ना कर सके ।

उन तन्त्र के जानकारों ने सही अंदाजा लगाया था कि वो प्रेतलीला थी । वे सब चण्डीश्वरनाथ की दासता वाले प्रेत थे जो उन अड्डो पर उत्पात मचा रहे थे ।

चण्डीश्वरनाथ ने उस महाशमशान में अपना अनुष्ठान आरंभ कर रखा था । उसी के फलस्वरुप उसकी दासता वाले प्रेत उसके निर्देश पर वंहा उत्पात मचा रहे थे । जब उन अड्डो के मालिको ने अड्डो को अभिमन्त्रित करवा दिया तो चण्डीश्वरनाथ के प्रेत उसके पास वापस लौटने लगे । उन प्रेतो की एक निश्चित सीमा थी और वे उतने शक्तिशाली नही थे कि किसी अभिमन्त्रित स्थान को लांघ सके । ये देखकर चण्डीश्वरनाथ ने एक जोरदार अट्टहास किया और बोला--"अच्छा, तो अब मुझे तन्त्र से हराओगे, लो अब देखो खेल" । उसने मन्त्र पढ़ा और फिर जोरदार अट्टहास किया । अब डाकिनियों की बारी थी ।

डाकिनियां उन प्रेतों से अधिक बलशाली थी । उन अड्डो पर अब पहले से ज्यादा जोरदार उत्पात होने लगे । डाकिनियां वंहा किसी के भी शरीर में घुसकर उनसे उटपटांग हरकते करवाने लगी । संभोग के दौरान नग्न पुरुषों को अचानक बाहर खदेड़ दिया जाता था । नग्न युवतियां, महिलाये बाहर आकर नृत्य करने लगती थी । उनके संचालक जैसे ही उन्हे पकड़कर समझाने का प्रयत्न करते तो उन महिलाओं अथवा युवतियों के शरीरों में घुसी डाकिनियां अचानक उनका गला पकड़ लेती और उनकी हत्या कर देती थी । इस तरह सभी अड्डो के संचालक मारे गये । उन अड्डों के कर्ताधर्ता अथवा वे साधन सपन्न लोग तुरन्त ही समझ गये कि अब मामला गंभीर था । इधर वासना और व्याभिचार के उन अड्डो पर आने की लत के कारण जिन्हे पता नही था कि आजकल वंहा क्या हो रहा था-- तो अन्जाने में वे वंहा आ जाते और डाकिनियां उन्हे भी मार डालती थी । मौत और नरसंहार का एक एसा दौर चल निकला । जिसका अंत तभी हुआ जब वे वासना और व्याभिचार के अड्डे बंद हो गये ।

परन्तु चण्डीश्वरनाथ को इससे भी सब्र नही था वो उन साधन सपन्न लोगों को अपने हाथ से सजा देना चाहता था जिन लोगों ने ये सब आरंभ किया था । उन आँठ साधन सपन्न लोगों ने इसका पता लगाया और जब उन्हे पता चला कि चण्डीश्वरनाथ ये सब कर रहा था तो उन्हे भी अपनी मौत सामने नजर आने लगी । वे अपने अपने घरबार छोड़कर विभिन्न दिशाओं में भाग निकले परन्तु उन्हे चण्डीश्वरनाथ की शक्ति का पता नही था । चण्डीश्वरनाथ उनकी सोच और विचारों पर भी दृष्टि रखता था । उसने उन्हे सरेआम, भरे बाजारों में, मंदिरों में और उनके घरों में घुसकर उन्हे मार डाला । अदृष्य चण्डीश्वरनाथ उनके विचारों अथवा उनकी सोच से उनका पता लगा लेता था और जब भी वे उसके बारे में सोच रहे होते थे चण्डीश्वरनाथ अचानक अपना फरसा लिये उनके सामने प्रकट हो जाता था । फिर फरसे के एक ही वार से उनके सिर धड़ से अलग हो जाते थे । इस तरह वे आँठों साधन सपन्न धनीमानी लोग चण्डीश्वरनाथ के अपने हाथों से मृत्यु के मुख में समा गये । ये सब जनसाधारण में चर्चा का विषय भी बना और लोगों ने चैन की सांस ली । तन्त्र के नाम पर चल रहा एक काला अध्याय समाप्त हुआ ।

जब शतावरी, परेश को ये कथा सुना रही थी और जिस समय की सुना रही थी उससे भी करीब सौ वर्ष पहले की बात हैं । ये बात शतावरी को भी पता नही हैं इसलिये कि ये बात उन महा पुरुषों की हैं जिन्हौने शतावरी के भी जीवनचक्र की रचना में प्रकृति को सहयोग दिया हैं । प्रकृति के साथ सहयोग ही जीवन को सहज बनाने का मूल रहस्य हैं ।

आजके समय से करीब पाँच सौ वर्ष पहले । मान सरोवर का इलाका, हिमपात हो रहा था, चारो ओर बर्फ गिर रही थी । एक नीली रौशनी का बिन्दु इस बर्फबारी में साफ साफ देखा जा सकता था । हालाकि उस उजाड़ बियाबानी और बर्फिले इलाके में उसे देखने वाला कोई नही था । वो बिन्दु उस बर्फबारी में से किसी तितली की तरह उड़ता हुआ सा गुजरता जा रहा था । वो कंहि आगे-आगे और आगे बढ़ता जा रहा था । वो उस मार्ग पर था जंहा आगे कैलाश पर्वत प्रकट होता था । काफी देर उस तरह उड़ता उड़ता हुआ वो बिन्दु एक जगह रुका । यंहा चारो और बर्फ की छोटी बड़ी चट्टाने थी और इस जगह पर किसी का भी भटक जाना सहज ही था । मगर वो बिन्दु उस जगह पर रुका और फिर वो बड़ा होने लगा और मानाकृति में बदलने लगा । कुछ देर बाद उस बिन्दु की जगह एक परम तेजस्वी सन्यासी सा लगने वाला प्रतापी पुरुष खड़ा था । उसके शरीर को ढकने के लिये एक रेशम सा मुलायम कपड़ा उससे लिपटा हुआ था । वो भी उसके कमर से नीचे के शरीर को ढके हुए था । अन्यथा उसका बाकि सारा शरीर नग्न ही था । हालाकि उस बर्फिले इलाके में इस तरह नग्न खड़ा रहना किसी साधारण इंसान के बूते की बात नही थी । कुछ ही देर में उस बर्फ में उसे जम जाना था । परन्तु वो परम तेजस्वी पुरुष बेहिचक और बिगैर किसी ठंड के अहसास के उस इलाके में खड़ा हुआ था । उसका परदर्शी तावें जैसा शरीर उस घने बर्फिले कोहरे में भी किसी अग्नि की तरह चमक रहा था । उसकी लंबी और घनी काली दाढ़ी उसके पेट तक लहरा रही थी । उसके वैसे ही सिर के घने काले केश इस तरह उसके सिर पर उँचें उठते हुए लिपटे हुए थे मानो वो कोई केशों की घनी चोटी हो । हालाकि वो लगता दुबला पुतला था मगर देखने से ही पता चलता था कि उसका शरीर किसी वज्र की तरह मजबूत था ।

दरअसल वो योगीराज शल्यनाथ था । योग साधना के कई आयामों को उसने सफलता पुर्वक सिध्द कर लिया था । योग जगत में उसे लोग 'गुरु भल्लूक' के नाम से भी जानते थे । वो परकाया प्रवेश का सिध्दहस्त योगी माना जाता था । उसकी आयु और उसकी साधना का अंदाजा किसी को नही था । पुराने से पुराने योगी भी उसे जानते थे परन्तु उसके विषय में कुछ भी नही जानते थे । वो उन बर्फ की पहाड़ियों के बीच चलने लगा । उसकी दृढ़ चाल दर्शाती थी कि उसे उस इलाके की खूब जानकारी थी । उसे आसपास के इलाके और बर्फबारी की कोई खास चिंता मालूम नही होती जान पड़ती थी । चलते चलते वो एक बड़ी सी पहाड़ी के पास रुका और आँखें मुँदकर कोई मन्त्र बुदबुदाने लगा । दूर से उस पहाड़ी इलाके का राजा एक काला चीता उसे देख रहा था वो शायद अपने शिकार की तलाश में भटकता हुआ सा वंहा आ गया था । उसने शल्यनाथ को देखकर एक दहाड़ मारी और उसे अपनी उपस्थिति का अहसास कराने का प्रयास किया । परन्तु शल्यनाथ ने कोई प्रतिक्रिया नही की और आँखें मुँदें वैसे ही खड़ा रहा । ये देखकर चीते ने फिर दहाड़ मारी । अब शल्यनाथ ने उसकी तरफ दृष्टि घुमाकर देखा । पता नही चीते को शल्यनाथ की आँखों में क्या दिखाई दिया कि वो दुम दबाकर भाग खड़ा हुआ ।

जिस पहाड़ी के सामने शल्यनाथ खड़ा था उस पहाड़ी में थोड़ी हलचल हुई और फिर देखते ही देखते उसमें एक बड़ा सा द्वार बन गया और शल्यनाथ अंदर प्रवेश कर गया । अंदर वो पहाड़ी पुर्ण रुप से खोखली जान पड़ती थी और गुफा जैसी दिखती थी । वो एक बड़े से हॉल जैसा खाली स्थान था और वंहा परम शाँती छायी हुई थी । पता नही कंहा से वंहा दूधिया रौशनी छायी हुई थी । एक तरफ एक वेदि जैसा स्थान बना हुआ था जिसपर कोई परम शाँत सन्यासी जैसा लगने वाला पुरुष पदमासन की मुद्रा में बैठा हुआ था । वो हड्डियों के कंकाल जैसा दिखता था, उसके केश इत्यादि वर्षो से बढ़े हुए दिखाई देते थे । उसकी आँखें मुँदी हुई थी और वो बहुत धीरे धीरे सांस ले रहा था । एसा लगता था जैसे एक मिनिट में एक ही बार उसका दिल धड़कता था । शल्यनाथ उसके सामने जाकर बैठ गया और आँखें मुँदकर ध्यान में खो गया । फिर पता नही कितनी ही देर तक वो वैसे ही बैठा रहा । गुफा का द्वार कब का बंद हो चुका था ।

दिन बीते याँ फिर रातें बीत गई अथवा तो कई दिन अथवा रातें बीत गई शल्यनाथ उस पदमासन लगाये महापुरुष के सामने बैठा रहा । अंतत एक दिन उस गुफा में दूधिया रौशनी की जगह नीली रौशनी फैल गई और उस पदमासन लगाये महापुरुष ने अपनी आँखें खोली वो अब साधारण ढंग से सासें ने रहा था । उसने अपने सामने बैठे शल्यनाथ को देखा और बोला-- "शल्यनाथ, प्रकृति को अपना कार्य करने दो, तुम क्यों चिंतित होते हो" । उस महापुरुष की आवाज अति गंभीर और गुँज से भरी हुई थी । एसा नही लगता था कि वो कोई हड्डियों के ढाँचें बन गये इंसान की आवाज थी । उसकी आवाज प्रबल रुप से दृढ़ और ठोस थी ।

शल्यनाथ ने आँखें खोली और हाथ जोड़कर वो नम्रता से बोला--"गुरुदेव, मनुष्य मात्र का कल्याण और मार्गदर्शन करना चाहता हुँ" ।

"प्रलय को टालना चाहते हो, शल्यनाथ" । उस महापुरुष की आवाज वंहा गुँजी । "लेकिन प्रलय अटल हैं, तुम्हारे प्रयास उसे थोड़ा और रोक देगें परन्तु वो तुम्हारे याँ मेरे प्रयासों से रुकने वाली नही हैं" ।

"जानता हुँ, गुरुदेव" । शल्यनाथ करुण स्वर में बोला--"मुझे प्रयास करने की आज्ञा दें, गुरुदेव । प्रलय के अंत तक अधिक से अधिक सत्य और धर्म बचा रहें" ।
शल्यनाथ ने उस महापुरुष को गुरुदेव कहा था । इससे लगता था कि वो महापुरुष शल्यनाथ से भी अधिक योगी और सिध्द पुरुष था । वो बोला--"जितना समय इन प्रयासों में लगाओगे उतने समय में तो साधना करके 'सप्तर्षि लोक' पा लोगें और प्रलय से भी अछूते रहोगे, तो फिर ये सब क्यों ?
फिर शल्यनाथ कुछ ना बोला और उसकी आँखों से आँसू बहने लगे । वो वैसे ही हाथ जोड़े उस महापुरुष के सामने बैठा रहा ।
उस महापुरुष की फिर आवाज गुँजी--"मृत्युलोक से मोह रख रहे हो शल्यनाथ, मनुष्य मात्र प्रकृति के दोहन की लालच में प्रलय को स्वंय ही आमंत्रित करता हैं । उसी प्रलय में वो समाप्त होता हैं और फिर उत्पन्न होता हैं फिर प्रलय को बुलाता हैं । ये तो कालचक्र हैं, इसे कुछ समय रोककर भी तुम इसे बदल नही सकते शल्यनाथ" ।
फिर हाथ जोड़े जोड़े ही शल्यनाथ उस महापुरुष के चरणों में लेट गया परन्तु बोला कुछ नही । कुछ देर तक परिस्थिति युँ बनी रही फिर उस महापुरुष ने आँखें मुँद ली और वो ध्यान में खो गया । शल्यनाथ वैसे ही उसके चरणों में लेटा रहा ।
फिर बहुत देर के बाद उस महापुरुष की फिर आवाज गुँजी--"उठों शल्यनाथ, मेरे सामने बैठो" ।
शल्यनाथ तुरन्त उठा और हाथ जोड़कर उस महापुरुष के सामने बैठ गया और उसकी ओर देखने लगा ।
उस गुफा में उस महापुरुष की आवाज गुँजने लगी--"राजा भवानी सिंह के यंहा एक पुत्र होगा, जिसका नाम कीर्ती सिंह होगा । उसकी आत्मा में सूर्यवंश के संस्कार होगें । वो जब बड़ा होगा तो उसका विवाह जिस कन्या से होगा वो अपने गुजरे काल की सिध्द योगिनी होगी । इनका मार्गदर्शन करने से तुम्हारा प्रयोजन पुर्ण हो सकता हैं । परन्तु चण्डीश्वरनाथ अपने शिष्य को उसके विषय में बतायेगा और उसका शिष्य अंगरुप उसे अपनी भैरवी बनाने का प्रयास करेगा । तुम्हे उसे अंगरुप से बचाना होगा । अगर वो योगिनी, अंगरुप की भैरवी बन गई तो मृत्युलोक में तामसिक प्रवृति बढ़ेगी और प्रलय तुरन्त आन पहुँचेगी । तुम्हारे प्रयासों से चण्डीश्वरनाथ और अगंरुप का अंत होगा परन्तु ये कार्य प्रकृति स्वंय करेगी । तुम्हे इन दोनो के प्रयासों पर भी दृष्टि रखनी होगी क्योंकि अपने अंतिम समय में ये दोनो अपने अपने उतराधिकारी स्थापित करने का प्रयास करेगें । तुम्हे उन्हे एसा करने से भी रोकना होगा अन्यथा प्रलय को रोकने के तुम्हारे प्रयास तुम्हे फिर नये सिरे से आरंभ करने होंगे । ध्यान रखना कि चण्डीश्वरनाथ और अंगरुप से तुम्हारा सीधा सामना न होने पाये इससे तुम्हारी शक्तियाँ कम होने लगेगी । तन्त्र जगत के ये दोनो अंतिम एसे साधक हैं जो नातो अपने समुदाय के लिये लाभदायक सिध्द हुए हैं और नाही प्राणीमात्र के लिये लाभदायक सिध्द हुए हैं । स्वार्थी स्वभाव के ये दोनो साधक प्रकृति के लिये भी असहनीय हैं । इसलिये तुम्हारे प्रयोजन में प्रकृति भी तुम्हे सहयोग देगी । आने वाले समय में तुम्हे कीर्ती सिंह और उस योगिनी निलिमा के लिये गर्भ व्यवस्था करनी पड़ेगी । हालाकि ये प्रकृति के कार्य में दखल हैं परन्तु तुम्हारा प्रयोजन और तुम्हारे प्रयास प्रकृति की दृष्टि में न्यायोचित हैं इसलिये प्रकृति इससे क्रूध्द नही होगी । मैं तुम्हे एसी व्यवस्था के लिये शक्ति प्रदान करता हुँ" । इसके बाद उस महापुरुष के माथे के ठीक बीचोंबीच से एक प्रकाश की किरण निकली और शल्यनाथ के माथे से आकर टकराई शल्यनाथ ने आँखें मुँद ली और वो किरण शल्यनाथ के माथे में कंहि समा गई ।

जिस भवानी सिंह के पुत्र की बात उन दोनो महापुरुषों में उस समय हुई थी आश्चर्य था कि उस समय तक स्वंय भवानी सिंह का भी जन्म नही हुआ था । बहरहाल महापुरुषों की बातें महापुरुष ही जाने । उस महापुरुष की आवाज उस गुफा में गुँजनी बंद हो गई । शल्यनाथ भी उठ खड़ा हुआ । उसने अंतिम बार हाथ जोड़कर विदा लेने के प्रयास में उस महापुरुष के सामने अपना सिर झुकाया कि तभी फिर उस महापुरुष की आवाज गुँजी--"शल्यनाथ, मृत्युलोक में इसे तुम अपना अंतिम कार्य समझो और फिर अब यंहा कुछ नही बचा हैं । प्रलय तो अटल हैं परन्तु उससे पहले तुम अपना कार्य समाप्त कर लो, उधर 'सप्तर्षि-लोक' में तुम्हारी प्रतिक्षा हो रही हैं । 'ध्रुव-लोक' की यात्रा का समय करीब आ रहा हैं अब और इसे टाला नही जा सकता हैं । कार्य पुर्ण करो और 'सप्तर्षि-लोक' पहुँचने का प्रयास करो" ।
"जो आज्ञा गुरुदेव" । शल्यनाथ ने बस इतना ही कहा और उधर उस महापुरुष ने फिर अपनी आँखें मुँद ली और अब फिर उसकी सांसे धीरे धीरे चल रही थी । इसके बाद शल्यनाथ जैसे ही गुफा के द्वार पर पहुँचा द्वार अपनेआप ही खुल गया और शल्यनाथ गुफा से बाहर आ गया और गुफा का द्वार जैसे अपनेआप खुला था वैसे ही अपनेआप बंद भी हो गया ।

द्वार के बंद होते ही शल्यनाथ का शरीर फिर नीले बिंदु में परिवर्तित होने लगा और वो उपर उठने लगा । देखते ही देखते वो बादलों के करीब पहुँच गया और फिर तुरन्त तेजी से हिमालय के 'भागीरथ शिखर' की ओर उड़ने लगा । वंहा स्थापित एक मठ के अंदर शल्यनाथ का पदमासन की मुद्रा में बैठा शरीर वैसी ही अवस्था में था । जैसे उस गुफा में उस महापुरुष का शरीर था । दरअसल ध्यान की अवस्था में शल्यनाथ की सूक्ष्म आत्मा उस महापुरुष से मिल आयी थी । जबकि उसका भौतिक शरीर वंही मठ में स्थिर था । सूक्ष्म आत्मा स्वरुप वो नीला बिंदु उसके शरीर में समा गया और पदमासन की मुद्रा में बैठा शल्यनाथ का शरीर हरकत कर उठा । अब शल्यनाथ फिर अपनी आत्मा और शरीर के साथ था ।

इसके बाद शल्यनाथ उठकर अपने मठ से बाहर आया । मठ से बाहर आते समय उसने आसपास दृष्टि फिराई तो उसे मठ में कई साधक साधना में लीन दिखाई दिये उसने किसी की भी साधना और ध्यान में व्यवधान उपस्थित नही किया । वो मठ से बाहर आकर एक ओर को चल दिया । रात्रि घिर आयी थी वो लगभग उड़ता हुआ सा चल रहा था । उसका ये मठ 'गंगोत्री' से कई किलोमीटर दूर हिमालय की गोद में भागीरथ शिखर पर स्थापित था । कभी यंहा ऋषि 'भागीरथ' ने गंगा को स्वर्ग से प्रकट करने के लिये घोर तप किया था । बर्फिले पहाड़ यंहा भी बहुत थे । एसे ही पहाड़ों से गुजरता हुआ वो घने पेड़ों से घिरी एक कंदरा में पहुँचा । ये कंदरा बाहर से आसानी से दिखाई नही देती थी । इसे ढूंढने के लिये बकायदा इसका पता होना आवश्यक था ।

शल्यनाथ जिस कंदरा में पहुँचा था वंहा एक भालू मूर्च्छित अवस्था में पड़ा था । उसकी सांस धीरे धीरे चल रही थी । वो शायद शीत निन्द्रा में था याँ शल्यनाथ ने ही उसकी एसी हालत बना रखी थी । कुछ पता नही चलता था बहरहाल वो भालू वंहा था । शल्यनाथ ने प्रेम से उसपर हाथ फेरा और बोला--"मेरे बच्चे, तेरा कार्य अब पुर्ण होने को हैं । तेरा कर्ज मनुष्य जाति कभी उतार नही पायेगी । मैं तुझे और योनियों में भटकने नही दूंगा और तुझे सीधे मनुष्य योनि में जन्म मिलेगा" ।

फिर शल्यनाथ उस भालू के करीब ही लेट गया और उसने आँखें मुँद ली, अब वो कोई मन्त्र उच्चारण कर रहा था । धीरे धीरे उसकी सांसे धीमि पड़ने लगी और अंत में वो उस भालू की तरह सांस लेने लगा । फिर शल्यनाथ के शरीर से एक नीला बिंदु सा निकला और भालू के शरीर में समा गया । ये परकाया प्रवेश की प्रक्रिया थी । कुछ देर बाद भालू ने आँखें खोली और अंगड़ाई लेकर उठ खड़ा हुआ । भालू उस कंदरा से निकला और पेड़ो के झुरमुटों में चलता हुआ एक तरफ को चलने लगा । चलते चलते वो एक पहाड़ी पर चढ़ने लगा और उसकी उँचाई पर पहुँच गया । वंहा पहुँचकर उसने पहाड़ी की दूसरी ओर झांका नीचे 'कपिल घाटी' का सारा नजारा उसे दिखाई देने लगा । सारी कपिल घाटी को देखते देखते आखिर उसकी दृष्टि एक जगह ठहर गई । ये एक मठ था जंहा कपालिक आकर साधना किया करते थे । उसे देखते ही उसकी आँखों में क्रोध उभर आया और उसने जोर से गर्जना की, उसकी वो गर्जना कपिल घाटी में दूर दूर तक फैल गई । शल्यनाथ के इसी रुप को योग के साधक 'गुरु भल्लूक' के नाम से जानते थे । असली शल्यनाथ को कभी किसी ने नही देखा था और नाही कोई उसे जानता था ।

शतावरी और परेश उसी चट्टान पर बैठे थे और शतावरी कंहि भूतकाल में खोयी दिखाई देती थी । परेश मन्त्रमुग्ध सा उसकी बातें सुन रहा था । कभी-कभी उसे ये विचार भी आता था कि ये सब उसे क्यों बताया जा रहा था । मगर फिर ये सोचकर कि शायद इसके पीछे भी कोई कारण होगा वो शाँत रहने का प्रयास

करता था । आखिर एसी परिस्थितियों से उसका कभी सामना नही हुआ था । जब तक सारा मामला उसे समझ नही आ जाता तब तक जल्दबाजी करना उचित नही होगा । तन्त्र और साधनाओं की अजीब घटनाओं को वो सुन रहा था । इन सबसे उसका क्या रिश्ता था ये उसे समझना था । शतावरी क्यों उसे चार सौ वर्ष पहले की घटनाएं बता रही थी उसकी समझ में नही आ रहा था परन्तु वो सब था बहुत दिलचस्प और टी वी के माध्यम से जनसाधारण को बताना एक नया अनुभव होगा ।

बहरहाल उसने तन्त्र और तान्त्रिकों के सफाये के विषय मे सुना और फिर चण्डीश्वरनाथ और सोहम अंगरुप नामक तन्त्र साधकों ने आकर बचे खुचे तान्त्रिकों रक्षा की और उन्हे बचाया । परन्तु क्या फिर तन्त्र स्थापित हो पाया ? क्या फिर ढोंगी तान्त्रिकों ने सिर उठाया ? ये सब सोचकर उसने शतावरी की तरफ देखा और उससे पुछा--"फिर तन्त्र और तान्त्रिकों का क्या हुआ ?

शतावरी ने जैसे उसकी बात सुनी ही ना हो अथवा शायद सुनी हो परन्तु परेश को लगा वो कंहि शून्य में देख रही थी । फिर अचानक ही उसने बोलना शुरु कर दिया--"जब चण्डीश्वरनाथ और कपालिक अंगरुप, ढोंगी तान्त्रिकों का नरंसहार कर रहे थे और उनके चलाने वाले अय्याश संचालकों को बेदर्दी से मौत के घाट उतार रहे थे । उसी समय प्रकृति अपना नया खेल रच रही थी । जैसे प्रकृति जानती थी कि चण्डीश्वरनाथ और कपालिक अंगरुप आगे जाकर असहनीय हो जायेगें इसलिये प्रकृति ने उनके लिये नया खेल रचा । जब ढोंगी तान्त्रिक समाप्त हो गये और काम वासना तथा व्याभिचार के खेल रुक गये तो जनसाधारण में तान्त्रिको के प्रति फिर श्रध्दा जागी और वे उन लोगों को फिर इज्जत की दृष्टि से देखने लगे । इससे उत्साहित होकर तान्त्रिकों की नयी पौध उभर आयी और धीरे धीरे उनके कई समुदाय बनने लगे तथा कुछ ही समय में फिर कुकुरमुत्तो की तरह तन्त्र जगत प्रकट हो गया ।

अब जो कार्य पहले वो अय्याश धन्ना सेठ करते थे वही कार्य अब ये नये बने तान्त्रिक करने लगे परन्तु ये साधक थे और ज्यादा नही तो कम थे परन्तु इस बार ये लोग तन्त्र को जानने वाले थे । अब किसी के घर कोई मर जाता तो ये साधक अथवा तान्त्रिक उसकी लाश पर अपना हक जताने लगते थे और जर्बदस्ती वो लाश अपनी साधना के लिये उठा लाते थे । किसी घर में कोई युवती जवान होने लगती तो ये तान्त्रिक समुदाय के लोग उसे अपनी भैरवी बनाने की जिद करने लगते थे । इस तरह फिर वही महौल बन गया जो पहले था । अब लोग फिर तान्त्रिकों से डरने लगे और अपने यंहा किसी के मरने को छुपाने लगे और चुपचाप उसका अंतिम संस्कार करने लगे । जवान लड़कियों की तो और भी बुरी हालत हो गई । लोग अपनी बेटियों को घर में छुपाकर रखते थे और वर्षो तक किसी को पता नही चलता था कि किसी घर में कोई बेटी भी हैं । फिर तान्त्रिको ने अपने भेदिये गाँवों और कस्बों में छोड़ दिये जो मृतकों और जवान बेटियों का पता लगाने का कार्य करते थे । हालात बद से बदतर होते जा रहे थे । जंहा कंहि भी किसी मृतक अथवा जवान बेटी का पता चलता था । वंहा विभिन्न तान्त्रिक समुदाय के लोग पहुँच जाते थे और फिर मृतक अथवा जवान बेटी पर अपना अपना हक जताने के चक्कर में आपस में लड़ पड़ते थे । इस तरह तान्त्रिक समुदाय में फूट पड़ गई और फिर मार काट मच गई । अबकि बार तान्त्रिक समुदाय के लोग आपस में एकदूसरे को मार रहे थे ।

एसे ही माहौल में एक दिन राजा भवानी सिंह के यंहा जा पहुँचा कपालिक अगंरुप और उनसे अपने अनुष्ठान के लिये बहुत से धन की मांग करने लगा । राजा भवानी सिंह कभी की रियासत हरिपुर के राजा थे । वे बहुत धार्मिक थे और ऋषिमुनियों और धार्मिक लोगों को दान देने से कभी हिचकिचाते नही थे । उन्हौने अंगरुप को भी ना नही की और यथासंभव उसकी मांग पुर्ण कर दी । उस दिन उन्हौने अंगरुप की ईच्छानुसार उसे तामसिक भोजन भी करवाया ताकि वो वंहा से प्रसन्न होकर जाये परन्तु अगंरुप के मन में तो कुछ और ही था । अपने अनुष्ठान के धन की मांग करना तो एक बहाना था । वो तो वंहा राजा भवानी सिंह की पुत्रवधु को देखने आया था । दरअसल उसे उसके गुरु अघोरी चण्डीश्वरनाथ ने बताया था कि राजा भवानी सिंह की पुत्रवधु निलिमा अपने पिछले जन्म की सिध्द योगिनी थी और ये कि वो उसकी 'भैरवी' बनने के लायक थी जिससे वो अपनी साधना पुर्ण कर सकता था । अंगरुप के पास कोई भैरवी नही थी । अब तक वो किसी विशेष भैरवी की तलाश में था जिससे उसकी साधना जल्दी पुर्ण हो सके । किसी साधारण स्त्री को सिध्द भैरवी बनाने में बहुत समय लगता था और फिर तन्त्र साधना एसी थी कि भौतिक जगत में भौतिक सुखों में रहकर घोर साधना से उपलब्ध होती थी । जिसमें किसी भी साधक का पथभ्रष्ट हो जाना साधारण बात थी । एसे में दृढ़ संकल्प वाली कोई एसी स्त्री चाहिये थी जो पहले से आत्मबल और दृढ़ ईच्छा शक्ति वाली हो । किसी एसी ही स्त्री की उसे आवश्यकता थी । पिछले कई वर्षो से वो उसकी तलाश में था और अब जाकर उसे उसके गुरु ने बताया था कि राजा भवानी सिंह की पुत्रवधु एसी ही स्त्री थी । आज वो राजा भवानी सिंह से उसकी पुत्रवधु मांगने आया था ।

जब भोजन के बाद उसके विदा लेने की बेला आयी तो राजा भवानी सिंह ने अपने पुत्र और पुत्रवधु को उसके पैर छूकर आशीर्वाद लेने को बुलाया और बस यंही राजा भवानी सिंह से भारी भूल हो गई । निलिमा को देखते ही अंगरुप की आत्मा तृप्त हो गई । निलिमा बेहद सुन्दर तो थी ही परन्तु अंगरुप ने उसके प्रभामंडल को देखते ही जोर से 'जय गुरुदेव' का जयघोष किया । सिध्द योगियों के आसपास एक प्रभामंडल का घेरा बना रहता हैं जिसे साधारण व्यक्ति नही देख सकता हैं । ये प्रभामंडल विभिन्न रंगो का एक घेरा सा होता हैं जोकि सिध्द व्यक्ति के आसपास बना रहता हैं और इसे केवल सिध्द व्यक्ति ही देख सकते हैं । अंगरुप ने अपनी साधना से कई सिध्दियां प्राप्त कर रखी थी इसलिये निलिमा का प्रभामंडल उससे छुपा नही रहा और वो उसे प्राप्त करने के लिये लालायित हो उठा । निलिमा के आसपास बहुत रंगो का और बहुत घना प्रभामंडल बन रहा था । जिससे पता चलता था कि अपने पूर्व जन्म में उसने बहुत साधना कर रखी थी । हालाकि इस बात का पता स्वंय निलिमा को भी नही था । परन्तु उसे अगर साधना करने का मौका दिया जाये तो तुरन्त ही पूर्व जन्म के साधना रुपी संस्कार उसमें उभर सकते थे । अंगरुप ये अच्छी तरह समझ गया था उसने बिगैर किसी भूमिका के राजा भवानी सिंह से कहा--"भवानी सिंह अपनी पुत्रवधु मुझे देदे" ।

राजा भवानी सिंह तो चौके ही परन्तु उनका पुत्र किर्ती सिंह और पुत्रवधु निलिमा भी चौंक पड़ी । राजा भवानी सिंह बोल--"ये आप क्या कह रहे हैं, ऋषिवर ?

अंगरुप की दृष्टि निलिमा से हट ही नही रही थी वो उसे देखते हुए ही भवानी सिंह से बोला--"जो मैं कहता हुँ, वो कर भवानी सिंह और जो तू कहेगा वो मैं करुंगा । बोल तुझे क्या चाहिये ? तुझे इस पृथ्वी का राजा बना दूं याँ स्वर्गलोक दिला दूँ । तू अपनी जुबान से जो कहेगा वो पुर्ण होगा । ये मैं तुझे वचन देता हुँ मगर अपनी पुत्रवधु मुझे देदे । मैं इसे अपनी भैरवी बनाउंगा और अपनी साधना पुर्ण करुंगा" ।

"आप अपनी सीमा को लांघ रहे हैं ऋषिवर, और मुझे मजबूर ना करें कि मैं आपका अपमान कर दूँ" । राजा भवानी सिंह क्रोध से भर गये थे ।

"अपमान" । कहकर अंगरुप ने एक भंयकर अट्टहास किया और आगे बढ़कर निलिमा की कलाई थाम ली फिर राजा भवानी सिंह से बोला--"तू अगर मुझे रोक सकता हैं तो रोक ले, मैं तेरी पुत्रवधु को लेकर जा रहा हुँ" ।

फिर कई काम एक साथ हुए । कीर्ती सिंह ने दीवार पर टंगी तलवार को लपक कर उठा लिया और अंगरुप पर तान दी । निलिमा ने अंगरुप को धक्का देकर अपनी कलाई छुड़ाई और कीर्ती सिंह के पीछे जा छुपी और राजा भवानी सिंह ने अपने अंगरक्षकों को आवाज दी । तुरन्त ही भाले, बर्छियां लेकर भवानीसिंह के अंगरक्षक अंदर घुसे और क्रोध में भभकता अंगरुप पीछे हटा और जोर से चिल्लाया--"जय महाकाल" । इसके बाद उसने अपने सिर के कुछ बाल नोचे और उन्हे जमीन पर पटका और कोई मन्त्र उच्चारण करने लगा और देखते ही देखते उसके सिर के बाल किन्ही छायाओं में बदलने लगे । ये उसकी दासता में रहने वाले प्रेत थे जो छायाओं के रुप में उस कमरे में मंडराने लगे परन्तु वो स्थान राजा भवानी सिंह का महल था । जंहा प्रतिदिन ही पुजा अर्चना और धार्मिक कार्य होते थे । उस पवित्र स्थान पर प्रेतों के उत्पात का उतना प्रभाव उत्पन्न नही हुआ जितनी कि अंगरुप को आशा थी । फलस्वरुप अंगरुप और पीछे हटा और इधर भवानी सिंह के अंगरक्षक उसके पीछे लपके ।

अंगरुप, भवानी सिंह के अंगरक्षकों से बचता हुआ तुरन्त द्वार की तरफ लपका और देखते ही देखते वो अदृष्य हो गया । हालाकि महल में उसकी आवाज गुँज रही थी --"भवानी सिंह तू मेरी भैरवी को अपने पास ज्यादा दिन नही रख सकेगा, मैं उसे लेने फिर आउंगा । अब तेरी मौत निश्चित हैं, मैं तुझे छोडूंगा नही । तेरी रियासत को रसातल में मिला दूंगा, कोई कभी जान ही नही पायेगा कि कोई भवानी सिंह नामका राजा भी हुआ करता था" । फिर उसकी आवाज डूबती चली गई जिससे पता चलता था कि वो दूर चला गया था । उसके साथ ही वो छायाएं भी जोकि अंगरुप के नोचे हुए बालों से प्रकट हुई थी वंहा से गायब हो गई ।

राजा भवानी सिंह के माथे पर चिंता की लकीरें उभर आयी । निलिमा भयभीत दृष्टि से कभी कीर्ती सिंह को देखती थी और कभी राजा भवानी सिंह को देखती थी । कीर्ती सिंह सोचपुर्ण दृष्टि से पिता को देख रहा था । राजा भवानी सिंह ने पुत्र को देखते हुए चिंतापुर्ण स्वर में कहा--"ये तो अच्छा शकुन नही हैं पुत्र, अंगरुप एक अघोरी हैं और उसने जो ठान लिया हैं उसे वो किसी भी तरह पुर्ण करने का प्रयास करेगा" ।

"पिताजी, आप कहें तो मैं उसे खोजने का प्रयत्न करुं और खोजकर उसे समाप्त कर दूँ" । कीर्ती सिंह ने आवेशपुर्ण स्वर में कहा ।

"नही पुत्र" । भवानी सिंह ने उसी सोचपुर्ण स्वर में कहा--"अंगरुप कोई क्षत्रिय नही जो ललकारने से प्रकट होगा । वो एक अघोरी हैं और अपनी मायावी शक्तियों से ही लड़ेगा । इसके लिये हमे किसी महात्मा अथवा ऋषि के आशीर्वाद की आवश्यकता होगी" । फिर वो उस हॉल जैसे कमरे में लगी कई तस्वीरों के सामने जा खड़ा हुआ । वो तस्वीरें कई ऋषि, मुनियों और महात्माओं की तस्वीरें थी । उन्ही में से एक तस्वीर शल्यनाथ की भी थी । हालाकि उन तस्वीरों के आगे उन ऋषियों के नाम नही लिखें थे । परन्तु एसा लगता था कि राजा भवानी सिंह के पुर्वजों से ही उन ऋषियों और महात्माओं को पुजा जाता रहा था ।

उसके बाद राजा भवानी सिंह ने उन तस्वीरों के सामने हाथ जोड़े और प्रार्थना करने लगा--"हे ऋषियों और महात्माओं आपने सदा हम पर अपना आशीर्वाद बनाये रखा हैं और आपके आशीर्वाद से ही आज मैं इस तरह सब प्रकार के सुखों से युक्त हुँ । मेरे कई पुर्वजों को आपने मुसिबतों से उबारा था आज मैं भी मुसिबत में पड़ गया हुँ । आपसे प्रार्थना के अलावा आज मेरे पास और कोई मार्ग नही हैं । मुझ पर कृपा करें, मुझ पर कृपा करें" । कहते कहते राजा भवानी सिंह का गला रुंध गया ।

तभी द्वार पर एक सिध्द ऋषि प्रकट हुआ और उसने राजा भवानी सिंह को पुकारा--"राजन, क्या मेरी सहायता की आवश्यकता हैं ?

राजा भवानी सिंह ने पलटकर देखा तो आश्चर्यचकित रह गया । उसे लगा जैसे तस्वीरे से निकलकर वो ऋषि साक्षात उसके सामने आ खड़ा हुआ था । वो कितनी ही देर अपनी आँखों पर विश्वास ही नही कर पाया । वो कभी सामने लगी उस ऋषि की तस्वीर को देखता तो कभी पलट पलटकर साक्षात प्रकट हो गये उस ऋषि को देखता रह गया । पिघले तांबे जैसा धधकता उसका मजबूत शरीर, बुध्दीमानों जैसा उसका चौड़ा माथा, ज्ञान से लबालब भरी हुई उसकी खोजपुर्ण आँखें और प्रेम और अपनेपन के भावों से भरा उसका मुखमंडल उसके सिध्द पुरुष होने का संकेत करता था ।

भवानी सिंह को जब सुध आयी और उसने देखा कि वो सिध्द पुरुष उसकी प्रतिक्रिया की आशा में अभी तक खड़ा था तो वो बच्चे की तरह बाँहें फैलाये और "महाराज, महाराज" कहता हुआ उसकी ओर दौड़ पड़ा । वो सीधा जाकर उसके पैरों में गिर पड़ा । और बार बार कहने लगा--"मेरी रक्षा करें महाराज, मेरी रक्षा करे महाराज" । उस जैसे सिध्द ऋषि के सान्निध्य से कुछ ही पलों में वातावरण में सहजता आ गई और कुछ देर बाद वे सब महल के एक मंदिर जैसे स्थान पर बैठे विचार विर्मश कर रहे थे ।

उस सिध्द ऋषि ने कहा-- "राजन प्रकृति के अपने नियम हैं । उन नियमों के अंतर्गत आने वाले समय की रुपरेखा आज ही बननी आरंभ हो जाती हैं । आज अगर प्रकृति की मर्जी से ये सब हो रहा हैं तो इसके पीछे भी उसकी कोई मंशा रही होगी । आपको अगर इस घटनाक्रम के केन्द्र में रखा गया हैं तो अवश्य ही प्रकृति की मर्जी हैं कि आपके द्वारा ही इसका अंत भी हो । इस तरह अपना उत्तरदायित्व निभाने के लिये आप तैयार हो जायें राजन" ।

"आप जैसा कहेगें महाराज मैं और मेरा परिवार वैसे ही करेगा" । भवानी सिंह ने तुरन्त ही तत्पर स्वर में कहा ।

"तो राजन तुरन्त ही आप इसी समय इस रियासत का त्याग कर दें और भागीरथ शिखर की ओर प्रस्थान करें" । उस ऋषि ने दृढ़ स्वर में कहा ।

राजा भवानी सिंह चौंक पड़े और करुण दृष्टि से उस ऋषि की ओर देखने लगे मानों कह रहे हों कि 'कृपया कोई और उपाय बतायें' परन्तु उससे कहा नही गया और धीरे से उसने पुछा--"क्या सहपरिवार, महाराज ?

उस ऋषि ने हौले से मुस्कराकर कहा--"नही राजन, आपके पुत्र राजा बने रहेगें । भागीरथ शिखर केवल आपको जाना हैं" । वो ऋषि जानता था कि राजा भवानी सिंह भौतिक जगत के मोह के वशिभूत थे अन्यथा कोई ऋषि अथवा साधक कुछ भी त्याग देने में एक क्षण भी नही लगाता हैं । परन्तु राजा भवानी सिंह में वो आत्मबल नही था । इसलिये उन्हे अपने आपको समझाने में समय लगा और अंतत उन्हौने निर्णय कर लिया कि जैसा वो ऋषि कहते हैं वैसा ही करना ही उचित होगा । बहरहाल अपनी शंका के समाध ाान के लिये उन्हौने ऋषि से पुछ लिया--"महाराज, क्या ये मेरी रक्षा हैं ?

इस पर उस ऋषि ने आगे बढ़कर राजा भवानी सिंह के सिर पर हाथ रखा और अश्वासन देने वाले स्वर में कहा--"नही, प्रकृति की मंशा हैं । परन्तु वर्तमान संकट से आपकी रक्षा हो जायेगी, राजन" ।

फिर राजाभवानी सिंह ज्यादा नही सोचा । ऋषि के सिर पर हाथ रख देने से राजा भवानी सिंह में साहस का संचार हो गया था और वे उसी क्षण भागीरथ शिखर की ओर प्रस्थान करने को तैयार हो गये । उन्हौने अपने पुत्र और पुत्रवधु को आशीर्वाद दिया और जाने को तत्पर हुए कि तभी उस ऋषि ने उन्हे चेताया--"राजन दो दिन बाद अमावस्या हैं और आपको अमावस्या से पहले भागीरथ शिखर पहुँच जाना हैं" ।

राजा भवानी सिंह ने उन्हे प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा मानो जानना चाहते हो कि ऋषि ने एसा क्यों कहा । ऋषि ने भी उनके मंतव्य को समझ लिया और उन्हे बताया--"अमावस्या की रात्रि को कपालिक अंगरुप 'अगिया बैताल' का आवाहन करेगा और अंगिया बैताल के जाग्रत होने पर अंगरुप उसे आपकी मृत्यु के लिये प्रेरित करेगा इससे अगिया बैताल आपके पीछे पड़ेगा परन्तु अगर आप भागीरथ शिखर पहुँच जाते हैं तो अगिया बैताल वंहा नही पहुँच पायेगा और आप सुरक्षित हो जायेगें" ।

"अगिया बैताल ? राजा भवानी सिंह ने कौतूहलपुर्ण दृष्टि से देखते हुऐ उस ऋषि से पुछा ।

"हाँ, अगिया बैताल" । ऋषि ने बताया --"कोई ब्राह्मण जब अवगति रुप से मृत्यु को प्राप्त होता हैं तो वो प्रेत योनि में भटकने लगता हैं । अवगति अर्थात कोई ब्राह्मण आत्म हत्या कर ले, उसकी हत्या कर दी जाये अथवा उसकी बली दे दी जाये तो वो क्रमशः ब्रह्मपिशाच, ब्रह्मराक्षस अथवा ब्रह्मवीर नामक प्रेत के रुप में प्रेत योनि में भटकने लगता हैं । क्योंकि वो ब्राह्मण अपने जीवनकाल में वर्ण विशेष, जाति विशेष अथवा स्थान विशेष को अपने ज्ञान से प्रभावित करता रहा था । इसलिये जब वो प्रेत योनि में भटकता हैं तब भी वो बड़ी मात्रा में लाभ हानि का कारण बनता हैं । जंहा कंहि बेवजह आँधी तूफान आते हैं, बिजली गिरती हैं अथवा नरंसहार होता हैं तो एसी दुर्घनाओं में इन ब्रह्मप्रेतआत्माओं का हाथ होता हैं । जंहा साधारण प्रेत आत्मायें पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण को भेद कर पृथ्वी पर नही आ पाती हैं वंही ये ब्रह्मप्रेतआत्मायें सहज ही इस गुरुत्वाकर्षण को भेद लेती हैं और अपनी जन्म तिथि और मृत्युतिथि पर उस स्थान परस्वंय ही आ जाती हैं जंहा इनका जन्म अथवा मृत्यु हुई थी । पुनः मनुष्य योनि की प्राप्ती के लिये सभी प्रेत आत्मायें लालायित रहती हैं । इसलिये ब्रह्मप्रेतआत्मायें भी इससे अछूती नही होती हैं और निरंतर इस प्रयास में रहती हैं कि उन्हे मनुष्य योनि में जन्म मिल जाये

। परन्तु प्रकृति के अपने नियम हैं और आपने अगर अपने जीवनकाल में मनुष्यमात्र के लिये अच्छे कर्म किये हैं और पृथ्वी पर आपकी आवश्यकता हैं तो मृत्यु के उपरांत तुरन्त ही प्रकृति फिर आपके लिये मनुष्य योनि की व्यवस्था करती हैं । इसके विपरित अगर अपने जीवनकाल में आपके कर्म अच्छे नही रहे हैं और पृथ्वी पर आपकी आवश्यकता नही मेहसूस की जा रही हैं तो प्रकृति आपके प्रति उदासीन हो जाती हैं और मनुष्य योनि में आपके फिर जन्म लेने की प्रक्रिया शिथिल हो जाती हैं और जब तक परिस्थितियां आपके जन्म लेने के अनुकूल नही हो जाती अथवा कोई सिध्द आत्मा आपको प्रेत योनि में ही सुस्कृत नही करती तब तक आपके लिये मनुष्य योनि में जन्म लेना ठहर जाता हैं । इसमें अगर अधिक समय लग जाये तो ब्रह्मप्रेतात्मा, बैताल में परिवर्तित हो जाती हैं और उसकी संहारक शक्ति और बढ़ जाती हैं । जब बैताल के रुप में भी उसे बहुत समय हो जाता हैं तो वो अगियाबैताल का रुप धारण कर लेती हैं । तब वो सबसे अधिक शक्तिशाली और भंयकर प्रेतात्मा बन जाती हैं । तब उसे प्रेतराज अथवा भूतों का राजा कहा जाता हैं । तान्त्रिक इसे भैरव के नाम से भी पुकारते हैं और उसे प्रसन्न रखने का प्रयास करते हैं । अघोरी, कपालिक और तान्त्रिक किसी की मृत्यु के लिये इसी का आवाहन करते हैं । बहरहाल अगिया बैताल को जिस प्रयोजन के लिये जाग्रत किया जाता हैं उसे किसी भी हालत में पुर्ण होना ही होता हैं । अगिया बैताल इसे अपने लिये बली समझता हैं और अगर उसे बली नही मिली तो वो जाग्रत करने वाले को ही अपनी बली बना लेता हैं । इसे तन्त्रजगत में 'मारण-मन्त्र' भी कहा जाता हैं ।

सारी बात समझ लेने के बाद राजा भवानी सिंह ने भागीरथ शिखर की ओर प्रस्थान करने में ही अपनी भलाई समझी और उस ऋषि से विदा लेकर वे उसी रात्रि को भागीरथ शिखर की ओर कूच कर गये । इधर वो सिध्द ऋषि अब कीर्ती सिह की ओर मुखातिब हुआ और बोला-- "तन्त्र और तामसिक गतिविधियां निरंतर बढ़ रही हैं जिससे आने वाले समय में समाज में अव्यवस्था फैलेगी । जनसाधारण के पथभ्रष्ट होने का पुर्ण संकेत मिल रहा हैं । पाप और अनाचार के बढ़ने से प्रलय के प्रकट होने के लक्षण दिखेगें । इससे समूची मानव जाति के ही नष्ट हो जाने का भय प्रकट हो जायेगा । अगर मानव जाति को सुसस्कृत नही किया गया और उन्हे कोई दिशा निर्देश देने वाला नही होगा तो फिर प्रलय निश्चित हैं" ।

कीर्ती सिह की समझ में कुछ नही आया परन्तु वो उस सिध्द ऋषि से बहुत प्रभावित था और उसकी कोई भी आज्ञा मानने को तैयार दिखता था । इसलिये उसने तुरन्त कहा--"आप मेरे लिये कोई आज्ञा करें ऋषिवर मैं इसमें क्या कर सकता हुँ" ।

उस ऋषि ने आगे बढ़कर कीर्ती सिंह के सिर पर भी हाथ रखा और कहा--"राजन, राजपाट का मोह त्याग दो । अंगरुप की कुदृष्टि इसपर पड़ चुकी हैं । तुम्हारे पिता के ना मिलने पर वो इस रियासत को अपने क्रोध का शिकार बनायेगा । फलस्वरुप इस रियासत का बर्बाद होना अब तय हैं । वैसे भी प्रकृति तुम्हे अपना साधन बनाना चाहती हैं । इसलिये इस राजपाट को अब भूलने का प्रयत्न करो और वैदिक धर्म और वैदिक संस्कृति को समझने का प्रयास करों । आने वाले समय में वैदिक धर्म और वैदिक सस्कृति का प्रचार ही तुम्हारा जीवन लक्ष्य होना चाहिये" ।

कीर्ती सिंह ने उदास दृष्टि से अपनी पत्नी निलिमा की ओर देखा और उदासी से मुस्कराया । निलिमा की आँखों से आँसू बह निकले । देखते ही देखते उनका सबकुछ समाप्त होने जा रहा था । ये प्रकृति का कैसा न्याय था कि बना बनाया घर, पल भर में उजड़ रहा था । निलिमा ने मन ही मन निर्णय लिया और उस ऋषि को हाथ जोड़कर प्रार्थनापुर्ण स्वर में बोली --"महाराज, आपके बताये जीवनरुपी लक्ष्य सिध्दी के लिये मैं अपने पती के साथ रहुंगी" ।

उस ऋषि ने निलिमा की ओर देखा और सहज स्वर में कहा--"नही देवी, ये कार्य आपके पती अकेले ही करेगें और आपको मेरे साथ चलना होगा" ।

दोनो पती-पत्नी के सिर पर जैसे पहाड़ टूट पड़ा हो । दोनो बिलख बिलख कर रोने लगे और उस ऋषि के पैरों में गिर पड़े । दोनो रोते रोते ऋषि से प्रार्थना करने लगे--"दया किजिये ऋषिवर, दया किजिये ऋषिवर" ।

बहरहाल उस ऋषि ने दया नही की क्योंकि वो सिध्द ऋषि तो उनपर महादया करने वाला था । उस समय वो दोनो पती-पत्नी इस बात को समझ नही पाये परन्तु आने वाले समय में वे उसे समझने वाले थे । उस समय उस ऋषि ने बस इतना ही कहा--"मेरे बच्चों, त्याग और बलीदान ही तो वैदिक धर्म और वैदिक संस्कृति हैं" ।

फिर सबकुछ तय हो गया । कीर्ती सिह ने वैदिक धर्म और वैदिक संस्कृति के प्रचार के लिये कमर कस ली और निलिमा उस ऋषि के साथ चल दी । उसे तो ये भी नही पता था कि वो ऋषि उसे कंहा ले जा रहा था । उसने स्वंय को भाग्य के भरोसे छोड़ दिया था । जाते जाते उस ऋषि ने कीर्ती सिंह को अपने सामने खड़ा कर उसकी आँखों में झांका और फिर एक चमत्कार हुआ । एक ज्योति सी उस ऋषि की आँखों से निकली और कीर्ती सिंह की आँखों में समा गई । ये वैदिक धर्म और वैदिक संस्कृति का सारा ज्ञान था जो उस ऋषि ने अपनी शक्ति से कीर्ती सिंह में भर दिया था ।

एक रियासत और एक राजपरिवार के उजड़ जाने की वो एक एसी दास्तान थी जिसे उस समय कहने वाला, सुनने वाला और देखने वाला कोई नही था । लेकिन प्रकृति ये सब देख रही थी और इसे घड़ भी रही थी । प्रकृति ने एक एसी युगकथा को घड़ दिया था जिसे आने वाले समय में जनसाधारण जन्मों-जन्मों की कथा के रुप में कहने सुनने वाला था ।

सोहम अंगरुप अर्थात कपालिक अंगरुप, आसाम का रहने वाला लंबा तगड़ा हष्टपुष्ट व्यक्ति था । गेंहुआ रंग, छह फुट लंबा, जट्टाओं में तब्दिल हो गये सिर के बाल, बढ़ी हुई दाढ़ी, लालसुर्ख चौड़ी आँखें, किसी तबांखु जैसे पर्दाथ को सदा चबाते रहने से काले पड़ गये बड़े बड़े दाँत और भय पैदा करने वाली खरखराती आवाज वाला सोहम अंगरुप, पिछले चालिस वर्षो से चण्डीश्वरनाथ की सेवा में था । वो चण्डीश्वरनाथ की सेवा में कैसे आया इसके पीछे भी एक कहानी हैं । ये कहानी एक साधारण इंसान के तान्त्रिक बन जाने की कहानी हैं । जिसे ये नही पता था कि वो ये सब क्यों कर रहा हैं ? अपने गुरु चण्डीश्वरनाथ के मार्गदर्शन में वो तान्त्रिक तो बन गया परन्तु तन्त्र के मर्म को न समझ सका । उसके अनुसार तन्त्र एक शक्ति हासिल करने का जरिया था जिससे वो साधारण इंसान से ज्यादा शक्तिशाली इंसान हो जायेगा । ये उस तान्त्रिक की कहानी हैं जिसने तन्त्र की शक्ति को विध्वंस के लिये ईस्तेमाल किया । आने वाले चार सौ वर्षो तक उसने मानवता को कलंकित किया ।

तब जब सोहम अंगरुप मात्र बीस वर्ष का नौजवान था और आसाम के दिग्बोई कस्बे का रहने वाला था । उस समय माँ-बाप के अलावा उसकी एक बहन थी वैशाली । वैशाली उससे दो वर्ष बड़ी थी, बहुत खुबसुरत, जहीन और तेजोमय मुखमंडल के कारण वो कुछ अलग और गरिमामय दिखती थी । बहरहाल उनका अच्छा खासा परिवार था और अपने सगे संबधियों के लिहाज से वे लोग उस समय के धनी मानी लोग माने जाते थे । जीवन हँसीखुशी से बीत रहा था और वैशाली के लिये किसी अच्छे रिश्ते की तलाश चल रही थी । हालाकि कुछ रिश्ते उसके लिये आये थे परन्तु अभी बात नही बन पायी थी । उस समय इस उम्र तक लड़की को बिठाये रखना अच्छा नही समझा जाता था । परन्तु अपनी खुली विचारधारा के कारण और लाड़ प्यार के कारण वे लोग वैशाली को अभी तक बिठाये हुए थे और किसी मनपंसद रिश्ते को तलाश रहे थे । इस तरह सोहम के परिवार को उस समय बहुत आधुनिक समझा जाता था ।

उसके पिता ताराचंद अंगरुप की पुश्तैनी जमीन-जायदाद थी और वो बहुत सी खेती और जमीदारी का काम करते थे । धन-संपती की कमी नही थी । सोहम उस समय पिता की देखरेख में उनका सारा कामकाज सीख रहा था । एक दिन अचानक सोहम के पिता की तबियत खराब हुई और उन्हौने सीने में दर्द की शिकायत के साथ बिस्तर पकड़ लिया । कई वैद्य और हकिमों ने उनका इलाज किया मगर उनकी तबियत नही सुधरी । असल में खूब खानपान और आराम ने उनकी नसों में रक्त का थक्का जमा दिया था । परन्तु उस समय मेडिकल सांइस इतना उन्नत नही था कि वैद्य और हकीम इस बिमारी को समझ पाते । फलस्वरुप तबियत गिरती रही और

एक दिन एसा आया कि उन्होने जीने की ईच्छा को ही त्याग दिया । सोहम और उसके परिवार में दुख छा गया । सोहम को अपने पिता से बहुत लगाव था और वो किसी भी कीमत पर उनका इलाज करवाना चाहता था । बहरहाल सारे प्रयास और इलाज नाकाम सिध्द हुए ।

ताराचंद अंगरुप दिन-ब-दिन होशो-हवास खोते जा रहे थे । उनकी याददाश्त कमजोर होने लगी और उन्होने खानापीना भी छोड़ दिया । अब बस उन्हे प्रतिक्षा थी तो अपनी मृत्यु के आने की । सोहम, उसकी बहन वैशाली और उसकी माँ तारचंद के लिये कोई भी उपाय करने को अथवा कितना भी धन खर्च करने को तैयार थे परन्तु उनकी पेश नही चल रही थी । एसी ही चिंता की घड़ी में और दुखदायी समय में एक दिन अचानक भीषण अघोरी चण्डीश्वरनाथ उनके घर आ पहुँचा । उसने आते ही जोर से 'जय काल भैरव' का जयघोष किया और बोला--"कंहा हैं, ताराचंद ?

सभी लोग हैरान रह गये । सोहम, वैशाली, उसकी माँ के अलावा वंहा उपस्थित सगे संबंधी भी आश्चर्य से चण्डीश्वरनाथ को देखने लगे । सभी लोगों ने समझा कोई बहुत पहुँचा हुआ साधु हैं । सोहम पिता का भक्त था उसने तुरन्त ही चण्डीश्वरनाथ को पिता के पास पहुँचाया । चण्डीश्वरनाथ ने बिस्तर पर पड़े निढाल ताराचंद को देखा और बोला--"घबरा मत ताराचंद, अभी तेरी मृत्यु का समय नही हुआ हैं । तू ठीक हो जायेगा" । उसके बाद उसने ताराचंद के बाँये नथुने को बंद किया और कोई मंत्रोच्चारण करके उसके दाँये नथूने में जोर से फूँक मारी । सभी ने देखा कि थोड़ी ही देर में ताराचंद का शरीर तपने लगा और और उनकी आँखें लाल हो गई । वो बार बार काँप उठते थे और अगले चार घंटे उनका शरीर पसीना छोड़ता रहा तथा आँखों के साथ साथ उनका शरीर भी लाल होता रहा । फिर उनका शरीर साधारण रंग में आने लगा और तपन भी कम हो गई आँखें भी साधारण हो गई और वे बिस्तर से उठ बैठे तथा भूख लगने की शिकायत करने लगे और खाना मांगने लगे । तुरन्त ही उन्हे खाना दिया गया और फिर चण्डीश्वरनाथ के इलाज के छह घन्टे बाद वे श्रध्दापुर्ण अंदाज में उससे बातें कर रहे थे । ताराचंद ठीक हो चुके थे । सभी हैरान थे और आश्चर्यचकित भी परन्तु जो कुछ हुआ था वो अच्छा ही हुआ था । इसलिये चण्डीश्वरनाथ के आने और उसके अचानक वंहा आने को लेकर किसी ने प्रश्न नही उठाया ।

दरअसल चण्डीश्वरनाथ ने अपने मन्त्रोचारण से जो उनके दाँयें नथूने में फूँक मारी थी उससे ताराचंद की 'सूर्यनाड़ी' जाग्रत हो गई थी । सूर्यनाड़ी के जाग्रत होने से उनके शरीर की अग्नि जाग्रत हो उठी थी । जिससे उनका शरीर तपने लगा था और इसी सूर्यनाड़ी की तपन ने उनके नसों में जम गये रक्त के थक्के को पिघला दिया था । एक बार उस रक्त के थक्के का पिघलना था कि ताराचंद ठीक हो गये । चण्डीश्वरनाथ ने जो भी किया था परन्तु इससे ताराचंद के परिवार में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई । जंहा वे तारराचंद के जीवन की आशा छोड़ चुके थे वंही अब वे खुशियां मनाने में व्यस्त थे ।

अगले चार-पाँच दिन तक चण्डीश्वरनाथ उन्ही के घर में रहा और उन्हे तन्त्र के विषय में विभिन्न चमत्कारी बातें बताता रहा था । सोहम और उसके पिता ताराचंद, चण्डीश्वरनाथ के पक्के भक्त बन गये थे । वैशाली और उसकी माँ, चण्डीश्वरनाथ के लिये प्रतिदिन ही स्वदिष्ट खाना बनाती थी और सोहम और उसके पिता उसकी प्रत्येक ईच्छा को पुर्ण करने का प्रयास करते थे । सारा घर चण्डीश्वरनाथ की सेवा में लगा हुआ था ।

अंतत एक दिन चण्डीश्वरनाथ ने जाने की ईच्छा जाहिर की और अपना मंतव्य ताराचंद को बताया । हालाकि सोहम और उसके पिता चण्डीश्वरनाथ से कई बार ये बात पुछ चुकें थे कि वो वंहा कैसे आया परन्तु चण्डीश्वरनाथ ने इतने दिनो में उन्हे कभी नही बताया था । जाने के दिन उसने ताराचंद को बताया कि वो वंहा वैशाली के लिये आया था । उसने बताया कि वो वैशाली के पिछले जन्मों के विषय में जानता हैं और ये कि वैशाली कोई साधारण कन्या नही थी उसका जन्म किसी विशेष प्रयोजन के लिये हुआ हैं । इसी प्रयोजन के चलते माँ भवानी ने उसे वंहा भेजा था । माँ भवानी के आदेश से वो एक अनुष्ठान करना चाहता था जिसके लिये उसे वैशाली की जरुरत थी और वो उसे अपनी भैरवी बनाना चाहता था ।

उस समय के लोग बहुत ही धर्मभीरु होते थे और सोहम का परिवार भी इसका अपवाद नही था । उसपर वे लोग चण्डीश्वरनाथ के चमत्कार देख चुके थे । मरने के कगार पर पहुँचा ताराचंद तो नवजीवन पाकर फूला नही समा रहा था । फिर माँ भवानी के आदेश को ठुकराना उस समय के लोगों के बस की बात नही थी । कुछ सोच विचार करने के बाद सोहम के परिवार ने चण्डीश्वरनाथ को वैशाली को साथ ले जाने की इजाजत दे दी । वे लोग सोच रहे थे कि शायद इसिलिये वैशाली के विवाह में देरी हुई थी कि माँ भवानी के आदेश को पुर्ण कर सके और इसिलिये ताराचंद बीमार हुआ था कि चण्डीश्वरनाथ का आशिर्वाद पा सके । वैशाली का गरिमामय मुखमंडल भी उन्हे सदा सोचने पर मजबूर दिया करता था कि वो कोई अवतार थी । तब की नौजवान लड़कियां माँ-बाप के फैसलों के विरोध में भी नही जाती थी इसलिये वैशाली की ओर विरोध का केई प्रश्न ही नही था । उसने माता-पिताके निर्णय को मान लिया । बहरहाल जो भी था, चण्डीश्वरनाथ, वैशाली को अपने साथ लेकर चला गया ।

फिर दो वर्ष गुजर गये । वैशाली की कोई खोज खबर नही मिली । सोहम के माता-पिता अचानक वैशाली के लिये चिंतित होने लगे । उन्हे लगा कि उन्हे वैशाली की कोई खोज खबर लेनी चाहिये । इसके लिये वे लोग विभिन्न तान्त्रिकों की तलाश में रहने लगे और चण्डीश्वरनाथ के लिये पुछने लगे । चण्डीश्वरनाथ को कोई नही जानता था । इसलिये उसका पता नही चला । परन्तु एक दिन वो स्वंय ही उनके यंहा आ धमका और उसने उन्हे बताया कि वैशाली को माँ भवानी ने अपने चरणों में जगह दे दी थी और वो अब स्वर्ग में थी ।

दरअसल चण्डीश्वरनाथ 'शमशान भैरवी' को सिध्द करना चाहता था । वो 'कंचनजंगा' की पहाड़ियो में उसे स्थापित कर वंहा एक तन्त्रपीठ बनाना चाहता था । तबके तान्त्रिकों को माँ के स्थापित सिध्दपीठों में अनुष्ठान करने की मनाही थी । जिससे तन्त्र की साधना कर रहे साधक इधर-उधर भटकते थे और अपनी साधना पुर्ण नही कर पाते थे । इसी से शुब्ध होकर चण्डीश्वरनाथ तान्त्रिकों के लिये एक तन्त्रपीठ की स्थापना करना चाहता था । ताकि तन्त्र की साधना कर रहे साधक इधर-उधर भटके नही । इसके लिये वो कंचनजंगा की पहाड़ियों में 'शमशान भैरवी' को सिध्दकर वंही एक तन्त्रपीठ की स्थापना करना चाहता था । अपने इसी अनुष्ठान के चलते उसने शमशान भैरवी के आगे वैशाली की बली दे दी थी । चण्डीश्वरनाथ ने एसा पहले भी बहुत सी युवतियों के साथ किया था और उसका एक ही प्रयोजन था कि वो शमशान भैरवी सिध्द कर ले । फिर भी उसका लक्ष्य अधूरा ही रह गया था । उससे शमशान भैरवी सिध्द नही हुई थी और नाही वो तन्त्रपीठ की स्थापना कर पाया था । कांलातर में अपना यही लक्ष्य पुर्ण करने के लिये वो तन्त्र जगत में खलनायक बन जाने वाला था ।

जो भी हो, चण्डीश्वरनाथ ने सोहम के परिवार को वैशाली के अंत की सूचना दे दी थी । सोहम के माता-पिता इस आघात को झेल नही पाये । कुछ ही महिनों में एक दूसरे पीछे उन दोनो ने अपने प्राण त्याग दिये । अपनी बेटी के एसे अंत की उन्होने कल्पना नही की थी और उसके अंत के लिये वे लोग अपने आपको जिम्मेदार समझने लगे थे । जिसके चलते उन दोनो का स्वास्थ गिरने लगा और कुछ ही दिनो के अंतर से दोनो ने ही अपने प्राण त्याग दिये । सोहम अकेला रह गया ।

अब अकेले सोहम का दिल नही लगता था । उसका अपने कामकाज पर ध्यान नही रहा था । फलस्वरुप कामकाज पर असर पड़ने लगा और धन-संपति का नाश होने लगा । अगले दो वर्षो में ही सोहम ने सबकुछ समाप्त कर दिया । अब वो दिनभर शराब पीता था और वैश्याओं के पास जाने लगा था । एसा वो इसलिये करता था ताकि वो अपने घर की बर्बादी को भूला सके परन्तु जैसे ही वो शराब के नशे से उबरता था बर्बादी की कहानी फिर उसकी आँखों के सामने चलने लगती थी । इससे परेशान होकर वो सदा ही शराब के नशे में डुबा रहता था । अंतत एक दिन उसने फैसला किया कि वो चण्डीश्वरनाथ को तलाश करके उससे इस विषय में पुछेगा । क्योंकि उसके घर की ये बर्बादी चण्डीश्वरनाथ के आने के बाद ही आरंभ हुई थी ।

फिर उसने अपना वो कस्बा छोड़ दिया और चण्डीश्वरनाथ की तलाश में दरदर भटकने लगा । वो अब तान्त्रिकों की संगत में रहने लगा और सुल्फे, गाँजें,

अफिम और शराब के नशे का पुर्णयता आदि हो गया । इसी नशे के चलते एक दिन एसा आया कि नशे के लिये उसने काले नाग के डंक का सहारा लेना आरंभ कर दिया । अब वो अपने साथ सदा ही एक काला नाग पाले रखता था । जब भी उसका नशा कम होता वो काले नाग से अपने आपको डसवा लेता था और नाग के जहर के नशे में डुब जाता था । वो एक एसा जहरीला इंसान बन गया था जिस पर नाग के डंक का असर भी नही होता था । उसके बाल और दाढ़ी बढ़ गये थे और उसकी उसे जरा भी सुध नही थी उसका गेहुआं रग कब सांवलें रंग में बदल गया, उसे पता नही चला था । परन्तु चण्डीश्वरनाथ की तलाश का ख्याल कभी भी उसके दिल से नही गया था । वो हर हाल में चण्डीश्वरनाथ को याद रखता था ।

भैरो घाटी से दूर जंहा आज चीन की सीमा हैं, जहां से तिब्बत की ओर जाया जा सकता हैं । वंही सोहम कुछ तान्त्रिको के साथ एक गुफा में था । वे तान्त्रिक कंचनजंगा की ओर जाने वाले थे । सोहम ने कभी चण्डीश्वरनाथ के मुँह से कचंनजंगा का नाम सुना था और उसके साथ वाले तान्त्रिक उधर ही जा रहे थे । इसलिये सोहम उनके साथ हो लिया था । उसका ख्याल था कि कंचनजंगा में शायद उसे चण्डीश्वरनाथ मिल जाये । वो कई दिनो से उन तान्त्रिको के साथ था और अब वे लोग कंचनजंगा के मार्ग पर थे । हालाकि उनके अनुसार इसमें कई महिने लग जाने वाले थे परन्तु सोहम को इसकी कोई खास पर्वाह नही थी । उसके जीवन में अब चण्डीश्वरनाथ की तलाश के अलावा कुछ नही रह गया था । इसलिये उसके पास समय की कमी नही थी । वो उन तान्त्रिकों के साथ शमशानों में रहता, मुर्दो का मास खाता और नशे में रहता था । वो जैसे जैसे आगे बढ़ते जाते वो भी उनके साथ साथ चलता रहता था । और एक दिन ।

कंचनजंगा के मार्ग पर बढ़ते हुए वे तान्त्रिक आगे पीछे पहाड़ी रास्ते पर चल रहे थे । सोहम उन सबके अंत में चल रहा था । नशे की हालत में वो लड़खड़ाता उनके पीछे पीछे चल रहा था । तभी अचानक उसके सामने चण्डीश्वरनाथ प्रकट हो गया । सोहम चलते चलते रुक गया और चण्डीश्वरनाथ को देखने लगा । वो नशे की झोंक में था । उसकी समझ में नही आया कि उसे क्या करना चाहिये । उसे ये याद था कि उसे चण्डीश्वरनाथ की तलाश थी । परन्तु उसे याद नही आ रहा था कि वो उसे क्यो तलाश कर रहा था । वो याद करने की कोशीश करने लगा और आँखें मिचमिचाकर नशे से बोझिल उसे देखता रहा था । उसके साथ वाले तान्त्रिक पता नही कां पहुँच गये थे । फिर उसने चण्डीश्वरनाथ की आँखों में देखा और उसे अपना सिर भारी होता मेहसूस होने लगा इसके बाद वो अपने होश खोता चला गया । चण्डीश्वरनाथ ने उसे सम्मोहित करके बेसुध कर दिया था ।

सोहम को जब होश आया तो वो किसी गुफा में था । हालाकि वो गुफा बहुत बड़ी थी मगर फिर भी वो थी गुफा ही, इसलिये कि चारों ओर से बंद जान पड़ती थी और उसकी छत काफी नीची थी । वो अपनी आँखें मलता उठ बैठा और चारों ओर देखने लगा । उसके सामने ही फर्श पर बिछी बाघ की खाल पर चण्डीश्वरनाथ बैठा था । उसे देखते ही सोहम को क्रोध आने लगा । उस समय वो नशे में नही था और अपने घर की बर्बादी की कथा उसके सामने चलने लगी । जिसके लिये चण्डीश्वरनाथ ही जिम्मेदार था । वो उठने लगा तो तुरन्त चण्डीश्वरनाथ बोला--"बैठे रहो, बैठे रहो । जो क्रोध करना हैं, कर लो । जो कहना हैं, कह लो" ।

फिर सोहम फट पड़ा--"तुमने मेरे घर को बर्बाद कर दिया । तुमने मेरी बहन की बली चढ़ा दी । मेरी बहन के गम में मेरे माता-पिता चल बसे । हमने तुम्हारा क्या बिगाढ़ा था ? तुम कंहा से हमारी दुनियाँ में आ गये और हम लोगों को बर्बाद कर दिया । हमारा सबकुछ समाप्त हो गया । हमारे अच्छे खासे परिवार को तुमने किसी पिशाच की तरह आकर बर्बाद कर दिया । तुमने एसा क्यों किया ? क्या सारे संसार में तुम्हे हमारा ही घर मिला था ? इतनी बड़ी दुनियां थी, तुमने हमे ही क्यों चुना और क्या कसुर था हमारा ? हमने कभी किसी का कोई गुनाह नही किया था कि मैं समझुं कि हमे हमारे गुनाहों की सजा मिली हैं । जमीदारी और धन-संपति के बाद भी मेरे पिता ने किसी के साथ कोई जुल्म नही किया था । किसी के साथ कोई अन्याय नही किया था । मैंने तो अभी दुनियां ही नही देखी थी और नाही मैं दुनियां देखकर किसी के साथ कोई जुल्म और अन्याय की बात सोचे बैठा था कि तुम उसे रोकने और मुझे सजा देने के लिये हमें बर्बाद कर बैठे । वो जो तुम्हारी तन्त्र विद्या हैं, वो जो तुम्हारे चमत्कार हैं । क्या एसे ही कार्य करने के लिये हैं ? अन्याय और जुल्म का जो पाठ तुमने मुझे पढ़ाया हैं । वो हरगिज भी कोई साधना करने वाला याँ प्रकृति के रहस्यों को जानने वाला नही कर सकता हैं । तुम कोई साधक नही, तुम एक राक्षस हो और दरिंदे हो जो बर्बादी के अलावा कुछ नही कर सकता हैं । हमने तुम्हे क्या समझा था और तुम क्या निकले" ।

बोलते बोलते उसकी आँखों में आँसू आ गये और वो फफक कर रो पड़ा । उसे वैशाली का मासूम मुखमंडल याद आने लगा, उसे अपनी माँ का ममता भरा मुख याद आने लगा और उसे याद आने लगा अपने पिता का दुलार । वो बहुत देर तक रोता रहा । चण्डीश्वरनाथ ने उसे चुप कराने का याँ अपनी सफाई देने का कोई प्रयास नही किया बल्कि उसने उसे और बोलने को उकसाया । सोहम फिर शुरु हो गया और अबकि बार उसने उसे गाँलिया भी देनी आरंभ कर दी । चण्डीश्वरनाथ फिर भी कुछ नही बोला और उसे बोलता देखता रहा । सोहम बहुत देर तक उसे गाँलियां देता रहा और बोलता रहा । अंतत चण्डीश्वरनाथ वंहा से उठकर चला गया । कुछ देर बाद कोई तान्त्रिक जैसा लगने वाला आदमी आया और उसे खाना देकर चला गया । पहले तो सोहम ने नही खाया मगर फिर जब कई घंटे बीत गये और चण्डीश्वरनाथ नही आया तो वो खाना खाकर सो गया ।

इस बार सोहम की आँख खुली तो चण्डीश्वरनाथ फिर उसके सामने वैसे ही बैठा था । वो उठकर बैठ गया । चण्डीश्वरनाथ बोला-- "कोई क्रोध अभी और करना हैं, तो कर लो । अगर अभी भी कुछ कहना हैं, तो कह लो" ।

सोहम ने घृणा से मुँह फेर लिया और कुछ नही कहा । उसने अपना सारा रोष प्रकट कर लिया था । उसने बोलकर अपना सारा क्रोध शाँत कर लिया था । कहने के लिये उसके पास अब कुछ नही था । इसलिये फिर चण्डीश्वरनाथ ही बोला--"मनुष्य कर्मबंधन से बंधा हैं । जो जैसा करेगा वो वैसा भरेगा । जो जन्मा हैं, उसकी मृत्यु भी होगी । जिसकी मृत्यु हुई हैं, वो जन्म भी लेगा । ये साधारण मनुष्य के लिये नियम हैं, परन्तु मैं साधारण मनुष्यों में से नही हुँ । मैंने अपनी साधना से प्रकृति के नियम को मोड़ दिया हैं । मेरा अब जन्म नही होगा और नाही मेरी मृत्यु होगी । मेरी साधना के लिये अगर कुछ साधारण मनुष्यो की आवश्यकता पड़ती हैं तो मैं उन्हे अपने प्रयोजन के लिये चुन लेता हुँ । ये करने के लिये मैं उनका कोई अहसान नही लेता हुँ । उनके लिये भी मैं कुछ अच्छा भी करता हुँ । अगर तुम्हारी दृष्टि में मैंने कोई अन्याय किया हैं तो तुम अज्ञानी हो । इसलिये कि तुमने मेरे उस कार्य को देखा जो साधारण मनुष्य की दृष्टि में बुरा हैं परन्तु तुमने मेरे उस कार्य को नही देखा जो मैंने तुम्हारे परिवार के अच्छे के लिये किया" ।

सोहम चीख पड़ा--"क्या किया तुमने ? मेरे मरते हुए पिता को बचा लिया और बदले में मेरे परिवार के तीन लोगों की जान ले ली" ।

"यही तो मैं तुम्हे बताना चाहता हुँ कि जो तुम सोच रहे हो वो एक साधारण मनुष्य की सोच हैं । अगर तुम क्रोध को त्याग दो तो मेरी बात को ज्यादा अच्छे ढंग से समझ पाओगें" । चण्डीश्वरनाथ ने उसे समझाने वाले भाव से कहा ।

सोहम वैसे ही चीखा--"क्या समझाओगें तुम ? तुम कुछ भी कह लो मगर मेरे घर की बर्बादी को न्यायसंगत नही ठहरा सकते" ।

फिर चण्डीश्वरनाथ हथियार डालने वाले अंदाज में बोला--"अच्छा ठीक हैं । इधर देखो मेरी तरफ" ।

सोहम ने जैसे ही उसकी तरफ देखा चण्डीश्वरनाथ ने तुरन्त ही उसके सिर पर हाथ रखा और अपना अगूंठा उसकी आँखो के ठीक बीच में रख दिया । तुरन्त ही सोहम की आँखो के आगे लाल पीले सितारे नाच गये और अगले ही पल उसे लगा वो उड़ रहा था । सचमुच ही वो वंहा से दूर कंहि उड़ा चला जा रहा था । वो हैरान था कि वो गुफा कंहा चली गई और चण्डीश्वरनाथ कंहा चला गया । बहरहाल सामने जो हो रहा था उसे देखते रहने के अलावा उसके पाय कोई चारा नही था ।

कंहि दूर उड़ते उड़ते वो आसपास देख भी रहा था । वो एक पहाड़ी इलाका था । आसपास हरे भरे पेड़ दिखाई दे रहे थे । उड़ते उड़ते वो बर्फिली पहाड़ी गुफा में प्रवेश कर गया । वो गुफा कितनी बड़ी थी सोहम नही जान पाया क्योंकि वंहा अंधेरा सा था । वंहा एक भीषण देवी की प्रतिमा भी उसे दिखाई दी, जिसके आसपास रौशनी फैली हुई थी । वो पत्थर की बनी करीब छह फुट उँची प्रतिमा थी । उसके एक हाथ में एक रक्तरंजित नरमुण्ड था जिससे रक्त बहता हुआ सा मेहसूस होता था । उसके दूसरे हाथ में कोई फरसे जैसा हथियार था । उसकी आँखें क्रोध में उबली हुई सी जान पड़ती थी । उसकी जीभ बाहर को निकली हुई थी । जैसे रक्तपान करने को लालायित हो । उसके पैरों में कोई इंसानी शव पड़ा था । वो देवी उसी शव पर खड़ी थी । एसा लगता था जैसे वो देवी उस शव को अपने पैरों से दबाये हुए खड़ी थी । दरअसल वो 'शमशान भैरवी' की प्रतिमा थी ।

फिर उस प्रतिमा के आगे उसे अपनी बहन वैशाली खड़ी दिखाई दी और उसके साथ खड़ा था चण्डीश्वरनाथ । चण्डीश्वरनाथ के हाथ में उस प्रतिमा के हाथ में पकड़े फरसे जैसा ही एक फरसा था । जो उस समय वंहा की रौशनी में भरपूर ढगं से चमक रहा था । उसकी तीखी धार शरीर में सिरहन पैदा कर रही थी । उसने देखा उसकी बहन वैशाली पुर्णयता नग्न थी और उसके शरीर पर कोई लाल सिन्दूर जैसा रंग मला हुआ था । उसके बाल खुले हुए थे और वो पुर्णयता शाँत नजर आती थी । चण्डीश्वरनाथ और वैशाली आपस में बातें कर रहे थे । फिर वैशाली, चण्डीश्वरनाथ के पैर छूकर उस प्रतिमा के सामने बनी हुई वेदि पर जा लेटी । उसने देखा चण्डीश्वरनाथ ने अपनी आँखें मुँद ली और कुछ मन्त्र उच्चारण करने लगा । फिर चण्डीश्वरनाथ ने आँखें खोली और उधर वैशाली ने आँखें मुँद ली । और फिर चण्डीश्वरनाथ का फरसे वाला हाथ हवा में उपर उठा और खच्च की आवाज के साथ वैशाली की गर्दन पर गिरा । तुरन्त ही वैशाली की गर्दन उसके धड़ से अलग हो गई । सोहम ने जोर से चीखने की कोशीश की परन्तु वो उस समय अपने सूक्ष्म शरीर के साथ वंहा था जिसके कारण उसकी चीख नही निकल सकी ।

इसके बाद उसने और भी आश्चर्यचकित करने वाला नजारा देखा । उसने देखा वैशाली के मृत शरीर से उसकी सूक्ष्म शरीरी आत्मा उपर उठती दिख रही थी । उपर उठते उठते वो पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण से निकलकर अंतरिक्ष में पहुँच गई और तभी वंहा उसे चण्डीश्वरनाथ भी अपने सूक्ष्म शरीर के साथ नजर आया । वैशाली ने चण्डीश्वरनाथ को झुककर प्रणाम किया और बोली--"गुरुदेव, आप कौन हैं ?

"मैं तुम्हारा मार्गदर्शक हुँ, देवी" । चडीश्वरनाथ ने कहा ।

"किस तरह के मार्गदर्शक ? वैशाली ने पुछा ।

"तुम एक आत्मा हो देवी । तुम्हे एक शरीर चाहिये । अगर शरीर नही मिला तो तुम इस अंतरिक्ष में भटकती रहोगी" । चण्डीश्वरनाथ ने कहा ।

"ये सब तो अब प्रकृति की मर्जी पर निर्भर हैं, गुरुदेव" ।

"प्रकृति की मर्जी भी अंतत तुम्हारे लिये एक शरीर की व्यवस्था करना ही हैं, देवी" ।

"जानती हुँ, गुरुदेव" ।

"मैं इसकी व्यवस्था अभी तुरन्त ही कर सकता हुँ, देवी" ।

"ये आपका बड़ा उपकार होगा, गुरुदेव" ।

"उपकार कैसा देवी, मैंने तुम्हारा अपने प्रयोजन के लिये उपयोग किया हैं । इसलिये मैं चाहता हुँ कि तुम बेवजह अंतरिक्ष में ना भटको" ।

वैशाली ने फिर झुककर चण्डीश्वरनाथ को प्रणाम किया । इसके बाद चण्डीश्वरनाथ के शरीर से एक रौशनी सी निकली और दूर तक अंतरिक्ष में फैल गई । फिर वो वैशाली की तरफ मुड़कर बोला--"मेरे पीछे पीछे चली आओ, देवी" ।

चण्डीश्वरनाथ उस रौशनी के मार्ग पर आगे बढ़ चला और वैशाली उसके पीछे पीछे उड़ती चली और उनके पीछे पीछे था सोहम । फिर वे सब गंगा किनारे बसे एक कस्बे के करीब पहुँचें और चण्डीश्वरनाथ वैशाली से बोला-- "देवी, ये वाराणसी का पावन स्थान हैं । तुमहारा अगला जन्म यंहा होगा । तुम्हे यंहा यश, वैभव और संपति का सुख मिलेगा" । वैशाली ने फिर चण्डीश्वरनाथ को प्रणाम किया । फिर वे और आगे बढ़ चले और एक घर के अंदर जा पहुँचें । वंहा एक ब्राह्मण और ब्राह्मणी संभोगरत थे । चण्डीश्वरनाथ ने वैशाली को इशारा किया और बोला--"देवी, इस ब्राह्मण के वीर्य स्खलन के दौरान आप उसके एक शुक्राणु में प्रवेश कर जायें और फिर मैं उस शुक्राणु को इस ब्राह्मणी के गर्भ में स्थापित कर दूंगा" ।

"जो आज्ञा, गुरुदेव" । कहकर वैशाली ने चण्डीश्वरनाथ को अंतिम बार प्रणाम किया और अतिसूक्ष्म रुप धारण करके उस संभोगरत ब्राह्मण के एक शुक्राणु में प्रवेश कर गई । उधर चण्डीश्वरनाथ कोई मन्त्र उच्चारण करने में लग गया ।

फिर सोहम ने देखा नौ माह बीत गये और उस ब्राह्मणी के यंहा एक सुंदर कन्या का जन्म हुआ जो हुबहु वैशाली के जैसी ही थी । वो ब्राह्मण उस कन्या के जन्म से फूला नही समा रहा था । सोहम ने देखा वैशाली इस दूसरे जन्म में बहुत सुख भोग रही थी । फिर सोहम अपने कस्बे वाले घर में जा पहुँचा और उसने देखा कि उसकी माँ का देहांत हो गया था । उसकी आत्मा भी सूक्ष्म रुप में अंतरिक्ष में दिखी और वंहा भी चण्डीश्वरनाथ प्रकट हुआ और उसने उसकी आत्मा से भी वंही संवाद किया और उसे भी उसने किसी के गर्भ में स्थापित करने का मार्ग दिखाया । बाद में यही सब उसने उसके पिता की आत्मा से भी किया । सोहम को वे सभी प्रसन्नचित, वैभवयुक्त और सुखी दिखाई दिये ।

इसके बाद सोहम का वापसी का सफर शुरु हो गया और उसने देखा कि वो वापस लौटकर फिर उसी गुफा में लौट आया था । सामने वही चण्डीश्वरनाथ उसी बाघचर्म पर आसन लगाये बैठा था । चण्डीश्वरनाथ उसे ही देख रहा था और सोहम भी उसे देखने लगा । बहरहाल सोहम का क्रोध अब शाँत हो चुका था । अपने परिवार की सदगति से वो प्रसन्न नही भी था तो कम से कम अशाँत भी नही था ।

चण्डीश्वरनाथ बोला--"प्रश्न ये नही हैं कि तुम्हारा परिवार बर्बाद हो गया । प्रश्न ये हैं कि, क्या एसा नही होता ? तुम्हारे पिता तो पहले भी मृत्यु का मुख देख चुके थे । अगर मैं समय पर नही पहुँचता तो वे कब के मर चुके होते । वे अगर मर चुके होते तो तुम्हारी माता भी उनके दुख में प्राण त्याग चुकी होती । बहन का विवाह तो तुम्हे करवाना ही था । उसके विवाह के बाद अंतत तुम्हे अकेला हो ही जाना था । अगर ये सब वैसा ही होता जैसे मैं कह रहा हुँ । इसमें एसा भी हो सकता था कि तुम्हारी बहन के विवाह में अडंगे आते और वो उम्र भर कुँवारी भी बैठी रह सकती थी । फिर तुम उसका भी दुख करते रह सकते थे । उसके दुख में तुम स्वंय भी विवाह नही करते और इस तरह ये बर्बादी एक दूसरे प्रकार की होती । दरअसल ये सब काम, क्रोध और मोह की माया हैं । जिसमें हर इंसान बंधा हुआ हैं । हर इंसान का इसी तरह अंत होना हैं, बस कथा जुदा जुदा हैं । उसकी ईच्छायें, कामनाएं कभी मरने वाली नही हैं" ।

"जो सबके साथ होता वो मेरे साथ भी होता, आखिर मैं कोई सबसे जुदा इसांन याँ देवता तो नही हुँ" । सोहम उसे गौर से देखता हुआ बोला ।--"ईश्वर की बनायी इस दुनियाँ में जैसे सब चलते हैं, वैसे मैं भी चल लेता । तुम कोई ईश्वर से बढ़कर तो नही हो जो मेरे परिवार के अंत अथवा उसकी गति को निर्धारित करने लगो" ।

"हाँ, तुम एसा कह सकते हो कि मैं ईश्वर से बढ़कर नही हुँ । मगर मैं साधारण इंसान से बढ़कर हुँ और काम, क्रोध और मोह के बंधन को तोड़कर उससे पार जाकर मैं इसांन का तमाशा देख सकता हुँ और सही-गलत का फर्क बता सकता हुँ । तुम अगर युँ ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते तो तुम्हारी आत्मा भी ये सही-गलत का फर्क समझ सकती

थी । क्योंकि आत्मा को वो दिव्यदृष्टि प्राप्त रहती हैं जो मैं मनुष्य शरीर में रह कर प्राप्त कर चुका हुँ । मगर उस हालात में तुम्हारी आत्मा भटकती रहती और तुम मनुष्य शरीर को धारण करने के लिये लालायित रहते । तब तुम्हारा ये संकल्प होता कि अबकि बार अगर तुम्हे मनुष्य शरीर मिल जाये तो तुम कुछ अच्छे कर्म करने का प्रयास करोगे । मगर मनुष्य शरीर प्राप्त करने के बाद फिर तुम काम, क्रोध और मोह में उलझ जाते और फिर अपने आत्मिक संकल्प भूल जाते । यही सब माया हैं जो तुम समझ नही रहे हो" ।

सोहम ने उसे उलझन भरी दृष्टि से निहारा और बोला--"ठीक हैं, ये सब होता होगा । मगर तुम मुझे ये सब क्यों बता रहे हो ? मेरा इससे क्या लेना देना ? मैं जैसा था, मुझे वैसे ही रहने देते" ।

"इसलिये कि पिछले दस जन्मों से तुम इसे समझना चाहते हो और हर बार तुम मोह के कारण पथभ्रष्ट हो जाते हो । तुमने अपने पिछले दस जन्मों में तीसरे, पाँचवे और छट्ठे जन्म में इसी हिमायल में साधना भी की हैं । अपने छट्ठे जन्म में तुम एक युवती के मोह में पथभ्रष्ट हुऐ थे और मृत्यु के समय तुमने उसे अपनी बहन माना । फलस्वरुप इस जन्म में वही युवती तुम्हारी बहन वैशाली बनकर तुम्हारे साथ थी । अगर तुम उस जन्म में अपनी मृत्यु के समय भी अपनी साधना का ध्यान करते और उस युवती का ध्यान नही करते । उसे अपनी बहन नही मानते तो शायद तुम उसके मोह से छूट जाते परन्तु अपने अंतिम समय में भी तुमने उसे बहन मानकर उससे मोह का बंधन ही जोड़ा । जिससे प्रकृति ने तुम्हारी ईच्छा पुर्ण की और जैसे ही परिस्थितियां बनी तुमने उसे बहन के रुप में पा लिया । यही सब माया हैं" ।

"जो लोग मेरे माता-पिता बनते हैं, उनका क्या ? सोहम ने पुछा ।

"वे सब माया की रचना हैं, कर्मबंधन में लेनदेन का मुख्य व्यवसाय हैं । जिसने जो जिसके लिये किया हैं, वही सब लेने के लिये वे लोग जन्म लेते हैं और अपना लेनदेन पुर्ण कर फिर दूसरा जन्म ले लेते हैं । आज अगर तुम अपनी बहन वैशाली से मिलने जाओ तो वो तुम्हे नही पहचानेगी क्योंकि तुमसे उसका लेनदेन पुर्ण हो चुका हैं । यही सब तुम्हारे माता-पिता से भी लागू हैं" ।

"तो फिर मैं क्या हुँ ? अब सोहम की जिज्ञासा जाग उठी थी ।

"तुम एक पथभ्रष्ट साधक हो जो पिछले दस जन्मों से मोह का बंधन नही तोड़ पा रहा हैं" ।

"अब मैं क्या करुंगा ?

"तुम्हारी पूर्व जन्मों की साधना ने तुम्हे फिर साधना के मार्ग पर तो ला दिया हैं । इसलिये तुम मेरे पास पहुँच गये हो, ये तुम्हारी साधना ही थी जो क्रोध में अथवा परिवार की बर्बादी के नाम पर तुम्हे मेरी तरफ ले आयी हैं । अब वर्तमान जन्म के कर्म और ईच्छायें तुम्हे इस मार्ग पर रहने देती हैं याँ नही, इसे तुम्हे समझना होगा । अगर तुम प्रकृति की मर्जी समझ गये तो तुम साधना के मार्ग पर रहोगे और अगर अभी भी मोह के बंधन में रहे तो तुम्हे फिर साधना के लिये अगले जन्मों की प्रतिक्षा करनी होगी"।

"इससब पर मैं कैसे विश्वास कर लूँ, तुम्हारे साथ मेरा अनुभव अच्छा नही रहा हैं" । सोहम ने शंका जाहिर की ।

"विश्वास मत करो, अनुभव करो" ।

"कैसे ?

"साधना करो, सिध्दी प्राप्त करो और जो मैं कह रहा हुँ उसे स्वंय जान लो" ।

"मैं जो भी करुं, वो तो मेरी मर्जी पर निर्भर करेगा परन्तु तुम्हारा इससे क्या लेना देना हैं ? तुम कंहा से बीच में आ गये ?

"मैं एसे लोगों की तलाश में रहता हुँ जो साधना से भटके हुए हैं और बहुत कुछ कर सकते हैं । अगर तुम साधना और सिध्दी प्राप्त करना चाहोगे तो मैं इसमें तुम्हारी मदद करुंगा अगर नही करना चाहोगें तो मैं किसी और की तलाश करुंगा" ।

"क्या तुम अपनी साधना में मेरा भी कोई उपयोग करोगे ?

"नही, तुममे उपयोग जैसा कुछ नही हैं । अगर तुम साधना और सिध्दी के लिये तैयार भी हो जाते हो तो तुम पर बहुत ध्यान देना होगा और तुम पर बहुत मेहनत करनी होगी मुझे । तुम एसे कोयले की तरह हो जिसे हीरा बनाने में बहुत समय लगने वाला हैं" ।

"इसमें तुम्हारा क्या लाभ हैं ? तुम एसा क्यो करना चाहते हो ?

"इसमें मेरा कोई लाभ नही हैं । सच पुछो तो मुझे अब लाभ हानि से कोई मतलब नही हैं । मैंने इतनी तान्त्रिक साधना की हैं और इससे इतना पाया हैं कि लाभ-हानि का मेरे लिये कोई मतलब नही हैं । परन्तु भारत में तन्त्र की ज्यादा पुछ नही हैं असल में लोग तन्त्र से डरते हैं । मैंने अपना पुरा जीवन तन्त्र को दिया हैं और चाहता हुँ कि लोग इसको समझें और इसे आदर की दृष्टि से देखें जैसे 'योग' को देखा जाता हैं । इसके लिये मैं तुम्हारे जैसे लोगों को तलाश में करता रहता हुँ और चाहता हुँ कि तन्त्र को स्थापित करने के लिये तुम जैसे लोग कार्य करें" ।

"तो तुम मुझे तान्त्रिक बनाना चाहते हो ?

"मैं तुम्हे कुछ नही बनाना चाहता हुँ । मैं तो बस तुम्हे तुम्हारी अधूरी साधना को पुर्ण करने का मार्ग दिखाना चाहता हुँ । इससे तुम्हारी जन्मों जन्मों की प्यास बुझेगी । प्रकृति ने तुम्हे मुझसे मिलाया हैं तो समझ लो कि प्रकृति चाहती हैं कि तुम तन्त्र के जरिये अपनी प्यास बुझाओ । अन्यथा तुम्हारी बहन को तो मैं तुम्हारी मर्जी से अपने साथ लाया था और वो कहानी तो कब की समाप्त हो चुकी हैं । परन्तु फिर बाद में तुम्हे मेरा ख्याल आया और तुम दिनरात मेरी तलाश में भटकने लगे । और देखों कि तुम तान्त्रिकों से मिले और कई माह और वर्ष तुम उनके साथ शमशानों में रहे । ये तान्त्रिक बनने के प्रकृति के संकेत नही तो और क्या हैं ?

इस तरह के कई प्रश्नोंतर होते रहे और सोहम सोच में पड़ गया । वो अपने गुजरे जीवन को याद करने लगा । उसे याद आया कि कई बार उसे एसा लगता था कि जो जीवन वो जी रहा हैं वो उसके लिये नही था । वो अक्सर सपनों में देखा करता था कि वो पहाड़ो और गुफाओं में विचर रहा था । उसे तान्त्रिकों और साधुओं के साथ रहने में और बातचीत करने में आनंद मेहसूस होता था । उसे याद आया कि कई बार बैठे बैठे वो कंहि खो जाता था । अपनी बहन वैशाली से उसे बहुत लगाव मेहसूस होता था । उसे लगता था कि वो वैशाली के लिये कितना भी करें उसके लिये उतना कम होगा । वो अपनी बहन वैशाली के लिये एक समर्पित भाई था । वो सोचता था कि और लोगों की भी बहने होती हैं परन्तु उसने उन लोगों को बहन के लिये कभी इतना समर्पित नही देखा था । वो सोचने लगा-- क्या उसका वैशाली से पूर्व जन्म का कोई लेना-देना था । क्या ये जीवन इसी तरह कर्म के लेनदेन का नाम था । वो गहन सोचविचार में खो गया । उसने देखा चण्डीश्वरनाथ उठकर चला गया था । उसने उसको रोकने की याँ उससे कुछ पुछने की कोशीश नही की । वो अपनेआप से ही प्रश्न करने लगा और स्वयं ही उनके उत्तर तलाश करने का प्रयास करने लगा । उसे समय का कोई ध्यान नही रहा था । कब रात होती थी और कब दिन निकलता था उसे कुछ पता नही था । कई दिन बीत गये उसका सारा समय ख्यालों में खोये रहने में बीतता था । उसे अब शराब की लत भी नही सताती थी । जब भी उसे भूख लगती थी उसी समय उसे कोई तान्त्रिक जैसा आदमी आता और खाना देकर चला जाता था । वो हैरान होता था कि उन लोगों को उसकी भूख का कैसे ज्ञान हो जाता था । क्या तन्त्र में इतनी शक्ति थी कि बिगैर बोले भी सब कुछ समझा जा सकता था । वो धीरे धीरे तन्त्र के प्रति आकर्षित होने लगा । चण्डीश्वरनाथ का कंहि पता नही था ।

फिर सब कुछ बदल गया । सोहम अंर्तमुखी हो गया । उसे अब बाहरी दुनियाँ से कोई लगाव नही रह गया था । वो अपने ही अंदर झांक झांक कर देखता रहता था कि-- क्या वो कभी साधक रह चुका था । क्या कभी उसने भी साधना की थी । वो आँखें मुँदें अपने अंदर देखने का प्रयास करता रहता था । उसे अब कोई विचार नही आता था । उसे अब किसी बात की चिंता नही थी । वो अपने दिल की धड़कन सुनता था । अपनी सांस को चलता देखता था । अपने पूर्व जन्मों को देखने का प्रयास करता था । वो स्वंय को ये विश्वास दिलाना चाहता था कि वो सच में पूर्व जन्म का कोई साधक था । वो पुरानी बातों को याद करने का प्रयास करता था और धीरे धीरे अपने पूर्व जन्म में चला जाना चाहता था । इस सारे प्रयत्न में उसका मस्तिष्क विचार शून्य हो गया था । उसका मन स्थिर हो गया था । फिर अचानक एक दिन उसकी उपर वाली दूसरी स्मृति की पट्टी सक्रिय हो उठी । सिर में अंदर की तरफ मस्तिष्क को लपेटे हुऐ एक दूसरे के उपर दो पट्टियां होती हैं । इसमें नीचे वाली पट्टी में इस जन्म की स्मृतियां होती हैं और उपर वाली पट्टी में पूर्व जन्मों की स्मृतियां होती हैं । इस पट्टी के सक्रिय होते ही इसमें संचित पूर्व जन्मों की स्मृतियां उसके मनसपटल पर चलचित्र की तरह चलने लगी । उसे वर्तमान जन्म से पिछले दस जन्मों का लेखाजोखा दिखना आरंभ हो गया । इस दौरान उसने अपने तीन जन्मों में उस साधक को भी देखा जो साधना में लीन था परन्तु बेचैन दिखता था । फिर उसे वो युवती भी दिखाई दी जिससे उसका लगाव हो गया था । उसने देखा कि वो साधक उस युवती से बहुत प्रभावित था । उस युवती के मोह में उस साधक की साधना भंग हो रही थी ये भी उसने साफ साफ देखा । उसने देखा वो साधक अपनी साधना के भंग हो जाने से बहुत दुखी था और पश्चाताप की अग्नि में झुलस रहा था । उसने देखा कि एसे बहुत से लोग थे जिनसे वो संबधित था और वे लोग उसे अगले जन्मों में मिल रहे थे । उसने देखा कि जिससे उसका ज्यादा लगाव होता था वो अगले जन्म में उसका कोई रिश्तेदार बन जाता था । अगर वो निर्लिप्त होकर किसी की सेवा करता था तो अगले ही जन्म में वो उसकी अपनी सेवा में दिखाई देता था । इसी तरह अगर कंहि वो किसी को कोई धोखा देकर अथवा स्वार्थी होकर किसी से अपना काम निकाल लेता था तो अगले ही जन्म में वो उसके किसी रिश्तेदार के रुप में उससे अपना काम निकाल रहा होता था और वो स्वंय उस जन्म में उसके मोह में पड़कर स्वंय ही उसके काम आ रहा था ।

इस तरह उसने पूर्व जन्मों के कर्मबंधन को समझा और देखा कि कैसे जन्मों का क्रम चल रहा था । कर्मबंधन से जुड़े सभी लोग एक दूसरे के काम आ रहे थे और कोई किसी के लेनदेन में हेरफेर नही कर पा रहा था । अपनी समझ से जो लोग किसी जन्म में एसा कर भी लेते थे तो प्रकृति अपनी मुस्तैदी से सारे हिसाब का ध्यान रखती थी और उस हेरफेर का बराबर हिसाब संबंधित व्यक्ति को दिला रही थी । इस तरह कहि कोई धोखा नही था अगर कंहि था भी तो अस्थायि था । कर्मचक्र और कर्मफल अपनी जगह मुस्तैद थे और सबका हिसाब बराबर हो रहा था । लोग धोखे और ठगी को बीमारी के रुप में झेल रहे थे और उनकी किस्मत का वो व्यक्ति खा रहा था जिससे पिछले जन्म में वो धोखा कर आये थे । उसने देखा कोई कामनाओं के चक्रव्युह में उलझा था और अपनी कामनाओं के पुर्ण होने के कारण दुखी था । कोई क्रोध के चक्रव्युह में उलझा था और अपनी शक्ति को लेकर दंभ में था परन्तु और शक्ति ना हासिल होने के कारण दुखी था । कोई अपनो के मोह के चक्रव्युह में उलझा था और उसके अपने उसकी बात नही मान रहे थे अथवा नही समझ रहे थे इसलिये दुखी था । कर्मचक्र और कर्मफल का एसा मायाजाल उसने देखा कि जिसका कोई छोर और कोई सिरा उसे नही दिखा । बहरहाल सोहम उसे कई दिनो तक देखता रहा । वो जितना उसे देखता था उतना ही वो उससे विरक्त होता जाता था । अंतत उसे लगा कि इस मायाजाल में उलझकर अपना समय और जीवन व्यर्थ गंवा देना होगा । धीरे धीरे वो उससे उबरने लगा और कई दिन की उस जन्मों की यात्रा ने उसे एक दूसरा ही व्यक्ति बना दिया था । अब वो कई एसी बातें देख चुका था जिसके लिये उसे चण्डीश्वरनाथ की गवाही की आवश्यकता नही थी । उसे चण्डीश्वरनाथ से अब कोई गिला अथवा शिकायत नही थी । उल्टा वो चण्डीश्वरनाथ से प्रभावित दिखता था । अब वो बेहद शाँत और सन्तुष्ट व्यक्ति दिखता था । एसा लगता था कि वो एसा सबकुछ समझ चुका था जिसकी उसे कभी समझ नही थी ।

इसके कई दिनो के बाद जब चण्डीश्वरनाथ आया तो उसने प्रश्नसूचक दृष्टि से सोहम की तरफ देखा । सोहम अब दिशाहीन था उसके सामने चण्डीश्वरनाथ का प्रस्ताव मानने के अलावा कोई मार्ग नही बचा था । वैसे भी वो वंहा बैठा रहता था और सोचा करता था कि चण्डीश्वरनाथ की बात मानने के अलावा वो क्या कर सकता था । उसके मन ने सदा ही उसे चण्डीश्वरनाथ की बात मान लेने का विचार प्रकट किया और इस तरह वो भी लगभग तय कर चुका था कि वो चण्डीश्वरनाथ की बात मान लेगा । फिर उसने चण्डीश्वरनाथ के सामने आत्म समर्पण कर दिया । चण्डीश्वरनाथ इससे बहुत प्रसन्न हुआ और उसने खुशी खुशी उसे अपना शिष्य स्वीकार कर लिया और उसे अमावस्या की प्रतिक्षा करने को कहा ।

अमावस्या की उस रात एक शमशान में चण्डीश्वरनाथ और सोहम दोनो ने एक दूसरे को गुरु-शिष्य स्वीकार कर लिया । सोहम भीगी आँखों से चण्डीश्वरनाथ से बोला--"मैं आपको गाँजा, भाँग, कौड़ीयां और चाँदी के सिक्के भेंट में देना चाहता था । जैसा कि तन्त्र जगत की पंरपरा हैं परन्तु आज मैं इस लायक नही हुँ कि आपको ये भेंट दे सकुं । आशा हैं कि आप मेरी मजबूरी को समझेगें और इस भेंट के बिगैर भी मुझे अपना शिष्य स्वीकार करेगें" । कहकर सोहम ने चण्डीश्वरनाथ के पैर छूये और चण्डीश्वरनाथ ने उसे गले से लगा लिया ।

उस अमावस्या की रात गुरु-शिष्य बनने की जो घटना घटी थी वो आने वाले समय में कई लोगों के लिये मुसीबत का कारण बनने वाली थी । सोहम को अपना शिष्य बनाकर चण्डीश्वरनाथ ने एक एसे उत्पात को जन्म दिया था । जो कई लोगों के जन्मजन्मांतर को नष्ट कर देने वाला था । सोहम तन्त्र के अनुचित उपयोग की मिसाल बननें जा रहा था ।

बहरहाल सोहम की तन्त्र साधना आरंभ हो गई । सबसे पहले उसने वशीकरण सिध्दी प्राप्त करने के लिये साधना आरंभ की और वो महिनो तक शमशान में बैठा रहा । वो शमशान में बैठा चन्द्रमाँ को घूरता रहता था । इससे उसकी आँखें स्थिर होने का अभ्यास करती थी । ये तन्त्र की एक राजसिक सिध्दी थी जो तामसिक सिध्दियों में जाने से पहले सीख लेना आवश्यक थी । इस सिध्दी से सोहम की आँखें सम्मोहनयुक्त हो गई । दिन में वो तन्त्र के मन्त्र उच्चरित करता था और रात में शमशान में बैठा चन्द्रमाँ को घूरता रहता था । जब इसमें वो सिध्दहस्त हो गया तो फिर बारी आयी चौंसठ योगिनियों की और वो एक एक करके योगिनी सिध्दी करने लगा । इससे 'डाकिनी', 'शाकिनी' और हाकिनी सिध्दी का दौर चलने लगा । इन तीन सिध्दीयों के लिये सोहम को तीन वर्ष लग गये । इस साधना में सबसे पहले 'हाकिनी' प्रकट हुई और तुरन्त ही एक घटना होते होते बची ।

तामसिक जगत के विभिन्न लोकों में रहने वाली ये शक्तियां विभिन्न क्रियाओं और मन्त्रों के माध्यम से की जाती हैं । ये विभिन्न क्रियाएं और मन्त्र जाप एक विशेष प्रकार की ध्वनी तंरग को उत्पन्न करती हैं और फिर कुछ और क्रियाएं इन ध्वनी तंरगों को तामसिक जगत के उन लोकों में पहुँचा देती हैं । जिसे सिध्द करने के लिये ये मन्त्र जाप किया जाता हैं मन्त्र जाप की ध्वनी तंरगें उस लोक में जाकर उसके आसपास गुँजने लगती हैं । जैसे मन्त्र जाप अगर डाकिनी के लिये किया गया हैं तो मन्त्र जाप की ध्वनी तंरगें उसके आसपास जाकर गुँजने लगती हैं । उससे परेशान होकर अंतत डाकिनी को उस मन्त्र ध्वनी के पीछे पीछे पृथ्वी पर आना ही पड़ता हैं ताकि मन्त्र जाप की ध्वनी तंरगें बंद हो जाये और उसका पीछा छूट जाये इसके लिये वे साधक की ईच्छायें भी पुर्ण करती हैं । वैसे भी पृथ्वी लोक को छोड़कर अन्य किसी भी जगत में और किसी भी योनि में अनुभूति के अलावा कुछ भी नही होता हैं । जबकि मनुष्य अनुभूति के अलावा भी कई प्रकार के भौतिक सुख और आंनद प्राप्त कर सकता हैं । क्योंकि उसके पास भौतिक शरीर होता हैं । परन्तु डाकिनी, हाकिनी और शाकिनी जैसी सूक्ष्म शरीरी जीवात्माओं को एसी सहजता उपलब्ध नही हो पाती हैं । इसलिये वे केवल अनुभूति ही सर्वाधिक कर पाती हैं । जब मन्त्र जाप की ध्वनी तंरगें किसी की सिध्दी के लिये उस तक पहुँचती हैं तो मनुष्य से अधिकाधिक अनुभूति उसे होती हैं । जो उसके

अपने क्रियाकलापों से उसे दूर कर देती हैं और वो इस मन्त्रजाप की ध्वनी तंरगों से परेशान होने लगती हैं । इस निरंतर मन्त्र जाप से पीछा छुड़ाना उसके लिये आवश्यक हो जाता हैं । कभी कभी इसकी परिणिती साधक की मृत्यु के रुप में भी प्रकट होती हैं । बहरहाल दृढ़निश्चय और दृढ़सकंल्प से किया गया मन्त्रजाप इन्हे भयभीत कर देता हैं और इस तरह डाकिनियां, हाकिनियां और शाकिनियां सिध्द हो जाने के बाद साधक के नियत्रंण में हो जाती हैं । परन्तु सदा इस ताक में रहती हैं कि साधक कोई गलती करें और वे उसे मार डाले क्योंकि साधक के जिवित रहते तो उनका उसके नियंत्रण से छूटना अंसभव होता हैं । वे उसका विरोध भी नही कर सकती हैं अन्यथा फिर उस साधक के मन्त्र जाप की ध्वनी तरंगें उन्हे परेशान करेगी । इसलिये उसका मर जाना ही उनके हित में होता हैं । साधक को इस बात का ध्यान रखना पड़ता हैं कि वो कोई गलती ना करें अन्यथा उसकी मृत्यु फिर निश्चित हैं । सोहम भी एसी ही एक गलती करने जा रहा था ।

हाकिनी सिध्दी के दौरान सोहम में कामवासना जाग उठी थी । इस सिध्दी के दौरान जब 'हाकिनी' उसके सामने प्रकट हुई तो सोहम उसके रुप यौवन पर फिसल गया और उससे कामवासना शाँत करने को तत्पर हो गया । तभी चण्डीश्वरनाथ ने उसे आकर डाँटा और समझाया कि हाकिनी उसके लिये साधन थी, एक उपकरण थी । अगर वो अपने साधन और उपकरण अपनी ईच्छाओं को पुर्ण करने में ईस्तेमाल करने लगेगा तो एक दिन हाकिनी उसे ही मार डालेगी ।

दरअसल 'हाकिनी' सूक्ष्म जगत की अतिसुन्दर युवतियां होती हैं जो पृथ्वी तत्व से ज्यादा वायु तत्व से बनी होती हैं । सुन्दरता में इनका कोई मुकाबला नही होता था । साधारण से ज्यादा लंबी-लंबी उंगलियां, अत्याधिक नुकिली नाक, अतिआकर्षक मुखमंडल, वासनामयी आकर्षक आँखें और लावण्यमयी शारिरिक बनावट किसी का भी मन वासनामय बना देने में सक्षम थे । वायु तत्व की अधिकता के कारण लहरा लहराकर चलना इनकी अदा में शुमार होता था । साधक ईन्हे अपने शत्रुओं का यौन शोषण करने के लिये ईस्तेमाल करते थे । कामवासना इनमें इतनी अधिक होती थी कि ये सन्तुष्ट ही नही होती हैं । सूक्ष्म जगत की होने के कारण इनमें साधारण लोगों से अधिाक शक्ति और माया होती हैं । ये कामवासना में डुबाकर संबंधित व्यक्तिको अतिनिर्बल कर देती हैं और उसे बीमार कर देती हैं जिससे अंत में उसकी मृत्यु हो जाती हैं । कई दिनो से स्त्री सान्निध्य को तरसा हुआ सोहम, हाकिनी की सुन्दरता देखकर स्वंय ही उसपर रींझ गया और उससे यौन संबंध स्थापित करने को लालायित हो उठा परन्तु चण्डीश्वरनाथ के बीच में आ जाने से एसा नही हो सका । हालाकि हाकिनी बाद में कई मौकों पर उसे अपनी अदाओं से आकर्षित करने का प्रयत्न करती रही परन्तु सोहम समझ चुका था । इसलिये कोई दुर्घटना नही हो सकी अन्यथा एक बार भी अगर सोहम, हाकिनी को भोग लेता तो फिर उसका उसके जाल से निकलना मुश्किल हो जाता । बहरहाल इन सिध्दियो के बाद डाकिनीयां, हाकिनीया और शाकिनीयां सोहम की दासता में थी ।

एसी ही एक घटना और हुई । सोहम उस समय 'पक्षी योगिनी' सिध्द करने में लगा हुआ था । इसे सिध्द कर लेने के बाद साधक पक्षियों की भाषा समझने लगता हैं और उनसे मनचाहे कार्य करवा सकता था । उसने कई पक्षयों को अपनी सिध्दी के लिये ईस्तेमाल किया और उनसे मनचाहे कार्य करवाये । वो अब पक्षियों की भाषा समझने लगा था । परन्तु इसमें एक शर्त होती थी कि जिस पक्षी से कोई भी कार्य करवा लिया जाये उसके बाद उस पक्षी को मार डाला जाना था । अन्यथा वो पक्षी उस साधक के लिये खतरा बन जाता था । सोहम इस बात का खूब ख्याल रखता था ।

उस रात भी अमावस्या की ही रात थी । सोहम अपनी गुफा में 'पक्षी योगिनी' के मन्त्र उच्चारण करने में लगा हुआ था । उसके सामने एक शहद जैसी पीली आँखों वाला दो फुट उँचा उल्लू बैठा हुआ था । जिसके पैर एक पतली जंजीर से बंधे हुऐ थे । उल्लू निशाचर पक्षी था और तामसिक गुणों वाला माना जाता था । पक्षी योगिनी भी एक तामसिक सिध्दी थी और इसकी सिध्दी के लिये उल्लू जैसा पक्षी बहुत उत्तम बैठता था । उल्लू बुध्दीमान पक्षी तो था ही परन्तु इसमें कुछ विशेष शक्तियां भी होती हैं जिन्हे साधक लोग जानते थे और अपने लाभ के लिये ईस्तेमाल करते थे । इसी की शक्तियों के लाभ के लिये सोहम इस गुफा में पिछले एक वर्ष से था । सोहम प्रत्येक योगिनी सिध्दी के दौरान अपनी गुफा बदल लेता था । इससे वो पिछले कर्मकाण्डों के प्रभाव को भूला पाता था और कोई सिध्दी किसी दूसरी सिध्दी के प्रभाव को कम ना करें एसी सावधानी भी हो जाती थी । उसकी सोच के अनुसार एक ही स्थान पर कई सिध्दीयों के प्रभाव आपस में गड्डमड्ड हो सकते थे । कंचनजंगा की उस पहाड़ी श्रखंला में गुफाओं की कोई कमी नही थी । सोहम आसानी से एक गुफा से दूसरी गुफा में चला जाता था और अपना डेरा जमा लेता था । इस गुफा उसे एक वर्ष होने को आया था और पक्षी योगिनी की उसकी साधना अपने शीर्ष पर थी । आज अंतिम अमावस्या थी जिसके बाद ये सिध्दी भी वो प्राप्त कर लेने वाला था ।

बहरहाल वो मन्त्र उच्चारण करने में व्यस्त था और सामने बैठा उल्लू उसे ही घूर रहा था । गुफा में असंख्य पक्षियों के कंकाल और सिरकटे शव पड़े थे । जिससे वंहा असहनीय दुर्गन्ध फैली हुई थी । सोहम को अब इन बातों से कोई फर्क नही पड़ता था । जबसे उसने तामोगुणी सिध्दियां सीखना आरंभ की थी तब से वो मैले-कुचले और दुर्गन्धमय वातावरण में रहने का आदि हो चुका था । वो स्वंय भी कई कई माह नहाता ही नही था । उसके बाल बेतरतीब हो गये थे और जट्टाओं में तब्दिल होते जा रहे थे । उसका रंग काला पड़ता जा रहा था परन्तु उसका माथा चमकदार हो गया था । उसकी आँखें क्रोध और नफरत से भरी दिखाई देने लगी थी । वो वैसी ही क्रोध भरी आँखों से और बिगैर पलक झपकाये सामने बैठे उल्लू को देख रहा था और निरंतर मन्त्र जाप कर रहा था । उल्लू की भी भावहीन दृष्टि उसी पर टिकी हुई थी । आज इस सिध्दी के अंत में उसे भूत, भविष्य और वर्तमान के अपने प्रश्नों के उत्तर प्राप्त होने वाले थे ।

सोहम मन्त्र पढ़े जा रहा था और रात गहराती जा रही थी । अंतत जब आधी रात गुजर गई तो उल्लू ने बेचैन होकर अपने पंख फड़फड़ाये और उसके मुँह से इंसानी आवाज निकली--"बसकर साधक, तुझे मुझसे क्या चाहिये ? आश्चर्य था कि उल्लू इंसानी आवाज में बोल रहा था । कोई साधारण इंसान उस समय वंहा होता तो अवश्य ही अपनी सुध खो देता । उस अमावस्या की रात में वो भयानक उल्लू जैसे इंसानी आवाज में बोल रहा था उससे भय पैदा हो जाना साधारण सी बात थी । बहरहाल सोहम उससे जरा भी भयभीत नही हुआ था । वो उसी तरह अपने मन्त्र जाप में लीन रहा । उल्लू ने फिर बोलना शुरु किया । इस बार उल्लू किन्ही सिध्दियों के विषय में बता रहा था । ये सब सोहम ही समझ रहा था । फिर आश्चर्यजनक बात ये हुई कि उस उल्लू ने अपने प्रत्येक अंग के विषय में बताना आरंभ किया और वो बता रहा था कि उसका कौनसा अंग किस सिध्दी और कार्य के लिये काम आ सकता था । सोहम ने अब मन्त्र जाप बंद कर दिया था और वो उल्लू की बातें बड़े ध्यान से सुन रहा था । जब उल्लू ने बोलना बंद कर दिया तो सोहम सोच में पड़ गया और उल्लू की बतायी सारी बातें ध्यानगम्य करने लगा । तब तक उल्लू उसे भावहीन दृष्टि से घूरता रहा । फिर सोहम ने उल्लू से प्रश्न किया--"मेरे पूर्व जन्मों की अधूरी साधना पुर्ण होगी ? उल्लू ने अपनी चोंच खोली और उसके मुँह से निकला--"हाँ" । सोहम उससे अपने तीन प्रश्न करने वाला था और ये उसमें से पहला प्रश्न था । इन तीन प्रश्नों के बाद ये सिध्दी पुर्ण हो जाने वाली थी । सोहम ने दूसरा प्रश्न किया--"क्या मेरी वर्तमान साधानायें पुर्ण होगी ? उल्लू ने फिर चोंच खोली और वैसे ही बोला--"हाँ" । इसके बाद सोहम ने अपना अंतिम और तीसरा प्रश्न किया--"क्या भविष्य में मुझे अपनी साधना के लिये किसी की आवश्यकता होगी अगर होगी तो वो कंहा और कब मिलेगा ? उल्लू ने कहा--"तुम्हे बिन्दु साधना के लिये भविष्य में किसी स्त्री की आवश्यकता पड़ेगी और वो तुम्हे आजसे चालिस वर्ष बाद हरिपुर में मिलेगी ।

फिर अचानक वो घटना घटी जिससे सोहम अंधा हो सकता था । दरअसल इस सिध्दी में उल्लू से केवल तीन ही प्रश्न किये जा सकते थे । बाकि उल्लू स्वंय ही बता दिया करता था । अपने तीन प्रश्नों के बाद उल्लू की गर्दन काट दी जानी चाहिये थी अन्यथा वो साधक की आँखें फोड़ दिया करता हैं । सोहम ने जब अपने तीन प्रश्न कर लिये तो उसे तुरन्त ही उल्लू की गर्दन काट देनी थी और इसके लिये उसने अपने पास ही एक तलवार भी रख छोड़ी थी मगर अपने भविष्य की बातें सुनकर वो ख्यालों में खो गया और तभी उल्लू के पैर की जंजीर टूटी और वो तेजी से सोहम की आँखें निकाल लेने को झपटा । सोहम को उल्लू की जंजीर टूटने की आवाज से होश आया और

वो भी तुरन्त पास रखी तलवार की तरफ झपटा मगर तब तक उल्लू उसके करीब आ चुका था । फिर एक चमत्कार हुआ सोहम के पीछे से चण्डीश्वरनाथ प्रकट हुआ उसके हाथ में थमा फरसा एक पल को हवा में चमका और तुरन्त ही उल्लू के दो टुकड़े हो गये और उसके छितरे पंख हवा में तैरने लगे । उल्लू मर चुका था ।

इस घटना के बाद सोहम बहुत सतर्क और सजग हो गया था । चण्डीश्वरनाथ ने उसे समझाया कि तन्त्र के लिये सजगता और सर्तकता कितनी आवश्यकता थी । उसने उसे आत्मबल और आत्म विश्वास के विषय में बताया कि कोई भी मन्त्र जितने आत्म विश्वास और आत्मबल से उच्चारित किया जायेगा सिध्दी उतनी ही तुरन्त और सहजता से प्राप्त होती हैं । फिर आने वाले पन्द्रह वर्षो तक सोहम वो सब सीखता रहा था । उसने चौंसठ योगिनियों को सिध्द कर लिया । उसने मोहन, मारण, वशीकरण, उच्चाटन ईत्यादि तन्त्र की सिध्दीयां प्राप्त करने में कोई कसर नही छोड़ी ।

अब वो डाकिनी, हाकिनी और शाकिनी से कार्य करवा लेना भी सीख गया था । इसके लिये उसे फिर शराब का सहारा लेना पड़ा क्योंकि अंर्तबोध को सक्रिय करने के लिये और बर्हिबोध को शिथिल करने के लिये शराब आवश्यक थी । अंर्तबोध के सक्रिय होने से उसकी अनुभूति प्रक्रिया तीव्र हो जाती थी । इसी के मार्ग से डाकिनी, हाकिनी और शाकिनी से वो सम्पर्क साध सकता था और अपने कहे कार्य उनसे करवा सकता था । वैसे भी अब प्रेत जगत की कई आत्मायें उसके नियंत्रण में रहती थी । दरअसल जबसे उसने डाकिनी ईत्यादि सिध्दी कर ली थी तब से प्रेत योनि की कई आत्मायें उससे स्वयं ही सम्पर्क कर लेती थी और अपने-अपने संदेश उसे देती थी । ये संदेश कई बार उनके अपने लिये होते थे कि उनका अंतिम संस्कार नही हुआ था इसलिये वो भटक रही थी । अगर वो उनका अंतिम संस्कार करवाने का कोई जुगाढ़ कर दे तो वे उसे उसकी सिध्दियों के विषय में और गूढ़ रहस्य बता सकती थी । वो एसा कहती नही थी परन्तु उनके संकेत इसी प्रकार के होते थे और सोहम जानता था कि वो अगर उनके कहे अनुसार करेगा तो वे भी उसके लिये अवश्य ही कोई कार्य करेगी । ये एक मूक व्यवसायिक संधी उनके बीच में और सोहम के बीच में थी। सोहम भी इससे कभी पीछे नही हटा और वे भी कभी नही हटी । इस तरह सोहम दिन ब दिन और शक्तिशाली होता चला गया । कई बार ये आत्मायें, दुनियां में कंहा क्या हो रहा हैं । एसे समाचार भी उसे सुनाया करती थी और सोहम अपनी जगह बैठे बैठे ही दुनियां की खबर रखने लगा । सोहम ने स्वास्थवर्धक जड़ी-बूटियां और नवयौवन के नुस्खें तथा आयुवर्धन के उपाय इन आत्माओं से पुछे तब वे आत्मायें उन आत्माओं को बुला लाई जो अपने जीवन काल में जड़ी-बूटियों की खोज करते रहे थे और प्रेत योनि में आने के बाद ही उनकी खोज पुर्ण हो सकी थी । क्योकि एक बार प्रेत योनि में आ जाने के बाद पृथ्वी का कोई भी रहस्य, रहस्य नही रह जाता हैं । प्रेत जगत का सूक्ष्म शरीर मिल जाने के बाद पृथ्वी की सूक्ष्म से सूक्ष्म बातें भी पता चल जाती हैं जोकि शरीर के रहते पता नही चल पाती हैं । परन्तु अब शरीर ही नही रहा तो वो खोज उनके लिये अपुर्ण थी । एसे रहस्य वो किसी भी जिवित प्राणी को बताने को सहर्ष ही तैयार हो जाती थी । इसका भरपूर लाभ सोहम ने लिया और वो परम सिध्द तान्त्रिक होने की दिशा में अग्रसर रहा ।

फिर चण्डीश्वरनाथ ने उसे तन्त्र के विषय में बताया । तन्त्र की शाखाओं के विषय में बताया । उसने उसे तन्त्र की प्राचीन विचारधारा 'शाक्त' के विषय में बताया और उसने उसे 'कौल-मत' के विषय में बताया । उसने उसे अघोरपंथ के विभिन्न मतों के विषय में बताया । उसने उसे 'कपालिकों' के विषय में बताया जो कि अघोरपंथ के सर्वाधिक शक्तिशाली और भंयकर साधक थे । कौल-मत के अनुयायी कपालिक सही मायनों में अघोरी कहलाने के हकदार थे । क्योंकि ये लोग घोर तपस्या की सीमा को लांघकर अपना सर्वस्य न्यौछावर कर देने को तत्पर रहते थे । अपनी साधना के मार्ग पर ये कोई भी समझौता नही करते थे । नरबली के सिध्दांत को भी ये लोग बिना किसी अड़चन के पुर्ण कर देने को तैयार रहते थे । इनके लिये साधना ही सबकुछ था । फिर चाहे ये स्वयं रहे अथवा ना रहें । कभी चण्डीश्वरनाथ ने इसी मत को अपनाया था और अब सोहम भी इसीसे आकर्षित हुआ । आने वाले समय में वो एक कपालिक कहलाने वाला था । जो अपने साथ मानव-कपाल लेकर चलता था ।

जब सोहम को चण्डीश्वरनाथ से मिले करीब बीस वर्ष होने को आ गये थे और वो पुर्ण रुपेण आवश्यक सिध्दियां सीख चुका था तो एक दिन चण्डीश्वरनाथ ने उसे अपने पास बुलाया और कहा--"बीस वर्ष तक मैंने तुझे वो सिखाया जो तेरे लिये जरुरी था । आज तक तूने वो किया जो मैंने तुझसे कहा, तूने कभी मेरी बात को टाला नही और नाही उसका विरोध किया । एक गुरु के लिये इससे बढ़कर कोई बात नही होती कि उसका शिष्य उससे कोई वैचारिक मतभेद नही रखता हैं । मैं तुझसे बहुत प्रसन्न हुँ और आज तुझे आजादी देता हुँ । आजके बाद तू जैसे चाहे इस विद्या का उपयोग कर सकता हैं । अब अगले बीस वर्ष तू इस विद्या का कैसे ईस्तेमाल करता हैं ये मैं देखना चाहता हुँ । आजसे बीस वर्ष के बाद मैं तूझे इस विद्या का दूसरा चरण सिखाउंगा और तूझे अपने जैसा बनाउंगा । जा, अगले बीस वर्ष तेरी छुट्टी" ।

सन् १६०८ में सोहम पाँच वर्ष का था और इसी समय अग्रेंजों का पहला जहाज सुरत के बंदरगाह पर आकर रुका । इसके सात वर्ष बाद सन् १६१५ में अग्रेंज राजा 'जेम्स प्रथम' के प्रतिनिधी के तौर पर 'सर थॉमस रो' नामक अग्रेंज उस समय के मुगल शंहशाह जांहगीर के दरबार में पहुँचा । उसने सुरत में 'ईस्ट इंडिया' के नाम से एक फैक्टरी लगाने का फर्मान हासिल कर लिया और यंही से अग्रेंजों की सत्ता का आरंभ हुआ । मुगलों की सत्ता का पतन भी यंही से आरंभ हुआ तथा आने वाले समय में भारत में अफरा-तफरी का महौल बनने वाला था । बहरहाल सत्ता के गलियारों में जोड़-तोड़ का गणित आरंभ होने वाला था । अंग्रेजों ने फूट डालों और राज करो की निति को आरंभ कर दिया था और अपनी 'ईस्ट इंडिया कंपनी' को निरंतर बढ़ाते चले जा रहे थे । तबके छोटे-छोटे रियासत दानों में बेचैनी प्रकट होने लगी थी । छोटे छोटे राजा और निजाम वातावरण को समझने का प्रयास कर रहे थे । अंग्रेजों ने मुगल सत्ता में एसी सेंध लगायी कि उसमें सत्ता के कई केन्द्र उभर आये और दिन-ब-दिन असुरक्षा और मतभेद प्रकट होते चले गये । हालाकि तब किसी की समझ में नही आया कि ये सब अंग्रजों के कारण हो रहा था परन्तु बेचैनी और असुरक्षा बढ़ती चली जा रही थी । करीब वालिस वर्षो में अंग्रेज सबके प्रिय बन बैठे और क्या रियासतदान और क्या मुगलीया असन्तुष्ट, सब के सब अंग्रजों से सांठगाँठ करने में लग गये । बहरहाल सोहम तब तक चण्डीश्वरनाथ से पुर्णरुपेण तन्त्र की सिध्दियां सीख चुका था ।

अब सोहम सारे देश के भ्रमण पर निकला था । वो देश के सारे तीर्थो की यात्रा पर निकला था । परन्तु बात तीर्थयात्रा की नही थी । दरअसल वो तीर्थस्थानों पर स्थापित शमशानों में अपनी साधना को पुर्ण करने निकला था । हालाकि उसे चण्डीश्वरनाथ की ओर से छुट्टी मिली हुई थी और वो चाहता तो उसका आनंद ले सकता था । परन्तु अपनी सिध्द की हुई सिध्दीयां उसे उकसा रही थी कि वो कुछ और भी सीखने अथवा समझने का प्रयास करें ।

उसे हाकिनी और डाकिनी ने बताया था कि वो तामसिक जगत के और लोकों को भी समझने का प्रयास करें तथा और भी इसका ज्ञान प्राप्त करें । उसे पता पता चला कि तामसिक जगत के और भी कई लोक थे । कोई लोक हाकिनियों का था तो कोई डाकिनियों का था । कोई लोक प्रेतात्माओं का था तो कोई मृतात्माओं का था और इसके अलावा कई लोक एसे भी थे जंहा कई एसी रहस्यमय आत्मायें निवास करती थी जोकि सोहम की अब तक की प्राप्त की गई सिध्दीयों से भी अधिक शक्तिशाली और प्रबल थी । ये सब महाशमशानों में आवागमन करती थी । महाशमशान वे थे जो तीर्थस्थानों पर स्थापित थे । इसी सोच के चलते सोहम अब सारे देश के महाशमशानों की यात्रा पर निकला था । उसके पास बीस वर्ष थे और वो इनका ईस्तेमाल और सिध्दीयां प्राप्त करने में करना चाहता था ।

वो गाँवों, कस्बों से पैदल ही निकलता था ताकि लोग उसे साधारण साधु समझें फिर गाँव और कस्बे से निकलते ही उसके साथ चल रही अदृष्य आत्मायें उसे आकाश मार्ग से उड़ाकर उसके इच्छित स्थान पर ले जाती थी । वो महाशमशानों में बैठा साधना करता रहता था । शमशानों में आने वाले और शवों का दाहसंस्कार करने वाले उसे छुपी दृष्टि से देखा करते थे । इससे वो अक्सर लोगों के बीच बातों का और वाद विवादों का विषय बन जाता था । कई बार रात्रि के अंधकार में वो नदी में बहे जा रहे शवों को उठा लाया करता था और उनपर बैठकर शवसाधना किया करता था ।

लोग अपने स्वजनों की लाशों को अक्सर नदियों में एसे ही छोड़ देते थे और मानते थे कि इससे उनकी आत्मा को शाँती मिलेगी । हालाकि मूल रिवाज गंगा में मरने वाले की अस्थियों को बहाने का हैं परन्तु भारतीयं संस्कृति रिवाजों और प्रथाओं से भरी हुई हैं । एसी ही प्रथाओं के चलते लोग अपने स्वजनों की लाशों को नदियों में युं ही छोड़ देते हैं और यदा कदा एसी ही लाशें नदी से बहती हुई इन महाशमशानों के पास बहने वाली धाराओं में प्रविष्ट हो जाती थी और इन शमशानों के किनारे से टकराने लगती थी । शमशान की देखभाल करने वाले इन लााशों को उठाकर शमशान में जला दिया करते थे । परन्तु अब जब सोहम वंहा साधना कर रहा था तो वो अक्सर इन लाशों को उठा लाता था और शव साधना किया करता था ।

एक बार वो गुजरात के एक तीर्थस्थान पर बहने वाली 'ताप्ती' नदी के किनारे स्थित महाशमशान में साधना में लीन था । इस महाशमशान में दूसरे साधको अथवा तान्त्रिकों की अधिक भीड़ भी नही थी । कुछ इक्का-दूक्का साधक ही वंहा दिखाई देते थे । सोहम इससे बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने वंहा डेरा जमा लिया । एक रात वो शव के उपर बैठा निरंतर मन्त्रजाप कर रहा था । वो शव बार बार चित्कार कर उठता था । दरअसल वो शव ताजा ताजा मृत्यु को प्राप्त हुऐ किसी व्यक्ति का था । उसकी आत्मा, शव के आसपास ही विचर रही थी । मृत्यु के बाद आत्मा, शरीर के मोह के कारण उसके पास ही बनी रहती हैं और जब उसका अंतिम संस्कार हो जाता हैं तब वो अपने अगले जन्म के मार्ग पर आगे बढ़ जाती हैं । चौबीस घंटे में अगर शरीर का अंतिम संस्कार हो जाये तो आत्मा अगले दस दिनों तक प्रेत रुप में अपने स्वजनों के करीब ही रहती हैं । इस समय के दौरान उसकी अस्थियां भी नदी में बहा दी जाती हैं जिससे उसका मोह अपने शरीर से समाप्त हो जाता हैं और वो आगे बढ़ जाती हैं । इसके विपरित अगर शव का अंतिम संस्कार नही हुआ हो तो आत्मा शरीर के साथ साथ ही रहती हैं । इस तरह जो शव सोहम नदी से उठा लाया था उसकी आत्मा उसके पास ही थी कि जब तक उसके शव का अंतिम संस्कार नही हो जाता वो आत्मा उससे दूर नही जा सकती थी । सोहम ये बात जानता था उसने उसकी आत्मा को फिरसे उसके शरीर में प्रवेश कराया और उसके द्वारा किसी 'मानस' ऋषि की आत्मा का आवाहन करने लगा ।

किसी जमाने के ये मानस ऋषि, दीर्घायु प्राप्त करने की खोज में व्यस्त रहे थे और उन्हौने इसके रहस्य को पा लिया था । बहरहाल उस ऋषि की मृत्यु हुए दो सौ वर्ष गुजर चुके थे । सोहम को हाकिनी से पता चला था कि अपने सारे स्वजनों के मृत्यु को प्राप्त हो जाने के बाद वो ऋषि संसार से विरक्त हो गया था और दीर्घायु के रहस्य को समझ लेने के बाद भी एक दिन उसने स्वंय ही अपने प्राण त्याग दिये थे । अब सोहम उसकी आत्मा का आवाहन करके उससे दीर्घायु के रहस्य को समझना चाहता था । उस शव की आत्मा को उसने इसिलिये उसमें फिरसे प्रवेश कराया था ताकि मानस ऋषि की आत्मा के आने तक वो शव वाणी के रुप में जिवित रहे । अर्थात उस शव की आत्मा के फिरसे शव में प्रवेश से सोहम उसकी वाणी को सहज बनाये रखना चाहता था ताकि मानस ऋषि की आत्मा जब उसमें प्रवेश कर ले तो सोहम उससे बातचीत कर सके । वाणी के अलावा उस शव का अब और कुछ सहज नही हो सकता था इसलिये कि उस शव से धंनजय नामक प्राण भी कबका निकल चुका था । सोहम के मन्त्र पढ़ते-पढ़ते ही बीच में वो शव भयानक चित्कार कर उठता था । सोहम उसे देखकर जोरदार अट्टहास करता था और अपनी सफलता पर फूला नही समाता था । जैसे ही वो शव चित्कार करता था सोहम उसके मुँह में थोड़ी शरब उंडेल देता था । बहरहाल उस शव से सोहम की बात नही बनी तो सोहम ने वो शव फिर बहती नदी में बहा दिया । इसके बाद उसने दूसरे शव को लाया और फिर अपनी साधना आरंभ कर दी । ये सिलसिला अब अक्सर वंहा चलने लगा ।

मानस ऋषि की आत्मा तो प्रकट नही हुई परन्तु उस शमशान की देखरेख करने वालों में कानाफूसी आरंभ हो गई । वे लोग अक्सर रातों को सोहम के ये क्रियाकलाप देखते थे और ये बात उस कस्बें में भी फैल गई । रातोंरात सोहम उस कस्बे में मशहूर हो गया । अब अक्सर लोग उसे देखने आने लगे पहले तो सोहम को ये सब अच्छा लगा मगर बाद में जब भीड़ बढ़ने लगी और सोहम की साधना में विघ्न पड़ने लगा तो वो क्रोधित हो उठा और किसी को भी देखते ही भड़क उठता था । फिर एक दिन एक नपुंसक सा लगने वाला आदमी आकर उसके चरणों में गिर पड़ा और उससे प्रार्थना करने लगा कि वो उसके घर चले । पहले तो सोहम उसपर भड़का मगर उसकी दयनीय स्थिति देखकर सोहम को उसपर दया आ गई और उसने उससे सारी बात जानना चाही । उसपर उस आदमी ने जो कथा सुनाई वो इस प्रकार थी ।

उस आदमी का नाम रतीलाल खीमजी था । उसके विवाह को आँठ वर्ष होने को आये थे और अभी तक उसे संतान का मुख देखना नसीब नही हुआ था । उसे अपनी पत्नी गजरा से बहुत प्रेम था और वो उसे छोड़ना नही चाहता था । जबकि घरवाले उसे दूसरा विवाह करने को बाध्य कर रहे थे । घर में सास-बहु के झगड़े भी घर के वातावरण का कलहकारी बनाये हुऐ थे । अगर वो अर्थात सोहम उसपर कृपा करे तो शायद उसकी बात बन जाये उसे संतान का सुख नसीब हो जाये । सोहम के सामने एसी समस्या पहली बार आयी थी । उसने सोचा--चलो देखते हैं कि दुनियादारी कैसे चलती हैं ।

सोहम जब रतीलाल के घर पहुँचा तो सारे कस्बे में हो-हल्ला मच गया । शमशान वाला कपालिक आया, शमशान वाला कपालिक आया कहकर सारे कस्बे में शोर हो गया । रतीलाल के घर भीड़ लग गई जिसे बहुत देर के बाद जाकर दूर किया जा सका । कस्बे के लोगों के लिये सोहम का व्यक्तित्व ही अचंभा था । छह फुट लंबा सोहम साँवला हो गया था । उसकी बढ़ी हुई दाढ़ी पेट तक आ पहुँची थी । उसके सिर के बाल जट्टाओं में तब्दिल हो गये थे और उसके हाथ में एक मानव कपाल था जिससे लोग उसे कपालिक कहने लगे थे । वो उस मानव कपाल में शराब पीता था और आवाहन की गई तामसिक प्रेतात्माओं को शराब पिलाता था । हाकिनीयों, डाकिनियों और शाकिनियों को तो वो प्रत्येक अमावस्या को शराब पिलाता ही था । इससे वे उससे सन्तुष्ट रहती थी और उसके बताये कार्य को पुर्ण किया करती थी ।

बहरहाल रतीलाल के घर में केवल तीन ही प्राणी थे । एक स्वंय रतीलाल, उसकी माँ और उसकी पत्नी गजरा । वो उसकी माँ से मिला जिसने आकर उसके पैर छुये और फिर उसकी पत्नी ने भी आकर उसके पैर छुये । उसकी पत्नी ने घुंघट ओढ़ रखा था इसलिये सोहम उसका मुख नही देख सका । रतीलाल की माँ ने अपनी बहु की शिकायत की और उसके सामने बैठकर रोने लगी । उसकी पत्नी इसपर क्या प्रतिक्रिया थी उसके घुंघट ओढ़े रहने के कारण सोहम नही समझ सका परन्तु रतीलाल ने बीचबचाव करने का प्रयास किया और सोहम के पैरों में बैठकर उससे कृपा करने की प्रार्थना करने लगा । सोहम की कुछ समझ में नही आया कि-- मामाला क्या था ?

उसने आँखें मुँदी और मन्त्र उच्चारण कर 'कर्ण पिशाचनी' का आवाहन किया । तुरन्त ही अदृष्य कर्ण पिशाचनी उसके पास प्रकट हुई और उसके कान में फुसफुसाने लगी । उसने सोहम को बताया कि --रतीलाल को शादी किये हुए आँठ वर्ष हो चके थे और वो एक नपुंसक व्यक्ति था । उसने आजतक अपनी पत्नी से शारिरिक संबंध नही बनाया था । इसलिये उसे संतान होने का प्रश्न ही नही था । उसकी माँ अपने बेटे के खोट को देखने को तैयार नही थी और बहु में ही खोट बताती थी । इस कारण सास-बहु में कलह हो रही थी । तथा माँ अपने बेटे के दूसरे विवाह का दबाव बना रही थी । उसका बेटा जानता था कि वो चाहे दूसरा विवाह करले अथवा तीसरा, चौथा करले परन्तु उसे संतान होने का प्रश्न ही नही था । इस तरह वो अपनी पत्नी से प्रेम का नाटक कर रहा था । ताकि उसे दूसरा विवाह ना करना पड़े और उसकी पोल ना खुल जाये ।

अब सोहम सारी बात समझ गया और उसने माँ-बेटे को बाहर जाने को कहा और उसकी पत्नी गजरा के साथ उस कमरे में अकेला रह गया । उसने बिगैर किसी भूमिका के रतीलाल की पत्नी को सबकुछ बता दिया । रतीलाल की पत्नी गजरा तो सबकुछ जानती थी । सोहम ने जब सबकुछ उसे साफ साफ बता दिया तो वो उससे बहुत प्रभावित हुई और पहली बार उसने अपना घूंघट उठाकर उसे हाथ जोड़कर कुछ करने को कहा । सोहम ने पहली बार उसका मुख देखा था । किसी सुन्दर स्त्री को अपने इतने करीब और अपनी छत्रछाया में वो पहली बार देख रहा था फिर वो कुछ और सोच न सका और उसकी कामवासना जाग्रत हो उठी । नौजवान गजरा भरपुर

जवान और अतिसुन्दर थी । इतने वर्षो से शारिरिक संबंध ना होने के कारण उसकी आँखों में यौन संबंधो की भूख स्पष्ट दिखाई देती थी । सोहम ने उसे निर्वस्त्र होने को कहा--गजरा ने एक पल के लिये भी कुछ ना सोचा और और तुरन्त ही निर्वस्त्र हो गई । माँ-बेटे के बाहर जाते ही द्वार वो पहले ही बंद कर चुकी थी । फिर सोहम उसपर वासनामय भेड़िये की तरह झपट पड़ा और कितनी ही देर वंहा वासना का खेल चलता रहा । तब तक रात हो गई थी और कल आने को कहकर सोहम वापस शमशान लौट आया था । पीछे तृप्त गजरा उसके दूसरे दिन आने की प्रतिक्षा में खो गई ।

दूसरे दिन भी सोहम आया और वही सिलसिला फिर चला और फिर ये प्रतिदिन की दिनचर्या हो गई । रतीलाल और उसकी माँ, सोहम के व्यक्तित्व और उसके डरावने हावभाव से डरते थे । सोहम ने उस रिश्ते को और चलाने के लिये नाटकीय तन्त्र-मन्त्र की प्रक्रियाएं आरंभ कर दी और कहा कि इससे गजरा को संतान सुख प्राप्त होगा । कस्बे में ये बात फैलने लगी कि शमशान वाला कपालिक, रतीलाल के घर प्रतिदिन ही आता हैं । बहरहाल गजरा अपनी शारिरिक सन्तुष्टि के चलते सोहम से खुश थी और चाहती थी कि वो सिलसिला एस ही चलता रहे परन्तु आखिर वो एक अनैतिक रिश्ता था और उसे समाप्त होना ही था । वो समाप्त हुआ गजरा के गर्भवती हो जाने के समाचार से अर्थात गजरा ने घोषणा की, कि वो गर्भवती थी ।

रतीलाल सारा मामला समझ गया और उसकी माँ को भी कुछ कुछ सूंघ लग गई । अब रतीलाल, सोहम को शंकित दृष्टि से देखने लगा और उसकी माँ, सोहम से कुढ़ने लगी थी । ये बात अलग थी कि वे लोग जुबान से कुछ कहते नही थे । सोहम भी समझ गया कि अब उसका वंहा रहना ठीक नही होगा इसलिये कि वो रतीलाल और उसकी माँ की आँखों में अपने लिये अवहेलना और हीनता नही सहन कर पा रहा था । सोहम ने आज तक जीवन गर्व से जिया था और उसे हीनता और अवहेलना से सख्त चिढ़ थी । उसने गजरा से कहा कि अब उसका जाना उचित होगा और ये कि वो अब जायेगा । तब गजरा ने कहा--"मुझे किसके हवाले छोड़कर जा रहे हो, मेरी सास तो मेरा जीना मुहाल कर देगी और जीवनभर मैं तुम्हारे नाम के ताने उसके मुँह से सुनती रहुंगी । अपने पती से तो मैं निपट भी लूंगी परन्तु सास से पीछा छुड़ाना मुश्किल हैं" ।

गजरा की बात सुनकर सोहम के अंदर का तान्त्रिक जाग उठा । उसकी आँखों में वहशियत प्रकट हो गई वो खौफनाक स्वर में बोला--"अमावस्या तक सहन कर लेना फिर वो तुझे तंग नही करेगी" । उसका वो रौद्र हावभाव देखकर एक बार तो गजरा भी सहम गई और डरी हुई आँखों से उसे देखने लगी । बहरहाल सोहम ने उसे फिर पलटकर नही देखा वो लबें लबें डग भरता हुआ वंहा से विदा हो गया ।

अमावस्या के दूसरे दिन सुबह सुबह गजरा की सास अपने बिस्तर में ही मरी पायी गई । उसकी आँखें फटी हुई थी और जुबान बाहर को निकली हुई थी । साफ साफ पता चलता था कि किसी ने उसका गला घोंटकर उसे मारडाला था । उस रात गजरा की सास घर में अकेली ही थी । गजरा को लेकर रतीलाल उसके मैके उसे छोड़ने गया हुआ था । अपने मैके जाने की जिद स्वंय गजरा ने ही की थी । विदा लेते समय सोहम की आँखों के भाव देखकर वो समझ गई थी कि अमावस्या की रात को अवश्य ही कुछ अनहोनी होने वाली थी । पता नही क्या होने वाला था, सोचकर गजरा ने अपने मैके चले जाना ही उचित समझा था और ये उसने बहुत ही अच्छा किया था । अन्यथा सास को मार डालने के आरोप से वो बच नही सकती थी ।

उस अमावस्या की रात सोहम ने अपने नियंत्रण में रहने वाली प्रेतात्माओं, पिशाचों, पिशाचिनियों, डाकिनियों, हाकिनियों और शाकिनियों को शराब पिलाई । उस महाशमशान में उस रात बहुत डरावनी आवाजें आ रही थी । प्रेतात्मायें, पिशाच और पिशाचिनियां हवा में लटके दिखाई देते थे । जिन्हे मानव कपाल में शराब भर कर सोहम हवा में हाथ बढ़ाकर दे रहा था । फिर जैसे कोई जानवर कुछ पी रहा हो एसी सड़प-सड़प की आवाजें वातावरण में गुँजने लगती थी । जब कपाल में शराब समाप्त हो जाती तो चिखों चिल्लाहट का शोर होने लगता था । जैसे कि वो प्रेतात्मायें और शराब मांग रही हो । सोहम ने भी बहुत सारी शराब का प्रबंध कर रखा था । इसलिये वो बार बार मानव कपाल में शराब भरता और मन्त्र पढ़ते हुए हवा में बढ़ा देता था । फिर वही सड़प-सड़प की आवाजे वंहा गुँजने लगती ।

इसके बाद डाकिनियों, हाकिनियों और शाकिनियों की बारी आई । सोहम ने कोई मन्त्र पढ़ा और उस अंधियारे शमशान में गुलाबी प्रकाश फैल गया । फिर हवा में तैरती हुई सी कई सुन्दर जवान युवतियां वंहा शमशान की भूमि पर अवतरित हुई । ये सब डाकिनियां, हाकिनियां और शाकिनियां थी । सोहम ने उनके लिये गोश्त का भी प्रबंध कर रखा था । इसके बाद फिर वही सिलसिला चला । सोहम उन सबको मानव कपाल में शराब भर भरकर पिलाता रहा और पास ही रखें गोश्त के टुकड़े उन्हे देता रहा । वे सब सुन्दर और जवान युवतियां अमानवीय ढंग से अट्टहास करती जाती और शराब के साथ गोश्त खाने का मजा लेती जाती थी । उनके खाने और पीने से वातावरण में अजीब सी खचर-खचर की आवाजें हो रही थी । बहरहाल साधारण दिल-गुर्दे वाले इसांन के देखने और समझने जैसा वो नजारा नही था । वो नजारा किसी भी साधारण इसांन का हार्टफेल करा देने के लिये काफी था । परन्तु सोहम अब इन सब बातों का आदि हो चुका था । प्रत्येक अमावस्या को ये सब वो करता था । आज भी सदा की भांति वो सब कर हा था । बहरहाल अंत में उसने कोई मन्त्र पढ़ा और एक डाकिनी ने जलती निगाहों से उसकी तरफ देखा । सोहम ने उसी के लिये वो मन्त्र पढ़ा था । फिर उस डाकिनी ने एक डरावनी चीख मारी और हवा में उड़कर अदृष्य हो गई । सोहम ने उसे गजरा की सास की जान लेने भेजा था । उस डाकिनी ने गजरा की सास का नींद में ही गला दबा दिया था और दूसरे दिन सुबह वो मरी पाई गई थी ।

साधारणयता डाकिनी सबको नही मार पाती हैं । परन्तु जो लोग अपराध, जुल्म और नांइसाफी में सलंग्न रहते हैं उनका आत्मविश्वास निर्बल होता हैं । एसे लोगों का प्रभामंडल भी निर्बल हो जाता हैं जोकि साधारणता अगर बलवान हो तो व्यक्ति के सुरक्षाचक्र का कार्य करता हैं और डाकिनी जैसी दुष्ट आत्माये उनके आगे फटक भी पाती हैं । एसे लोगों को डाकिनी सरलता से मार सकती हैं जो जुल्म, नाइंसाफी और धोखा देने के कारण अपना आत्मविश्वास गंवा बैठे होते हैं । इसके विपरित अगर इसांन सच्चा हो, आत्मविश्वास से भरपूर हो और ईश्वर में श्रध्दा रखता हो तो उसका प्रभामंडल प्रबल और बलवान हो जाता हैं जिससे डाकिनी जैसी दुष्ट आत्मायें उसके करीब भी नही आ पाती हैं । गजरा की सास का प्रभामंडल निर्बल था और बहु से जुल्म करने के कारण और पुत्र के नपुंसक होने के बावजूद उसमें दोष ना देख पाना और बहु पर ही दोष मड़ देने के कारण वो आत्मबल से निर्बल थी । इसिलिये डाकिनी उसे मार पायी थी ।

बहरहाल वो रात सोहम की भी उस महाशमशान में अंतिम रात थी । दूसरे ही दिन वो वंहा से चल दिया था । अब वो साबरमति नदी के किनारे किसी महाशमशान की तलाश में था । जल्दी ही उसे अहमदाबाद से आगे एक गाँव के पास एक मंदिर के करीब वो महाशमशान उसे मिल गया था । वो मंदिर चामुंडा देवी का मंदिर था । लोग वंहा दूर दूर से आते थे और वो मंदिर किसी तीर्थ की तरह मशहूर था । उससे कुछ दूरी पर ही वो महाशमशान था । वंहा भी कोई विशेष भीड़भाड़ नही थी । विरला ही कोई तान्त्रिक अथवा साधक वंहा दिखलाई पड़ता था । वो भी सोहम को देखते ही उससे सहम जाता था । तन्त्र को जानने वाले अथवा उसकी साधना करने वाले सोहम की हस्ती को कैसे नही पहचान पाते । इस तरह कुछ उसे देखकर भाग गये अथवा डर गये और कुछैक ने उसे अपना गुरु बना लिया और इस तरह बैठे बिठाये सोहम को सेवा करने वाले शिष्य भी मिल गये । सोहम ने भी वंहा डेरा जमा लिया ।

यंहा सोहम ने बहुत आराम किया । उसके नये नये बने शिष्य उसकी बहुत सेवा-सुश्रुषा करते थे । उसके पाँव दबाते थे । उसकी मालिश किया करते थे और उसके लिये शराब का भी प्रबंध किया करत थे । सोहम उस शमशान में सुस्त सा पड़ा रहता था और अपने शिष्यों की सेवा का आनंद लिया करता था । हालाकि देखने में वो सुस्त सा जान पड़ता था परन्तु एसा था नही । उसकी सिध्द की हुई सिध्दीयां उसमें प्रबल ताप को बनाये रखती थी जिससे उसका सुस्त होना संभव ही नही था ।

डाकिनियां, हाकिनियां और अन्य प्रेतात्मायें उसे रातों को जगाये रखती थी । हालाकि दिन में वो सुस्ती और मस्ती मार लिया करता था परन्तु रात्रि का समय उसके लिये कठिन होता था । रात्रि होते ही उसके शिष्य तो अपने घर चले जाते थे और उसकी सिध्द की गई प्रेतात्मायें, डाकिनियां और हाकिनियां उसके करीब आ जाती थी । सारी सारी रात सोहम उन्हे सन्तुष्ट करता रहता था । कृष्णपक्ष के आरंभ से लेकर अमावस्या तक ये सब बहुत होता था और अमावस्या से लेकर पुर्णिमाँ तक इन सबमें शिथिलता रहती थी । इसलिये कि अमावस्या से पुर्णिमाँ तक राजसिक प्रवृति का चन्द्र उतरोत्तर प्रबल होता रहता था । जिससे प्रेतात्मायें, डाकिनियां और हाकिनियां शिथिल होती जाती थी ।

एसी ही एक अमावस्या के गुजरने के बाद पुर्णिमाँ के आने तक सोहम ने विशेष सिध्दी से डाकिनियों और हाकिनियों को छोड़कर बाकि प्रेतात्माओं को अपने जट्टाओं में तब्दिल हो गये बालों में बंद कर लिया । मनुष्य के शरीर में बाल जड़ और तामसिक पदार्थ माने जाते हैं । उसपर सोहम के बाल तो वर्षो से साफ नही हुए थे जिनमें तामसिकता और जड़ता और बढ़ गई थी । वो प्रेतात्मायें सोहम के नियंत्रण में थी और सोहम के करीब ही रहना चाहती थी । जब सोहम ने उन्हे अपने बालों में कैद कर लिया तो भी उन्हौने कोई विरोध नही किया । इस तरह वो प्रेतात्मायें अब सोहम के सिर के बालों में रहती थी । उसे डाकिनियों, हाकिनियों और शाकिनियों का भी कोई इंतजाम करना था । ताकि रात्रि के समय वे उसे ज्यादा परेशान ना करें । उनका इंतजाम एक ही प्रकार से हो सकता था कि उन्हे रहने के लिये कोई शरीर उपलब्ध करवाया जाये । इससे वे उस शरीर में रहने लगेगी और अपने मनोरंजन को स्वंय ही तलाश कर लेगी । एसा तभी हो सकता था जब कोई मृत शरीर तुरन्त ही मिले और सोहम उसे अपनी किसी डाकिनी, हाकिनी अथवा शाकिनी को उपलब्ध करवा दें । ये काम एक लंबा समय लेने वाला काम था । परन्तु उसने अपने शिष्यों को कह दिया था कि वो अब उस शमशान में दाह-संस्कार के लिये आये शरीरों को हासिल करने का प्रयास करें ।

उसके शिष्यों ने शमशान में आने वाले दाह-संस्कार वाले स्त्री मृत-शरीरों पर कब्जा करना शुरु कर दिया और सोहम उन्हे अपनी डाकिनियों, शाकिनियों और हाकिनियों को उपलब्ध करवाने लगा । इसमें भयप्रद बात ये थी कि वे स्त्री मृत-शरीर जो दाह-संस्कार के लिये वंहा लाये गये थे । हाकिनियों, डाकिनियों और शाकिनियों घर बन गये थे और अब वो फिर से जिंदा होकर उस शमशान में विचरने लगे । इसे सबसे पहले सोहम के एक शिष्य ने देखा और भय के मारे उसकी घिग्घी बंध गई । वो फटी-फटी आँखों से उस जिंदा हो गई लाश को देखता रह गया । उसके बाद वो जब वंहा से भागा तो फिर उसने पलटकर सोहम की तरफ नही देखा परन्तु सोहम के कुछ शिष्य वंही डटे रहे । उल्टा वो सोहम के और मुरीद बन गये तथा उसकी सेवा में और ध्यान लगाने लगे । उनमें से एक था बद्रीनाथ । जो सोहम का पक्का शिष्य बन गया था ।

बद्रीनाथ को तन्त्र में बहुत आस्था थी और वो उस समय कोई योग्य गुरु तलाश कर रहा था । वो एसे ही उस शमशान में साधना करने आता था और ईश्वर ने उसकी सुन ली थी कि बैठे बिठाये उसे सोहम जैसा गुरु मिल गया था । जिसके चमत्कारों ने उसे उसका कायल कर दिया था । लाशों को जिंदा कर देना कोई साधारण तन्त्र साधना वाले गुरु की बात नही थी । उसने सोचा ये कपालिक जरुर ही कोई पहुँचा हुआ गुरु हैं । उसने सोहम की दिल लगाकर सेवा करना आरंभ कर दिया और उसकी हर बात के लिये सदा उपलब्ध रहता था । सोहम भी उससे प्रसन्न रहता था और कभी-कभी उसे तन्त्र की छोटी छोटी सिध्दियों के विषय में बताया करता था । बद्रीनाथ उन्हे मनोयोग से पुर्ण करने का प्रयत्न करता रहता था । बहरहाल एसे ही समय गुजर रहा था ।

एक दिन बद्रीनाथ ने उसे बताया कि आसपास के इलाके में उसका बहुत नाम हो गया था । वो सोहम का शिष्य जो रात में हाकिनी के रुप में एक जिंदा लाश देख चुका था । उसने आसपास के इलाके में उस बात की बहुत चर्चा की थी । फलस्वरुप सोहम का नाम हो गया था । लोग अक्सर उसे देखने दिन के समय आने लगे और कभी कभी अपनी दुख-दर्द की बातें भी उससे करने लगे । सोहम यदा-कदा उनके दुख-दर्द दूर भी कर दिया करता था । परन्तु एक दिन एक एसे माता-पिता अपनी ग्यारह वर्षिय बेटी को लेकर आ पहुँचें जोकि किसी प्रेत-बाधा से पीड़ित थी ।

वो लड़की अपने माता-पिता को अपना माता-पिता मानने से इंकार करती थी और अपना नाम चित्रशाला बताती थी जबकि उसका नाम रजनीबाला था । इससे उसके माता-पिता बहुत चिंतित थे । सोहम ने लड़की को देखा उस लड़की ने भी निडरता से सोहम की ओर देखा । सोहम ने उससे पुछा--"तुम कौन हो ? लड़की निडरता से बोली--"मैं चित्रशाला हुँ" । सोहम ने उसे घूरा । वो लड़की की निडरता से हैरान था । साधारणयता उसकी आवाज ही लोगों को कपाँ देती थी । उसने लड़की को गौर से देखा और बोला--"लेकिन तुम्हारे माँ-बाप तो कहते हैं कि तुम रजनीबाला हो" ।

"ये मेरे माँ-बाप नही हैं" --लड़की झट से बोली ।

सोहम कुछ सोच में पड़ गया और उसने लड़की के माता-पिता से कहा कि वे उसे रात्रि के समय लेकर आये । वो शुक्ल-पक्ष का समय था और पुर्णिमा आने वाली थी । इससे तामसिक शक्तियाँ शिथिल हो जाती थी और अगर उसकी तामसिक शक्तियां कुछ कर सकती थी तो एसे समय वे रात्रि में ही कुछ कर सकती थी । सोहम दिन में हाकिनी अथवा कर्ण पिशाचनी का आवाहन नही कर सकता था । इससे उसने लड़की को रात्रि में आने को कहा था ।

रात्रि में लड़की को लेकर उसके माता-पिता आन पहुँचें । सोहम के पास एक सुन्दर सी लड़की बैठी हुई थी । जिसके नैन-नक्श बहुत तीखें थे । वो बहुत कमसिन और दिलकश दिख रही थी । उसकी आँखों में गजब का आकर्षण था परन्तु अमानवीयता भी स्पष्ट रुप से दृष्टिगोचर होती थी । वो हाकिनी थी और उस शमशान में लायी किसी मृत युवती के शरीर को अपना घर बनाये बैठी थी । वो शरीर उसे सोहम ने उपलब्ध करवाया था ।

लड़की के माता-पिता अपने साथ एक शराब का मटका और एक बर्तन में पका हुआ गोश्त भी लाये थे । वे लड़की समेत सोहम के सामने बैठ गये और सोहम की ओर याचनापुर्वक देखने लगे । शराब और गोश्त उनको सोहम ने ही लाने को कहा था । शराब के मटके से सोहम ने कुछ शराब अपने पास रखी मानव खोपड़ी में उंडेली और गटागट पी गया । पास बैठी हाकिनी ने उसे जलती निगाहों से घूरा । बहरहाल शराब पीते ही सोहम का बर्हिबोध कम हुआ और अंर्तबोध जाग्रत हो उठा । उसने कुछ मन्त्र बुदबुदाया । फलस्वरुप पास बैठी हाकिनी तुरन्त ही सावधान होकर उसे देखने लगी । सोहम ने मन ही मन विचार किया कि--पास बैठी हाकिनी उस शमशान की दीवार के पीछे जाये और उस मृत लड़की के शरीर को त्याग कर उस लड़की के शरीर में प्रवेश कर जाये और पता लगाये कि उस लड़की में कोई प्रेतात्मा तो नही हैं । अगर प्रेतात्मा हैं तो उसे लड़की के शरीर को मुक्त करने को बाध्य करें और अगर प्रेतात्मा नही हैं तो हाकिनी उस लड़की को ये अनुभूति कराये कि उसके माँ-बाप उसी के माँ-बाप थे ।

इससे लड़की की कोई भी समस्या होती तो दूर हो जानी थी । चाहे उसके माता-पिता प्रेतबाधा की बात कर रहे थे अथवा प्रेतबाधा ना होकर लड़की में कोई दिमागी फितूर भी होता तो सोहम के उस प्रयास से दोनो ही समस्याएं हल हो जानी थी । हाकिनी इस काम की माहिर थी । हाकिनी के आगे किसी भी प्रेतात्मा का टिक पाना अंसभव था । क्योंकि साधारण प्रेतात्माओं से हाकिनी अधिक शक्तिशाली प्रेतात्मा होती हैं और अगर प्रेतात्मा नही भी होती तो हाकिनी अनुभूति कराने में सिध्दहस्त मानी जाती थी । वो अगर लड़की को ये अनुभूति करा देती कि उसके माँ-बाप उसी के माँ-बाप थे तो लड़की जीवनभर वो अनुभूति नही भूला सकती थी ।

उस मृत युवती के शरीर में बैठी हाकिनी उठी और शमशान की दीवार के पीछे चली गई और कुछ ही पलों में वो अपने असली रुप में दीवार के पीछे से आती दिखी । तोते जैसी नुकीली नाक, सुडौल मुख, लंबे बाल, सुराहीदार गर्दन, कसे हुए और उठे हुए स्तन, पतली कमर, लंबा कद, गोरा रंग और आकर्षक चाल से वो कोई बेहद हसीन रुपसी दिखाई देती थी । वो लहराती हुई चाल के साथ लड़की के पास पहुँची और उसकी आँखों में झांका । लड़की ने भी निडरता से उसकी आँखों में झांका

। तुरन्त ही आग में जल रही लकड़ीयों के चटकने जैसी आवाज उत्पन्न हुई और हाकिनी घबराकर पीछे हटी । उसका रंग नीला पड़ गया था और वो असहाय दृष्टि से सोहम को देखने लगी । सोहम ने हैरानी से हाकिनी को देखा और उसने कोई मन्त्र पढ़ा । उसे अनुभूति हुई कि लड़की में कोई प्रेतबाधा जैसी बात नही थी । लड़की में गजब का आत्म विश्वास था और आत्मबल भी था । उसका प्रभामंडल इतना तीव्र था कि कोई भी सूक्ष्म शरीरधारी उसकी सहमति के बिगैर उसके शरीर में प्रवेश नही कर सकता था । ये अनुभूति उसे हाकिनी करवा रही थी ।

सोहम ने तुरन्त ही हाकिनी को शमशान की दीवार के पीछे चले जाने को कहा और स्वंय अविश्वसनीय दृष्टि से लड़की को निहारने लगा । कितनी ही देर तक वो लड़की को युँ ही घूरता रहा । लड़की के माता-पिता समझ रहे थे कि वो कोई मन्त्र उपचार करने में लीन था । जबकि सोहम सोच रहा था-- कि वो लड़की क्या थी । जिसने हाकिनी को असफल कर दिया था । बहुत देर बाद उसने आसपास देखा और फिर आँखें मुँद ली । अब उसने कर्ण पिशाचिनी का आवाहन किया । अदृष्य कर्ण पिशाचिनी तुरन्त ही प्रकट हुई और सोहम के कान में फुसफुसाने लगी । --वो लड़की प्रबल आत्मविश्वास और आत्मबल से युक्त थी । उसकी आत्मा जाग्रत थी और उसे अपना पिछला जन्म याद था । चित्रशाला उसके पिछले जन्म का नाम था । पिछले जन्म में उसकी सौतेली माँ ने उस पर बहुत जुल्म किये थे । जिससे उसका बर्हिजगत से मोह ही टूट गया था । फल स्वरुप उसका अंर्तमन जाग्रत हो उठा था । अपने पिछले जन्म में वो सूक्ष्म जगत को देखने लगी थी । जब उसकी सौतेली माँ ने उसे जहर देकर मार डाला था तब भी वो अपनी माँ की सारी करतूत जानती थी । उसने साफ-साफ देखा था कि उसकी सौतेली माँ उसे जहर देकर मार डालने वाली थी । परन्तु इस बात से वो घबराई नही और उसने मृत्यु को स्वीकार कर लिया था । इस तरह जब उसकी मृत्यु हो रही थी तब वो स्पष्ट रुप से अपनी आत्मा को अपने शरीर से निकलते देख रही थी । ये घटनाक्रम उसे अच्छी तरह याद हैं क्योंकि उस समय उसका अंर्तमन जाग्रत था । यही बातें उसकी आत्मा में संस्कार रुप में समा गई और फिर इस माँ-बाप के पास जन्म लेने के बाद जब वो कुमारावस्था में प्रवेश करने वाली थी । तब उसके मन और आत्मा के बीच सम्पर्क बना और पिछले जन्म के संस्कार उसके मस्तिष्क में समा गये इससे लड़की को पिछला जन्म याद आ गया । वर्तमान में अपने अपरिपक्व मस्तिष्क के कारण वो अपने पिछले जन्म को ही अपना जन्म और जीवन समझती हैं । उसकी जाग्रत आत्मा के सामने कोई भी सूक्ष्म शरीरधारी असफल ही सिध्द होगा । उसकी जाग्रत आत्मा के कारण ही उसके आसपास तीव्र प्रभामंडल बन रहा हैं जो उसकी सूक्ष्म शरीर धारियों से रक्षा कर रहा हैं । हालाकि ये सब उस लड़की के अपरिपक्व मस्तिष्क को पता नही हैं परन्तु यही सब हुआ हैं ।--सोहम अचरज भरी दृष्टि से लड़की को देखता रह गया । उसकी समझ में नही आया कि वो लड़की के माँ-बाप से क्या कहें ।

दरअसल मनुष्य की जब मृत्यु होती हैं तो वो मूर्च्छावस्था में होता हैं । बर्हिजगत के काम, क्रोध और मोह उसे इतना उलझाये रखते हैं कि अपनी मृत्यु के दिन तक उसे अंर्तमन और अंर्तरात्मा के स्वभाव को समझने का मौका ही नही मिलता हैं । अपनी मृत्यु के समय तक उसे भौतिक जगत के कार्य अधूरे जान पड़ते हैं और अपने अधूरे कार्यो के प्रति वो इतना आसक्त होता हैं कि आत्मा के शरीर छोड़ने के समय प्रकट हुए सूक्ष्म जगत के दर्शन मात्र से ही मूर्च्छित हो जाता हैं । एसी ही मूर्च्छितावस्था में उसकी आत्मा शरीर छोड़कर सूक्ष्म जगत में प्रवेश कर जाती हैं और उसे कुछ याद नही रहता हैं । इसके विपरित अगर मनुष्य समय पर चेत जाये और भौतिक जगत के काम, क्रोध और मोह से अपने आपको मुक्त कर ले तो उसका अंर्तमन उसके जिवित रहते ही जाग्रत हो उठेगा । एसा तभी हो सकता हैं जब वो मृत्यु से नही घबराये और जीवन से मोह नही रखें । तभी वो अपनी मृत्यु को होते देख सकता हैं और उसे अपने सभी जन्म याद रह सकते हैं । जिससे वो अपने कर्मो को सुधार सकता हैं । अपने लिये उचित-अनुचित का निर्णय कर सकता हैं । ईश्वर की सत्ता को समझ सकता हैं । जब अंर्तमन जाग्रत हो उठता हैं तो अंर्तरात्मा भी जाग्रत हो उठती हैं । आत्मा, ईश्वर का अंश हैं । अगर आत्मा जाग्रत हो उठे तो ईश्वर की सत्ता को समझना क्या मुश्किल हैं । यही सब उस लड़की चित्रशाला के साथ भी हुआ था । उसने अपनी मृत्यु को होते देखा था । उस समय उसकी आत्मा जाग्रत थी और उसका जाग्रत अंतर्मन उस अनुभव को संस्कार रुप में आत्मा में प्रविष्ट करवा रहा था । जोकि अगले जन्म तक उसकी आत्मा साथ लेकर आयी और समय आते ही उसकी आत्मा ने उसे वो सब याद करवा दिया जो पिछले जन्म में उसने अनुभव किया था ।

बहरहाल उस रात सोहम ने उस लड़की चित्रशाला के माता-पिता से कहा कि वे लोग कल फिर आयें । सोहम सोच में पड़ गया था कि उस समस्या का कौन सा निदान उसे तलाशना चाहिये । सोहम ने फिर कर्ण पिशाचिनी का आवाहन किया और उससे लड़की के आने वाले समय के विषय में पुछा । परन्तु कर्ण पिशाचिनी चुप ही रही तब सोहम की समझ में आया कि कर्ण पिशाचिनी केवल भूतकाल के विषय में बता सकती थी । तामसिक सूक्ष्मधारी भूतकाल की ही बात कर सकते थे । भविष्य काल की बातें केवल सात्विक सूक्ष्मधारी बता सकते थे । सोहम भी तामसिक साधक था इसलिये उसका किसी सात्विक सूक्ष्मधारी से कोई संबंध नही था । सात्विक सूक्ष्मध ारी 'देवगणों' में गिने जाते थे । बहरहाल अब ये तय हो गया था कि उस लड़की के विषय में स्वंय सोहम को ही कोई निर्णय लेना था । उस सारी रात्रि सोहम उस लड़की के विषय में सोचता रहा था ।

अंत में सोहम इस निर्णय पर पहुँचा कि उसके पास उस लड़की के लिये कोई निदान नही था । वो लड़की एक विशेष लड़की थी । वो नातो शमशान में आने से डरी, ना स्वंय उससे अर्थात सोहम से डरी और नाही वो हाकिनी से डरी थी । डर नाम की कोई चीज उस लड़की को छू तक नही गई थी । सोहम सोचने लगा--वो लड़की जरुर किसी विशेष कार्य के लिये जन्मी थी । --क्या हो सकता था वो विशेष कार्य ? उसने सोचा उसे उस लड़की पर नजर रखनी होगी क्योंकि वो देखना चाहता था कि उस लड़की का आने वाले समय में क्या होगा ? मगर कैसे ? क्या वो सदा ही उस स्थान पर रहे ? क्या उसे हाकिनी अथवा डाकिनी को उस पर दृष्टि रखने के लिये सदा उसके साथ रख दे ? नही-नही । ये सब संभव नही था । तब फिर क्या हो ? उसने सोचा ये सब करने के बजाय वो लड़की को ही अपने साथ क्यों ना रख ले । --हाँ, ये हो सकता था । मगर क्या उसके माता-पिता इसके लिये राजी होगें ? उसने सोचा उन्हे राजी करना होगा । वो लड़की उसे चाहिये । इसके लिये उसने बद्रीनाथ को भी समझा दिया और उसे उस लड़की के माँ-बाप को समझाने के लिये जाने को कह दिया ।

दूसरे दिन सुबह-सुबह ही बद्रीनाथ उस लड़की के माँ-बाप के पास जा पहुँचा और उन्हे समझाने लगा कि वो लड़की किसी एसी प्रेतबाधा से पीड़ीत थी जो कभी ठीक नही होने वाली थी । उनके लिये लड़की किसी काम की नही थी । बल्कि उनके लिये आगे चलकर परेशानियां ही पैदा करने वाली थी । इसलिये बेहतर होगा कि वे लोग अपनी लड़की को उसी तान्त्रिक के हवाले कर दे अर्थात सोहम के हवाले कर दें । उन भोलेभाले माँ-बाप ने बद्रीनाथ की बातों का विश्वास तो कर लिया परन्तु अपनी लड़की वो सोहम को देने को राजी नही हुए । बद्रीनाथ ने आकर सोहम को ये खबर सुनाई और सोहम निराश हो उठा । फिर उसने रात को हाकिनी का आवाहन किया और उसे विचार दिया कि वो लड़की के माँ-बाप को ये अनुभूति कराये कि सोहम के पास उनकी लड़की ज्यादा सुरक्षित और ठीक रहेगी ।

हाकिनी ने कमाल कर दिखाया । उसने सोते हुए लड़की के माँ-बाप को ये स्वप्न दिखाया कि सोहम के हवाले लड़की कर देना ही ज्यादा उचित निर्णय होगा । अन्यथा किसी दिन वे लोग उस लड़की की वजह से ज्यादा बड़ी परेशानी में पड़ सकते थे । इस स्वप्न से लड़की के माँ-बाप परेशान तो हुए परन्तु फिर भी वे निर्णय नही कर पाये कि वे लड़की को सोहम के हवाले कर देंगे । इसके बाद हाकिनी उनके पीछे ही पड़ गई । वे दोनो ही प्रतिदिन स्वप्न देखने लगे । वो देखते थे कि लड़की बड़ी होकर स्वंय ही चुड़ैल बन गई थी । अथवा उस लड़की की वजह से प्रेत और चुड़ैलें उनके घर के आसपास मंडराने लगे थे । ये सिलसिला कई सप्ताहों तक चलता रहा और अंतत एक दिन लड़की के माँ-बाप स्वंय ही आकर लड़की को सोहम के हवाले कर गये । जाते समय उनकी आँखों में आँसू थे । वे नही समझ पा रहे थे कि वे उचित कर रहे थे अथवा नही । बहरहाल वो लड़की चित्रशाला अब सोहम के पास थी ।

अब चित्रशाला शमशान में सोहम के साथ रहती थी । सोहम ने उसके लिये शमशान में ही एक छोटी सी झोपड़ी बनवा दी थी । साथ ही साथ उसने उसकी सुरक्षा के लिये झोपड़ी को अभिमन्त्रित भी कर दिया था । उसे डर था कि कंहि उसकी साधना से प्रकट हुए भूत-प्रेत उस लड़की पर ना कोई प्रभाव डालने लगे । उसने एक अभिमन्त्रित 'तावीज' भी उसके गले में डाल दिया था । लड़की के खाने पीने का इंतजाम उसने बद्रीनाथ पर रख छोड़ा था । बद्रीनाथ उस लड़की के लिये प्रतिदिन ही मनपंसद खानेपीने की वस्तुओं का प्रबंध करता था । लड़की भी गजब थी । नातों उसे अपने माँ-बाप का घर छोड़ने में कोई परेशानी हुई और नाही उसे शमशान में रहने में कोई कठिनाई हुई । वो दिनभर शमशान में यंहा-वंहा घूमती रहती थी । मुर्दो को जलते हुए देखती थी । सोहम को साधना करते हुए देखती थी । प्रेतात्माओं, डाकिनियों, हाकिनियों और शाकिनियों को सोहम के साथ देखती थी । वो अक्सर सोहम से प्रश्न करती थी कि वो ये सब क्या करता था । सोहम उसे यथासंभव उचित उत्तर देने का प्रयास करता था । हाँ, कभी-कभी वो एकदम चुप रहकर शून्य में निहारती रहती थी ।

धीरे धीरे समय गुजरने लगा । सोहम को वंहा तीन वर्ष का लंबा समय हो गया था । अब उसे वंहा कोफ्त होने लगी थी । वो अब वंहा से जाना चाहता था । वो लड़की चित्रशाला भी अब बड़ी हो गई थी । वो जैसे जैसे बड़ी हो रही थी वैसे वैसे और चुप होती जा रही थी । सोहम को उसकी चुप्पी से कोई परेशानी नही थी । उसे बस तब परेशानी हुई जब वो पहली बार मासिक-धर्म से हुई । उस लड़की को इस अनुभव का पहले कभी पता नही था । इसलिये उसने ये बात सीधे आकर सोहम से कही और सोहम परेशानी में पड़ गया । उसने ये बात बद्रीनाथ से कही और बद्रीनाथ ने चित्रशाला के लिये दिन के समय में एक नौकरानी का इंतजाम कर दिया । वो नौकरानी उसे मासिक-धर्म के अलावा दुनियादारी की और भी कई बातें समझाने लगी । इस तरह चित्रशाला धीरे धीरे बड़ी होने लगी । सोहम अब उसे चित्रा कहता था । सोहम की देखादेखी बद्रीनाथ भी उसे चित्रा ही कहने लगा था ।

आने वाले कुछ दिनों में सोहम ने बद्रीनाथ और चित्रा को कई बातें समझाई और कुछ सिध्दियां भी सिखाई । चित्रा ने साधना करना, सीखना शुरु कर दिया था । उसे वो सब अच्छा लगता था । अपने पिछले जन्म के अनुभव की जिज्ञासा उसे उस कार्य में आनंद और सन्तुष्टी देती थी । बद्रीनाथ और भी निपुण होने की दिशा में साधना करता था । सोहम ने उसे डाकिनी को नियंत्रण में रखना सिखाया । उसका इरादा वंहा से जाने से पहले डाकिनी को बद्रीनाथ और चित्रा की सुरक्षा के लिये छोड़ना था । इसलिये उसने बद्रीनाथ को डाकिनी को नियंत्रण में रखना सिखाया था और उसे निर्देश भी दिये थे कि डाकिनी से संभोग कभी ना करें अन्यथा उसकी जान भी जा सकती थी । उसने सिखाया कि डाकिनी से कैसे काम लिया जाता था । अंत में उसने उसे चित्रा के विषय में निर्देश दिये कि वो उसका अपनी जान से भी ज्यादा ध्यान रखें और वो स्वंय जल्दी लौटकर आयेगा और उन दोनो को अपने साथ कंचनजंगा ले जायेगा । बद्रीनाथ प्रसन्न था कि उसे तन्त्रविद्या सीखने का मौका मिल रहा था और चित्रा सन्तुष्ट थी कि उसकी जिज्ञासा शाँत हो रही थी । विदा लेते समय चित्रा को कोई विशेष जुदाई का अहसास नही हुआ परन्तु बद्रीनाथ अपनी आँखों में आँसूं भरकर बोला-- "गुरुदेव, जल्दी आने की कृपा किजियेगा" ।

फिर एक दिन सोहम वंहा से चल दिया और अब वो 'गोदावरी' के तट पर नासिक में था । कभी महान 'गौतम' ऋषि ने गोदावरी के तट पर झूठे गौ हत्या के आरोप के कारण घोर तपस्या की थी । जिससे वो स्थान पावन तीर्थ में बदल गया था । पंचपटी, नासिक और त्रम्बकेश्वर के पावन स्थानों पर घूमकर सोहम ने वंहा के शमशानों को देखा और अंतत एक स्थान पर जंहा से पंचवटी पास ही पड़ती थी । उसने डेरा जमा लिया । ये स्थान एक महाशमशान था और उसके पास ही से गोदावरी की धारा बहती थी । सोहम ने इस बात का ध्यान रखा कि उस शमशान में ज्यदा भीड़भाड़ ना हो अन्यथा उसकी साधना में विघ्न पड़ सकता था । इसके लिये कई दूसरे शमशानों को जोकि गोदावरी के तट पर आसपास स्थापित थे सोहम ने अपना डेरा नही बनाया ।

बहरहाल दिन के समय वो पंचवटी, त्रम्बकेश्वर और नासिक के तीर्थ स्थानों पर घूमता रहता था । रात्रि के समय वो उस शमशान में अपनी साधना में मग्न हो जाता था । जब वो इन स्थानों पर घूमता था तो लोगों से कोई बातचीत नही करता था । बस अपनी धुन में इधर-उधर भटकता रहता था । जब उसका दिल करता कंहि खड़ा हो जाता जब उसका दिल करता चलने लगता था । कई बार लोग उसे हैरानी से देखते थे जब वो युँ ही खड़ा आकाश को निहारता रहता था । तब दरअसल वो उन आत्माओं को देखा करता था जो उस तीर्थ स्थान के आसपास मंडराती रहती थी । वो साधारण लोगों को नजर नही आती थी परन्तु सोहम उन्हे देखने का अभ्यस्त हो चुका था और कई सिध्दिया प्राप्त होने के कारण उसे वो सूक्ष्म दृष्टि हासिल हो गई थी । जिससे वो इन आत्माओं को देख लिया करता था । उन स्थानों पर लोग अपने पितरों और पूर्वजों के श्राध्द, पिण्डदान और शाँती पाठ के लिये भी आते थे । जिससे उनके पितरों और पूर्वजों की आत्मायें वंहा मंडराती रहती थी ।

अब सोहम को वंहा किसी लाश की तलाश थी ताकि उसकी साधना आगे बढ़ सके । उसे 'मानस' ऋषि की आत्मा का आवाहन करना था । गोदावरी के तट पर उसे लाश को नदी में बहा देने वाले ज्यादा नही दिखे । असल में वंहा अभी तक उसे एसा कोई दिखा ही नही था । कई दिनो के इंतजार के बाद जब उसे अपनी साध ाना के लिये लाश नही मिली तो उसने शमशान में दाह-संस्कार के लिये आने वालों को आशा भरी दृष्टि से देखना आरंभ किया परन्तु कोई नतिजा नही निकला । एसे ही समय में एक बार उस शमशान के आसपास घूमने के दौरान सोहम को पास की झाड़ियों में एक कटी-फटी लाश दिखी थी । उसे किसी ने मारकर फेंक दिया लगता था । किन्तु सोहम ने उसपर ज्यादा ध्यान नही दिया । उसे क्षतविक्षत लाश नही चाहिये थी । दरअसल वो उस शमशान के डोम की लाश थी । अगर सोहम उस लाश के विषय में थोड़ा संजीदा होता तो आगे होने वाली घटनाओं का उसे कुछ तो अंदाजा हो गया होता । इस तरह साधना के लिये किसी लाश के उपलब्ध ना होने के कारण सोहम कोई और बात सोच ही नही पा रहा था ।

अंतत उसने डाकिनी का आवाहन किया और उसे आसपास किसी लाश के होने का पता लगाने को कहा । डाकिनी ने तुरन्त ही आकर उसे सूचना दी कि वंहा पास ही 'इगतपुरी' के जंगलों में किसी राजघराने जैसे दिखने वाले आदमी की लाश पड़ी थी । सोहम ने तुरन्त ही जाकर उस लाश पर कब्जा किया और डाकिनी की सहायता से उसे वंहा शमशान में ले आया । सोहम ने लाश का मुआयना किया तो पता चला कि उसे किसी ने जहर देकर मारा था ।

दरअसल वो लाश उस समय के राजघराने होल्कर परिवार के किसी व्यक्ति की थी । तब उस घराने में सत्ता के लिये सघंर्ष अपने चरम पर था । नतिजतन वो किसी की दुश्मनी का शिकार होकर मारा गया व्यक्ति था । जहर से मार देने के बाद उसकी लाश को जंगल में फेंक दिया गया था । सोहम को इससे कुछ लेनादेना नही था । उसने लाश को उठाया और उसे अपने उपयोग के लिये तैयार करने लगा । तब तक रात गहराने लगी थी । पास ही किसी कुत्ते के रोने की आवाज गुँजी । कहा जाता हैं कि कुत्तों का अशरीरी आत्मायें नजर आती हैं ।

बहरहाल सोहम ने उस लाश को निर्वस्त्र किया और उसे शराब से नहलाया और कुछ शराब उसके मुँह में भी डालने का प्रयास किया जोकि सख्ती से बंद होने के कारण नही हो सका । उसके बाद किसी लाल रंग के उबटन जैसे पदार्थ से उसने लाश को लाल कर दिया । फिर उसने लाश को लिटा दिया और स्वंय उसकी छाती पर चढ़कर बैठ गया । उसने स्वंय थोड़ी शराब पी और मन्त्रोंच्चारण में व्यस्त हो गया । अब वो लगातार मन्त्रोंच्चारण कर रहा था । आज उसने मानस ऋषि की आत्मा से साक्षात्कार करने की ठान रखी थी और उसके लिये वो आज अपनी विशेष मन्त्रसिध्दी को उपयोग में लाने वाला ।

धीरे धीरे उसकी आँखों के सामने से उस शमशान का दृष्य गायब होने लगा और प्रचण्ड अतंरिक्ष का दृष्य उभरने लगा । उसकी आँखों के तारे उसकी उपरी पलक की तरफ खिसकने लगे । अब उसकी आँखें केवल सफेद रह गई थी । उसकी आँखों के दोनो तारे उसकी नाक के अंत में उपरी पलक के नीचे जा घुसे । उसका

बर्हिजगत से संबंध कट गया था और वो अब किसी और ही जगत में था । फिर वो जिस प्रचण्ड अंतरिक्ष को देख रहा था वो उसकी आँखों के करीब आने लगा । उसका मन्त्रजाप निरंतर चल रहा था । अचानक वो अंतरिक्ष उसके करीब आते आते एक तरफ सिमट गया और एक दूसरा दृष्य उपस्थित हो गया । ये बहुत हल्का-फुल्का और सहज सा लगने वाला दृष्य था परन्तु इसमें उसे कई अशरीरी आत्मायें इधर से उधर जाती दिखी । उसे कई रंगों का प्रकाश दिखाई दिया परन्तु आश्चर्य ये था सोहम उसे साफ साफ देख पा रहा था कि वो प्रकाश किन अणुओं से बना था । प्रकाश के छोटे छोटे असंख्य अणु प्रकाश की किरणों को बना रहे थे । परन्तु हवा एक हल्का सा झोका भी उन्हे बिखरा देता था । वो हवा का हल्का सा झोका भी वंहा प्रबल तूफान की तरह दिखता था । उसे अणुओं की आपस में रगड़ खा जाने वाली हल्की सी आवाज भी सुनाई दे रही थी । वंहा बहुत हलचल थी । परन्तु सोहम पर उसका कोई प्रभाव नही पड़ रहा था । दरअसल वो सूक्ष्मजगत था और सोहम उसे अपने भौतिक जगत से देख रहा था । ये उसकी मन्त्रसिध्दी और उस समय के मन्त्रोंच्चारण का प्रभाव था ।

सोहम जो मन्त्रजाप कर रहा था । उससे वंहा अनगिनत लहरें उठ रही थी जो सोहम के आसपास फैल रही थी । वो लहरें सोहम के आसपास एक भंवर सा बनाती थी जो धीरे धीरे उससे दूर होता जाती थी । परन्तु बाद में धीरे धीरे वो लहरें सोहम के आसपास ही ठहरने लगी । अंत में उन लहरों का एक गोल घेरा सोहम को घेरे में लिये हुए ठहर गया । अब उस सूक्ष्म जगत की सारी हलचल उस घेरे से दूर हो रही थी । अर्थात उस मन्त्रजाप से उपजा वो घेरा सोहम के लिये उस सूक्ष्मजगत में एक सुरक्षाचक्र का कार्य कर रहा था । अब सोहम के मन्त्रजाप से उपजी लहरें उस गोल घेरे में ही ठहर जाती थी । इस तरह वो घेरा प्रबल से प्रबल होता चला गया । अंत में उसमें से चमक उभरनी आरंभ हो गई, जो सोहम को प्रकाशमान करने लगी । उस चमक को सोहम ने भी मेहसूस किया और मन्त्रजाप बंद कर दिया । अब वो मानस ऋषि के साथ उसके पाँच पूर्वजों के नाम और उसका गोत्र उच्चारने लगा । साथ साथ उसके आवाहन के लिये कोई मन्त्र भी उच्चारने लगा । पहले वो मानस ऋषि का गोत्र उच्चरता, फिर वो मानस ऋषि का नाम लेता अंत में वो उसके पाँच पूर्वजों के नाम लेता । इसके बाद फिर से वो मानस ऋषि के पाँच पूर्वजो का नाम लेता, फिर वो मानस ऋषि का नाम लेता और अंत में वो फिर मानस ऋषि के गोत्र को उच्चरता था । इसके साथ ही आवाहन का मन्त्र भी उच्चारित करता जाता था । इस तरह उस सम्पुटित आवाहन मन्त्र का उच्चारण वो निरंतर करने लगा ।

मानस ऋषि, उसके पूर्वजो के नाम और उसके गोत्र को उच्चारने से सोहम के उपर परन्तु उस गोल घेरे में कुछ ध्वनी तरंगे प्रकट होती थी । सोहम जब आवाहन मन्त्र उच्चारण करता तो उससे नीली लपट सी प्रकट होती थी । फिर मानस ऋषि, उसके पूर्वजों के नाम और उसके गोत्र के उच्चारण से उपजी ध्वनी तरंगे उस नीली लपट में प्रवेश कर जाती थी और नीली लपट तीर की तरह चलती हुई उस सूक्ष्म जगत में कंहि गुम हो जाती थी । अगर वो सूक्ष्मजगत ना होता तो वो सारी प्रक्रिया साधारण आँखों से देखना अंसभव था । बहरहाल एसा कई बार हुआ और बार बार वो नीली लपट उस सूक्ष्म जगत में गुम होती रही । अंतत बहुत देर बाद वो नीली लपट वापस आती दिखी । सोहम के पास आकर वो सोहम के आसपास बने गोल घेरे के किनारे पर रुक गई । अब उस गोल घेरे से लेकर वो नीली लपट किसी नीली लकीर की तरह उस सूक्ष्मजगत में दूर तक फैली नजर आती थी । जिसका दूसरा सिरा दृष्टिगोचर नही होता था, उसका पहला सिरा तो सोहम को घेरे में लिये गोल घेरे से जुड़ा हुआ था ।

फिर उस नीली लकीर पर कोई छोटा सा बिन्दु सा सरकता हुआ दृष्टिगोचर होने लगा । एसा लग रहा था वो बिन्दु सरकता हुआ सोहम के करीब आ रहा था । धीरे धीरे वो बिन्दु सोहम के बिल्कुल करीब आ गया और सोहम को घेरे हुए गोल घेरे के किनारे पर आकर रुक गया । फिर वो धीरे धीरे बड़ा होने लगा और अंतत एक पारदर्शी चेहरे में बदल गया । वो चेहरा किसी ऋषि अथवा साधु जैसा लगता था । वो मानस ऋषि का चेहरा था और निरंतर सोहम को घूरे जा रहा था । सोहम निरंतर आवाहन मन्त्र उच्चारण करने में लगा हुआ था । फिर उस चेहरे के होंठ हिले और वो गम्भीर स्वर में बोला--"हे साधक, अब ये तामसिक आवाहन मन्त्र बंद कर दो । मैं मानस ऋषि की आत्मा तुमसे संबोधित हुँ" ।

सोहम ने मन्त्रजाप बंद कर दिया और मानस ऋषि की आत्मा को हाथ जोड़कर अभिवादन किया । सोहम बोला--"ऋषिवर, आपकी जय हो" ।

उस पारदर्शी मानस ऋषि के चेहरे के होंठ फिर हिले और आवाज आयी--"तुम जिस तामसिक मन्त्रजाप से मेरा आवाहन कर रहे हो उससे मुझे अत्याधिक पीड़ा हुई हैं । आजके बाद फिर कभी इस मन्त्रजाप से मेरा आवाहन मत करना अन्यथा तुम्हारा अनिष्ट हो जायेगा" ।

सोहम ने तुरन्त हाथ जोड़े ही सिर झुकाकर कहा--"क्षमा करें ऋषिवर, फिर कभी एसा नही होगा" ।

फिर मानस ऋषि की आवाज आयी--"तुम जिस दीर्घायु के रहस्य को जानना चाहते हो, वो उद्देश्य तुम्हारा पुर्ण होगा । मैं तुम्हे दीर्घायु प्रदान करने वाली 'सावित्री विद्या' का रहस्य बताउंगा और तुम सरलता से उस सिध्दी को प्राप्त कर लोगें परन्तु इसके लिये तुम्हे पुर्ण चन्द्र की रात्रि की प्रतिक्षा करनी होगी । इस तामसिक स्थान पर मैं अधिक नही ठहर सकता । इसलिये अब मैं जा रहा हुँ । पुर्ण चन्द्र की रात्रि को अगर तुम गोदावरी के तट पर आकर केवल मेरा स्मरण करोगे तो मैं प्रकट हो जाउंगा और उस रात्रि को तुम्हारा उद्देश्य पुर्ण हो जायेगा" ।

इसके बाद वो चेहरा फिर छोटे बिन्दु में बदल गया और जैसे वो उस नीली लकीर पर सरकता हुआ आया था वैसे वो उस नीली लकीर पर सरकता हुआ दूर होने लगा और अंतत विलिन हो गया । सोहम ने फिर कोई मन्त्र उच्चारण आरंभ किया और जैसे वो उस सूक्ष्मजगत को देखने में समर्थ हुआ था वैसे ही वो उससे वापस आने की प्रक्रिया में लीन हो गया । कुछ देर बाद सोहम फिर वापस उसी शव पर बैठा था । अब वो फिर वही कपालिक सोहम था ।

सुबह होने को थी और सूर्य की रौशनी का उजाला होने को था । सोहम शव पर से उठा और नित्यकर्म से निवृत हुआ । अब उसे शव की आवश्यकता नही थी । मानस ऋषि के लिये शवसाधना से आवाहन की आवश्यकता नही थी । वैसे भी सोहम वंहा और अधिक ठहरना नही चाहता था । उसे अब कन्याकुमारी के लिये प्रस्थान करना था । वो कन्याकुमारी, कामरुप और काश्मीर के शक्तिपीठों पर साधना करना चाहता था । इसके लिये उसने कन्याकुमारी से यात्रा करना और साधना करने की ठान रखी थी । वो बस अब पुर्णिमाँ की प्रतिक्षा करना चाहता था जिससे उसकी मानस ऋषि से दीर्घायु सिध्दी प्राप्ती हो सके । उसकी अब तक की प्राप्त सिध्दीयाँ अपनी जगह थी परन्तु जब तक वो 'माँ' के शक्तिपीठों पर साधना कर अपनी सिध्दीयों में शक्ति नही भर लेता तब उसकी सिध्दियां कभी भी निष्काम सिध्द हो सकती थी । माँ की शक्तिपीठों पर साधना से उसकी सिध्दीयों को कवच मिल जाने वाला था और वो फिर कभी निर्बल नही होने वाली थी । इसी सोच के अंतर्गत वो उस लाश को घूरने लगा जो उसने इगतपुरी के जंगलों से लायी थी और जिसपर साधना कर उसने मानस ऋषि का आवाहन किया था । उसे इस लाश का भी कुछ करना था ।

अभी वो ये सोच ही रहा था कि तभी उस शमशान की दीवारों की ओंट से, पेड़ों की ओंट से, खम्भों की ओंट से और आसपास जंहा भी छुपने की जगह हो सकती थी । एसी सभी ओंटों से कई लोग निकल आये और सोहम को घेरे में लेकर खड़े हो गये । ये सब लोग हट्टे-कट्टे पुरुष थे । उनकी दाढ़ियां बढ़ी हुई थी और उनके हाथों में भालें, बर्छियां थी । वे लोग सिपाही लगते थे । उन्होने सिर पर साफे जैसी छोटी पगड़ियां सी बाँध रखी थी । सोहम ने उन्हे निडरता से देखा और प्रश्नसूचक हावभाव लिये खड़ा रहा । फिर उनमें से जो ज्यादा बड़ी पगड़ी बाँधें हुए था वो आगे आया । उसने सोहम को देखा और फिर उस लाश को देखा जिसपर सारी रात सोहम ने साधना की थी । उसके हाथ में एक लंबी, चमकदार और भारी भरकम तलवार थी मगर वो तलवार उसने सोहम पर तानी हुई नही थी । वो बोला--"उस्ताद तुम कौन हो, हमको नही पता । मगर जो कुछ तुमने इस लाश के साथ सारी रात किया हैं वो हम सबने देखा हैं । तुम कौन हो ? और इस लाश के साथ तुम सारी रात क्या करते रहे हो, हमको बताओ" । सोहम ने उन सबको देखा और अंदाजा लगाया कि वो संभवता मुगल सिपाही थे और वो ज्यादा बड़ी पगड़ी पहने उनका मुखिया लगता था । बहरहाल उसने कहा--"मैं इसके

साथ साधना कर रहा था" । उसने लाश की ओर इशारा किया । उस मुखिया जैसे व्यक्ति ने कहा--"आप शायद किसी हिन्दुस्तानी इल्म की बात कर रहे हैं" । सोहम ने एक गहरी सांस ली औार और बोला--"हाँ, मगर तुम लोग कौन हो और इस शमशान में क्या कर रहे हो ? वो बोला--"एसा हैं खलिफा कि हम लोग मुगलिया सिपाही हैं मेरा नाम अशरफ खान हैं । ये सब मेरे साथी हैं और हम सब लोग अहमदनगर जा रहे थे । शहंशाह औरगंजेब ने मुझे अहमदनगर के 'हाकिम' का ओहदा बख्शा था । मैं आगरा से अपने सिपाहियों के साथ अहमदनगर जा रहा था । रास्ते में 'शिवाजी' के छापामारों ने हमपर हमला किया और हम सब लोग यंहा आकर छुप गये" ।

सोहम ने अपने हावभाव से उसकी बातों से अनभिज्ञता प्रकट की और उसने वैसे ही प्रश्नसूचक दृष्टि से उसे देखा, जैसे जानना चाहता हो कि --फिर अब क्या ।

इससे अशरफ खान ने फिर कहा--"आप मेरी बात को समझें नही खलिफा । 'शिवाजी' के छापामार हमारा पीछा कर रहे हैं । अहमदनगर से यंहा तक वे लोग हमारे सैकड़ों सिपाही मार चुके हैं । अगर वे लोग यंहा भी पहुँच जायें तो बड़ी बात नही होगी । हम तो जानते हैं कि आपने इस आदमी को नही मारा हैं । मगर वे लोग पहुँच यंहा पहुँच गये तो आपको इस आदमी के कत्ल के इल्जाम में पकड़ लेगें" । कहते कहते उसने सोहम के साधना वाले शव की ओर इशारा किया ।

अब सोहम ने उसे गौर से देखा और उस साधना वाले शव की ओर उंगली का इशारा करते हुए उससे पुछा--"ये आदमी कौन हैं ?

अशरफ न बताया--"ये आदमी होल्कर घराने का हैं और 'मराठा' सल्तनत का ओहदेदार हैं । इसका नाम सदानंद होल्कर हैं । ये मराठा सल्तनत की ओर से समझौते का मसौदा लेकर आया था । लेकिन हम जानते थे कि समझौते का मसौदा तो एक बहाना था । असल में वो हमारा अता-पता जानने आया था । ताकि बाद में अपने सिपाहियों के साथ हमपर हमला कर सके । हम मराठा सल्तनत के छापामारों के काम करने के तरिके को जान गये थे । इसलिये जैसे ही वो हमसे बात करने आया हमने ही खुशनुमा माहौल का बहाना बनाकर उसे खाना खिलाने की बात कही और खाने में जहर देकर उसे मार डाला । उसकी लाश हमने जंगल में फेंक दी थी और हम जानते थे कि उसकी लाश लेने उसका कोई मददगार आयेगा । आखिर वो अपने लोगों से सलाह-मशविरे के बाद ही हमसे मिलने आया होगा । हम लाश के आसपास ही लाश की निगरानी कर रहे थे । हमारा इरादा उसकी खोजखबर लेने आये मददगारों पर हमला बोल देने का था । मगर वंहा तो तुम आ गये । तुम ने लाश को उठाया और एक पल में ही वंहा से गायब हो गये । हम लोग बहुत हैरान थे कि एक पल में तुम कंहा चले गये । उसके बाद हम लोग वंहा से छुपते-छुपाते यंहा आ पहुँचे थे । यंहा मैं ये बता दूं कि हम नही जानते थे कि तुम यंहा मिल जाओगे । हम लोग सारी रात से यंहा हैं और तुम्हारे इल्म को देखते रहे हैं । तुम जरुर कोई करिश्माई आदमी हो । वंहा जंगल से एक पल में लाश के साथ गायब हो गये और यंहा सारी रात पता नही कौन से इल्म का रियाज करते रहे हो" । अशरफ खान प्रशंसित दृष्टि से सोहम को देखते हुए बोला ।--"खैर, हमारे लोगों को मराठा सल्तनत के छापामारों ने मार डाला हैं । हमारा असला और गोला-बारुद भी लूट लिया हैं । हमारे सामने जान बचाकर भागने के अलावा कोई रास्ता नही हैं । इसलिये जंहा भी छुपने की जगह मिलती हैं हम लोग छुप जाते हैं । हम लोग याँ तो वापस आगरा जाना चाहते हैं याँ फिर हैदराबाद जाना चाहते हैं । क्योंकि अब हमारी मदद याँ तो खुद शंहशाह औरंगजेब कर सकते हैं याँ फिर हैदराबाद के निजाम हमारी मदद कर सकते हैं । अब दोनो ही इतने दूर हैं कि हमको वंहा पहुँचते-पहुँचते महिनों लग जायेगें" ।

सोहम ने अशरफ को देखा और बारी बारी से उन सारे सिपाहियों को भी देखा । वो करीब पच्चीस सिपाही रहे होगें । सभी बहुत थके-मांदे लग रहे थे । लगता था खाना खाये हुए भी बहुत समय गुजर गया था । फिर उसने अशरफ खान की तरफ देखा और उससे पुछा--"अब क्या करोगे ?

"फिलहाल तो यंही रहने के अलावा कोई रास्ता नही हैं" । अशरफ खान हताश स्वर में बोला ।

"तुम तो कह रहे थे कि यंहा कभी भी मराठा सिपाही पहुँच सकते हैं" । सोहम ने उसे घूरते हुए कहा ।

"अगर वो जायेगें तो देखा जायेगा मगर अभी हमारे पास कोई और रास्ता नही हैं" ।

सोहम को वो झाड़ियों वाली कटी-फटी लाश की याद हो आयी जिसे उसने तब देखा था जब उसे लाश की तलाश थी । सोहम ने अशरफ खान से कहा--"वंहा झाड़ियों में एक लाश पड़ी हैं । एक ये सदानंद होल्कर की लाश हैं" । सोहम ने पहले झाड़ियों की तरफ इशारा किया और फिर उसने साधना वाली लाश की तरफ इशारा किया और फिर बोला--"इन दोनो लाशों को जला दो और जब तक चाहे यंहा छुपे रहो । किसी के आ जाने से कोई संदेह ना पैदा हो और बेवजह झंझट ना पैदा हो । मुझे चार दिन और यंहा रहना हैं, उसके बाद मैं यंहा से चला जाउंगा । फिर जैसा चाहो वैसा करते रहना" । सोहम के लिये चार दिन बहुत थे । चार दिन में पुर्णिमाँ तिथि आ जाने वाली थी और उसी दिन सोहम को मानस ऋषि की आत्मा से साक्षात्कार करना था । उसने सोचा उसके बाद उसे इन लोगों से क्या लेना देना था ।

"वो इस मरघट के रहनुमा की लाश हैं" । अशरफ खान ने उसे बताया । "जब हम लोग जंगल में भटक रहे थे, उस वक्त हमारा एक आदमी इस तरफ छुपने की जगह तलाशने आया था । उसको ये जगह अच्छी लगी और उसने मरघट के रहनुमा से बात की मगर वो नही माना तो नतिजतन मेरे उस आदमी ने उसे मार डाला । अगर वो एसा नही करता तो हमारे बारे में आगे किसी को बता सकता था और हम फिर मुसिबत में पड़ सकते थे" ।

सोहम ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नही की और अशरफ खान ने अपने लोगों को निर्देश देने आरंभ कर दिये । तुरन्त काम होने लगा । अशरफ ख्ाान के लोगों ने जल्दी से दोनो लाशों को इक्टठा किया और चिता वाली जगहों पर उन्हे लिटा कर उनपर अस्तव्यस्त ढंग से लकड़ियां डाली और उनमें आग लगा दी । इस दौरान अशरफ खान 'कुरान' की आयतें पढ़ता जा रहा था । एसा लगता था कि वो धार्मिक प्रवृति का व्यक्ति था और किसी मुर्दे के अंतिम संस्कार के दौरान अपने धार्मिक ग्रन्थ 'कुरान' की आयतें पढ़कर वो अपनी धार्मिक जिम्मेदारी पुर्ण करना चाहता था । बहरहाल सोहम को इससे कोई सारोकार नही था, वो ये सब देखकर बस मुस्कराकर रह गया ।

फिर वे सब पता नही उस शमशान में कंहा कंहा जाकर छुप गये और सोहम भी आराम से बैठ गया । बहरहाल दोपहर ढलने लगी और संध्या का प्रर्दुभाव होने लगा । ठीक उस समय अशरफ खान सोहम के पास आया और उसने अपने लोगों के खाने पीने की बात सोहम को बतायी । वो अपने लोगों के खाने पीने के इंतजाम को लेकर चिंतित था और शमशान से जाकर शहर से कुछ लाना चाहता था । सोहम सोचने लगा वो अंजान आदमी उस अंजान स्थान पर कैसे कुछ इंतजाम कर सकता था । कंहि उसके बाहर जाने से कोई झंझट ना उत्पन्न हो जाये और सोहम को चार दिन से पहले ही वो स्थान छोड़ना ना पड़े । उसने उसे बाहर जाने से मना किया और कुछ देर रुक जाने को कहा । तब तक अंधेरा घिरने लगा था और सुर्यास्त करीब ही था ।

जब सूर्यास्त हो गया तो सोहम ने एक प्रेतात्मा का आवाहन किया और उससे उन लोगों के खानेपीने का इंतजाम करने को कहा । तुरन्त ही प्रेतात्मा ने ढेर सारे खाने पीने का प्रबंध कर दिया और वंहा दाल-चावल, सीरा-पुरी, आचार, फल और दहि के भरे बड़े बड़े बर्तन दिखाई देने लगे । फिर सोहम ने अशरफ खान को बुलाकर वो खाना ले जाने को कहा और अपने लोगों में बाँट देने को कहा । अशरफ खान बहुत हैरान हुआ । वो सोचने लगा --कैसे कोई इतनी जल्दी, इतने सारे खाने का इंतजाम कर सकता था । बहरहाल उसने अपने लोगों में खाना बाँट दिया और वे सब खाने के बाद सोहम के विषय में बातें करने लगे ।

अगले दिन भी सोहम ने उसी प्रकार से उनके लिये खाने का प्रबंध कर दिया । परन्तु इस बार वे सब लोग उसे छुपकर देख रहे थे । उन लोगों ने देखा कि सोहम ने आँखें बंद करके होठों से कुछ बुदबुदाया और कुछ ही पलों में हवा में खाने के बर्तन प्रकट होकर वंहा जमा होने लगे । इससे प्रभावित होकर वे सब लोग उसके पास आकर घुटनों के बल बैठ गये और अपने मुस्लिम अंदाज में उसकी प्रशंसा और आदर करने लगे । इस बार अशरफ खान ने उससे प्रार्थना की कि वो उनके लिये कुछ करें । अन्यथा किसी ना किसी प्रकार से वे लोग मराठा सिपाहियों के हत्थे चढ़ जायेगें और अपनी जान गंवा बैठेगें । सोहम ने उसकी बात समझ कर सहमति में सिर हिला दिया ।

रात को सोहम ने हाकिनी का आवाहन किया और वो तुरन्त ही प्रकट हुई । उसने हाकिनी को उन लोगों के विषय में कुछ पता करने को कहा । हाकिनी तुरन्त ही हवा में विलीन हो गई और कुछ ही पलों में वापस प्रकट भी हो गई । उसने बताया कि -- वंहा दक्षिण दिशा में एक हम्पी नामक नगर हैं । जंहा एक बड़ी सी मुस्लिम फौज डेरा डाले पड़ी हैं । उनका सिपहसालार शहनवाज नकवी इनके विषय में पता लगाने का प्रयास कर रहा था । सोहम ने ये बात अशरफ खान को बुलाकर बता दी । अशरफ खान बहुत खुश हुआ और खुबसुरत हाकिनी को देखकर हैरान भी हुआ । वो कई पलों तक हाकिनी को देखता रह गया । जबकि हाकिनी ने एक बार भी उसकी तरफ नही देखा । सोहम ने अशरफ खान से कहा कि वो कोई संदेश लिखकर देदे । उसका वो संदेश शहनवाज नकवी को पहुँचा दिया जायेगा ।

अगले दिन सुबह सवेरे ही अशरफ खान ने एक कागज पर उर्दु में कोई संदेश लिखकर उसे दे दिया । फिर सोहम ने आँखें मुँद ली और कुछ मन्त्र बुदबुदाने लगा । अशरफ खान और उसके सिपाही उसके करीब ही बैठे थे । कुछ ही देर में एक काला कबूतर उड़ता हुआ सा आया और सोहम के करीब आकर गुटूर-गुटुर करता बैठ गया । सोहम ने उसे 'पक्षी योगिनी' विद्या से बुलाया था । वो काला कबूतर अपनी अस्थिर गर्दन को इधर-उधर हिलाता हुआ सोहम को देखने लगा । फिर अशरफ खान और उसके साथी हैरान हो गये जब सोहम के कंठ से उस कबूतर जैसी गुटूर-गुटुर, गुटूर-गुटुर जैसी आवाजें निकलने लगी । सोहम अब उस कबूतर से उसकी ही भाषा में बात कर रहा था । कितनी ही देर तक सोहम और उस कबूतर के बीच गुटूर-गूँ की शैली में बातचीत होती रही । अंत में वो कबूतर सोहम की गोद में सरक आया । सोहम ने अशरफ खान का दिया संदेश वाला कागज उस कबूतर के पैर से बाँध दिया । फिर तुरन्त ही वो कबूतर उड़ गया । सोहम ने अशरफ खान से कहा--"तुमहारा सदेश शाम तक तुम्हारे सिपहसालार को मिल जायेगा" ।

अशरफ खान की आँखों में सोहम के लिये प्रबल आदरके भाव प्रकट हुए, वो बोला--"मोहतरम, आप हमारे लिये किसी पैगम्बर से कम नही हैं" । वो घुटनो पर बैठ गया और अपने हाथ मुस्लिम अंदाज में प्रार्थना के लिये उठाकर उसने कहा--"अल्लाह, ये तेरी कारसाजी हैं कि तूने हमको इस रहमदिल मौलवी से मिलवाया हैं । ये तेरा ही रहम हैं कि हम लोग अभी तक जिंदा हैं । तू निगहबान हैं हमारा, तू रहनुमा हैं हमारा" ।

"आमीन" । अशरफ खान की अल्लाह से की गई प्रार्थना के जवाब में उसके सिपाहीयों ने एक साथ कहा ।

बहरहाल अगले दो दिन कुछ नही हुआ और पुर्ण चन्द्र की रात्रि आ पहुँची । अशरफ खान बेचैन था । उसे पता नही चल रहा था कि उसके सिपहसालार को उसका सदेंश मिला याँ नही । वो कबूतर जो उनका संदेश लेकर गया था वो भी फिर वंहा नही दिखा था । वो सोचने लगा--पता नही उसने संदेश पहुँचाया था याँ नही । सोहम से वो बहुत डरा-डरा सा रहता था । उसने सोहम के जो चमत्कार देखें थे उससे वो बहुत डर गया था । उसे समझ नही आ रहा था कि सोहम उनकी इतनी मदद क्यों कर रहा था । एक हिन्दु होकर वो उनकी मदद कर रहा था । हिन्दु और वो भी प्रबल धार्मिक हिन्दु । देश, जाति के नाम पर नही तो कम से कम उनका धर्म के नाम पर तो आपस में मतभेद होना ही चाहिये था । ये सब अपने विचार उसने अपने साथियों को भी बताये और उसके साथी भी इससे सहमत थे कि आखिर वो हिन्दु होकर उनकी इतनी मदद क्यों कर रहा था । अब वे लोग सर्तक रहने लगे और सोहम पर कड़ी निगरानी रखने लगे । उन्हे लग रहा था कि सोहम उनकी मदद के बहाने कंहि उन्हे शत्रुओं के हाथ में ना देदे ।

उधर सोहम को इन बातों से कोई लेना-देना नही था । वो तो बस अपनी दीर्घायु सिध्दी की प्रतिक्षा में था । उसकी सिध्दी प्राप्ती में कोई अड़चन ना जाये इसलिये वो वंहा शाँती बनाये रखना चाहता था । एक बार उसे वो दीर्घायु वाली सिध्दी प्राप्त हो जाये फिर वो कौन और वो मुस्लिम सिपाही कौन । उसे तो फिर कन्याकुमारी के मार्ग पर आगे बढ़ जाना था । उसने सोचा आज अंतिम रात्रि उसे वंहा बितानी थी । आज रात उसे मानस ऋषि से साक्षात्कार करना था और उसके बाद कल सुबह वो वंहा से चले जाने वाला था । हालाकि उसने उन मुस्लिम सिपाहियों की मदद की थी और यथासंभव प्रयास भी किये थे । अब अगर उनकी किस्मत ही खराब थी और उनके लिये अब तक कोई मदद नही आयी थी ते वो क्या कर सकता था ।

उस पुर्णिमाँ की अर्धरात्रि के करीब सोहम गोदावरी के तट पर जा पहुँचा और एक समतल सी चट्टान देखकर उस पर बैठ गया । आकाश में पुर्ण चन्द्र खिला हुआ था । गोदवरी का जल चन्द्र की चाँदनी में पिघली चाँदी के जैसा लग रहा था । सोहम ने एक बार उस सारे नजारे को देखा और फिर वो ध्यान में खो गया । उसे नही पता था कि अशरफ खान के सिपाही उसका पीछा करते हुए वंहा आ गये थे । दूर से वो उसपर दृष्टि रखें हुए थे । सोहम उस ओर से पुरी तरह लापरवाह था । वो ध्यान में खो गया और उसने मानस ऋषि का आवाहन करना आंरभ कर दिया । अब वो केवल मानस ऋषि का नाम, उसके पूर्वजों का नाम और उसके गोत्र का उच्चारण कर रहा था । एसा उसने कई बार किया । फल स्वरुप उसके आसपास सूक्ष्मजगत का वातावरण बन गया । गोदावरी नदी, वो समतल चट्टान और पुर्ण चन्द्र पता नही कंहा गायब हो गये । दूर से निगरानी कर रहे आशरफ खान के सिपाही भी चौंक उठे । जिस चट्टान पर सोहम बैठा था । उसके आसपास कोई धुंध सी छा गई थी और सोहम उस ध ुंध में खो सा गया था । अब उन्हे सोहम नही दिख रहा था ।

उधर साक्षात और पुर्ण शरीर युक्त मानस ऋषि अपने पारदर्शी शरीर के साथ सोहम के सामने प्रकट हो गये थे । इसके पहले कि सोहम उन्हे अपने सामने प्रकट हुआ जानकर उनसे कुछ कहता उस ऋषि ने ही कहना आरंभ कर दिया --"हे साधक, मैं तुम्हे दीर्घायु सिध्दी के विषय में बता रहा हुँ । तुम ध्यान देकर ये सिध्दी सुन लो । इससे तुम्हे दीर्घायु प्राप्त करने का अवसर मिलेगा जिससे तुम अपने मनोरथ सिध्द कर पाओगे । तुमने जिस पृथ्वी पर जन्म लिया हैं वो उस सौर मंडल का अंग हैं जिसे ध्रूवलोक द्वारा संचालित किया जाता हैं । एसे और भी कई सौरमंडल हैं जिन्हे ध्रूवलोक अपने नियमों से संचालित करता हैं । उसके नियमों के अनुसार सभी सौरमंडलो का संचालन कर्ता एक-एक सूर्य हैं । तुमने जिस पृथ्वी पर जन्म लिया हैं उसका संचालन कर्ता भी वो सूर्य हैं जिसे तुम प्रतिदिन देखते हो । इस सूर्य की प्रखर और तेजस्वी किरणें तुम्हारी पृथ्वी पर आते आते जीवनदायिनी रश्मियों में बदल जाती हैं । जिससे पृथ्वी पर जीवनचक्र चलता हैं । तुम ये अच्छी तरह से जान लो कि इन्ही सूर्य की रश्मियों में दीर्घायु का रहस्य छुपा हुआ हैं । क्योंकि ये रहस्य सूर्य की रश्मियों में हैं और सूर्य का एक नाम सविता भी हैं । इसलिये इसे 'सावित्री विद्या' के नाम से जाना जाता हैं ।

सूर्य की किरणें जब सूर्य से निकलकर आगे बढ़ती हैं तो आगे चलकर बारह विभिन्न प्रभावों में बट जाती हैं । इन अलग अलग दिशाओं में बढ़ने वाली अलग अलग किरणों के अलग अलग प्रभाव होते हैं । जिन्हे ज्ञानी जन चार वर्णों में बटा हुआ जानते हैं । ये चार वर्ण विप्र, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र विभाग हैं । इन्ही बारह विभिन्न प्रभावों से सौरमंडल की बारह राशियों के प्रभावों का निर्माण होता हैं । इसके बाद जिस ओर से भी ये किरणें गुजरती हैं उस ओर के सभी तत्वों में बदलाव ले आती हैं । जैसे अग्नि तत्व का कोई पदार्थ हैं तो उसमें विध्वंसक शक्ति और बढ़ जाती हैं । जल तत्व के पदार्थ से जल सूखने लगता हैं और उसके व्यवहार में बदलाव आ जाता हैं । वायु तत्व के पदार्थ में उष्मा बनने लगती हैं और उसमें जीवनदायिनी ऑक्सिजन की कमी होने लगती हैं । पृथ्वी तत्व के पदार्थो से उपजाउ शक्ति अथवा सहनशक्ति कम हो जाती हैं और उसमें बिखराव होने लगता हैं । बाद में फिर यही जल तत्व भाप बनकर उपर उठता हैं और सूर्य की प्रबल किरणों का ताप कम कर देता हैं और स्वंय भी वर्षा के रुप में बरसने लगता हैं । जिससे पृथ्वी तत्व की उपजाउ शक्ति बढ़ती हैं और उसका बिखराव रुक जाता हैं । फिर फसलें,पेड़ पौधे उगते हैं वायु तत्व प्रबल होने लगता हैं और उसमें जीवन दायिनी ऑक्सिजन बढ़ जाती हैं । अग्नि तत्व की विध्वंसक शक्ति नियंत्रित होने लगती हैं । सूर्य इन किरणों के कारण जिन तत्वों का व्यवहार बदल जाता हैं वही तत्व अपनी स्वभावगत क्रियाएं करने लगते हैं । इस तरह ये तत्व अपने रुप बदलकर हमे नये पदार्थो से परिचित करवाते हैं । ये सब होता हैं सूर्य की किरणों के कारण और उसके निरंतर पृथ्वी पर पड़ने के कारण ।

जिस तरह पृथ्वी पर ये किरणें अपना प्रभाव दिखाती हैं उसी तरह ये मनुष्य मात्र पर भी अपना प्रभाव दिखाती हैं । मनुष्य भी अग्नि, पृथ्वी, वायु और जल नामक तत्वों से बना हैं । हालाकि उसमें आकाश तत्व नामक एक और तत्व का मिश्रण भी हैं । परन्तु जब अग्नि, पृथ्वी, वायु और के तत्वों पर इन किरणों का प्रभाव पड़ता हैं तब वो एक पृथक प्रकार से क्रिया करता हैं । किरणें प्रचण्ड वेग और शक्ति वाली होती हैं और मनुष्य यथासंभव इससे बचता हैं । परन्तु राशियों और ग्रहों से आने वाली इन किरणों से वो नही बच पाता हैं क्योंकि तब ये किरणें, रश्मियों में बदली हुई होती हैं । ये रश्मियां कंहि भी मनुष्य पर अपना प्रभाव डाल सकती हैं । इन्ही रश्मियों से उसके खानेपीने की चीजों का भी निर्माण होता हैं । किसी भी अनाज, किसी भी फल और किसी भी जल में ये रश्मियां समाहित रहती हैं । मनुष्य कई प्रकार से इसे ग्रहण करता रहता हैं । जब ये रश्मियां मनुष्य के शरीर में प्रविष्ट होती हैं तो उपरोक्त बदलाव उसके शरीर में भी होने लगता हैं । मनुष्य को ये पता नही होता हैं कि उसके लिये कितनी रश्मियों की आवश्यकता हैं । जिससे उसका शरीर सुचारु रुप से कार्य करता रह सके । इस अज्ञानता के कारण उसके शरीर में अनावश्यक रश्मियां प्रवेश पा जाती हैं । उसके शरीर के चारो तत्वों के अणु इनकी अधिक मात्रा के प्रभाव से आपस में घर्षण करने लगते हैं । इस घर्षण में कुछ अणु विखंडित होने लगते हैं । इस क्रिया में कुछ नये तत्व शरीर में प्रकट होने लगते हैं । हालाकि ये मूल तत्व जैसे अग्नि, पृथ्वी, वायु और जल के ही उपतत्व होते हैं । ये उपतत्व अपने मूल तत्वों में घटबढ़ करने लगते हैं । जैसे किसी उपतत्व के कारण कभी अग्नि तत्व बढ़ जाता हैं । एसे मनुष्य अग्नि रोगों का शिकार हो जाते हैं । किसी उपतत्व के कारण शरीर में वायु तत्व बढ़ जाता हैं तो मनुष्य वायु रोगों का शिकार हो जाते हैं । इसी तरह जल और पृथ्वी तत्व के बढ़ जाने से उनसे संबंधित रोग होने लगते हैं । अच्छे खानपान और औषधि से इनपर नियंत्रण पाया जा सकता हैं । परन्तु अपनी स्वभावागत रुचि के कारण मनुष्य फिर वही सब ग्रहण करता रहता हैं जिससे पहले कोई तत्व घटा और बढ़ा था । फलस्वरुप आगे चलकर वही रोग फिर होने लगते हैं । इससे उसके शरीर के अणु घर्षण करने लगते हैं और विखंडित होते रहते हैं । अंतत इन अणुओ की एक सीमा होती हैं । जिसके बाद ये अणु समाप्त होने लगते हैं । यंही से आयु की समाप्ती का समय आरंभ हो जाता हैं । निरंतर घटते अणु, तत्वों को घटाते जाते हैं जोकि शरीर की मूल शक्ति होते हैं और अंतत शरीर निर्बल हो जाता हैं । जिसमें सहनशक्ति समाप्त हो जाती हैं और मृत्यु आ पहुँचती हैं ।

'सावित्री विद्या' की सिध्दी से तुम्हे ये सदा पता चलता रहेगा कि तुम्हारे शरीर को कितनी रश्मियों की आवश्यकता हैं । इस विद्या से तुम अनावश्यक रश्मियों को अपने शरीर में प्रवेश करने से बाहर ही रोक सकते हो और अपने शारिरिक अणुओं को घर्षण करने से अथवा विखंडित होने से बचा सकते हो । जिससे ये तुम्हे दीर्घायु प्रदान करते रहेगें । अब मैं तुम्हे इसके मन्त्र बता रहा हुँ जिन्हे तुम्हे अपने स्मृतिकोष में संचित करके रखना हैं । इससे ये ना समझना कि तुम्हे इन्हे सिध्द करने के लिये उच्चारित करना होगा और सावित्री विद्या को सिध्द करने में तुम्हे अभी और समय लगने वाला हैं । एसा नही हैं, इसकी सिध्दी तो मैं तुम्हे अभी ही प्रदान करने वाला हुँ जिससे तुम कल से ही इसका लाभ ले सकोगे । परन्तु इसके विस्तार और इसकी क्रियाओं का भी तुम्हे पता होना चाहिये इस कारण से मैं तुम्हे इसके मन्त्र भी बता रहा हुँ । मैंने मनुष्य मात्र के लाभ के लिये ही इसकी सिध्दी की थी और तुम वो पहले मनुष्य हो जिसने इसके लाभ के लिये मेरा आवाहन किया हैं ।

फिर वंहा सावित्री विद्या के मन्त्रोच्चारण का दौर चला और सोहम आँखें मुँदें उन्हे याद करता रहा । अंत में मानस ऋषि के माथे के बीचोंबीच से एक किरण सी निकली और सोहम के माथे से आ टकरायी । सोहम का शरीर एक बार लिये थोड़ा काँपा और फिर स्थिर हो गया । उसका चेहरा खिल उठा उसे अपने अंदर एक स्फूर्ति सी मेहसूस होने लगी और वो अपने आपको कुछ और ज्यादा युवा और शक्तिशाली मेहसूस करने लगा । सोहम कितनी ही देर युँ ही आँखें मुँदें वंहा बैठा रहा । फिर तब, जब उसने आँखें खोली तो मानस ऋषि का कंहि पता नही था । उसने आसपास देखा तो उसे पेड़-पौधे ज्यादा हरियाली लिये दिखे और कई पेड़, फलों से भरपुर लदे दिखाई देते थे । हालाकि उसे अच्छी तरह याद था कि जब वो यंहा आया था तब उन पेड़ों में फल नही थे । उसने मेहसूस किया कि मानस ऋषि की बतायी सावित्री विद्या के मन्त्रों का प्रभाव पेड़ों पर भी इतना हुआ था कि वे तुरन्त ही फलदार बन गये थे ।

बहरहाल सोहम वंहा से उठकर शमशान में आ गया । अब उसे कन्याकुमारी के लिये प्रस्थान करना था । अशरफखान के कुछ साथी उसे छुपकर देख रहे थे । परन्तु उसे किसी की कोई पर्वाह नही थी । वो अपनी सिध्दी से इतना प्रसन्न था कि उसने सोचा ही नही कि अशरफ खान से कैसे विदा ली जाये । परन्तु तभी वातावरण में 'मोर' की तीखी आवाज गुँजी । फिर वैसी ही तीखी मोर की आवाज शमशान के अंदर से भी गुँजी । उसने मेहसूस किया कि पहली आवाज कंहि दूर शमशान के बाहरसे आयी थी मगर दूसरी अवाज निश्चित ही शमशान के अंदर से गुँजी थी । पक्षी योगिनी विद्या का दक्ष सोहम जानता था कि ये कि मोर की आवाज नही थी बल्कि कोई मनुष्य मोर की आवाज मे चिल्ला रहा था और ये बात शमशान के अंदर से भी हो रही थी ।

सोहम कठोर निगाहों से हालात को परखने का प्रयास करने लगा । उसने तुरन्त ही अपने रक्षक प्रेतों का आवाहन किया । पलक झपकते ही उसके आसपास हवा में सरसराहट होने लगी । ये संकेत था कि उसके रक्षक प्रेत उसके करीब ही थे । चण्डीश्वरनाथ ने उसे सिखायाा था कि कैसे कुछ प्रेतों से केवल अपनी सुरक्षा का कार्य ही लिया जाना चाहिये । जिससे वो अपनी सुरक्षा के प्रति सुनिश्चित हो सके । उसने कई प्रेतों के लिये भौतिक जगत के कार्य किये थे और बदले में उनसे केवल आपातकालिन स्थिति में अपनी सुरक्षा का अश्वासन मांगा था । सभी प्रेतात्माऐं भौतिक जगत और मनुष्य के संसर्ग के लिये लालायित रहती हैं और कोई मनुष्य अगर किसी प्रेतात्मा का भौतिक जगत का कोई कार्य बना दें तो बदले में वो भी उस मनुष्य के लिये कोई भी कार्य करने को तैयार हो जाती हैं । इससे एक तो मनुष्य का सानिंध्य उन्हे मिलता हैं दूसरे पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण को भेदने में उन्हे ज्यादा परिश्रम नही करना पड़ता हैं । क्योंकि जब कोई मनुष्य पृथ्वी से ही उन्हे आवाहन करके बुला रहा हो तो उसके अवाहन के लिये उच्चारित मन्त्र स्वयं ही उसके लिये गुरुत्वाकर्षण से मार्ग बना देते हैं । एसे में भौतिक जगत से कोई मनुष्य उनके कार्य भी बना दे तो फिर वो उसके लिये कार्य करने को तैयार हो ही जाती हैं । इस तरह सोहम ने उनके भौतिक जगत के कार्य करके उन्हे अपनी सुरक्षा के लिये रख छोड़ा था । अब जब सोहम को सुरक्षा की आवश्यकता मेहसूस होने लगी तो सोहम ने उन्हे तुरन्त ही आवाहन करके बुला लिया था । मोर की बनावटी आवाज ने उसे सावधान कर दिया था और जो हालात उस समय थे उससे उसे सावधान रहने की आवश्यकता भी थी । वो एक अजनबी स्थल पर था और किन्ही अजनबी सैनिको से घिरा हुआ था । हालाकि उसे सैनिको से और दूसरी किसी भी दुनियांदारी से कुछ लेनादेना नही था । मगर सावधान रहना और सजग रहना उसकी स्वभावगत आदतें थी । तन्त्र में सजग रहने को ही मूल मन्त्र बनाया जाता हैं । उसके गुरु ने उसे ये बात बहुत गहरे से समझायी हुई थी । इसलिये सजग सोहम को धोखा देना आसान बात नही थी ।

परन्तु वो सब सजगता, अपनी सुरक्षा के लिये प्रेतों का आवाहन और सावधानी बेकार ही सिध्द हुए । इसलिये कि उसी समय अशरफ खान स्वयं ही अपनी छुपी हुई जगह से बाहर आ गया और सोहम के सामने घुटने टेककर बैठ गया और बोला --"उस्ताद, मेरे कुछ साथी बाहर आये हुए हैं, अगर आप कहें तो उन्हे अंदर बुला लुं ?

अब सोहम की समझ में सारा माजरा आ गया था । अशरफ खान के जिन साथियों को बुलाने के लिये उसने उनकी मदद की थी और उन्हे आने का संदेश भेजा था । वो लोग शायद आ गये थे और बनावटी मोर की आवाज शायद उनके आपस में संकेतों का अदान-प्रदान था । बहरहाल सोहम बोला कुछ नही, बस उसने सहमति में गर्दन हिला दी ।

कुछ ही पलों में वंहा और ढेर सारे सैनिक आ गये । उनके साथ उनका कोई मुखिया सा लगने वाला एक रौबदार आदमी भी था । इसका नाम लियाकत खान था । ये बाद में अशरफ खान ने सोहम को बताया था और उन दोनो का आपस में परिचय भी करवा दिया था । बहरहाल आनन-फानन सारे सैनिकों को इधर-उधर छुपा दिया गया और सबको छुपे रहने का निर्देश भी दे दिया गया । ये उनकी सैनिक रणनिति थी जिससे सोहम को कुछ लेनादेना नही था परन्तु फिर अशरफ खान ने उसके सामने उनके सुरक्षित

निकल जाने का उपाय सुझाने की प्रार्थना रखी ।

दरअसल अशरफ खान के लिये वंहा से निकल जाना आसान काम नही था । अपने बचे खुचे सैनिको के साथ हम्पी तक जाना किसी भी दृष्टि से सुरक्षित नही माना जा सकता था । सारा इलाका मराठा छापामारों से भरा हुआ था और वो लोग किसी भी हालात में उनसे सामना किये बिगैर इतनी दूर तक नही जा सकते थे । वैसे भी पिछले दिनो से जो घटनाऐं हुई थी उसको मद्देनजर रखा जाये तो अब तक मराठा छापामार उनको जोरशोर से तलाश कर रहे होगें । यंहा से निकलकर हम्पी तक पहुंचने के दौरान उनसे सामना नही होगा एसा मुश्किल ही जान पड़ता था । एसे में करामती आदमी सोहम ही उनकी कुछ मदद कर सकता था । एसा सोचकर अशरफ खान ने सोहम के सामने उनके सुरक्षित निकल जाने के उपाय सुझाने की प्रार्थना रखी थी ।

अशरफ खान ने हम्पी से आयी सैनिक मदद के मुखिया लियाकत खान को भी सोहम के विषय में बताया था । और लियाकत खान ने भी हम्पी से आने के दौरान कैसी कैसी मुश्किले आयी थी इसका जिक्र अशरफ खान से किया था । दोनो ने मिलकर इस बात से सहमति बनायी थी कि सोहम से मदद की प्रार्थना की जाये फलस्वरुप वे दोनो सोहम से प्रार्थना कर रहे थे । हालाकि बोलने का कार्य केवल अशरफ खान ही कर रहा था क्योंकि लियाकत खान को कुछ ज्यादा वंहा के हालात की जानकरी नही थी और सोहम के विषय में तो बिल्कुल भी नही थी ।

बहरहाल सोहम इससे उलझन में पड़ गया था और अब इस नये हालात से कैसे निपटा जाये । वो एसी सोच में पड़ गया था ।

सारे हालात की समिक्षा और विश्लेषण के बाद अशरफ खान और लियाकत खान ने रात्रि को निकलने की योजना बनायी । उन्हे जल्दी से जल्दी इस क्षेत्र से निकल जाने में ही अपनी भलाई नजर आ रही थी । सोहम ने बहुत सोच समझकर अंतत उन्हे हाकिनी की मदद उपलब्ध करवाने का फैंसला किया और उन्हे बताया कि हाकिनी उन्हे जल्दी हम्पी पहुचने सबसे छोटा रास्ता बतायेगी और सारे मार्ग का ज्ञान उन्हे देती रहेगी । जब वे लोग हम्पी पहुच जायेगें तो हाकिनी वापस आ जायेगी ।

इस तरह दो-दो, चार-चार की टोलियों में सारे सैनिक धीरे-धीरे निकलते चले गये । आधी रात होने को थी और चाँद निकला हुआ था । सोहम ने अशरफ खान को हाकिनी दिखा दी परन्तु उससे उसकी बात नही करवायी । सोहम को डर था कि कंहि अशरफ खान हाकिनी से बात करने लग जायेगा तो फिर कभी उसपर रींझ ना जाये और फिर एसे में उसका हाकिनी से शारिरिक संबंध बन सकता था । जिससे फिर अशरफ खान की मृत्यु तय थी । ये बात उसने अशरफ खान को भी बता दी थी । इसलिये जब सोहम ने उसे हाकिनी दिखाई और उसे बताया कि वो उनको मार्ग दिखलाने का कार्य करेगी तो हाकिनी बहुत अदा से उसकी ओर देखकर मुस्करायी । उसकी मुस्कान से अशरफ खान की रुह काँप गई । वो समझ रहा था कि उस खुबसुरत बला से उसे दूर ही रहना था अन्यथा उसकी मौत तय थी ।

बहरहाल वो सब सैनिक हाकिनी के बताये मार्ग से पुना की ओर बढ़े जंहा से वो लोग फिर दक्षिण की ओर बढ़ जाने वाले थे । वे लोग जगंली रास्तो से आगे बढ़ रहे थे इससे वो आबादी से दूर ही रहते थे जिससे उन्हे कोई पहचान नही पाता था । दूसरे वो रात्रि के समय ही अधिकतर यात्रा जारी रखते थे और दिन के समय इधर-उधर छुप जाया करते थे । हाकिनी भी यही करती थी । वो तामसिक अणुओ से बनी थी इसलिये तमस में ही रहना उसके लिये भी हितकर होता था । इस तरह जब सूर्य नही होता था तो तमस का राज्य होता था और हाकिनी पुर्णयता मुस्तैद और आकर्षक नजर आती थी । जब सूर्य होता था वो भी अंधकारमय स्थान पर जाकर शरण ले लेती थी । उसे जब भी मार्ग के विषय में बताना होता था तो वो उस मार्ग पर खड़ी दिखाई देती थी और जब कोई उलझा हुआ मसला होता था तो वो अशरफ खान को अनुभूति करवा देती थी । अशरफ खान अचानक आये इन अनुभूति वाले विचारों से तुरन्त समझ जाता था कि उसे क्या करना था अथवा किस ओर जाना था । लेकिन जब एसा होता था तो अशरफ खान के शरीर में झुरझुरी उत्पन्न हो जाती थी । वो ये विचार मन से निकाल ही नही पाता था कि वे लोग किसी रुहानी ताकत की देखरेख में सफर कर रहे थे । लेकिन वो इस बात से भी डरा हुआ रहता था कि हाकिनी को उसके साथी पता नही क्या समझ रहे होगें और ये कि कोई गलती ना कर बैठे । वो ये भी सोचता रहता था कि पता नही उसके साथियो को हाकिनी दिखाई भी देती हैं याँ नही ।

अशरफ खान के विचारों के विरुध्द हाकिनी उसके सारे साथियों को दिखाई दे रही थी । हाकिनी उस समय साबरमति नदी के महाशमशान से हासिल हुए शरीर में थी । हाकिनी किसी दूसरे के शरीर के बिगैर इतना समय पृथ्वी पर नही रह सकती थी । अपने तामसिक वायु तत्व के अणुओं से वो कुछ समय के लिये अपना कोई भौतिक शरीर बना सकती थी परन्तु उसमें लबें समय तक रहना उसके लिये संभव नही था । लबें समय तक पृथ्वी पर रहने के लिये उसे पृथ्वी का कोई भौतिक शरीर अवश्य ही चाहिये । इसी के चलते सोहम ने उसे साबरमति के महाशमशान से एक मृत शरीर उपलब्ध करवाया था । जिसपर आजकल वो कब्जा बनाये बैठी थी । अब समस्या ये थी कि ये मृत शरीर आखिर मृत ही था और इसका सड़ना-गलना भी तय था । इसकी एक सीमा थी, जब तक हाकिनी इसे अपने प्रभाव से सड़ने-गलने से बचा सकती थी तब तक वो आराम से इस शरीर में रह सकती थी परन्तु जैसे ही इस शरीर की सीमा पुर्ण हो जायेगी वैसे ही हाकिनी को ये शरीर भी छोड़ना था । तब सोहम को फिर उसके लिये किसी दूसरे शरीर का इंतजाम करना होगा नही तो हाकिनी के पास अंतरिक्ष में चले जाने के अलावा कोई विकल्प नही होगा । अंतरिक्ष उसका सदा के लिये शरण स्थल था । बहरहाल अभी एसी कोई समस्या नही थी और हाकिनी अपने पुरे शबाब के साथ इस शरीर में रह रही थी और अशरफ खान का मार्ग दर्शन कर रही थी ।

मनुष्य जिन अणुओं से बना हैं उससे भी सूक्ष्म अणुओं से हाकिनी बनी होती हैं । सूक्ष्म से सूक्ष्मतर अणु उतरोतर अधिक शक्तिशाली होते चले जाते हैं । मनुष्य तो फिर भी पाँच प्रकार के तत्व अणुओं से बना हैं जबकि हाकिनी केवल सूक्ष्म वायु तत्वों से बनी होती हैं । इस तरह हाकिनी किसी भी तरिके से मनुष्य से अधिक शक्तिशाली और मायावी होती हैं । जिस तरह अधिक शक्तिशाली कम शक्तिशाली को अपना शिकार बनाता हैं उसी तरह मनुष्य से अधिक शक्तिशाली और मायावी होने के कारण हाकिनी मनुष्यों को अपना शिकार बनाती हैं । इससे वो मनुष्य के संसर्ग में रह पाती हैं और अपनी तामसिक आवश्यकताओं को पुर्ण करती हैं । अपनी तामसिक शक्ति को बनाये रखने के लिये वो निरंतर तामसिक पदार्थो का सेवन करती रहती हैं और तामसिक वातावरण में बनी रहती हैं । ये सब उसे अंतरिक्ष में भी मिलता हैं परन्तु मनुष्य के ससंर्ग में रहने से उसे एसा महसूस होता जैसे कोई आदमी घर का खाना खाते-खाते अचानक ही किसी फाईव स्टार होटल में पहुंच जाये और मौज मारने लगे ।

बहरहाल शक्तिशाली और मायावी हाकिनी इस समय अशरफ खान और उसके साथियों को मार्ग दिखा रही थी और केवल रात्रि में ही प्रकट होती थी । एसी रात्रि और घुप्प अंधेरे में भी उसकी रुपराशी खूब प्रकट होती थी । वो किसी कमसिन कन्या की तरह लजाती और शर्माती हुई दिखती थी । कभी-कभी जब वो अपनी लहराती हुई चाल से आगे-आगे चलती थी तो अशरफ के साथी सैनिक और लियाकत खान के सीने पर छुरीयां चलने लगती थी । फिर वही हुआ जो होना था ।

लियाकत खान जिसमें बिल्कुल भी लियाकत नही थी । बेशर्मी से हाकिनी के करीब रहने के बहानें ढूढने लगा और वो अक्सर हाकिनी के आसपास ही नजर आता था । हाकिनी भी उसे दिलकश मुस्कान से निहारा करती थी और लियाकत खान पागल हो जाता था । सैनिको के आगे पीछे होने के कारण अशरफ खान को जब तक पता चले कि क्या हो रहा था तब तक लियाकत खान ने हाकिनी से सम्पर्क बना ही लिया ।

एक रात जब सैनिक छुपते-छुपाते आगे बढ़े चले जा रहे थे । लियाकत खान हाकिनी के पीछे दूर तक चला गया । हाकिनी भी उसे घने पेड़ो के झुरमुटों में ले आयी और फिर लियाकत खान ने जी भरकर हाकिनी को भोगा । हाकिनी ने भी उसे भरपुर सहयोग दिया । भरपुर संभोग के बाद हाकिनी उसे फिर दिलकश निगाहों से निहारती थी और लियाकत खान फिर जोश में भरकर उसके साथ संभोग करने लगता था । वो जितना भी हाकिनी के साथ संभोग करता था उतनी ही उसकी ललक बढ़ती जाती थी । हाकिनी का संभोग में भरपुर सहयोग और उसके बाद फिर हाकिनी का उसे ताकना उसे पागल बनाये दे रहा था । इस तरह एक ही रात्रि में उसने पता नही कितनी बार

हाकिनी को भोगा था ।

जब सुबह होने को आयी तो हाकिनी तुरन्त उससे दूर जाने लगी सूर्य के प्रकाश से उसे दूर रहना था इसलिये अब उसे किसी अंधियारी जगह की तलाश थी । लियाकत खान बेचैन सा उसे निहारने लगा और उसके पीछे-पीछे जाने लगा । हाकिनी उसे एक सीलन भरी गुफा में ले गयी । यंहा हाकिनी सूर्य के प्रकाश से सुरक्षित थी और पगलाया लियाकत खान उसे फिर वंहा भोगने लगा । इस तरह फिर रात हो गई और हाकिनी फिर यात्रा कर रहे सैनिकों के साथ थी । लियाकत खान का अपने आप पर से नियंत्रण हट गया था और वो अपने होशों हवास में नही था । उसे बस हाकिनी का साथ चाहिये था और हाकिनी सदा ही उसे आकर्षक निगाहों से निहारती थी और उसे सदा ही संभोग के लिये उकसाया करती थी । अब यात्रा के दौरान जब भी पड़ाव डाला जाता तो लियाकत खान याँ तो लस्त पस्त सा कंहि पड़ा रहता था याँ फिर हाकिनी के संग संभोगरत रहता था । जब यात्रा हो रही होती तो वो बदहवासी की हालत में लड़खड़ाता सा चलता रहता था ।

सैनिको का वो जत्था आगे बढ़ा चला जा रहा था । वे पुना से आगे बढ़ चुके थे और अब दक्षिण के अपने मार्ग की ओर अग्रसर थे । आने वाले पन्द्रह दिनों में वे लोग हम्फी पहुचने वाले थे । लेकिन वो यात्रा उन सैनिको के लिये मौत की यात्रा थी । इसलिये कि हाकिनी ने केवल लियाकत खान को ही अपनी निशाना नही बनाया बल्कि लगभग सारे ही सैनिक उसकी हवस के शिकार बन चुके थे । जो नही बन पाये थे -- उन्हे याँ तो मौका नही मिला था याँ फिर उनका नंबर ही नही आया था । बहरहाल एसे सैनिक गिनेचुने ही थे । अलबता सभी हाकिनी का शिकार बन चुके थे । हाँ, अशरफ खान इन सबसे जुदा निकला । वो हाकिनी से दूर ही रहता था और सदा उसे आदर की दृष्टि से देखता था । हाकिनी भी उसकी ओर अधिक ध्यान नही देती थी । क्योंकि उसे आदर नही संभोग चाहिये था । दूसरे उसे सोहम का निर्देश था कि वो अशरफ खान को अपना शिकार नही बनाये । इस तरह अशरफ खान बच गया था । पता नही सोहम से भूल हो गई थी याँ उसे सूझा नही था कि वो हाकिनी को निर्देश दे देता कि वो इस यात्रा के दौरान किसी को भी अपना शिकार नही बनाये । उसने केवल अशरफ खान के लिये ही उसे निर्देशित किया था । शायद उसने सोचा होगा कि अशरफ खान अगर सुरक्षित होगा तो वो बाकि सबकुछ संभाल लेने वाला सिध्द होगा । जो भी हो तामसिक शक्तियों को नियंत्रण में रखने का उसका अंदाजा गलत ही सिध्द होने जा रहा था । आने वाले महिनों में वो सारे सैनिक जिन्हौने हाकिनी से संभोग किया था मौत के मुँह में समा जान वाले थे । इसलिये कि जो भी हाकिनी से संभोग के लायक नही रहेगा उसे हाकिनी मार डालने वाली थी ।

मायावी हाकिनी अपने मायावी प्रभाव से संभोग करने वाले पुरुष की संभोग शक्ति बढ़ा देती थी । जिससे कि वो निरंतर उससे संभोग करता रहे । इससे वो प्रसन्न होती थी और उसकी तामसिक शक्ति बढ़ती थी । परन्तु जिनसे वो संभोग करती थी आखिर वे लोग थे तो पंच तत्वों से बने हाड मांस के पुतले ही और अंतत उनकी शक्ति चूक ही जानी थी । जब तक किसी पुरुष में शक्ति थी, रक्त था तभी तक उसमें वीर्य बनने की अथवा संभोग करने की योग्यता बनी रहनी थी । एक बार शक्ति और रक्त की कमी होने लगेगी तो सभी प्रकार की योग्यता का समाप्त हो जाना तय था । इस तरह जिन सैनिको ने यात्रा के दौरान हाकिनी से संभोग किया था वे सब दिन ब दिन निर्बल होते चले गये । हम्फी पहुचने के बाद आने वाले कई दिनो के दौरान उनमें से एक ना एक सैनिक अपने बिस्तर पर मरा हुआ पाया गया था । जिसकी भी संभोग शक्ति चूक जाती थी हाकिनी उसे गला घोंट कर मार डालती थी । लियाकत खान का नंबर इसमें सबसे पहले लग गया था । जो बच गये थे उनमें वो सैनिक थे जिन्हौने हाकिनी से संभोग नही किया था । इससे मुगल सेना में बहुत हाहाकार मचा और सेना के ओहदेदार समझ नही पा रहे थे कि क्या हो रहा था । अशरफ खान तो खैर पहले ही बच जाने के लिये बचनबध्द था और बच भी गया था । हालाकि वो समझ रहा था कि हो ना हो इस सारे कत्ले आम में उस हाकिनी नामक रुहानी ताकत का हाथ हैं परन्तु वो इसे सिध्द नही कर सकता था । चुप रह जाने के अलावा उसके पास कोई चारा नही था ।

दरअसल जो सैनिक हाकिनी के कारण मौत के मुँह में समा गये थे उनकी मृत्यु तो पहले से ही तय थी । उन्हे युध्द में मरना था परन्तु सोहम जैसे व्यक्ति के कारण -- जिनके हाथ कुछ प्राकृतिक शक्तियां लग जाती हैं --एसा होने से रह गया था । तब प्रकृति ने उनकी मृत्यु का कारण बदल दिया था और सोहम के ही हथियार से उन्हे मौत के मुँह में धकेल दिया था । इसलिये कि प्रकृति का नियम तो सोहम जैसे लोग भी नही बदल सकते थे । इस तरह जिसकी जो नियति हैं वो अपनी नियति को प्राप्त होकर ही रहता हैं । मुगल सेना में अगले कुछ महिनों में इस काण्ड को भुला दिया गया और अशरफ खान को दिल्ली तलब कर लिया गया था । वंहा बड़े ओहदेदारों को उससे मराठा छापामारों के युध्द करने के तरिके पर विचार विर्मश करना था ।

सारे सैनिकों के चले जाने के बाद सोहम कितनी ही देर उस शमशान में खड़ा सोचता रहा कि अब उसे क्या करना चाहिये । उसे किसी सिध्द पीठ में साधना करनी चाहिये--एसा सोहम बहुत समय से सोचता चला आ रहा था । उसके गुरु ने कहा था किसी सिध्द पीठ में साधना करने से और साधारण साधना करने में बहुत फर्क होता हैं । सिध्द पीठ में साधना करने से साधना का फल दोगुना मिलता हैं । लेकिन समस्या ये थी कि उसकी साधना 'वाम मार्गी' साधना थी और सिध्द पीठ में एसी साधना करने की मनाही होती हैं । बहरहाल सोहम ये सोचता रहा कि उसे कैसे सिध्द पीठ में साधना करने का मौका मिले कि वो अपने गुरु को बताये कि उसने अंसभव को संभव कर दिखाया था । हालाकि उसकी योजना कन्या कुमारी की ओर प्रस्थान करने की थी क्योंकि उसके गुरु ने बताया था उस दिशा में अभी तक कई एसे सिध्द पीठ हैं जो 'शंकराचार्य' अथवा ऋषि-मुनियों की निगाह में नही आये थे । सोहम ने सोचा -- ये बात अवश्य ही उसका गुरु अपनी साधना के बलबूते पर कह रहा होगा । आखिर उसका गुरु भी किसी ऋषि-मुनि से कम तो नही था ।

फिर कुछ सोचकर उसने 'आकाश योगिनी' नामक सिध्दी का प्रयोग करने का निश्चय किया और धाराप्रवाह ढंग से कोई मन्त्रोंचारण करने लगा । कुछ ही देर में उसके आसपास सफेद धुँए जैसा वातावरण बन गया । फिर वो धुँआं इतना गाढ़ा हो गया कि सोहम दिखना ही बंद हो गया था । आहिस्ता-आहिस्ता वो धुँआं छटने लगा और सोहम दिखाई देने लगा वो वैसे ही मन्त्रोंचारण में लीन था और उसकी आँखें बंद थी । लेकिन अब उसके सामने दो परियाँ दिखाई दे रही थी । वो सफेद बर्फ की तरह पारदर्शी और सोहम जितनी ही उँची अथवा लंबी दिखाई दे रही थी । उनके होंठ लाल सुर्ख और अत्यंत खुबसुरत दिखते थे । वो किन्ही सफेद कपड़ो में लिपटी दिखाई देती थी और बहुत मनमोहक लग रही थी । उनके कन्धों के पास मोर के पंखों की तरह उभरे हुए पंख दिखाई दे रहे थे । जिससे उनके परी होने का अहसास होता था । उनके सिर पर मुकुट जैसा कोई गहना सजा हुआ था और उसमें मोरपंख भी जड़ा दिखाई देता था । पतली कमर, उभरे वक्ष, चमकीली आँखें, लंबे केश और मुख के आकर्षक भाव किसी का भी मन मोह लेने का कार्य कर सकते थे ।

दरअसल वो दोनो विद्याधरी अप्सरायें थी । अंतरिक्ष में स्थापित विभिन्न लोकों में से एक लोक अपदेवताओं का भी होता हैं । इन अपदेवताओं में से चौथे नंबर के अपदेवताओं में इन अप्सराओं को गिना जाता हैं । पहले नंबर पर होते हैं 'यक्ष' दूसरे नंबर पर होते हैं 'गन्धर्व' तीसरे नंबर पर होते हैं 'किन्नर' और चौथे नंबर पर होते हैं 'विद्याधर' । इन्ही अपदेवताओं में स्त्री देवताओं को अप्सराऐं कहा जाता हैं । कुछ साधक इन्हे 'विद्याधरी' भी कहते हैं और कुछ साधक इन्हे 'परी' भी कहते हैं । इन्हे सारे ब्रह्माण्ड का ज्ञान होता हैं और काल के विषय में इनकी समझ किसी भी दूसरे देवता से कम नही होती हैं । ये काल को भेदने का रहस्य जानती है और ब्रह्माण्ड में किस समय किस स्थान पर काल की गति क्या हैं-- इस विषय में इनसे बेहतर कोई नही जानता हैं । इसलिये ये पलक झपकते ही एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंच जाती हैं । ईच्छागति से ये एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंच सकती थी । ये सारी यात्राऐं आकाश मार्ग से ही करती हैं । शायद इसिलिये इन्हे प्रकृति ने पंख दिये हुऐ थे ।

चौसंठ योगिनी सिध्द करने के दौरान सोहम ने उन्हे आकाश योगिनी नामक सिध्दी से सिध्द किया था । वे ज्ञान वर्धन और आकाश गमन के कार्य ही करती

थी । इसलिये कुछ समय के लिये ही साधक के पास प्रकट होती थी । उसके गुरु ने उसे समझाया था कि अगर बहुत आवश्यक ना हो तो इनका आवाहन नही करना चाहिये । अन्यथा ये सिध्दी निर्बल होने लगती थी और फिर आवाहन करने पर भी ये प्रकट नही होती थी । ज्ञान और आकाश गमन के कार्य लाभ लेने से ही ये सदा प्रसन्न रहती हैं और साधक के पास बनी रहती हैं । सोहम को आज उनसे यही काम लेना था । उसे आज कन्या कुमारी के लिये प्रस्थान करना था जिससे उसे आकाश गमन करना था और दूसरे उसे इन अप्सराओं से सिध्द पीठ के विषय में जानना था जिससे वो अपनी साधना पुर्ण कर सके । यही सोचकर उसने इन अप्सराओं का आवाहन किया था और निरंतर मन्त्र जाप किये जा रहा था । उसे पता ही नही चला कि वो अप्सरायें कब प्रकट हो गई थी । जब कुछ देर स्थिति एसी ही बनी रही तो तो सोहम के कानों में एक संगीतमय स्वर पड़ा-- "हे आकाशपुत्र, अपनी आँखें खोलो ।"

सोहम ने जब आँखें खोली तो अप्सराओं को अपने सामने खड़ा पाया । अपनी सिध्दी पर उसे गर्व मेहसूस हुआ और वो प्रसन्न स्वर में बोला --"धन्य हो, श्री कुबेर, आपकी जय हो ।"

कुबेर अपदेवताओं का आराध्य देव था । अप्सराओं ने जब अपने आराध्य देव का नाम सुना तो वो नतमस्तक हो गई और मृदु स्वर में बोली --"हम आपकी कार्यसिध्दी के लिये प्रकट हुई हैं, आकाशपुत्र । आप कृपया हमे कार्य बतायें ।"

"हे विद्याधरी" -- सोहम आदेशात्मक स्वर में बोला --"मेरे गुरु ने कहा हैं कि मुझे किसी सिध्द पीठ पर साधना करनी चाहिये । एसी मेरी ईच्छा हैं कि मैं अपने गुरु के आदेश का पालन करुं और किसी सिध्द पीठ पर साधना करुं । मुझे बताओं कि मैं किस सिध्द पीठ पर साधना कर सकता हुं और वो किस दिशा में हैं ।"

"पृथ्वी के नियमानुसार सिध्द पीठ पर केवल सात्विक साधना की जा सकती हैं । आप तामसिक साधना करना चाहते हैं और आप वाममार्गी हैं इसलिये आप सिध्द पीठ पर साधना नही कर सकते हैं, आकाशपुत्र ।" दूसरी अप्सरा मृदु स्वर में बोली । उन दोनो अप्सराओं में से बारी-बारी से दोनो अप्सरायें बोल रही थी ।

अब फिर पहली वाली अप्सरा बोली --"आकाशपुत्र, आपको ज्ञान होना चाहिये कि अंतरिक्ष से ग्रहों, नक्षत्रों, तारों और सितारों से उनके प्रभाव का प्रवाह किरणों के रुप में पृथ्वी की ओर बना रहता हैं । इनमें से कुछ ग्रहों, नक्षत्रों और सितारों का प्रवाह पृथ्वी के कुछ निश्चित स्थानों पर निरंतर बना रहता हैं । ये किरणें पृथ्वी के लिये उर्जा का कार्य करती हैं और इससे उसकी उपजाउ शक्ति, पंचतत्व की बलवता और मनुष्य को पोषण मिलता हैं । इन स्थानों को पृथ्वी के ऋषि-मुनियों ने पहचान कर सिध्द पीठ में बदल दिया हैं ताकि इसका दुरुपयोग ना हो और इस उर्जा का सात्विक प्रयोग होता रहे और मनुष्य का पोषण तथा पृथ्वी की शक्ति बनी रहे । ये उर्जा अत्यंत शक्तिशाली और क्रियात्मक हैं । अगर इसका दुरुपयोग होने लगेगा तो पृथ्वी पर अत्यंत भयावह विध्वंस उत्पन्न हो जायेगा ।"

अब फिर दूसरी अप्सरा बोली --"आकाशपुत्र, पृथ्वी पर जंहा-जंहा सिध्द पीठ हैं, मंदिर हैं, पवित्र स्थान और मनुष्य के पोषण के लिये खनिजों के भंडार हैं वंहा-वंहा इन्ही ग्रहों, नक्षत्रों और सितारों की उर्जा परोक्ष रुप से कार्य कर रही हैं । अगर आप इन स्थानों का दुरुपयोग करेगें तो भविष्य में होने वाले विध्वंस के लिये आप पर लांछन लगेगा । इससे मनुष्य मात्र के समाप्त हो जाने का भय उत्पन्न हो जायेगा ।"

सोहम सोचपुर्ण स्वर में बोला-- "फिर मेरे गुरु ने सिध्द पीठ पर ही साधना करने को क्यों कहा ?

पहली अप्सरा बोली-- "आपके गुरु ने आपको सिध्द पीठ की विशेषता समझाने का प्रयास किया हैं, आकाशपुत्र । ये समझाने का प्रयास किया हैं कि अंतरिक्ष से प्रवाहित होने वाली उर्जा ही साधना की मूल शक्ति हैं । एसे किसी स्थान पर --जंहा निरंतर उर्जा का प्रवाह बना रहता -- अगर आप साधना करते हैं तो आपको साधना का फल कई गुणा अधिक मिलेगा ।"

"तो क्या पृथ्वी पर एसे और भी स्थान हैं, जंहा पर इस उर्जा का निरंतर प्रवाह बना रहता हैं ? सोहम ने प्रश्न किया ।

"हाँ आकाशपुत्र" दूसरी अप्सरा बोली --"पृथ्वी सदा ही गतिमान रहती हैं और निरतंर विभिन्न ग्रहों, नक्षत्रों, तारों और सितारों के प्रभावक्षेत्र से गुजरती रहती हैं । जिससे कई बार वो कुछ समय के लिये एसे ग्रहों, नक्षत्रों, तारों और सितारों के प्रभावक्षेत्र से भी गुजरती हैं जो निरंतर तो नही परन्तु सिमित समय के लिये अपनी उर्जा पृथ्वी पर प्रवाहित कर देते हैं । एसे में पृथ्वी के जिस स्थान पर वो उर्जा प्रवाहित होती हैं वो स्थान कुछ समय के लिये सिध्दपीठ जैसा बन जाता हैं । एसे ही स्थानों पर मंदिर और पवित्र स्थानों का निर्माण कर दिया गया हैं और वंहा वार्षिक, त्रिवार्षिक, सप्तवार्षिक, नववार्षिक और बारहवार्षिक उत्सव मनाये जाते हैं । कुम्भ मेला उसी सिध्दांत को सिध्द करता हैं । पृथ्वी पर एसे और भी कई उत्सव मनाये जाते हैं जो मूल रुप से एसे ही सिध्दातों का प्रतिपादन करते हैं ।"

अब फिर पहली अप्सरा बोली -- "हे आकाशपुत्र, हम आपको एसे किसी स्थान के विषय बता सकती हैं जिससे आपका मनोरथ पुर्ण हो सके परन्तु हम सिध्दपीठों पर आपको साधना करने की सलाह नही दे सकती । ये आपके लिये हितकर नही होगा और मनुष्य मात्र के लिये भी हितकर नही होगा ।"

सोहम ने सोचा कि बात तो सही थी । सिध्द पीठ ना सही सिध्दपीठ जैसी अगर कोई जगह भी मिल जाये तो भी उसका मनोरथ तो पुर्ण हो ही जायेगा । फिर ये अप्सरायें झूठ नही बोल सकती थी । क्योंकि केवल उसका ध्यान भटकाने के लिये वे उसको बहलाने का प्रयास करें, एसा वो नही कर सकती थी । आखिर मनुष्य मात्र और देवताओं के बीच यही तो अंतर होता हैं ।

उसकी विचारधारा को दोनो अप्सरायें तुरन्त समझ गई और दूसरी अप्सरा ने तुरन्त ही कहा --"आकाशपुत्र, हम जानते हैं आप दक्षिण दिशा में जाने को लालायित हैं और वंहा किसी स्थान पर अपनी साधना पुर्ण करना चाहते हैं । हम आपको इसी दिशा में स्थापित 'किरीपैराई' के जंगल में बने एक मंदिर में ले चलते हैं । ये मंदिर बहुत पहले एक बहुत ही सिध्द ऋषि ने बनवाया था । उस ऋषि को अपने ज्ञान से ये पता चल गया था कि उस स्थान पर वर्ष के किसी विशेष समय में 'पितर लोक' के एक नक्षत्र से उर्जा प्रवाहित होती हैं । आप अपनी साधना पुर्ण करने के लिये इस मंदिर का उपयोग कर सकते हैं । इससे आपका मनोरथ पुर्ण होगा ।"

किरीपैराई का घना जंगल । इसके एक तरफ समुन्द्र की खाड़ी का पानी किसी जलधारा की तरह बह रहा था और जंगल के ठीक बीच में कंहि मीठे पानी का सोता भी बहता था । इसी समुन्द्र की खाड़ी और मीठे पानी के सोते के बीच के स्थान में वो मंदिर स्थापित था जिसका उल्लेख अप्सराओं ने सोहम से किया था । मंदिर ज्यादा भव्य नही था और अब देखरेख से अभावग्रस्त भी दिखता था । मंदिर का गुम्बद चौकोर आकार में उपर उठता हुआ दिखाई देता था और मंदिर की उँचाई से तिगुना उपर उठा हुआ दिखता था । अंदर किसी प्राचीन देवता की मुर्ति स्थापित थी और दीवारों पर भी एसे ही प्राचीन देवताओं की मुर्तियां जड़ी हुई अथवा दीवारों पर घड़ी हुई दिखाई देती थी । रात का समय था इसलिये सासरा इलाका सुनसान दिखाई देता था । जंगली जानवरों की आवाजें और समुन्द्री हवाओं का शोर सारे इलाके की शाँती भंग किये दे रहे थे । इससे किसी नये आदमी को वंहा भय भी मेहसूस हो सकता था ।

सोहम जब दोनो अप्सराओं के साथ वंहा प्रकट हुआ था तो रात्रि ही थी । दोनो अप्सराओं ने उसे आकाश्मार्ग से पलक झपकते ही वंहा पहुंचा दिया था । सामने ही मंदिर था और तीनों खड़े उसे देख रहे थे । उन अप्सराओं के अनुसार सोहम को उस मंदिर में अपनी साधना पुर्ण करनी चाहिये थी और सोहम को इसमें कुछ हानि नही दिखाई दे रही थी । फलस्वरुप सोहम वंहा था । हालाकि वंहा चाँदनी छायी हुई थी, जंगल की ताजी और ठंडी हवा शोर मचाती बह रही थी । वातावरण को आनंदित होना चाहिये था परन्तु सोहम मेहसूस कर रहा था कि वंहा कुछ बेचैनी छायी हुई थी । एक व्याकुल कर देने वाली शाँती का अहसास वंहा होता था । हालाकि रात्रि का समय था परन्तु अपने घोंसलों में छुपे पक्षी सहमें से जान पड़ते थे । कभी-कभी होने वाली उनकी चीखो चिल्लाहट डरी-डरी सी जान पड़ती थी । जंगल होने के कारण हालाकि सियार,

गीदड़ और लोमड़ियों को वंहा यदा-कदा दृष्टिगोचर होना चाहिये था परन्तु वे नजर नही आते थे । दूर कंहि से उनके रोने की आवाजें अवश्य ही सुनाई देती थी । एसा लगता था जैसे वे इस क्षेत्र से दूर रहना चाहते थे । जैसे इस क्षेत्र की व्याकुलता को वो अपने रोने से प्रकट कर रहे थे ।

सोहम ने वो सब मेहसूस किया और प्रश्नसूचक दृष्टि से दोनो अप्सराओं की ओर देखा ।

दोनो अप्सरायें उसका मतंव्य समझ गई और पहली बोली --"यंहा एक ब्रह्मपिशाच का आंतक हैं, आकाशपुत्र ।"

सोहम वैसी ही प्रश्नसूचक दृष्टि से दोनो अप्सराओं को देखता रहा । मानो इस विषय में और भी सुनना चाहता हो ।

तब दूसरी अप्सरा बोली --"इसको समझने के लिये मैं आपको एक कथा सुनाती हुं, आकाशपुत्र । बहुत पहले की बात हैं, आन्ध्रप्रदेश के एक गाँव में पदमापति नाम का एक ब्राह्मण रहता था । वो बहुत ज्ञानी और तन्त्र विद्या को समझने वाला परन्तु अपने स्वार्थ के लिये उसका उपयोग करने वाला स्वार्थी ब्राह्मण था । उसने अपनी तन्त्र विद्या से कई प्रेतात्माओं को अपने वश में कर रखा था और उनसे मनमाना कार्य करवाता था । गाँव के लोग उससे भय खाते थे और दक्षिणा स्वरुप भोलेभाले गाँव वालों से वो बहुत धन एंठता था । उसका एक भरापुरा परिवार था परन्तु धीरे-धीरे उसका सारा परिवार काल के गाल में समा गया था । जबसे उसने प्रेतात्माओं को अपने वश में किया था और उनसे मनमाना कार्य करवाता था । तबसे वो प्रेतात्मायें उससे पीछा छुड़ाने को बेचैने रहने लगी थी । लेकिन वो बहुत घाघ और सर्तक रहने वाला काइयां ब्राह्मण था जिससे प्रेतात्मायें उससे पीछा नही छुड़ा पा रही थी । एसे में उन प्रेतात्माओं ने उसके सारे परिवार को बीमारियों और परेशानियों में उलझाकर मार डाला था । अब वो प्रेतात्मायें उसके पीछे थी परन्तु अभी तक उन्हे मौका नही मिल पाया था और वो ब्राह्मण प्रेतात्माओं के मतंव्य से अनभिज्ञ खा पीकर आनंदित रहने का प्रयास करता रहता था । अपने पीड़ादायक अंत से आँखें मूँदे वो स्वार्थी ब्राह्मण गाँव वालों को ठगने की प्रतिदिन ही नयी-नयी युक्तियां घड़ लेता था ।

वो ब्राह्मण अपने एक भाग के रुप में गाँव वालों की फसल का ऐक हिस्सा लिया करता था । किसी का भी विवाह हो उस विवाह में दहेज के रुप में मिलने अथवा दिये जाने वाले कीमती गहने और सामान में से भी वो अपना एक भाग लिया करता था । किसी की मृत्यु के बाद मृतक की आत्मा की शाँती के नाम पर उसके वंशजों से सदा ही वो कुछ ना कुछ एंठता रहता था । किसी के घर किसी बच्चे के जन्म पर भी वो सदा के लिये उसपर अपनी दक्षिणा लाद दिया करता था । कभी उसके सुखमय जीवन के लिये और कभी उसके उज्जवल भविष्य के लिये वो धन एंठता ही रहता था । इस तरह उस गाँव के लोग अपने आपको उसका देनदार ही समझते रहते थे और उसके भय से उसे दक्षिणा स्वरुप निरंतर धन देते रहते थे । अन्यथा प्रेतात्माओं का उत्पात उन्हे चैन से जीवन जीने नही देता था ।

उसी गाँव में नारायण नाम का एक मध्यम वर्गिय आदमी रहता था जिसकी एक बेटी थी व्यंकटेश लक्ष्मी । व्यंकटेश लक्ष्मी को सब प्यार से लक्ष्मी ही बुलाते थे और वो बहुत सुन्दर थी । सुन्दर, सुशील और पुर्णयता यौवन से लदी लक्ष्मी विवाह के लिये प्रतिक्षित थी परन्तु उसके विवाह में अड़चने आ रही थी । कभी कुण्डली मिलान नही हो पाता तो कभी दहेज की बात पर बात बिगड़ जाती तो कभी छोटी सी बात पर मामला अटक जाता था । एसा करते करते जब बहुत समय बीत गया तो लक्ष्मी के पिता नारायण को चिंता होने लगी और एक दिन वो अपनी बेटी को लेकर पदमापति के पास जा पहुंचा ।

पदमापति, लक्ष्मी को देखते ही उसपर रींझ गया और उसे पाने के लिये बेचैन हो उठा । कई वर्षो से पदमापति की पत्नी का देहांत हो चुका था और तबसे उसने संभोग नही किया था । लक्ष्मी के रुप सौन्दर्य को देखते ही उसमें संभोग की ईच्छा जाग्रत हो उठी । नारायण ने जो अपनी बेटी की समस्या बतायी उसे सुनाअनसुना करके पदमापति ने उसे उल्टे सीधे उपाय बताकर उस दिन चलता कर दिया । उस अधम ने जरा भी प्रतिक्षा नही की और उसी रात्रि को ही उसने एक प्रेतात्मा का आवाहन किया और लक्ष्मी को भयभीत करने भेज दिया । अब नारायण के घर में प्रेतात्मा का उत्पात होने लगा । परन्तु इससे केवल लक्ष्मी ही प्रभावित होती थी । उसके कपड़े गुम हो जाते थे । वो बैठे बैठे काँपने लगती थी । अचानक अनाप-शनाप बकबक करने लगती थी । स्नान के बाद बिना कपड़ो के ही बाहर आ जाया करती थी । किसी से भी वाद विवाद करने लग जाती थी । ये देखकर घर के लोग और उसका पिता नारायण परेशान हो गये ।

वे लोग फिर पदमापति के पास आये और समस्या बतायी । घाघ पदमापति ने उन्हे लक्ष्मी को उसके पास छोड़ जाने को कहा और उसपर किसी प्रेतात्मा का साया हैं कहकर उन्हे भयभीत कर दिया । लक्ष्मी के पदमापति के पास रह जाने से प्रसन्न पदमापति ने उत्पाती प्रेतात्मा को उत्पात रोक देने को कहा । इससे लक्ष्मी में सुधार आ गया । उसके घर वाले और उसका पिता प्रसन्न हो गये तथा उन्हौने लक्ष्मी को घर ले जाने की बात कही । पदमापति इससे इन्कार नही कर सकता था परन्तु वो लक्ष्मी को घर भी जाने नही दे सकता था । पदमापति ने अभी तक अपनी यौनक्षुधा शाँत नही की थी । बहरहाल लक्ष्मी अपने घर चली गई और कामातुर पदमापति ने फिर प्रेतात्मा को उसे भयभीत करने भेज दिया । लक्ष्मी फिर उल्टी सीधी हरकते करने लगी । नारायण और उसके घर वाले फिर परेशान हो गये । अंतत फिर उसे पदमापति के पास छोड़ दिया गया । अब पदमापति ने उसे प्रेतात्मा के नाम पर और भयभीत करना आरंभ कर दिया । उसके उपाय के लिये वो उससे प्रतिदिन ही उल्टे सीधे उपाय करवाने लगा और अंत में उसने उसे नग्न होकर सामने बैठने को कहा । पहले तो लक्ष्मी इन्कार करती रही परन्तु प्रेतात्मा से छुटकारे के लिये उसने लजाते हुए स्वीकार कर लिया और नग्न होकर पदमापति के सामने बैठ गई । पदमापति ने उसे आँखें बंद करके कोई मन्त्र जाप करने को कहा और स्वयं काम लोलुपता से वशीभूत होकर उसके रुप सौन्दर्य को निहारने लगा ।

अब लक्ष्मी वंही रहने लगी थी । पदमापति प्रतिदिन ही प्रेतात्मा से छुटकारे के नाम उल्टे सीधे उपाय और मन्त्रजाप करवाता था । उसके सामने नग्न बैठना अब लक्ष्मी का प्रतिदिन का ही नियम हो गया था । इस तरह पदमापति की कामुकता अपने चरम पर पहुंची, उससे अब रहा नही जाता था वो संभोग करने को आतुर हो उठा और एक दिन उसने लक्ष्मी से बलात्कार कर डाला । लक्ष्मी बहुत छटपटायी और उसने विरोध भी किया परन्तु पदमापति ने अपनी मनमानी कर डाली । बाद में उसने लक्ष्मी को समझाया कि उसके अंदर की प्रेतात्मा संभोग ही चाहती थी अन्यथा वो उसका पीछा नही छोड़ने वाली थी । लक्ष्मी को विश्वास तो नही हुआ परन्तु जैसे तैसे उसने अपने आपको समझाया और स्वयं को ढाढस दिया कि चलो प्रेतात्मा से छुटकारा मिल जाने वाला था ।

लक्ष्मी जब भी घर जाने की बात करती थी तो पदमापति उसे फिर प्रेतात्मा के विषय से डराया करता था और उसे वंही रहने के लिये मना लिया करता था । हारकर लक्ष्मी ने घर की बात निकालना ही छोड़ दिया । अब पदमापति ने जी भरकर उसके साथ संभोग किया और ये कार्य आगे भी चलने लगा । लक्ष्मी भी अब पस्त हो चुकी थी और उसने विरोध करना छोड़ दिया था । उसने स्वयं को भाग्य के हवाले कर दिया था । अब वो पदमापति के लिये खाना बनाती थी उसके घर के काम-काज किया करती थी और पत्नी सुलभ रात्रि में उसके पाँव दबाती थी । पदमापति का जब भी दिल करता था उसके शरीर के साथ खिलवाड़ करता था ।

इस तरह चार वर्ष बीत गये । पदमापति अब लक्ष्मी पर निर्भर हो गया था । वो अब उसके बिगैर अपने आपको अधूरा पाता था । लक्ष्मी से उसका अब मोह का संबंध बन गया था । पचपन वर्ष से अधिक की उम्र का पदमापति अब उसे प्रेतात्माओं और अपने ज्ञान की बातें बताता था । इससे वो लक्ष्मी को प्रभावित करने का प्रयास करता था और चाहता था वो उसे ज्ञानी और चमत्कारी समझे । ये उसकी दुर्बलता की नीशानी थी । ये बात उसके दुर्बल होते शरीर से भी प्रकट होने लगी थी । वो अब बीमार रहने लगा था । खाँसी, दमा और बुखार उसे सदा घेरे रहते थे ।

एसे ही समय बीत रहा था कि एक दिन उसकी बातों से लक्ष्मी को समझ में आ गया कि केवल उससे शारिरिक संबंध बनाने के लिये पदमापति ने उसे फांसा था । कि केवल अपनी वासना की भूख मिटाने के लिये उसने उसके जीवन को तबाह कर दिया था । उसे अचानक अपना जीवन अंधकारमय लगने लगा । उसे अपने आप

से शर्म आने लगी, उसे पदमापति से घृणा होने लगी । वो अब चुप रहने लगी और अक्सर घृणित आँखों से पदमापति को देखने लगी थी । पदमापति इससे परेशान हो गया और उसे समझाने बुझाने का प्रयत्न करने लगा परन्तु अब खेल समाप्त हो गया था । अब वो किसी भी तरह से लक्ष्मी को समझा नही सकता था । अब घृणित जीवन का घृणित अंत होने वाला था ।

एक दिन लक्ष्मी ने गाँव के एक कुँए में छलांग लगाकर आत्म हत्या कर ली । पीछे पदमापति अकेला रह गया और लक्ष्मी के वियोग मे मोहजनित दुख से घिर गया ।

इधर लक्ष्मी के पिता नारायण को इस बात से बहुत दुख हुआ कि उसकी बेटी ने आत्म हत्या कर ली थी । हालाकि वो सच को कभी भी नही जान पाया था परन्तु उसे बेटी की आत्म हत्या ने पाप भाव से भर दिया । उसकी अंर्तात्मा उसे कचोटने लगी थी । वो ये समझता था कि उसके पालन पोषण में कमी रह गई थी और उसकी बेटी की आत्म हत्या के लिये वही दोषी था । अब वो बेटी की आत्मा की शाँती के लिये उसका श्राध्द करता था । उसके लिये पिण्ड दान करता था और नित्य प्रतिदिन ही उसकी पुजा-अर्चना करता था । परन्तु इससे उसका दुख कम नही हुआ । वो भले ही बेटी की आत्मा की शाँती के लिये दान-पुण्य के कार्य किया करता था परन्तु इससे उसकी आत्मा शाँत नही होती थी । उसे लगता था कि उसने अगर बेटी का कन्यादान किया होता तो वो बेटी के ऋण से मुक्त हो सकता था । कन्यादान किये बिगैर ही मृत्यु को प्राप्त उसकी बेटी की आत्मा उसे कभी क्षमा नही करने वाली थी । इस दुख ने उसे भी दुर्बल बना दिया और वो घोर संताप से घिर गया और एसे ही संतापयुक्त जीवन को उसने एक दिन देहत्याग से त्याग दिया ।"

"हे आकाशपुत्र ।" अब पहली अप्सरा बोली -- "पितरलोक में दो तरह की आत्मायें होती हैं । पहली नैमितिक आत्मायें और दूसरी अनैमितिक आत्मायें । नैमितिक आत्मायें पितरलोक की व्यवस्था को चलाती हैं और अनैमितिक आत्मायें पितरलोक की व्यवस्था से व्यवस्थित होकर चलती हैं । नैमितिक आत्मायें पितरलोक में आने वाली आत्माओं के लिये फिर से जन्म लेने के लिये पृथ्वी पर गर्भ की व्यवस्था करती हैं । अधिक ज्ञानी और जाग्रत आत्मायें वंही पितरलोक में रहकर अपने लिये जन्म के समय की प्रतिक्षा करती हैं । क्योंकि एसी जाग्रत आत्मायें किसी उद्देश्य से ही पृथ्वी पर जन्म लेती हैं । एसे में नैमितिक आत्मायें उनके लिये भी व्यवस्था करती हैं । इसके अलावा पृथ्वी लोक से पितरलोक की आत्माओं के लिये किया गया दान-पुण्य और श्राध्द आदि कार्य से मिला पुण्य भी उनसे संबंधित आत्माओं तक पहुचाने कार्य करती हैं । इससे उन आत्माओं के लिये पुनः पृथ्वी पर जन्म लेने का मार्ग प्रशस्त हो जाता हैं ।

जब लक्ष्मी ने आत्म हत्या की तो उसे दण्ड स्वरुप प्रेतयोनि में चला जाना पड़ा । आत्म हत्या घोर पाप माना जाता हैं । इससे प्रकृति का बनाया कर्म का लेखाजोखा बाधित होता हैं । इसलिये आत्म हत्या करने वाले बिगैर किसी विवाद के प्रेतयोनि में चले जाते हैं । प्रेतयोनि में प्रेतात्मा बनकर लक्ष्मी ने पदमापति को बहुत सताया और उसे दारुण दुख दिया । इससे पदमापति को आत्मिक दुख हुआ और वो देह त्याग करने को छटपटाने लगा ।

नारायण अपने अंतिम समय में अपनी बेटी के वियोग से तड़पकर मृत्यु को प्राप्त हुआ था इसलिये जब उसकी आत्मा पितरलोक पहुंची तो उसे इस दुख से छुटकारा दिलाने के लिये नैमितिक आत्माओं ने फिर से पृथ्वी पर जन्म लेने की उसकी व्यवस्था कर दी और वो दक्षिण दिशा में एक मंदिर के पुजारी के रुप में जन्म पा गया । अपने जीवन में नारायण का अपनी बेटी के लिये किया गया दान-पुण्य और श्राध्द पितरलोक की व्यवस्था से प्रेतयोनि में भटक रही लक्ष्मी को मिला और उसका प्रेतयोनि से छुटकारा हो गया तथा उसकी आत्मा सीधे पितरलोक पहुंची । उसे भी अपने पिता से अत्याधिक लगाव था और अपने जीवन काल में वो अपने पिता को अपना कन्यादान करते देखना चाहती थी जोकि पदमापति के कारण न हो सका । इससे उसकी भी ईच्छा अधूरी थी । दूसरे अपनी मृत्यु के पश्चात प्रेतयोनि में भटकते हुए उसने अपने पिता को उसके वियोग में तड़पती हुई हालत देखी थी जिससे उसकी भी ये ईच्छा थी कि वो अपने पिता को इस दुख से छुटकारा दिलाये । फलस्वरुप नैमितिक आत्माओं ने उसके लिये भी फिर जन्म की व्यवस्था कर दी और उसी मंदिर के पुजारी की बेटी के रुप में उसे जन्म दिलवाया जिसके पुजारी के रुप में वे नारायण को जन्म दिला चुकी थी । अब दोनो ही अपनी ईच्छा पुर्ण होते देख सकते थे । भले ही इस नये जन्म में उन्हे इसका पता नही चलेगा क्योंकि आत्मिक जगत के कार्य आत्मिक रुप से ही होते हैं । भौतिक जगत के नये जन्म में और नये वातावरण के कारण इसका पता नही चलता हैं ।"

"उस पदमापति का क्या हुआ ? सोहम ने जिज्ञासावश पुछा ।

अब दूसरी अप्सरा बोली --"आकाशपुत्र, आपको ज्ञात होना चाहिये कि तन्त्र और तन्त्र से संबंधित ज्ञान के निर्माता यक्षलोक के यक्ष हैं । इसलिये जब कोई तन्त्र का ज्ञाता तन्त्र का दुरुपयोग करता हैं तो अंतिम समय में उसकी आत्मा को लेने यक्षलोक के दूत आते हैं । पदमापति ने तन्त्र का दुरुपयोग किया था इसलिये जब वो देहत्याग को छटपटा रहा था तो वंहा यक्षलोक के दूत उपस्थित थे और उसके शरीर से आत्मा को निकलने नही दे रहे थे । ये भी यक्षदूतों का एक तरिका होता हैं स्वार्थी तान्त्रिकों को पीड़ीत करने का । अपने अंतिम समय में पदमापति उन यक्षदूतों को देख रहा था । वो विभिन्न और भयानक मुखों वाले यक्षदूत पदमापति को बहुत भय प्रदान कर रहे थे । उन्हे देखदेखकर अपने अंतिम समय में पदमापति बहुत भयभीत हुआ था ।

अंतत उसकी आत्मा को किसी पशु की तरह पकड़कर उसे यक्षलोक ले जाया गया । यक्षलोक में उसे बहुत पीड़ा दी गई और उसका फिर से जन्म लेने का अधिकार समाप्त कर दिया गया । एसे भी अब पृथ्वी पर उसके लिये दान पुण्य करने वाला अथवा उसके लिये श्राध्द करने वाला कोई नही था । इसलिये उसे किसी प्रकार से पुण्य की प्राप्ती नही होनी थी, मनुष्य योनि में उसने स्वयं भी कोई पुण्य योग्य कर्म नही किया था । इस वजह से अब फिर मनुष्य योनि में उसका जन्म लेना वर्जित हो गया था । यक्षलोक की व्यवस्था के अनुसार उसे मुर्गा, बकरा और उँट की योनियों में जन्म मिला । जंहा उसे बार बार छुरे और गंडासों से काटा गया और उसकी बलियां चढ़ाई गई । एसे कितने ही जन्मों के दौरान उसकी आत्मा तड़पती रही थी और दारुण दुख पाती रही थी । फिर जब यक्षलोक के नियमानुसार उसकी सजा का प्रवाधान पुर्ण हो गया तो उसे यक्षलोक से बाहर अंतरिक्ष में फेंक दिया गया । अब उसे याँ तो किसी जाग्रत अथवा देव स्वरुप आत्मा से ज्ञान प्राप्त करके फिरसे मनुष्य योनि में जन्म लेने का अधिकार प्राप्त करना था अथवा किसी दूसरे के द्वारा उसके लिये किये गये पुण्य की प्रतिक्षा करनी थी ताकि उसके प्रभाव से उसके लिये जन्म लेने का प्रवाधान हो सके । इस तरह वो अंतरिक्ष में ब्रह्मपिशाच बनकर भटकने लगा ।

दरअसल जब उसकी आत्मा को अंतरिक्ष में फेंक दिया गया तो वो एक ब्राह्मण की आत्मा थी जिसके लिये कोई पुण्य अथवा दान इत्यादि नही किया गया था । इससे उसके सामने अंतरिक्ष में भटकते रहने के अलावा कोई मार्ग नही था । एसी ही भटकन के दौरान उसने अंतरिक्ष के तामसिक अणुओं में अपना लक्ष्य तलाश लिया । इन तामसिक अणुओं से उसने स्वयं को निर्मित करने का प्रयास किया । वो एक स्वार्थी ब्राह्मण था और स्वार्थ संबंधी ज्ञान उसे बहुत था । उसने जो अध्यात्म का ज्ञान प्राप्त किया था उससे भी उसने स्वार्थ सिध्द करना ही सीखा था । इस तरह जब वो 'आत्मा' स्वरुप था तब भी उसकी ये वृति नही गई थी और उसने अपने ज्ञान का यंहा भी दुरुपयोग किया और अंतरिक्ष के तामसिक अणुओं से अपने लिये शरीर का निर्माण करने में लग गया । अंतरिक्ष के तामसिक अणु उसे सम्पुर्ण शरीर नही दे सकते थे । इसलिये उन अणुओं से जो कुछ प्राप्त हुआ उसी से उसने स्वयं को निर्मित कर डाला । फलस्वरुप उसे पिशाच का मटमैला सफेद, पारदर्शी और धूमकेतु जैसी लंबी पुंछ जैसा शरीर प्राप्त हो गया । इस तरह धीरे-धीरे वो ब्रह्म पिशाच का रुप धारण करने लग गया और पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण को भेदने की कला जान गया ।

अब वो पृथ्वी पर आने जाने लगा और अक्सर उन स्थानों पर जाता रहता था । जंहा उसकी मृत्यु हुई थी और जंहा उसने अपना अंतिम समय गुजारा था । उस गाँव से उसे विशेष घृणा थी जिस गाँव में उसने अपना अंतिम समय गुजारा था । वो इस बात से बहुत क्रोधित था कि उस गाँव ने उसके लिये कोई दान-पुण्य अथवा

श्राध्द आदि नही किया था । अन्यथा उसकी एसी गति नही होनी थी । इसका बदला उसने इस तरह लिया कि वो अक्सर उस गाँव में अकाल, बाढ़ और महामारियां फैलाने लगा । वो अंतरिक्ष से जीवाणु लाकर उस गाँव में फैला देता था जिससे महामारी फैल जाती थी । वर्षा के बादलों को उस गाँव से आगे धकेल देता था जिससे वंहा वर्षा नही होती थी । उस गाँव में बहने वाली नदी में पानी का बहाव बढ़ा देता था जिससे बाढ़ आ जाती थी ।

गाँव वालों ने इसे प्राकृतिक आपदा जानकर पुजा-अर्चना आरंभ कर दी और विभिन्न प्रकार के मन्त्रोंचारण से गाँव का वातावरण गुँजनें लगा । इससे गाँव के आकाश पर एक ध्वनीचक्र बनने लगा जिसकी सात्विक किरणें आसपास फैलने लगी । इससे पदमापति नामक उस ब्रह्मपिशाच को परेशानी होने लगी । सात्विक मन्त्रों की गुँज पिशाच के तामसिक अणुओं के शरीर का भेदन करने लगी । इससे उसके शरीर में छेद होने लगे और वो घबराकर फिर अंतरिक्ष में चला गया ।

इसके बाद वो पिशाच अंतरिक्ष में इधर-उधर भटकने लगा । वो विभिन्न लोकों के आसपास भटकता रहता था और विभिन्न आत्माओं को परेशान करता रहता था । एसे ही एक समय में वो पितरलोक के आसपास भटक रहा था जब उसने लक्ष्मी की आत्मा को फिर गर्भ धारण करने के लिये पृथ्वी लोक की ओर जाते देखा और वो उसके पीछे लग गया । लक्ष्मी से उसका पूर्व जन्म का संबंध रहा था और वो संबंध किसी समय मोह का संबंध बन गया था । उस मोह को पिशाच बनकर भी वो मेहसूस कर रहा था इसलिये जब लक्ष्मी ने फिरसे जन्म लिया तो वो उसके करीब ही था ।"

उस मंदिर के पुजारी का नाम बालगोविंद था और उसकी पत्नी का नाम भानुप्रिया था । उसकी एक बेटी थी जिसका नाम उन्हौने काहिनी रखा था । बहुत समय के बाद हुई उनकी बेटी उनके जीने का सहारा थी । वे लोग बहुत समय तक संतान के लिये तरसते रहे थे । जब उनके यंहा बेटी हुई तो उनकी प्रसन्नता का ठिकाना नही था । बहुत प्यार से उन्हौने उसका नाम काहिनी रखा था ।

बालगोविंद एक गरीब आदमी था और कन्याकुमारी से कुछ दूरी पर स्थित एक गाँव में रहता था । रोजी-रोटी की तलाश उसकी समस्या थी । जब उसे किरीपैराई के जंगल में स्थित मंदिर को संभालने के लिये कहा गया तो वो सहर्ष तैयार हो गया था और पत्नी को लेकर उस जंगल में दिन गुजारने लगा था । उस मंदिर में वर्ष में एक बार मेला लगता था । जब श्रध्दालु वंहा आते थे और मंदिर में चहल-पहल होती थी । अन्यथा सारे वर्ष कोई इक्का-दुक्का लोग ही वंहा आते थे और बालगोविंद का खाना-पीना चलता था । वैसे तो मेले के दौरान हुई आमदनी से ही उसके सारे वर्ष का खर्चा पानी निकल जाता था परन्तु मंदिर की चहल-पहल से उसका समय व्यतित होता था । इसलिये वो सदा से चाहता था कि मंदिर में चहल पहल बनी रहे । मंदिर के आहते से कुछ दूरी पर उसने अपने लिये छोटा सा घर बना रखा था जंहा वो अपने छोटे से परिवार के साथ रहता था । सुबह सवेरे जल्दी उठकर मंदिर की साफ-सफाई करना और मंदिर में बैठे रहना ही उसकी दिनचर्या थी ।

वो मंदिर बीमारियों को दूर करने के लिये मशहूर था और कहा जाता था कि कैसा भी बीमार आदमी अगर वंहा आकर उस मंदिर के देवता के दर्शन कर ले तो उसकी बीमारी दूर हो जाती थी । इस तरह जब वर्ष में एक बार वंहा मेला लगता था तो सारी दुनियां जंहा के बीमार वंहा प्रकट होने लगते थे और स्वास्थ लाभ की कामना करते थे ।

वैसे तो सबकुछ ठीकठाक था और बालगोविंद अपने जीवन से खुश था । उसे अपने जीवन से कोई आपति नही थी, वो अपनी आमदनी और दिनचर्या से प्रसन्न था । उसकी कोई ईच्छा अथवा महात्वाकाँक्षा नही थी । वो बस अपनी बेटी के विवाह के लिये सपनें संजोये हुए था । उसका जो भी था वो अपनी बेटी को विवाह में दे देने वाला था । परन्तु अपनी बेटी के दुख से वो बहुत परेशान था । जबसे वो पैदा हुई थी तबसे असाधारण घटनायें घट रही थी । जिस दिन वो पैदा हुई उसी दिन उसकी प्यारी और बरसों से पाली हुई 'कपिला' गाय मर गई थी । कुछ ही दिनों में उसके घर में आग लग गई थी और उसका बहुत सा सामान उस आग में जलकर राख हो गया था । उसकी पत्नी तबसे आजतक बीमार रहने लगी थी । वैसे तो दोनो पती-पत्नी बेटी के पैदा होने से प्रसन्न थे । परन्तु उसके पैदा होने के बाद से होने वाली असाधारण घटनायें उन्हे बहुत परेशान किये हुए थी ।

पैदा होने के बाद कई बार उनकी बेटी अपने बिस्तर पर नही होती थी । बाद में बहुत ढूंढने पर वो जंगल में पड़ी मिलती थी । कोई नवजात बच्चा कैसे अपने आप इतनी दूर तक बिना किसी सहारे के पहुंच सकता था । ये विचार उन्हे हैरान और परेशान कर देता था । उसके घर में होने के दौरान कई बार घर में बर्तन अपने आप उछल उछल कर इधर उधर गिरने लगते थे । कभी-कभी उनकी वो अबोध बच्ची मुँह से बड़ी ही डरावनी आवाजें निकालती थी जिसे सुनकर वो दहल जाते थे । जैसे जैसे वो बड़ी होती गई उसके रंगढंग निराले होते चले गये । वो अन्य बच्चों की खेलती कूदती नही थी । बस, शाँत और चुप रहकर टुकुर टुकुर किसी कोने को और कभी कभी शून्य को निहारती रहती थी । वो सदा ही नग्न रहना पसंद करती थी और शरीर पर कोई भी कपड़ा डालना नही चाहती थी । जब तक वो बच्ची थी तब तक तो इस बात से उसके माँ-बाप को आपति नही थी परन्तु अब वो सोलह वर्ष की नवयौवना हो गई थी और उसके रंगढंग में कोई परिवर्तन नही आया था । वो वैसे ही नग्न रहती थी और मुँह से डरावनी आवाजें निकाला करती थी । जब कभी वो एसा नही करती थी तो शाँत बैठी शून्य में निहारा करती थी । एक बार एसे ही शाँत बैठे बैठे वो अचानक उठी और अपने पिता के सामने खड़ी हो गई और उसे संभोग के लिये भद्दे इशारे करने लगी । बालगोविंद उस दिन रोने लगा और बेबस सा अपनी बेटी को देखने लगा ।

"आकाशपुत्र ।" पहली अप्सरा बोली --"वो बालगोविंद अपने पूर्व जन्म का नारायण हैं और उसकी वो बेटी अपने पूर्व जन्म की लक्ष्मी ही हैं । दोनो ही पूर्व जन्म में बाप-बेटी थे और इस जन्म में भी बाप-बेटी ही बने हैं । दोनो की पूर्व जन्म की अधूरी ईच्छा इस जन्म में पुर्ण होगी । उसकी बेटी उस ब्रह्मपिशाच के नियंत्रण में हैं जोकि अपने पूर्व जन्म में पदमापति नामक ब्राह्मण था । उसकी बेटी को नियंत्रण में रखकर उस ब्रह्मपिशाच ने इस क्षेत्र को आंतकित कर रखा हैं ।

"इससे मेरा क्या संबंध ? सोहम ने जब पहली अप्सरा से पुछा तो उत्तर दूसरी अप्सरा ने दिया । वो बोली --"आपका इससे कोई संबंध नही हैं, आकाशपुत्र । आपके कर्मयोग के मार्ग में ये परिवार खड़ा हैं । अपने कर्म के मार्ग पर बढ़ने से पहले आपको इनके पास से गुजरना होगा और तब उनसे आपका संबंध बन जायेगा । कई संबंध जन्म से नही परिस्थितियों से बनते हैं ।"

फिर दूसरी अप्सरा बोली --"हे आकाशपुत्र, हम आपको आपकी सिध्दी की बात बताती हैं । ये स्थान पृथ्वी की दक्षिण दिशा में पड़ता हैं और जब संचार करती हुई पृथ्वी का ये भाग खगोल के दक्षिण दिशा की सीध में आता हैं तो खगोल की 'वृश्चिकराशि' और मंदिर दोनो एक सीध में आ जाते हैं । एसे में जब सूर्य संचार करते हुए वृश्चिक राशि से गुजरता हैं तो वृश्चिक राशि में स्थित अनुराधा नक्षत्र सक्रिय हो उठता हैं और अपनी किरणें इस मंदिर पर बरसाने लगता हैं । इसी समय के दौरान मंदिर किसी सिध्द पीठ की तरह सिध्दीदायक हो जाता हैं । ये समय तीन मास तक चलता रहता हैं । जब सूर्य फिर वृश्चिक राशि से त्रिकोण में आ जाता हैं तो अनुराधा नक्षत्र से किरणें बरसना बंद हो जाती हैं । एसे ही समय में आप अपना मनोरथ पुर्ण कर सकते हैं ।"

फिर पहली अप्सरा गोली -- "इस समय सूर्य वृश्चिक राशि में हैं, आकाशपुत्र । अगले बीस दिन के बाद सूर्य वृश्चिक राशि से आगे बढ़ जायेगा और अनुराधा नक्षत्र सक्रिय हो उठेगा । आपका साधना करने का समय आने वाले बीस दिनो के बाद आरंभ हो जायेगा ।"

फिर दूसरी अप्सरा बोली -- "अब हमें प्रस्थान की आज्ञा प्रदान करें, आकाशपुत्र ।"

सोहम के उत्तर की प्रतिक्षा किये बिगैर ही दोनो अप्सरायें अदृश्य हो गई । सोहम वंहा अकेला खड़ा रह गया ।

बहरहाल उस रात सोहम ने उस क्षेत्र का अवलोकन कर लेना उचित समझा । क्योंकि सुबह होने तक उसके पास कोई काम नही था और रात्रि में आराम

करना उसके भाग्य में नही था । इसलिये कि रात्रि के समय उसकी सिध्द की हुई तामसिक शक्तियां जाग्रत हो जाती थी और उसका ध्यानाकार्षण करती रहती थी । जिससे वो आराम और नींद नही ले सकता था । इसलिये उसने उस क्षेत्र का अवलोकन कर लेना उचित समझा और युँ ही इधर-उधर धूमने लगा । घूमते-घूमते उसकी तामसिक शक्तियां और उसके साथ-साथ चलने वाले उसके भूत-प्रेत उसे बार-बार किन्ही हिंसक आत्माओं के वंहा होने के संकेत देने लगे थे । हालाकि उनसे उसे कोई डर नही था, क्योंकि वो किन्ही हिंसक पशु, पक्षियों की आत्मायें थी । जो फिर जन्म, ना लेने के कारण वंहा आत्मायें बनकर घूम रही थी । दरअसल वो ब्रह्मपिशाच के आसपास रहने वाली आत्मायें थी जो हिंसा से प्रसन्न होती थी और रक्तपात देखकर सन्तुष्ट होती थी । ब्रह्मपिशाच एसी घटनायें घटाने में सक्षम होते हैं और ये आत्मायें अपनी भौतिक शरीरी वृति के कारण आत्मायें बनकर भी उसी वृति से बंधी थी तथा ब्रह्मपिशाच के साथ रहती थी । ब्रह्मपिशाच का उनसे कोई संबंध नही होता था और नाही ब्रह्मपिशाच को उनकी कोई जानकारी होती थी । परन्तु उसके द्वारा घटायी घटनाओं से जो रक्तपात और हिंसा प्रकट होती थी उससे वो आत्मायें सन्तुष्ट होती थी । एसी ही आत्मायें वंहा भी होती है। जंहा मांस-मच्छी की बिक्री होती हैं । अपने जीवनकाल में जो पशु-पक्षी मांस और रक्त से अपनी क्षुधा शाँत करते थे वो मर जाने के बाद आत्मा बनकर एसे ही स्थानों पर भटकते हैं और रक्तपात तथा मांस को देखकर सन्तुष्ट होने का प्रयास करते हैं । कभी-कभी कोई मनुष्य अगर निरंतर मांसाहारी बना रहता हैं और निरंतर किसी दुकान अथवा एसे स्थान से मांस खरीदता रहता हैं तथा उसका भोग करता हैं तो एसी आत्मायें सदा ही उसके संग रहने लगती हैं । जिससे उसका स्वभाव भी धीरे-धीरे हिंसक होने लगता हैं और उसके अंतर्मन से दया-भाव निकल जाता हैं ।

बहरहाल सोहम समझ गया कि इन आत्माओं की वंहा उपस्थिति से ही वंहा का वातावरण भयग्रस्त बना हुआ था । वंहा के पशु-पक्षी इन आत्माओं की वंहा उपस्थिति से अवगत थे और भयभीत थे । सोहम ने कई बार उनको देखा भी था । वो लाल रंग के चमकिले बिन्दुओं की तरह यंहा-वंहा विचरण करती दिख रही थी । हालाकि वो सोहम से एक अंतर बनाकर ही इधर-उधर घूम रही थी । क्योंकि सोहम के साथ शक्तिशाली आत्मायें अथवा भूतप्रेत चल रहे थे जो इन आत्माओं को तुरन्त ही दूर खदेड़ सकते थे अथवा उन्हे हानि पहुंचा सकते थे । एसे ही भय के कारण वे आत्मायें सोहम से दूर रह रही थी । सोहम को इनसे कुछ लेनादेना भी नही था इसलिये सोहम ने उन्हे देखा-अनदेखा कर दिया और अपने अवलोकन में व्यस्त रहा ।

सुबह सूर्योदय अपने समय पर हुआ परन्तु सर्दी के आंरभ का समय था । इसलिये एसा जान पड़ता था मानो सूर्योदय देर से हुआ था । बालगोविंद अब सूर्योदय होता हुआ देखकर ही अपनी दिनचर्या का आरंभ करता था । अर्थात वो मंदिर की साफ-सफाई और पुजा-अर्चना के लिये अब तभी उठता था जब सूर्योदय होने को होता था । हालाकि पहले एसा नही था । पहले, सूर्यादय बाद में होता था और बालगोविंद मंदिर पहले पहुंच जाता था । परन्तु जैसे जैसे समय गुजरा था और उसकी बेटी काहिनी बड़ी होती गई थी तथा उसकी समस्या गंभीर होती चली गई थी । बालगाविंद अपनी दिनचर्या से विमुख होता चला गया था । वो अपनी बेटी के दुख से टूटता चला गया था । उसके लिये दुनियां में अब कुछ भी एसा नही था जिसके लिये उसे खुशी हो सके । अथवा जिसके लिये उसके मन में उत्साह प्रकट हो सके । वो उत्साहहीन, अप्रसन्न, दुखी और हताश सा प्रतिदिन सूर्योदय के समय उठता था और अनचाहे मन से अपनी दिनचर्या आरंभ करता था ।

आज भी बालगोविंद अनमना सा मंदिर पहुंचा और मुख्य द्वार खोलकर अंदर मंदिर के आहते में पहुंचा । मंदिर का सारा क्षेत्र एक परकोटे जैसी दीवार से घिरा हुआ था । जिसके एक तिहाई हिस्से में मंदिर बना हुआ था और दो तिहाई हिस्सा उसके खुले बड़े बरामदे जैसा दिखता था । इसी खुले बरामदे जैसे हिस्से में विभिन्न पेड़-पौधे उगें हुए दिखाई देते थे । जिस हिस्से में मंदिर बना हुआ था वंहा तक जाने के लिये इसी बरामदे जैसे खुले हिस्से से होकर गुजरना पड़ता था । मंदिर की परकोटे जैसी दीवार मंदिर के क्षेत्र का भी आवाहन करती थी और उसकी सुरक्षा का भी आवाहन करती थी । बहरहाल मंदिर का वो सारा क्षेत्र आधे फुटबाल के मैदान जितना बड़ा दिखता था । बालगोविंद खुले हिस्से से मंदिर के अंदर प्रवेश कर गया । अपनी हताशा और दुख के चलते, विचारों में खोया बालगोविंद नही देख सका कि मंदिर के बरामदे जैसे हिस्से में एक पेड़ के नीचे सोहम सोया हुआ था । वो चिंता में खोया मंदिर में प्रवेश कर अपनी दिनचर्या में व्यस्त हो गया था ।

उसने मंदिर की साफ-सफाई की फिर देवताओं की मुर्तियों को भी साफ किया और आवश्यक झाड़फूंक करने के बाद उसने अगरबतियां जलायी और दिये जलायें । फिर वो मंदिर के मुख्य देवता की मुर्ति के आगे बैठकर नित्यप्रतिदिन का मन्त्रोंचारण करने लगा । इसमें उसे करीब एक घन्टे का समय लग गया । जब उसकी प्रतिदिन की दिनचर्या पुर्ण हुई तो, वो मुर्ति के पास पुजारी के लिये बनाये गये आसन पर विराजमान हो गया । यंहा बैठकर वो श्रध्दालुओं को प्रसाद और देवता का आशिर्वाद दिया करता था । आज तो खैर, कोई श्रध्दालु नही था परन्तु वो वंही बैठकर अपनी दिनचर्या पुर्ण करता था ।

वो बहुत देर तक वंही बैठा रहा और अपनी बेटी की चिंता में डुबा रहा । उसे समय का कोई ध्यान ही नही रहा परन्तु एसे ही समय में उसे मंदिर के बरामदे वाले हिस्से में कुछ हलचल सी सुनाई दी । वो तुरन्त उठ खड़ा हुआ और बरामदे की ओर लपका । उसे लगा कि शायद उसकी पत्नी भानुप्रिया उसे बुलाने आयी थी और शायद उसकी बेटी को फिर कोई दौरा वगैरह पड़ा होगा ।

अभी वो बरामदें में इधर-उधर देखकर किसी को देखने का प्रयास ही कर रहा था कि तभी अचानक सोहम उसके सामने आ खड़ा हुआ । वो चिहुंक कर पीछे हटा--एसा आदमी तो उसने कभी देखा ही नही था । छह फुट लंबा मैला-कुचैला परन्तु हट्टा-कट्टा आदमी । पता नही कबसे नहाया नही होगा । उसके शरीर पर एसा मैल जमा हुआ था कि अदांजा लगाना मुश्किल होता था कि वो आदमी गोरा हैं याँ काला हैं । सिर पर जट्टाओं जैसे काले से भूरे पड़ते बाल । पेट तक बढ़ी हुई काली दाढ़ी । गुल्लर के फलों जैसी लाल-लाल आँखें । चेहरे पर क्रूरता के भाव । काले पड़ गये दाँत । गले में रुद्राक्ष मालायें और भी जाने कौन-कौन सी मालायें उसने गले में धारण कर रखी थी । उसके दोनो भुजदण्डों पर कोई ताविज जैसी चीजें बंधी हुई थी । उसकी कलाईयों में ना जाने किस धातु के कड़े पड़े हुए थे । उसने बाँये हाथ में इंसानी खोपड़ी पकड़ रखी थी और दाँयें हाथ में एक काला जहरीला नाग पकड़ रखा था, जोकि उसके हाथ से छूटने के लिये मचल रहा था । उसने कमर में कोई मैला सा कपड़ा बाँध रखा था जिसका एक भाग उसके बाँयें कन्धें से होता हुआ पीछे कंहि बँधा हुआ था । वो कपड़ा उसको घुटनो के उपर तक ढाक रहा था जिससे उसके गुप्त अंग छिप जाते थे अन्यथा वो नग्न ही लग रहा था । उसने पैरों में भी किसी धातु के मोटे-मोटे कड़े पहने हुए थे । उसके कन्धे से कोई झोले जैसी चीज लटक रही थी । वो सहज और सामाजिक आदमी बिल्कुल भी नही लग रहा था ।

उसने हैरानी और भय मिश्रित आँखों से उसे देखा और सोचने लगा कि -- वो कौन होगा ? वंहा, वो कंहा से आ गया था ? उसका भला उससे क्या काम हो सकता था ? अब वो क्या करेगा ? इतना सबुकछ सोच लेने के बाद भी बालगोविंद को कुछ बोलना नही सूझा । वो बस आश्चर्य से उसे देखे जा रहा था ।

“नारायण ।” जब बालगोविंद से कुछ ना बोला गया तो सोहम अपनी खरखराती आवाज में बोला --“कैसे हो ?

सोहम की आवाज सुनकर ही बालगोविंद की सिट्टीपिट्टी गुम हो गई । लोहे को काटती आरी की तरह सोहम की खरखराती आवाज ने उसके शरीर में सिरहन पैदा कर दी थी । सोहम को देखकर बालगोविंद इस कदर भयभीत और आश्चर्यचकित था कि उसे ये भी ध्यान नही आया कि सोहम ने उसे ‘नारायण’ कहकर बुलाया था ।

सोहम ने फिर उससे पुछा --“कैसे हो, नारायण ? सोहम को उसका इस जन्म का नाम पता ही नही था । उसे अप्सराओं ने जो उसके पिछले जन्म का नाम बताया था वो तो ‘नारायण’ ही था और वो उसी नाम से उसे पुकार रहा था ।

अब बालगोविंद थोड़ा सजग हुआ और तुरन्त हाथ जोड़कर विनम्र स्वर में बोला -- “आप कौन हैं ? महात्मा ।”

बालगोविंद का प्रश्न सुनकर सोहम थोड़ा सा हँसा और बोला --"तू मुझे नही जानता, लेकिन मैं तुझे जानता हु । तेरा नाम नारायण हैं ।"
"लेकिन ।" बालगोविंद थोड़ा उलझन में पड़ गया और बोला--"मेरा नाम तो बालगोविंद हैं, महात्मा ।"
अब सोहम ने जोरदार अट्टहास किया । उसके अट्टहास से एसी स्वर लहरियां उठी कि आसपास के पेड़ों पर बैठे पक्षी तुरन्त ही उड़ने लगे । बालगोविंद को अपने कानों में चीत्कार सा सुनाई देने लगा । उसने घबराकर अपने कान बंद कर लिये । वो भयभीत नजर आने लगा ।
जब सोहम अपना अट्टहास पुर्ण कर चुका और बालगोविंद अपने कानों से हाथ हटा चुका तो सोहम बोला -- "मुझे तेरे पिछले जन्म का नाम याद था । पिछले जन्म में तू नारायाण था ।" फिर उसे जैसे अपनी भूल का अहसास हुआ हो इस तरह वो याद करता हुआ बोला --"लेकिन इस जन्म में तो तू बालगोविंद हैं ।" उसने बालगोविंद के आश्चर्यपुर्ण मुख की ओर देखा और फिर जोरदार अट्टहास किया । अबकि बार बालगोविंद ने कानों पर हाथ नही रखें परन्तु उसने मेहसूस किया कि आसपास का वातावरण एक चुभने वाली शाँती में बदल गया था । उसने तुरन्त ही हाथ जोड़ दिये और सम्मानित दृष्टि से सोहम को देखने लगा । उसने सोचा जो व्यक्ति उसके पिछले जन्म की बात कर रहा था, वो अवश्य ही कोई महान आत्मा होगा ।
उधर सोहम बोला --"फिर भी, मैं तुझे नारायण ही कहुंगा ।"
बालगोविंद कुछ ना बोला परन्तु सोहम फिर बोला --"तु तो अपने पिछले जन्म में भी वो नही कर सका था, जो तू इस जन्म में नही कर पा रहा हैं । पिछले जन्म के नारायण की वो कथा अधूरी हैं । जब तू पिछले जन्म का वो कर्म पुर्ण कर लेगा तभी तू मेरे लिये बालगोविंद बन पायेगा । तब तक तू नारायण ही हैं ।"
अब बालगोविंद में थोड़े साहस का संचार हुआ और वो हाथ जोड़े-जोड़े ही बोला -- "आप किस कर्म की बात कर रहे हैं ? महात्मा ।"
सोहम ने उससे चेताने वाले स्वर में कहा --"तेरी बेटी का 'कन्यादान' तेरा अधूरा कर्म हैं, नारायण । जब तक तू अपनी बेटी का कन्यादान नही करेगा तब तक तू बालगोविंद नही बन सकता हैं । ये तेरा कर्म तेरे पिछले जन्म से अधूरा हैं ।"
अब बालगोविंद का धैर्य जवाब दे गया और वो रोते हुए सोहम के चरणों में गिर पड़ा ।

थोड़ी देर बाद मंदिर के उसी बरामदे जैसे स्थान पर एक घने बरगद के पेड़ के नीचे वे लोग बैठे थे । बालगोविंद ने सोहम को मंदिर के अंदर आने का आग्रह किया परन्तु सोहम ने उसे नही माना और वे लोग इस विशाल बरगद के नीचे आकर बैठ गये थे । वंहा बालगोविंद ने चटाई जैसा कुछ बिछा दिया था और सोहम के लिये कुछ खाने-पीने को भी ले आया था । सोहम ने उस खाने पीने को अपनी इंसानी खोपड़ी में उंडेल लिया और जब तब उसमें खाता रहने लगा । उसके खाने के ढंग से और इंसानी खोपड़ी में खाना रखने से बालगोविंद थोड़ा सोच में पड़ गया था । आखिर वो एक मंदिर का पुजारी था और शास्त्र उसने भी पढ़े थे । 'कौलमत' और कपालिकों के विषय में उसने भी पढ़ा था और बहुत हद्द तक वो ये समझ गया था कि उसके पास एक कपालिक बैठा था । अघोरपंथ का एक बहुत प्राचीन सिध्दात था 'शाक्तमत' । ये उतना ही प्राचीन माना जाता था जितने कि 'वेद' और इसी शाक्तमत की एक शाखा थी कौलमत जिसमें 'वामाचार' को बढ़ावा मिला और इसका पालन करने वाले वाममार्गी कहलाये । इसी कौल मत के तहत कपालिक साधकों का उदय हुआ था । जिन्होने अघोरपंथ के भीषण साधनापथ को भयंकर बना दिया था । मानव कपाल को साथ लेकर चलने वाले और उसको अपने खाने-पीने के लिये उपयोग में लाने वाले कपालिक कहलाते हैं ।

ये सब बातें बालगोविंद को सोच में डाले हुए थी । उधर उसके मन में ये भी चिंता थी कि वो कपालिक किसी उद्देश्य से ही वंहा आया हुआ हो सकता हैं । अन्यथा यंहा इस वीराने में कौन बेवजह आयेगा याँ कोई क्यों आकर उसके पूर्व जन्म के विषय में बतायेगा और उसकी बेटी की व्यथा के विषय में बतायेगा । उसे लगा कि -- हो ना हो उसकी बेटी का दुख दूर होने का समय आन पहुंचा था । इस सोच ने उसे उत्साह से भर दिया । अपने जीवन में वो अगर कुछ चाहता था तो वो बस अपनी बेटी का ठीक होना ही चाहता था । उस कपालिक के वंहा आने से उसे आशा की किरण दिखाई देने लगी थी । उसने पढ़ा था कि -- एसे कपालिक कई एसी विद्यायें जानते थे --जोकि अंसभव को संभव कर दिखाती थी । उसकी बेटी की समस्या भी वो कपालिक अवश्य ही दूर कर सकता था ।

यही सब सोचकर उसने सोहम को अपनी बेटी की दुखभरी कथा कह सुनाई और सोहम शाँती से सुनता रहा । सोहम तो उसके पिछले जन्म की कथा भी जानता था । परन्तु बालगोविंद को वो सब पता नही था । भौतिक जगत को अपना सबकुछ समझने वाले साधारण लोग भौतिक जगत के रिश्ते-नातों और चीजों में ही अपनी सन्तुष्टि ढूंढते हैं । अपनी बेटी के मोह का मारा बालगोविंद नही जानता था कि -- उसका वो जन्म केवल इसलिये हुआ था कि -- वो पिछले जन्म में भी अपनी बेटी के मोह से दुखी था और उस मोहजनित ईच्छा के कारण ही उसे ये जन्म लेना पड़ा था । आज भी वो अपनी बेटी के मोह में फंसा था और फिर कुछ एसा करने वाला था जिससे उसका अगला जन्म पीड़ादायक होने वाला था । लेकिन ये सब कर्मयोग था और जब तक बालगोविंद परिपक्व नही हो जाता तब तक उसे इसी तरह जन्म पर जन्म लेते रहना पड़ेगा और प्रत्येक जन्म में कर्मयोग को सीखते रहना पड़ेगा । कर्मयोग में परिपक्वता ही 'मोक्ष' के मार्ग पर अग्रसर होना हैं ।
"मैं तेरी बेटी को ठीक कर दूंगा ।" सोहम क्रूर स्वर में बोला -- "लेकिन तूझे मेरा एक काम करना पड़ेगा ।"
बालगोविंद हाथ जोड़कर और आँखों में आँसू भरकर बोला -- "आप जो कहेंगे, मैं करुंगा महात्मा । बस मेरी बेटी को ठीक कर दिजिये । मेरा भगवान जानता हैं, मैं जो कुछ भी कर रहा हुँ अपनी बेटी के लिये कर रहा हुँ । अपनी संतान के लिये कुछ भी करना भगवान की दृष्टि में क्षमायोग्य हैं । आप जो कहेगें, मैं करुंगा महात्मा ।"
"भगवान ।" सोहम ने जोरदार अट्टहास किया और भंयकर स्वर में बोला -- "तेरा भगवान ही तेरे साथ अन्याय करता हैं । उसने तेरे लिये एसा कर्मयोग का जाल बिछा दिया हैं कि तू चाहकर भी उसमें से निकल नही सकता और तेरे से उल्टे-सीधे कर्म करवाता हैं ताकि तू उसके जाल में फंसा रहे । एक तेरा भगवान नही होता तो यंहा सबकुछ ठीक होता । लेकिन तू इतना मूर्ख हैं कि फिर भी उसी के नाम की माला जपता हैं । उसकी 'माया' को पहचान मूर्ख, जन्म-मरण की इस माया से निकल और स्वयं ही स्वयं का भगवान बन ।" फिर उसने भयंकर अट्टहास किया और व्यंग से बोला -- "भगवान ।" उसके बाद वंहा सोहम के वो भंयकर अट्टहास गुँजतें रहे और बालगोविंद उसके सामने बैठा बैठा काँपता रहा ।

बहरहाल अब सबकुछ तय हो गया था । सोहम को बालगोविंद की बेटी को ठीक करना था और बदले में बालगोविंद को उस मंदिर में सोहम को साधना करने देना था । बालगोविंद समझ रहा था कि -- वो ये सब ठीक नही कर रहा था -- परन्तु वो अपनी बेटी के मोह में अंधा हो गया था और अपना आने वाला जन्म बिगाड़ लेने वाला था । सोहम ने उसे मंदिर की साफ-सफाई से मना कर दिया था । सात्विक स्थान की निरंतर साफ-सफाई उसकी तामसिक शक्तियों को क्षीण कर सकती थी । इसलिये उसने मंदिर की पुजा-अर्चना और साफ-सफाई से बालगोविंद को मना कर दिया था । अब वो पुज्य मंदिर अथवा एक सात्विक स्थान धीरे-धीरे, सोहम के लिये एक तामसिक स्थान में परिवर्तित होने की दिशा में अग्रसर होने लगा । इसका पाप बालगोविंद के सर पर था और इसके लिये उसका अगला जन्म पीड़ादायक हो जाने वाला था ।

तीन दिन गुजर गये । सोहम अब तक बालगोविंद की बेटी काहिनी से नही मिला था । वो जानता था कि काहिनी को नियंत्रित करने वाला ब्रह्मपिशाच उसे देखते ही क्रोधित हो जाने वाला था और हो सकता था कि उसके और ब्रह्मपिशाच के बीच उसी समय युध्द छिड़ जाये । एसे में सोहम अपनी तरफ से पुर्ण तैयारी के साथ काहिनी से मिलने वाला था । आजकल एसे भी अमावस्या करीब थी जिससे तामसिक शक्तियाँ प्रबल थी । इसका लाभ जंहा सोहम को होने वाला था वंही उस ब्रह्मपिशाच की शक्ति

भी बढ़ीचढ़ी रहने वाली थी । तीन दिन तक सोहम वंही मंदिर के आहते में रहा था । बालगोविंद उसे खाना बगैरह लाकर देता था और सोहम उसे अपने मानव-कपाल में लेकर खा लिया करता था । बालगोविंद प्रतिक्षा में था कि --कब सोहम उसकी बेटी को ठीक करे और कब वो अपनी बेटी को सहज और साधारण रुप में देख सके परन्तु सोहम ने अब तक एसी कोई बात ना तो की थी और नाही उसके विषय में उसने कोई बात छेड़ी थी ।

उस दिन चतुर्दशी थी और अर्धरात्रि से ही अमावस्या आरंभ हो जाने वाली थी । दूसरे दिन अर्धरात्रि तक अमावस्या पुर्ण हो जाने वाली थी । रात्रि होते-होते चन्द्र अदृष्य होने लगा और बहुत गौर से देखने पर ही एक अर्ध गोलाकार रेखा के जैसा दिख रहा था । सोहम जानता था कि रात्रि और गहरी होते ही चन्द्र को अदृष्य हो जाना था और अमावस्या आरंभ हो जाने वाली थी ।

आज रात्रि को उसे बालगोविंद की बेटी काहिनी से मिलना था । काहिनी तो निमित थी असल में तो उसे आज रात्रि को उस ब्रह्मपिशाच से मिलना था । जिसने काहिनी पर नियंत्रण कर रखा था । आज उसने बालगोविंद का लाया खाना-पीना नही खाया था । मंदिर के आहते में उस वृक्ष के नीचे बैठा वो किन्ही विशेष मन्त्रोंचारण में मग्न था और अपनी समस्त तामसिक शक्तियों को समेटने में व्यस्त था । आज उसे ब्रह्मपिशाच से भिड़ना था । ब्रह्मपिशाच साधारण भूत-प्रेतों से अधिक शक्तिशाली होता हैं और उससे भिड़ने के लिये विशेष तैयारी की आवश्यकता थी । ये बात उसने बालगोविंद को बता दी थी -- कि वो आज काहिनी से मिलने वाला था । ब्रह्मपिशाच वाली बात उसने कभी भी बालगोविंद को नही बतायी थी । उसका कोई लाभ भी नही था । मूल उद्देश्य तो मंदिर में साधना करना था और इसके लिये बालगोविंद को सन्तुष्ट करना आवश्यक था ताकि वो उसके मंदिर में साधना करने को सहजता से ले । इसके लिये उसे, बेटी के ठीक हो जाने की प्रसन्नता देना आवश्यक था ।

बहरहाल रात्रि आ पहुंची थी । चन्द्र अदृष्य हो गया था । चारो तरफ घटाघुप्प अंधेरा छाया हुआ था । हाथ को हाथ नही सुझायी दे रहा था । एसे में उस मंदिर से दो साये बालगोविंद के घर की ओर जा रहे थे । ये दोनो सोहम और बालगोविंद ही थे । सोहम के निर्देशानुसार बालगोविंद अर्धरात्रि होते ही उसे लेने आ पहुंचा था । अब दोनो ही उसके घर की ओर जा रहे थे । बालगोविंद ने वंहा बहुत समय गुजारा था परन्तु आज की तरह कभी उसे इतना भय मेहसूस नही हुआ था । हवा की सॉय-सॉय गुँज रही थी । दूर से कंहि जंगली पशुओं की डरी हुई आवाजें आ रही थी । मानों वे भी जानते थे कि आज कुछ अनहोनी होने वाली थी । उसे तो सोहम से भी भय लग रहा था । वो एकदम चुप सा था और उसके आसपास उसे कुछ अदृष्य सायें से मंडरातें मेहसूस हो रहे थे । दरअसल वो सब सोहम के भूत-प्रेत सहयोगी थे जो आज उसकी मदद करने वाले थे । बालगोविंद वो सब नही जानता था । उसे तो सोहम भी किसी भूत से कम मेहसूस नही हो रहा था ।

अभी वो बालगोविंद के घर के पास पहुंचे ही थे कि घर के अंदर से एक भयानक चीख गुँजी । ब्रह्मपिशाच को सोहम के आने का संकेत मिल चुका था । बालगोविंद ने घबराकर सोहम की ओर देखा परन्तु सोहम ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नही की और वो वैसे ही सधे हुए कदमों से बालगोविंद के घर के अंदर प्रवेश कर गया । घर के अंदर पहले ही कमरे में बालगोविंद की पत्नी भानुप्रिया घबरायी हुई सी बैठी थी । सोहम को घर के अंदर आते देख वो भयभीत हो गई थी । एसा आदमी उसने कभी नही देखा था परन्तु पीछे-पीछे बालगोविंद को आते देख उसकी जान में जान में आयी । बहरहाल घबराहट और भय उसकी आँखों से फिर भी प्रकट हो रहे थे । घर के अंदर आते बालगोविंद को प्रश्नसूचक दृष्टि से सोहम ने देखा मानो पुछ रहा हो -- काहिनी कंहा हैं । बालगोविंद भी उसका मंतव्य समझ गया और उसने उंगली के इशारे से किसी अंदर वाले कमरे की ओर इशारा किया । सोहम ने देखा उस कमरे को जोड़ने वाला वंहा एक और दरवाजा था जो कंहि किसी अंदर के कमरे की ओर इशारा कर रहा था । सोहम ने उस दरवाजे की चौखट पर कोई मन्त्र पड़ा और अपने झोले से कुछ दानों जैसा निकालकर उस दरवाजे की चौखट पर डाल दिया । फिर वो बालगोविंद और उसकी पत्नी को सम्बोंधित करता हुआ बोला --"अंदर मत आना ।"

दोनो पती-पत्नी ने जल्दी-जल्दी सहमति में सिर हिला दिया ।

अब सोहम अंदर के कमरे में घुसा । वो दस गुणा दस का एक कमरा था । जिसके एक तरफ एक खाट पड़ी थी । नग्न काहिनी उसी खाट पर लेटी हुई थी और अंदर घुसते सोहम को भयानक आँखों से घूर रही थी । अपनी कुमारावस्था को पार करती काहिनी बहुत सुन्दर थी । लंबा सुडौल शरीर, भरपुर वक्षस्थल, पतली कमर और गोरा रंग । अगर कोई साधारण समय होता तो वो बहुत आकर्षक और संभोग के लिये आमंत्रित करती युवती दृष्टिगोचर होती । परन्तु उस समय वो बहुत दीनहीन और मलीन सी प्रतित होती थी । उसके चेहरे का रंग उड़ा हुआ था, उसके लंबे बाल बिखरे हुए थे और वो अपने आपे में नही थी । जिससे वो कोई सुन्दर युवती नही बल्कि मरने मारने पर उतारु कोई सुन्दर चुड़ैल लग रही थी ।

सोहम, काहिनी को घूरता हुआ कमरे के बीचोंबीच आ खड़ा हुआ । अब खाट पर लेटी काहिनी और कमरे के बीचोंबीच खड़ा सोहम, दोनो ही एक दूसरे को घूर रहे थे । फिर काहिनी का शरीर कॉपने लगा, उसके मुँह से कोई उल्टी जैसा घृणित पदार्थ बहने लगा । इधर सोहम के आसपास कई छायाऐं प्रकट होने लगी । ये सोहम की सुरक्षा के लिये साथ रहने वाली प्रेतात्मायें थी । ये संकेत था कि काहिनी में छुपा ब्रह्मपिशाच आक्रमण की तैयार कर रहा था जिसके फलस्वरुप सोहम की रक्षा के लिये प्रेतात्मायें प्रकट हो गयी थी । ज्यादा देर भी नही लगी । अचानक काहिनी उठी और सोहम की तरफ झपटी । परन्तु सोहम की सुरक्षा के लिये प्रकट हुई प्रेतात्माओं ने उसे वापस धकेल दिया । वो फिर खाट पर जा गिरी । लेकिन वो फिर उठी और फिर सोहम पर झपटी । अब सोहम की सुरक्षा के लिये प्रकट हुई प्रेतात्मायें उसे लिपट गई और काहिनी और वो प्रेतात्मायें आपस में गुत्थमगुत्था हो गये ।

उठापटक होने लगी । धमाचौकड़ी मच गई और कमरे में भूचाल सा गया । अब काहिनी, सोहम को भूलकर उन प्रेतात्माओं से लड़ने लगी । वो प्रेतात्मायें छायाओं जैसी दिख रही थी और काहिनी सशरीरी युवती थी । लेकिन काहिनी सशरीरी युवती होने के बावजूद भी गजब की फुर्ती और भयानकता से लड़ रही थी । एसा लगता था जैसे काहिनी का पलड़ा भारी पड़ रहा था । उस कमरे में रुदन की आवाजें गुँजने लगी । ये संकेत था कि सोहम की सुरक्षा के लिये प्रकट हुई प्रेतात्मायें, ब्रह्मपिशाच के सामने निर्बल पड़ रही थी । फिर वंहा सोहम की सुरक्षा के लिये प्रकट हुई प्रेतात्माओं की गिनती कम होने लगी । अब वंहा रुदन का शोर और ज्यादा बढ़ गया था । सोहम की प्रेतात्मायें मार खा रही थी और काहिनी में छिपे ब्रह्मपिशाच से नही लड़ पा रही थी ।

सोहम वो सब जानता था । उसे पता था कि उसकी सुरक्षा के लिये प्रकट हुई प्रेतात्मायें, ब्रह्मपिशाच से नही लड़ सकती थी । लेकिन वो सब अचानक आरंभ हो गया था और सोहम को अपनी तरफ से कुछ करने का मौका ही नही मिला था । अन्यथा वो अपने आसपास अभिमन्त्रित सुरक्षा घेरा बनाकर वंहा बैठने वाला था । बहरहाल इस सबसे उसे ब्रह्मपिशाच की शक्ति का पता चल गया था । वो काहिनी की खाट से विपरित दिशा में एक कोने में जा बैठा और कोई मन्त्र उच्चारनें लगा । फिर उसने उंगली से अपने आसपास गोल घेरा बनाया । अब उसने अपने झोले से वो काला नाग निकाला जो सदा ही उसके साथ रहता था ।

उसने नाग के फन पर दो-चार बार हाथ मारा तो तुरन्त ही नाग का फन तन गया और वो क्रोधित मुद्रा में फन निकाले सोहम को देखने लगा । नाग अपनी जीभ लपलपाने लगा तुरन्त ही सोहम भी अपनी जीभ निकाल कर नाग को चिड़ाने लगा । उसने फिर नाग के फन पर हाथ मारा और नाग क्रोधित होकर सोहम की निकली जीभ पर दंश मार बैठा । अब सोहम ने वापस नाग को झोले में डाल दिया और स्वयं आँखें मुंदकर बैठ गया ।

नाग के जहर से सोहम को नशा होने लगा । वो साधारण मनुष्य की तरह नाग के जहर से मर जाने वाला नही था । उसे अब किसी शराब अथवा नशीली चीज से नशा नही होता था । अब वो नाग के जहर से ही नशा मेहसूस करता था । उस समय उसे नशे की आवश्यकता थी । अपने अवचेतन मन को जाग्रत करने के लिये

उसे नशे की आवश्यकता थी ।

कुछ ही पलों में उसका चेतन मन और बर्हिबोध शिथिल होने लगे । अब उस कमरे में क्या हो रहा था, वो नही देख पा रहा था और नाही सुन पा रहा था । धीरे-धीर वो बाहरी जगत से कट गया परन्तु तुरन्त ही उसका अवचेतन मन और अंर्तबोध जाग्रत होने लगे । अब वो कमरे की सूक्ष्म चीजों को देखने लगा था । अब काहिनी को वो सशरीर नही बल्कि उसकी छाया को देख रहा था परन्तु उसके अंदर छुपे ब्रह्मपिशाच को वो आसानी से सशरीर देख पा रहा था । वो पारदर्शी शरीर वाला मटमैला सफेद और लंबी पुंछ वाला ब्रह्मपिशाच, नाग की तरह कुण्डली मारे काहिनी के शरीर में विद्यमान था ।

काहिनी के मन और बुध्दी पर उस ब्रह्मपिशाच का नियंत्रण था । इससे काहिनी ना तो कुछ सोच सकती थी और नाही कोई विचार उसके मन में आता था । वो ब्रह्मपिशाच काहिनी के मन में पूर्व जन्म के विचार प्रकट करने का प्रयास करता रहता था । जिससे काहिनी को पूर्व जन्म की याद आ जाये और वो उसे पदमापति के रुप में पहचान ले । लेकिन प्रकृति का अपना नियम हैं । वो प्रबल ईच्छा स्वरुप मनुष्य को फिर वही वातावरण और संबंध तो दे सकती थी परन्तु वही बुध्दी और वही विचार नही दे सकती थी । इस तरह वो विचार जो वो ब्रह्मपिशाच में काहिनी में प्रकट करने का प्रयास करता था । वो विचार काहिनी में फिर से प्रकट नही हो सकते थे । लेकिन जब कभी भी उसका आत्मबल प्रबल होता था तो काहिनी उन विचारों का विश्लेषण करने का प्रयास अवश्य करती थी । एसे ही समय में वो शून्य में निहारती रहती थी । परन्तु जब वो ब्रह्मपिशाच अपने प्रयासों में सफल नही हो पाता था तो क्रोधित होकर उसके मुँह से डरावनी आवाजें निकालता था और घर के बर्तन इधर-उधर उछालता रहता था अर्थात इसी प्रकार के उत्पात प्रकट करता था । ब्रह्मपिशाच का वो शरीर वायु और जल तत्वों के तामसिक अणुओं से बना हुआ था जिससे वो काहिनी के शरीर को बिना किसी विघ्न के अपनाये बैठा हुआ था । क्योंकि वायु और जल तत्वों के अणुओं से काहिनी के शरीर को कोई असुविधा नही थी, इसलिये उसके शारिरिक बनावट में कोई फर्क नही आया और नाही उसके प्राकृतिक विकास में कोई बाधा आयी । बाकि सारा उत्पात अनुभूति का था । इस तरह ब्रह्मपिशाच ने उसके शरीर पर नियंत्रण बनाया हुआ था ।

कमरे में शाँती छा गई थी । सोहम की सुरक्षा के लिये प्रकट हुई प्रेतात्मायें, ब्रह्मपिशाच से मार खाकर इधर-उधर बिखर गई थी । आसपास से उनके रुदन की आवाजें आ रही थी । काहिनी फिर खाट पर जा बैठी और कोने में बैठे सोहम को घूरने लगी । सोहम की आँखों की पुतलियां उपर चढ़ी हुई थी और वो काहिनी से सर्वथा बेखबर था । लेकिन एसा केवल दिखता था, असल में तो वो काहिनी के शरीर को छोड़कर बाकि प्रत्येक बात को देख रहा था । काहिनी के शरीर को माध्यम बनाकर ब्रह्मपिशाच सोहम को घूर रहा था परन्तु उपर से दिख रहा था कि काहिनी सोहम को घूर रही हैं । अपने अंर्तबोध से सोहम भी ब्रह्मपिशाच को देख रहा था । उसका जाग्रत अवचेतन मन उसके आसपास एक शक्तिशाली सुरक्षा घेरा बना रहा था । अवचेतन मन चेतनमन से कंहि अधिक शक्तिशाली होता हैं । चेतन मन में जो विचार के केवल विचार ही बने रहते हैं, वही विचार अवचेतनमन क्रिया रुप में परिवर्तित कर देता हैं । इसलिये जब सोहम ने अवचेतनमन में ब्रह्मपिशाच से सुरक्षा का विचार प्रकट किया तो अवचेतनमन ने तुरन्त ही उसके आसपास सुरक्षा का घेरा बना दिया । अब ब्रह्मपिशाच उसके सुरक्षा घेरे को पार करके सोहम तक नही पहुंच सकता था । इसलिये काहिनी में बैठा ब्रह्मपिशाच उसे दूर से घूर रहा था ।

फिर काहिनी के मुँह से डरावनी आवाज निकली --"तेरा मेरा कोई झगड़ा नही हैं, कपालिक । मैं इस लड़की को छोड़ने वाला नही हुँ, मुझसे जिद ना कर और यंहा से चला जा । जा, जाकर अपनी साधना पुर्ण कर और मुझे इस लड़की के साथ रहने दें ।"

सोहम को उसकी अवाज सुनाई ही नही दी, वो मुर्ति सा बैठा रहा । परन्तु वो ब्रह्मपिशाच को देख रहा था और उसके काहिनी के शरीर से निकल जाने का विचार निंरतर कर रहा था । इससे उसके शरीर से निरंतर अदृष्य किरणें निकलकर काहिनी के आसपास फैलने लगी । ये किरणें अंतरिक्ष की विभिन्न प्रकार की उर्जायें थी जो सोहम ने अपनी सिध्दियों से प्राप्त की थी । किरणें काहिनी के आसपास एक ताप सा पैदा करने लगी । इससे ब्रह्मपिशाच को असुविधा होनी थी । काहिनी के शरीर में बैठा ब्रह्मपिशाच इससे जरा भी नही घबराया और उसे इससे कोई परेशानी भी नही हुई । उधर सोहम के शरीर से और किरणें प्रकट हो रही थी और निरंतर काहिनी के आसपास जमा हो रही थी । अब इन किरणों ने काहिनी के शरीर को ही झुलसाना आरंभ कर दिया । अब सोहम का उपाय काहिनी के शरीर को हानि पहुचां रहा था उसके अंदर बैठा ब्रह्मपिशाच अब भी सुरक्षित था । अपने अंर्तबोध से सोहम ने काहिनी के शरीर को झुलसते देखा तो उसने किसी और उपाय का विचार किया । तभी उसके कानों में आवाज आयी -- "शमशानपुत्र ।"

ये डाकिनी थी जो उस कमरे में प्रवेश कर रही थी और उसने अपने होने की अनुभूती सोहम को करवायी थी । उसके अचेतन मन और अंर्तबोध ने जैसे ही किसी और उपाय के विषय में विचार किया था तुरन्त ही वंहा डाकिनी प्रकट हुई थी ।

अब सोहम ने देखा कि ब्रह्मपिशाच सर्तक हुआ था । काहिनी तिलमिला के उठ खड़ी हुई थी । वो किसी भी क्षण डाकिनी पर झपट पड़ने को तैयार दिखती थी । डाकिनी की भी मुखमुद्रा बदल गई वो भी अपने असली रंग में आ गई थी ।

डाकिनी और ब्रह्मपिशाच की शक्ति लगभग एक जैसी ही थी । साधारणयता वो दोनो एक दूसरे का रास्ता नही काटते थे और एक दूसरे से उलझते भी नही थे । डाकिनी सोहम की सुरक्षा के लिये प्रकट हुई साधारण प्रेतात्माओं जैसी नही थी । वो अंतरिक्ष के सर्वाधिक तामसिक और विध्वंसक अणुओं से बनी थी । वो सोहम के नियंत्रण में थी और सोहम चाहता था कि ब्रह्मपिशाच काहिनी के शरीर को छोड़े । इसलिये डाकिनी को ब्रह्मपिशाच से लड़ना था ।

अचानक डाकिनी एक भयप्रद डायन जैसी दिखने लगी । उधर काहिनी हवा में उड़ने लगी और डाकिनी पर आक्रमण के लिये बार बार अपनी स्थिति बदलने लगी । डाकिनी के मुख से भी एक भयानक आवाज निकली और फिर वो भी हवा में उड़ने लगी । अब उस छोटे से कमरे में दो भयानक स्त्री शरीर हवा में उड़ रहे थे और एक दूसरे पर आक्रमण कर रहे थे ।

इधर सोहम ध्यान की मुद्रा में बैठा निरंतर कोई मन्त्रोंचारण करने में व्यस्त था । फलस्वरुप कई काम एक साथ हुए । सोहम के आसपास एक गाढ़ा सफेद धुंआ सा उठा और उसकी सुरक्षा के लिये प्रकट हुई प्रेतात्माऐं फिर वापस आने लगी, जोकि पहले ब्रह्मपिशाच से मार खाकर भाग खड़ी हुई थी । अब वे भी ब्रह्मपिशाच पर वार करने लगी । इससे ब्रह्मपिशाच के लिये परेशानी बढ़ने लगी । कमरा युध्द का मैदान बन गया था । डाकिनी बार बार काहिनी को उठा उठा कर जमीन पर पटक रही थी । मौका मिलते ही सोहम की दूसरी प्रेतात्मायें भी ब्रह्मपिशाच पर वार कर देती थी । इससे ब्रह्मपिशाच की शक्ति घटने लगी ।

थोड़ी देर बाद काहिनी निढाल सी कमरे में एक तरफ पड़ी हुई थी और डाकिनी उसके सर पर सवार थी और उसने उसके बाल बेदर्दी से पकड़ रखें थे ।

उधर सोहम की भी तन्द्रा टूटी और उसने कमरे का दृष्य देखा । डाकिनी उसे प्रश्नसूचक दृष्टि से देख रही थी । फिर सोहम अपनी जगह से उठा और काहिनी के पास पहुंच कर उसने अपने झोले में से कोई चीज निकाली और जबर्दस्ती काहिनी के मुहँ में डाल दी और उसका मुँह पकड़े रखा ताकि वो चीज उसके पेट में चली जाये । वो एक जड़ी-बूटी थी जो शरीर से अवाछिंत पदार्थ को बाहर निकाल देती थी और शरीर को शुध्द कर देती थी । सोहम के द्वारा अभिमन्त्रित वो जड़ी-बुटी जैसे ही काहिनी के पेट में गयी । उसके गुदा द्वार से ढेर सारा मल बाहर आ गया, उसने बहुत सारा मूत्र भी त्याग किया और बहुत मात्रा में उल्टी भी कर दी ।

अभिमन्त्रित जड़ी-बूटी ने और भी चमत्कार दिखाया । जड़ी-बूटी के तौर पर जंहा उसने काहिनी के शरीर से जल तत्व के अवांछित तत्वों को साफ कर दिया वंही अभिमन्त्रित

होने की वजह से अवांछित वायु तत्व के भी सभी अणुओं को उसने साफ करना आरंभ कर दिया । एसे ही अणुओं से उस ब्रह्मपिशाच का शरीर भी बना हुआ था । फल स्वरुप उसके भी काहिनी के शरीर को छोड़ने की बारी आ गई । डाकिनी और अन्य प्रेतात्माओं से लड़कर वो निढाल तो पहले ही हो गया था और अब उसपर इस अभिमन्त्रित जड़ी-बूटी ने उसके काहिनी के शरीर में रहने को मुश्किल करना आरंभ कर दिया था । अंतत काहिनी का शरीर जोर जोर से काँपने लगा फिर वो जोरदार ढंग से उछलकर कमरे की दीवार से जा टकरायी और बेजान सी होकर गिर पड़ी । ब्रह्मपिशाच ने उसे छोड़ दिया था । उसे उसके शरीर से निकलते और छत को तोड़कर हवा में विलिन होते सोहम ने देखा ।

सुबह होने वाली थी । सोहम के मुख पर थकावट के चिन्ह थे । डाकिनी जा चुकी थी और सोहम की सुरक्षा के लिये प्रकट हुई प्रेतात्मायें भी जा चुकी थी । अमावस्या समाप्त होने की दिशा में अग्रसर थी । काहिनी बेसुध सी खाट पर पड़ी थी । सुर्योदय होने वाला था जब सोहम उस कमरे से बाहर निकला ।

“तेरी बेटी ।” सोहम, बालगोविंद और उसकी पत्नी को संबोधित करता हुआ बोला --“ठीक हो गई हैं, नारायण । जा संभाल अपनी बेटी को और उसकी शादी की तैयारी कर ले ।”

रातभर थर-थर काँपते दोनो पती-पत्नी हैरानी से सोहम को देख रहे थे । रातभर वो दोनो काहिनी के कमरे से आती हड़कम्प और भूकम्प की आवाजें सुनसुनकर हल्कान होते रहे थे । बालगोविंद की पत्नी तो कई बार बेहोश हो चुकी थी और बालगोविंद उसे पानी के छींटे मारमार कर जगाता रहा था । अकेले उस रात को काटना बालगोविंद के लिये भी मुश्किल था ।

जब दोनो पती-पत्नी ने सुना कि उनकी बेटी ठीक हो गई हैं तो उनकी समझ में नही आया कि वे क्या करें और सोहम से क्या कहें । वे दोनो उलझन में पड़ गये । उन दोनो को वैसे ही उलझन में छोड़कर सोहम घर से बाहर आ गया और मंदिर की तरफ बढ़ गया । पीछे वे दोनो पती-पत्नी काहिनी के कमरे की तरफ झपटे । अपनी ठीक हो गई बेटी को वे लोग देखना चाहते थे । अपनी बेसुध पड़ी बेटी को भानुप्रिया ने गले से लगा लिया और उसे प्यार से पुकारने लगी । काहिनी को भी होश आने लगा था । वो हैरानी से आसपास निहारने लगी और अपने माता-पिता को देखने लगी । फिर वो जोर-जोर से रोने लगी । पास ही बैठा बालगोविंद प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरने लगा और भानुप्रिया उसे सीने से चिपटाये रही । जब बहुत देर तक काहिनी रोती रही तो उसका अपने नग्न शरीर की ओर ध्यान गया । उसने झट से अपनी माँ के आँचल से खुद को ढाकना चाहा और वो माँ की गोद में दुबक गई । भानुप्रिया ने भी अपनी साड़ी को खुल जाने दिया ताकि काहिनी अपने आपको छुपा सके । बालगोविंद उठकर बाहर आ गया और पीछे दोनो माँ-बेटी बहुत देर तक सुबकती रही ।

फिर तो काहिनी के रंगढंग ही बदल गये । अब वो दक्षिणी अंदाज में साड़ी बाँधती थी और बन संवर कर रहती थी । अब उसे पहचानना मुश्किल होता था । वो बेहद सुन्दर और कोमल लगती थी । एसा लगता था जैसे जवानी का मौसम और सुन्दरता की बहार अब अचानक उसपर छायी थी । एसा लगता था कि जैसे पहले कभी उसको इसका पता ही नही चला था । जैसे अचानक वो जवानी के मौसम में पहुंच गई थी और हैरान हो रही थी कि एसा आनंद और मस्त अंदाज उसने पहले कभी मेहसूस नही किया था । वो दक्षिणी अभिनेत्रियों जैसी सुन्दर और गदराये बदन वाली हसीन युवती लगती थी । वो स्वयं भी खुशी से फूली नही समा रही थी । उसके लिये दुनियां ही बदल गई थी । वो पंख लगाये अंदाज में उड़ती सी चलती थी और भाग भाग कर इधर-उधर आती जाती थी । उसकी माँ भानुप्रिया बार-बार उसकी नजर उतारती थी । वो डरती थी कि कंहि उसी की नजर ना उसे लग जाये ।

बहरहाल बालगोविंद, भानुप्रिया और काहिनी की दुनियां बदल गई थी । वर्षो के बाद दुख भरे जीवन से छुटकारा मिल जाने से उनकी खुशी का ठिकाना नही था । वे तीनो ही प्रतिदिन सुबह मंदिर आते थे और सोहम के चरण स्पर्श करते थे । क्योंकि अब मंदिर में जाने की मनाही थी । पुजा अर्चना की मनाही थी । दर्शन और माथा टेकने की भी मनाही थी । बालगोविंद को इससे कोई आपति नही थी । वो प्रसन्न था कि उसकी बेटी ठीक हो गई थी और अब वो सोहम को उसकी साधना कर लेने देना चाहता था । इसके लिये मंदिर में नही जाने की अथवा पुजा अर्चना नही करने की सोहम की शर्त उसे स्वीकार्य थी । जैसे वो प्रसन्न था, वैसे ही -- वो चाहता था सोहम भी अपने मन की करले और प्रसन्न हो जाये ।

लेकिन सोहम प्रसन्न नही था । वो गंभीर बना हुआ था । प्रसन्न होना और दुखी होना तो वैसे भी उसने सीखा ही नही था । उसके गुरु ने उसे सिखाया था कि प्रसन्न होना और दुखी होना साधारण मनुष्यों का स्वभाव हैं । वो अघोरपंथ के कौलमत के कपालिक संम्प्रदाय का एक कपालिक था । जिसके अघोर तप और भयंकर कार्यो के आगे सुख-दुख बहुत छोटे थे । इसलिये प्रसन्न होने की अथवा दुखी होने जैसी सोहम के लिये कोई बात ही नही थी । परन्तु पिछली रात्रि से मंदिर के आसपास और बालगोविंद के घर के आसपास उसने लाल बिंदुओं को विचरते देखा था । ये वो हिंसक पशु-पक्षियों की आत्मायें थी जो ब्रह्मपिशाच के साथ रहती हैं । ये संकेत था कि ब्रह्मपिशाच कंहि आसपास ही था ।

सोहम जानता था । ब्रह्मपिशाच बहुत शक्तिशाली प्रेतात्मा होती हैं । उसकी दृष्टि अगर किसी पर पड़ जाये अथवा काहिनी जैसा कोई लक्ष्य वो निध ारित करले तो फिर उसके वंहा से जल्दी हट जाने की संभावना बहुत कम होती हैं । भले ही सोहम ने उसे काहिनी के शरीर से बाहर निकलने को मजबूर कर दिया था परन्तु उसके इस क्षेत्र से चले जाने की संभावना नही थी । इसी का संकेत वो हिसंक पशु-पक्षियों की आत्मायें थी जो अब भी वंहा विचर रही थी । सोहम को अब भी वंहा रहना था और अपनी साधना पुर्ण करनी थी । उसकी साधना में विघ्न डालने का कार्य वो ब्रह्मपिशाच अवश्य ही करने वाला था । इसलिये सोहम गंभीर बना हुआ था और ब्रह्मपिशाच का कोई और उपाय सोच रहा था ।

अभी शुक्ल-पक्ष की षष्ठी तिथि चल रही थी और चन्द्र निरंतर बड़ा होता जा रहा था । एसे में तामसिक शक्तियां निर्बल रहती हैं । वैसे भी ब्रह्मपिशाच ने अभी अभी डाकिनी और सोहम की आत्माओं से लड़ाई लड़ी थी जिससे उसकी शक्ति क्षीण हो गई थी । परन्तु जैसे-जैसे दिन गुजरेगें और पुर्णिमां तिथि गुजरेगी तथा कृष्ण-पक्ष का आरंभ होगा तो तामसिक शक्तियां और ब्रह्मपिशाच प्रबल होने लगेंगे । इस तरह फिर उत्पात होने की संभावना बनेगी । सोहम की समस्या ये थी कि इसी पुर्णिमां तिथि से उसे अपनी साधना आरंभ करनी थी । एसे में अगर वो साधना कर रहा हो और ब्रह्मपिशाच का उत्पात आरंभ हो गया तो फिर ब्रह्मपिशाच से भिड़ना पड़ेगा और उसकी साधना पुर्ण नही हो पायेगी । सोहम एसा बिल्कुल नही चाहता था । जिस साधना के लिये उसने इतने प्रयत्न किये थे अब उसे टाला नही जा सकता था । इसलिये अच्छा ये होगा कि वो ब्रह्मपिशाच का पहले ही कोई उपाय सोच ले ताकि उसकी साधना में विघ्न ना पड़े ।

यही सब सोचकर सोहम ने एक दिन सुबह बालगोविंद को बुलाया और उसे समझाया कि वो आन्ध्रपदेश के उस गाँव में जाये जंहा कभी पदमापति नामक एक ब्राह्मण रहता था । वंहा जाकर क्या करना था -- सोहम ने बालगोविंद को अच्छी तरह से समझा दिया था । बालगोविंद उसी रात्रि को यात्रा पर चल दिया था । सोहम ने उस रात्रि को मेहसूस किया कि सन्नाटा बढ़ने लगा था और हवायें तीव्र होने लगी थी । वो हिसंक आत्मा रुपी लाल बिन्दु भी वंहा विचर रहे थे ।

उधर बालगोविंद आन्ध्रप्रदेश उस गाँव में पहुंचा जंहा कभी पदमापति नामक ब्राह्मण रहता था । उस गाँव में पहुचते ही बालगोविंद को एक अजीब सी शाँती मेहसूस हुई । उसे उस गाँव का प्रत्येक मार्ग, गली और घर जाना पहचाना सा लगा । बहरहाल वो नही जानता था कि अपने पूर्व जन्म में वो नारायण नाम से इसी गाँव में रहता जिससे वो सब उसे जाना पहचाना लग रहा था ।

उसने पदमापति नामक ब्राह्मण का पता लगाया और उसके घर जा पहुंचा, जंहा उसे पता चला कि बहुत पहले पदमापति मर चुका था और वो घर भुतहा जानकर वंहा कोई नही रहता था । फिर उसने उसके पूवजों और गोत्र का पता चलाया । उसके बाद वो गाँव में बहने वाली एक छोटी नदी के किनारे पहुंचा और वंहा उपस्थित एक ब्राह्मण से मिला । उस ब्राह्मण को उसने अपना उद्देश्य बताया और वो दोनो एक धार्मिक अनुष्ठान में सलंग्न हो गये ।

उन दोनो ने पदमापति की आत्मा की शाँती के शाँती-पाठ किया । ब्राह्मण निरंतर मन्त्रोंचारण कर रहा था और बालगोविंद उसके बताये निर्देशानुसार धार्मिक क्रियाओं में व्यस्त था । फिर ब्राह्मण ने उससे पदमापति के नाम का 'त्रिपिण्डी श्राध्द' करवाया । इससे पदमापति की भटकती आत्मा के अपने पूर्वज-पितरों से मिल जाने का प्रवाधान होना था । उसके बाद उन लोगों ने पदमापति के नाम से 'पिण्डदान' किया और उसका श्राध्द किया । इससे भी पदमापति की भटकती आत्मा को शाँती मिलनी थी । फिर उन लोगों ने बारह ब्राह्मणों को पदमापति के नाम पर भोजन करवाया । भोजन के बाद बारह ब्राह्मणों ने पदमापति के लिये शाँति-वचन कहे । इससे भी पदमापति की आत्मा को शाँति मिलनी थी । अंत में बालगोविंद ने पदमापति के नाम पर दान-दक्षिणा वितरित की और शून्य में हाथ जोड़कर उसकी आत्मा की शाँती के लिये प्रार्थना की । इसके बाद वो धार्मिक अनुष्ठान समाप्त हो गया और बालगोविंद अपने घर की ओर चल दिया ।

जब बालगोविंद वापस अपने घर पहुचां तो चारों ओर शाँती स्थापित हो चुकी थी । पक्षियों का करवल सुनाई दे रहा था जोकि पहले कभी वंहा नही सुनाई दिया था । पेड़-पौधें लहलहा रहे थे और ठंडी हवा के साथ अपनी सुगंध बिखेरते मेहसूस हो रहे थे । छोटे-मोटे पशु प्रसन्नता से इधर-उधर घूमते दिखाई दे रहे थे मानो अपनी आजादी का बखान कर रहे हों । बहते पानी की कलकल और हवा की बयार माहौल को आनंदमय बना रही थी । अब रात्रि में भयप्रद सन्नाटा नही था और हिसंक पशु-पक्षियों की आत्मायें विचरण करती नही दिखाई दे रही थी । बालगोविंद ने देखा सोहम इससे पुर्ण सन्तुष्ट दिखाई दे रहा था और वो अब गंभीर नही था तथा उसके मुख पर पहले जैसा तनाव भी नही दिखाई दे रहा था । बालगोविद ने मेहसूस किया कि -- जैसा सोहम चाहता था वैसा हो गया था । बालगोविद ने इससे प्रसन्नता मेहसूस की थी ।

दरअसल बालगोविंद के किये धार्मिक अनुष्ठान से जो पुण्य प्रकट हुआ वो पदमापति के नाम से 'पितरलोक' पहुंचा था। जिसे वंहा की नैमितिक आत्माओं ने पिशाच बन गये पदमापति तक पहुंचा दिया था । उस सात्विक पुण्य की सात्विक अग्नि ने पदमापति के तामसिक अणुओं को नष्ट कर दिया । जिससे उसे पिशाच योनि से मुक्ति मिल गयी और वो एक सूक्ष्म-शरीरी आत्मा में बदल गया । जिसका अब पृथ्वी पर कोई काम नही था । क्योंकि पृथ्वी पर उसका भौतिक शरीर कब से नष्ट कर दिया गया था । उसे अब दूसरे भौतिक शरीर की आवश्यकता थी जो पृथ्वी पर संभव नही था । इसलिये वो सूक्ष्म-शरीरी आत्मा के रुप में पितरलोक की ओर प्रस्थान कर गया । अब वो फिर से जन्म लेने के लिये प्रतिक्षा में था । इसके लिये उसे अब और पुण्य अथवा पृथ्वी से उसके नाम का श्राध्द अथवा पिण्डदान की प्रतिक्षा थी ताकि नैमितिक आत्माये उसके पृथ्वी पर होने की आवश्यकता को समझें और उसके लिये फिरसे जन्म की व्यवस्था करें । ये सब आगे होने वाला था । क्योंकि सोहम ने बालगोविंद को वो धार्मिक अनुष्ठान निरंतर तीन वर्षो तक करते रहने का निर्देश दे रखा था । बालगोविंद निरंतर तीन वर्षो तक वो सब करने वाला था और फल स्वरुप पदमापति को फिर पृथ्वी पर जन्म लेने का सौभाग्य मिलने वाला था ।

बहरहाल सोहम का कार्य पुर्ण हो चुका था । वो अब अपनी साधना पुर्ण करने के लिये तैयार था । अगले दो दिनो के बाद पुर्णिमां थी और सोहम अपनी साधना की तैयारी में जुटा था । बालगोविंद उसे अपने कार्य में जुटा देखता रहता था । उसे अब किसी बात की चिंता नही थी । वो अब केवल सोहम की साधना पुर्ण हो जाने की प्रतिक्षा में था । उसके बाद उसे अपनी बेटी के विवाह की तैयारी में जुटना था ।